॥ २ ॥

प्रकाशक  मनजीभाई रेवचन्द झवेरी, ५०–५४ मीरझा स्ट्रीट, मुम्बई नं. ३।

★

। प्राप्तिस्थाने ।

१ मनजीभाई रेवचन्द झवेरी ठे. ५०–५४ मीरझा स्ट्रीट चोथे माळे मुंबई नं. ३
२ बाबुभाई नानुभाई ठे. नेमुभाईनी वाडी गोपीपुरा सुरत
३ जमनादास हीराचन्द ठे. रेवचन्द भाइभाई वाडी गोपीपुरा सुरत
४ सरस्वती पुस्तक भंडार ठे. रतनपोळ, हाथीखाना अमदावाद
५ पीडवाल जैनधर्म संघनी ठे. स्वामी शाह–मारकीट, पालीताणा
६ मेघजी हीरजी, गोडीजीनी चाल, पायधुनी, भीम स्ट्रीट, मुंबई नं. ३

★

मुद्रक : पार्श्वजसपुरे श्री महावीरसिंहजी मुद्रणालये अमरचन्द बेचरदासा। (सोरठ)

२ ॥

# सहायकोनी नामावलि ।

१००१) श्री शान्तिनाथ जैन देरासर ज्ञान द्रव्यमाथी
कोट, मुवइ

२५१) श्री देवकरण मेनशन जैन सघ ज्ञान उपजमाथी
प्रीन्सेस स्ट्रीट, मुवइ ह. जयन्तिभाइ र.

२००) श्री सुपार्श्वनाथ देरासर (झवेरचद परतापचद) ना
ज्ञान द्रव्यमाथी ह भाइचदभाइ, वालकेश्वर मुवइ

१५१) पानाचद चेनाजी ह. छोटुभाइ, वाजीपुरा

१२५) नगीनदास चुनीलाल चोक्सी ह जसवतभाइ
झापा बझार, सुरत

१००) स्व कमलावेन नगीनदास चोक्सी ह जयन्तिभाइ
झापा नझार, सुरत

१०१) घावुभाइ फुलचदनी सुपुत्री वसुमतिवेन सुरत
मुनिश्री नदीपेण सा. नी प्रेरणाथी

१००) सुशीलावेन लल्लुभाइ नगीनभाइ झवेरी
पारसी गली, मुवइ मुनिश्री मनोज्ञ सा प्रेरणाथी

१००) धनराज जे परमार ह घावुभाइ सोलकी सुरत
मुनिश्री मनोज्ञ सा. नी प्रेरणाथी

१००) नाथुभाइ लल्लुभाइ वारडोली „ अग्रमाहक

१००) गुलावबेन हीराचद वारडोली „ „

१००) छगनलाल झवेरचद वुहारीवाला नवापरा, सुरत
मुनिश्री अमरेन्द्र सा नी प्रेरणाथी

१०१) रतिलाल चेलाभाइ वासणवाला ह जयन्तिभाइ
नवापुरा, सुरत

१००) लालजी रामाजी चोक्सी ह चुनीभाइ „ „

१००) कान्तिलाल जेकीसनदास वरारीया „ „

१००) जसकोरवेन मगनलाल देवचद ह गुलाबचद
नवापुरा, सुरत

१०१) रमणीकलाल एन्ड कु चकला स्ट्रीट, मुवइ
ह. वजुभाइ जीरावाला (सोराष्ट्र)

## अगाउथी थयेल ग्राहकोनी नामावलि ।

| नकल संख्या | नाम |
|---|---|
| ५ | श्री महिमाविजयजी गणिवर |
| २५ | मुनिश्री ... समरथबेन सांकेरचंद झवेरी मुंबइ |
| १२ | गणिवर्य श्री ... विजयजीना उपदेशथी ... जैन संघ |
| ११ | ... |
| १ | पं श्री ... विजयजीना उपदेशथी ... जैन ... , झवेरी |

| नकल संख्या | नाम |
|---|---|
| १ | पं श्री ... विजयजीना उपदेशथी ... जैन संघ, मुंबइ |
| १ | ... झवेरी पारसी गली मुंबइ |
| १ | ... झवेरी ... शेरी सुरत |
| ५ | ... मोतीचंद ... पुरा |
| २ | शेठ डी. श्री ... धर्मपत्नी ... बेन ... मुंबइ |
| १ | ... गोपीपुरा सुरत |



आगमोद्धारक आचार्य महाराजश्री

आनन्दसागर सूरीश्वरजी

जेमनी शुभप्रेरणाथी

आ ग्रंथ तैयार

थयो छे

B संज्ञितप्रति लिखित स. १५ ८ साहित्य रसिक मुनिराज श्री पुण्यविजयजीना संग्रहमांथी १२॥×५

उपणय मिंत्रोवि।ओद्या सिमयाणोत्र।मोश्रणित्रजामगतियगोहा।अन्नाकमअयस्तिच्छ्रजाणानएउतत्थुणीमाराउा॥ज्वीदंसणउवारमारतेगादप्पुएमिग्रांउरु
पस्स्यामवादवाद्दवीगवइकिम्ववरकणणतउराजा।कइयासमपाइमिम्मअछकाजयाउरीएकारमिस्सुवनाअन्नदसनिद्दियतिवृल्लजसुतवमिग्राबाविरा
डाकोनामपरिमाकरसुइमाघविजस्सरवउमिअकजोयणासपतरिदाअसी।मासप्पईसपो।राजा।किंचिछउवप्परसादशदवीकिमन्नमादेमाउरुणो
दुगसथ।किजाउाकासवीन्नरिवलन्नसक्का।किम्रउडपा।वणविसह।तिपदसुउाकाहाअन्नलियाउताउ।तवतिनन्नमहरुअरीप।नियमयुनिगंनणतियुति
वइजणाम रिवलपरिवारा।तापतीप्पनक्रियाआवअवंतीपाकामघी।उरिसपरपरकरवयसवारगासवियाहिताहिनउअविरमावुवत्तओउगोनाकारिज्जो
छादक्कारियासमाणा।दवापनाणाइतरउवबहिनवमिभणकहूरणासएा ।इणहिवनामिकपा।अणमाणिरयणालरणप्पटायाउवेसआइवरहदिसाविंत
इकिमउाणा।ग्रपन्नरउस्सरादमिवडंतउस्सवापताारिसअलजाया। रायसउाप।उयप्उणोनइणीय।नउतउडवरस्ययअकउासीलांडले
राणाणआनररामलयुखणिव्वचानविरहियाणहासायाहासहीराय आहरणा।अधपाणधणसीलेअआनंकारणमणिअलकागोअसबा।
टाणसकाउसुणरहियापाविग्रणगरिमा।परमवेणसीलमहिलाए जीवियकमेणा।रहियाणमाणानोगोपडयाणा।सकोउणेतोमासायापरावण
सकसाइनाउविरकियंमाला।सुणयाउणयाउविकलपुतमरंतरकिरसा।इ यअदिमितिकचारगवसचायआणणासनीपाद्भयविसंवायकाउ।कावेण
कयतिउडी।अपेमियउरिसाणउरोपतणा।ताहउवमिजाइउमोअदुरअकाजसजोवहियनजोसपजोउीमरुसीलनीलरणतपाग।तणमलउवर्व
ताताससलेठकलकितोसोरवजोउनपजोउ।इववकव्य:सु।उन्नारपरिनावयवनिकरनीरंधरधेगाकोलाकउसएनरहेयरुणमपिच्छा।तनाता।
किछिन।किप्प्रन्याभिनवउकटकघटामट किताइालमलीनिसयदिमवादयस्वमितियत्मामकपनीमिमाइयाद विहिसंनपगइणा।लहिसाहिपासोताउ
णापजोउपजोयणवलितसवलकलिउ।अविलवंकोसविवंपत्तोवाहिकारदवेडं।नयकयमपाणसमेसापवंविवंतगधन्नातगामागरअनास्वठमठं
वयहणपयसासो।जसडभरावरा।स्वारउविहरयवीरा।जइजयजणानयणाणदा।साणउवारसंमणादेवोसरपइनाकरेमीनिरवियंनिछियरबोअकय

सचित्रप्रति लिखित स. १५८६ आ म श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी ज्ञान भंडार खंभात ११×४॥

# उपदेशमालाविशेषवृत्तिग्रन्थस्य शुद्धिपत्रकम् ।

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| १ | ६ | सज्जिनो | म जिनो |
| ,, | १० | शेग्घो | शेग्घो |
| ३ | १३ | अन्छेरर्हि | अन्छेरेहिं |
| ५ | ४ | महलेहु | मह लेहु |
| ,, | १७ | न्तुय | न्तुय |
| १६ | १५ | २४१ | २४२ |
| ,, | १६ | २४२ | २४३ |
| २७ | ५ | मेल्लित्त | मेल्लिनु |
| ,, | १३ | तदेय | तदेय |
| २९ | ३ | मह | मह' |
| ३२ | १५ | प्रोक्ते | प्रोक्तो |
| ४१ | २ | ल | लहु |
| ४२ | ७ | मुगर गिणु | मुगरेगिणु |
| ४५ | २ | उपमगगु | उपसर्गेपु |

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ५३ | १ | कृमादाह | 'कृमादाह |
| ५४ | ५ | गीयम्म | गीयम्म |
| ५७ | ३ | लागणो | लोगणो |
| ६८ | ३ | उगय | उगय |
| ६९ | ४ | पीरेण | गेरेण |
| ८९ | १ | शिरो धाम नमतो | शिरोधाम- नमतो |
| ११७ | १६ | मुम्निकिय | समितिय |
| १२५ | ६ | भोगना | भोगानां |
| ,, | ८ | पमानत्पान | पत्मानपान |
| ,, | १५ | पत्यइओ | पत्थइओ |
| १२९ | १ | जगमि | 'जगमि |
| १३३ | १० | गिगन | निगिम |
| १३४ | १ | तन्तेर | तदन्तेर |

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ,, | ३ | शोर्भाग्य | सौभाग्य |
| १३८ | १० | प्राता | प्रातो |
| १३९ | १ | नुतादय' | नुतादयः |
| ,, | ७ | तथाशाप० | तथाशाप० |
| १४३ | ११ | कण्य | कर्णं |
| १४५ | ९ | आत्मात्रणि | मात्मत्रणि |
| १४८ | ३ | जम्बूग्रमि | जम्बूद्विम |
| १५० | ७ | गृहाने | गृहमे |
| १५२ | ३ | पुरन्दरे० | पुरन्दरे० |
| ,, | १६ | पर्म | धर्मं |
| १६१ | ६ | मोगम | मोक्षम |
| १६३ | ४ | कृतानन्दलो | कृतानन्दतो |
| १६७ | १३ | सतीतिलि० | स तितिलि० |
| ,, | १७ | नयमदृ० | नयमृ० |

९

| पत्रम् | पंक्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पंक्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः | पत्रम् | पंक्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७२ | १ | वजेण्यपि | वजेण्वपि | | १४ | विरुवद्दारे | विजहारे | " | १५ | पवेसो | प्रवेसो |
| " | ११ | वव्व | -वणो | २ | ११ | कोहेप | कोहेय | २५० | ९ | सिलोऽपि | सिलोऽपि |
| १७४ | ४ | अत्थ | अत्थ | २ २ | ८ | बोमपिहो | बोमपिहो | २५४ | ८ | करणाम् | करणम् |
| १७७ | १ | दुइम्म | दुईम्म | २ ६ | ११ | महामत्तमूहे | महामत्तमूहे | २५७ | ५ | वद्दाव पा | वद्दा वय |
| " | १ | भिमइ सुपाहि | भिमइसुप्पाहि | | | रजनिप॰ | रजनि प | २६६ | १७ | १ | २ |
| १७८ | १२ | चमलमरा | चमरम्मर | २२ | ६ | सिवेत | सिवेह | " | " | जम्मम्मि | जम्मम्मि |
| १८ | ९ | वत्थामा | वत्थमा | | १५ | अतेसर | अतेसर | २६६ | ३ | हिययसटीर | हियय सटीरं |
| १८४ | १४ | भद्दे | भद्दे | २२१ | १ | अत्थ | अत्थं | २६८ | ३ | कुस(म) | कुस(म) |
| १८७ | १ | सुदम | सुदम | २२२ | ३ | मुनिसम्पिा | मुनिसम्पा | " | १२ | एयय | एयप |
| " | ८ | वेयण | विणुन | २२९ | १४ | गागम्मु | गाम्मु | २७० | ५ | समोणीप | समोणीप |
| १८८ | १ | ज्ञापढिओ | ज्ञानमुडिओ | २३२ | ५ | पशु | पशु | २८४ | ७ | देह | देह |
| " | ५ | समा सिरे | सामसिरे | २३३ | ६ | सामि माय | सामिमाय | २९ | ५ | करिय | करिसु |
| " | ९ | सणाओ | हाणाउ | " | | ३३३ | ३३३ पम | २९२ | १ | पमावलिय | पमावलिय |
| " | १५ | परिहा | परिसहा | २५० | ७ | चलप | चोलप | ३ २ | १३ | अविकसिय | अवि कपि |
| १९१ | १ | मणिये | मणिये | २५८ | २ | पमदा | जमदा | ३०२ | ७ | भेमो | भोमो |
| | | | | " | ७ | पीठसमिा | पीठसमा | | ९ | एमय | सिमय |

| पत्रम् | पङ्क्ति | अशुद्धि | शुद्धि | पत्रम् | पङ्क्ति | अशुद्धि | शुद्धि | पत्रम् | पङ्क्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१३ | १२ | विभुत्ति | विमुत्ति | ३४३ | १० | महलीकय। | ।महलीकय | ३८९ | १३ | १६९-७० | १६८-६९ |
| ३१६ | ६ | पहारु | पहारु | ३४८ | ६ | मर्मनो | मम नो | ३९३ | १५ | गनिरगी | नविगगी |
| ३१७ | ६ | सद्दुवि | सुद्दुयि | ३५० | ३ | पिशुनैर्मर्गे | पिशुनैर्मर्ते | ३९८ | १६ | ल्गिो | लिंगे |
| ३१८ | ६ | रागारीना | रागारीणा | ३५१ | ९ | महानह | महागुह | ३९९ | ५ | फलाइ० | फगाइ० |
| ,, | १६ | मुड | मुंड | ,, | १४ | परिभावओ | परिभवाओ | ४०० | ६ | विरारिउं | विहरिउं |
| ३१९ | १६ | अन्नपि | अन्नंपि | ३५२ | १६ | पनत्त | पनत्तं | ४०४ | १ | गदिय | यदिय |
| ३२४ | ३ | मुप्पते | मुप्पते | ३५६ | १० | मारेज्ञा | मारेज्ञा ? | ४११ | ८ | त्पयंट | पयंट |
| ३२४ | ६ | क्षाररिव | क्षारेरिव | ,, | १३ | फहिय | फहियं | ४१७ | १२ | लोगडपि | लोगडवि |
| ३२६ | १६ | गृदीतो | गृहीतो | ,, | १७ | निजड | नज्जइ | ४२१ | १२ | मामशिनो | मामाशिनो |
| ३२७ | १२ | शरणा | शराणा | ३५८ | १७ | महाऽत्य | महाऽनत्य | ४२२ | ४ | स शूठ | सशूक |
| ३२९ | १० | दडनया | व्डयश्चा | ३५९ | १ | मुखलिउ | मुखरिउ | ,, | ७ | यिन(न) | यि न(न) |
| ३३१ | १४ | न न ना | न ना | ३६३ | ६ | पममभाग | पसमभावं | ४२३ | ४ | गाहगटमा | गाहगाटवा |
| ३३३ | ९ | मीक्ष | मोक्ष | ३७२ | ९ | देयि | देति | ४२४ | ९ | पगति | पर्यति |
| ,, | ,, | निजकाम | निजकाम | ,, | १० | पडिपूल | पडिपूलं | ५२९ | हेडीग ५३२ नुं आर नार पल्टु | | |
| ३३४ | १० | पुसेरर्दि | पुरिसेहिं | ३७३ | ३ | न्नागृश | न्नागृश | ४३३ | ६ | न देह | न देह |
| ३३७ | ७ | विविश्रा | विश्रा | ३८३ | १५ | भंतणा | यतणा | ४३५ | ३ | राणो | रणो |

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः |
| --- | --- | --- | --- |
| ४१७ | ७ | १५३ | १११ |
| „ | ११ | मात्र | माता |
| ४४१ | ११ | गुरु | गुरु |
| ४४६ | १ | ऽप्यम् | ऽप्ययम् |
| „ | १३ | [illegible] | [illegible] |
| ४४९ | १२ | [illegible] | [illegible] |
| „ | „ | [illegible] | [illegible] |
| ४५२ | २ | लभूनि | लभूमि |
| ४५३ | १५ | ११४ | १ ४ |
| ४५४ | ६ | [illegible] | [illegible] |

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः |
| --- | --- | --- | --- |
| ४५७ | „ | [illegible] | [illegible] |
| ४६० | ९ | गने | गते |
| ४६१ | ३ | उमे | मे |
| ४६२ | ६ | मेत्र | मेत्र—मत्र |
| ४६३ | ११ | त्रिमिर्विशेस | त्रिमिर्विशेष |
| ४६७ | १ | क्षिप | क्षिपा |
| „ | १४ | [illegible] | [illegible] |
| ४६८ | ११ | म म | मप |
| ४७४ | ७ | वद | वद् |
| ४८१ | १ | [illegible] | [illegible] |

| पत्रम् | पङ्क्तिः | अशुद्धिः | शुद्धिः |
| --- | --- | --- | --- |
| ४८० | १ | [illegible] | [illegible] |
| „ | ११ | [illegible] | [illegible] |
| „८ | ४ | [illegible] | [illegible] |
| ४९२ | | [illegible] | [illegible] |
| ४९६ | ९ | राजन्। | राजन्। |
| ५०३ | १५ | [illegible] | [illegible] |
| ५१७ | ३ | [illegible] | [illegible] |
| „ | ९ | [illegible] | [illegible] |
| ५२२ | १० | [illegible] | [illegible] |
| ५२९ | ७ | [illegible] | [illegible] |

# । श्री उपदेशमाला दोघट्टीवृत्तेरनुक्रमणिका ।

## प्रथम विश्रामे



## द्वितीयविश्रामे

## तृतीयविश्रामे



॥ नमस्तु श्री वीतरागसर्वज्ञभगवद्भ्यः ॥

# । संपादकीय निवेदन ।

श्री ... शास्त्र ... विशेषवृत्तिना संपादनमां मने नीचे जणावेल हस्तप्रतिओनो उपयोग संपूर्णतया अने आंशिकरूपे करेल छे

A संज्ञक ताडपत्रप्रति—खंभात श्री शान्तिनाथ हस्तलिखित ताडपत्र भंडारनी प्रति छे. एना ११० पत्रो छे साइझ १६×२ इंच लंबाई-पहोळाई प्रतिपत्रे ५ पंक्तिओ छे. ताडपत्रीमां क्रमांक ... प्रति भाग हता जे बीजी प्रतिओना आधारे ... पूर्ण थई गया छे ए ताडपत्रि सं ११९४ मां लखाएली जणाय छे ... अने ... प्रशस्तिमय अन्य भागमां ... छे. ... मेळवी ... आ प्रतिना आधारे ... पाठ ... करेल छे. ... स्मरण अत्र आवश्यक छे

B संज्ञकनी हस्तलिखितप्रति संशोधनकर्तावस्थवर–साहित्यरसिक मुनिराज श्री पुण्यविजयजी म सा पासेथी छे. आ नं. १ १ प्रति नं. ११११. ते प्रतिनुं ... अक्षरोनुं ... सुवाच्य ... अने ... पत्रोनी ... एवुं सुन्दर छे वि सं १५११ वर्षे लखाएली होय एवो ... प्रति सुन्दर हालतमां छे आ प्रतिमा ... पाने बीजो ... मूळ ... विशेषित करी ... नाम पुरा ... करी आपे छे प्रतिना पत्र ११५, साइझ १२॥।×५ इंच लंबाई-पहोळाई प्रतिपत्रमां १७ पंक्तिओ दरेक पंक्तिमां ७२ थी ८२ अक्षर सुवाच्य अक्षरो ... छे पत्र संख्या २८ तथा ९ ... भाग ... करेल छे संशोधनकर्ताओ ... मेळवी छे आ प्रतिना ... B संज्ञाथी आपेल छे

C सज्ञायाली प्रति मारा परमोपकारी तारक गुरुमहाराज आगमोद्धारक आचार्य महाराज श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी सगृहितशास्त्रभंडार जैनानन्द पुस्तकालय गोपीपुरा सुरतनी छे १९६३ नी सालमा लखाएली छे लहीयाए शाही वापरवामा बेदरकारी करेली होवाथी पानाओ केटलाक परस्पर चोंटी गया छे अक्षरो पाछल फुटेला होवाथी वाची शकाता नथी केटलोक सारो भाग अशुद्धि मेलववा माटे उपयोगी थयेल छे ताडप्रतिने अनुरुप लखाण छे, छता प्रशस्ति नथी

D सज्ञावाली हस्तप्रति प पू आ म. श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी म ना खभातना भंडारनी छे पू आ म श्री विजयोदयसूरिजी म तथा पू आ म श्री विजयनन्दनसूरिजी म द्वारा प्रतिप्राप्ति थइ हती 'वि स १५८६ वर्षे पोष १३ दिने वृत्तिर्लिखिता।' आ प्रतिनो फोटो D सज्ञा तरीके छपावेल छे साइझ ११×४॥ इच २०६ प्रतिपत्रे १५ पंक्तिओ प्रति पंक्तिमा ६० थी ७० अक्षरो, स्थिति घणी जीर्ण केटलीक जगोपर कालाश अने पत्रो पण खंडित थइ गया छे लिपी सारी अने शुद्ध छे

चार प्रतिओ पैकी प्रशस्ति A सज्ञित ताडप्रतिमां छे B मा मात्र अढी श्लोकज छे C. D मा प्रशस्ति छे ज नहिं. बीजी हस्तप्रतिओ न मळ्याथी केटलाक स्थलो शंकित रह्या छे जुनी लीपीमा व ब च ओलखवा मुश्केल पडे छे तेमज त्थ च्छ ज्झ. जेवा बीजा अक्षरो प्रकरणना अनुसारे बेसाडी शकाय छे शंकितस्थलो परिमार्जन करवा योग्य छे

आ उपदेशमाला उपर अनेक टीकाओ पैकी अत्यार सुधीमा बे टीकाओ मुद्रित थयेली छे एक सिद्धर्षिनी, बीजी रामविजयजीनी त्रीजी आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिए रचेली अनेक संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश भाषामय कथानकोथी विभूषित जे माटे विद्वान् उपक्रमकारे सुन्दर स्पष्टता करेली छे आ टीकानु महत्त्व अनोखु छे. कथाना अर्थी माटे व्याख्यानउपयोगी आ ग्रन्थ वैराग्यनु सुंदर पोषण करनार छे. आमा घणेभागे साधुधर्मोपदेश, कोइक जगो पर गृहस्थधर्मोपदेश, कोईक जगो पर उभय साधारण धर्मोपदेश करेल छे

मारामां आवा महान ग्रन्थो संशोधन करवानी शक्ति न होवा छतां मारा महोपकारि परमतारक गुरुवर्य आगमोद्धारक सिद्ध-हेमशब्दानुशासनागमसारक श्री सिद्धक्षेत्र पालीताणामां आगममंदिरस्थापक सूर्यपुर (सुरत) मां ताम्रपत्रागममंदिर निर्मापक आचार्य महाराज श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजीना शुभ प्रेरणाबलना योगे संपादननुं आ प्रथम कार्य करेल छे. आधुनिक संशोधनपद्धतिनी अपेक्षाए आ संपादनमां घणी त्रुटीओ रहेवा पामी छे, परंतु महापुरुषोनुं वचन छे के शुभे यथाशक्ति यतनीयं ए नियमानुसार मैं आ प्रयत्न कर्यो छे वाचकवृन्द हंसदृष्टि राखी त्रुटिओ मने जणावशे तो हुं भविष्यमां तेनुं परिमार्जन करीश. आ ग्रन्थ छपाववा माटे घणो समय गयो छे परन्तु सिद्धिसम्बन्धमां उपाय छे तेथी [illegible] पांचवाची ए कार्य हाथ करेल नहिं तपास करतां मालम पड्युं के छपायो नथी त्यारबाद मेसाणोपी वेपार करवानी व्यवस्था शुद्ध करी शासनसम्राट् [illegible] मुंबई आवे प्रयत्न सफल थयो छे. आ ग्रन्थ संबंधि उपक्रम विद्वान् लेखक महाशये विस्तारपूर्वक आ ग्रन्थना अवलोकन आधार रूप विस्तृत निबंध करेल छे. ते प्रथम वांचवा माटे खास भलामण छे. आ ग्रन्थ संपादन करवामां हस्तलिखित प्रतिओ आपनार, उपक्रमादिक लखी आपनार, आर्थिक-मानसिक-कायिक प्रत्यक्ष-परोक्ष के अन्य प्रकारे पुस्तकनी प्रसिद्धिमां सहकार आपनार दरेकने अभिनन्दन आपी आत्मा अपूर्व-वैराग्यपूर्ण ग्रन्थमाला [illegible] आस्वाद पामी दरेक आत्मा परमपदने पामो एज मात्र अन्तिम आकांक्षा।

वि. सं. २०१४ [illegible] ११ शु }
गोपीपुरा, सुरत ता. २४-९-५८ }

श्री आगमोद्धारक आचार्य महाराज श्री आनन्दसागरसूरीश्वर शिष्याणु,
आ. हेमसागरसूरि.

॥ नम श्रीजिनशासनाय ॥

॥ श्रीनमस्कार–महामन्त्राय नम ॥

## ॥ उपक्रमः ॥

विदाङ्कुर्वन्तु महामतिप्रथितपरमाप्तत्वसम्पादि जिनवाणि नरिप्राभ्यासनेदिप्रमोक्षाध्वसञ्चरणैकदत्तचित्ता । यत्-सदाशयगतानुष्ठान-विशुद्धिकरणपटिष्ठा सदुपदेशनानासुमनघ्रातसद्गन्धविसरस्तानेकमहापुरुषजीवनप्रसङ्गोल्लेखनपूता सद्धर्मकर्मालम्बायमानमोहव्यामूढ-जनान्त करणान्धतमसनिराकरणप्रवरप्रदीपिका स्वाध्यानुगुण्यहितकृतिप्रयोज्यमद्विशेषादरपात्रा वरेण्यतमा उपदेशमालाख्यकृति अपश्चिमतीर्थकृच्छ्रमणभगवच्छ्रीमहावीरप्रभुवरदकरानन्तलब्धिभाजनभूतै निष्कारणकरुणाकरुणालयै श्रीमद्धिर्धर्मदासगणिवरैरपार घोरससारवारिधिनिमज्जद्दर्णसिद्धादिभाव्यनेकभव्यसत्त्वोद्दिधीर्षया निर्णिताऽस्ति, विदितचरमेतत्समेषा विदुषा ।

मोहोन्मादविकारवैवश्यात्मस्वरूपाननुभूतिमूलिकभवार्णवनिमज्जनक्रिया प्रतिरोध्य प्रवरतरीरूपेणात्मस्वरूपसवेदनद्वारा जन्मिष्ठ त्योरविच्छिन्नचक्रवाल विश्रभ्य विचारशुद्धिपूर्विकाचारशुद्धिश्च सम्पादयाबालगोपाल सर्वथा मुमुक्षूणा जननीवद्धितात्मल्यकारिणी या सम्यगवबुध्य यस्याश्च तात्पर्यार्थं सद्गुरुनिश्रया च निर्णीय के के आत्मकल्याणेप्सव मुमुक्षुजना मोक्षाध्वनीना न जाता ? । नाख्यातप्रायमेतद् शास्त्राम्भोनिधिव्यालोडनक्षमाणा तात्त्विकविदुषा । अत एव चातिप्राचीनकालत आ प्रव्रज्याप्रतिपत्तेरन्यज्ञानाभ्यास-सम्पादनप्रत्यलताया भावेऽभावेपि सुविहितगीतार्थवर्यैरेतस्या आमूलचूलं सूत्रपाठ–स्वाध्यायपरावर्त्तनानुप्रेक्षादिक समस्तसाधु–साध्वीना दिनचर्याया अनन्यथासिद्धमङ्ग प्रस्थापितमस्तीति चास्माभिजनवृद्धजनोपक्षा श्रुति श्रूयमाणाऽस्त्यासीत्, अधुनाऽपि दृश्यते खल्वेतद्वत्–नैका संयमैकवृत्तचित्ता सयमैकजीविताश्च श्रमण्य एतस्या उपदेशमालाया प्रत्यहं स्वाध्यायरूपेण स्वान्तरात्मपरिणतिमपूपुषन्

रोचयन्ति च। तथा च संसारासारविद्यावेदसी मानुषजन्मनपीवमपीवोपनिषिसेवादपि दोघट्टीरत्नयाह विशेषवृत्तिकारी श्रीरत्नप्रभसूरि
रपि(हितोपदेशमालाप्रकाशवृत्तौ समर्थितवति तथाहि)—

"धर्मोपदेशमालाया प्रथम-श्लोकस्य मूलसिद्धान्ता। प्रथमे पठति धर्म, तस्मिन्नस्मामिः श्लोकता ॥" दोघट्टी-प्रशस्तौ. श्लो. १

धर्मोपदेशस्य अभिधानुकरणस्येव सार्वजनीनत्वमत्वावसानि चैत्यानि प्रकरणानि प्रकरणानि पुस्तकानि वेदानीमपि समुप
लभ्यन्ते। साहित्यक्षेत्रे चैत्यपुरतो प्रतीयते च, विद्वत्सोपमानेन स्वतन्त्र सर्वसाधारणप्रियत्वरित्वम् प्रकरणस्य मानसंतोष्य
अनुकरणं वेद्यिते प्रायः नानाग्रन्थविहारेऽपि एतस्य नाम्नोऽप्यनुकरणानाम विविधं साहित्यं समुपलभ्यते तथाहि—

| | |
|---|---|
| १ धर्मोपदेशमाला पत्र १ पजनगरेवेदि—समाभव्यकी भंडार सत्त्वानभोगे. | ९ धर्मोपदेशमाला स्वोपज्ञा ११५ श्लो. „ |
| २ धर्मोपदेशमाला मुनिचंद्रसूरि गयाता प्राकृतमाला गा. ५४२ जैन ग्रं. पृ १७२. जिनरत्नकोष पृ ५१ | १० „ विजयसिंहकृत ११ • श्लो „ |
| ३ धर्मोपदेशमाला पद्मसागरस्य. गा १ जेसलमेरकोषे | ११ „ धर्मोपदेशावृत्ता. गा. १४ पृ रि. पिटर्सन रिपोर्ट च |
| ४ धर्मोपदेशमाला पत्तन-ज्ञानमंडारे. | १२ पुष्पमाला—धर्मोपदेशमाला मलधारी हेमचंद्राचार्यकृत्वा गा. १२५ मुद्रिता. |
| ५ धर्मोपदेशमाला गा. २५. सीवर्डी-मंडारे. | १३ पुष्पमाला धर्मोपदेशमाला स्वोपज्ञावृत्ति श्लो. ११८१८. मुद्रिता |
| ६ धर्मोपदेशमाला बृहद्वृत्तिनिबद्धा. | „ „ „ „ पत्तन—भण्डारे. |
| ७ „ वृत्ति „ पत्र ७१ | १४ पुष्पमाला धर्मोपदेशमाला साधुसोमकृत्वा अवचूरि जेसलमेर मंडारे. श्लो २ |
| ८ धर्मोपदेशमाला. धर्मसिंहादर्शकृत्वा गा १ २ पत्तनमंडारे. | |

लघुवृत्तिः, श्लो २३३० भाव भ
१५ ,, ,, अवचूरि, अचलगच्छीय जयशेख
१६ ,, ,, रसूरिः, पाटण-लींबडी भण्डारे
१७ शीलोपदेशमाला, जयकीर्तिकृता १४५ श्लो. पाटण भ
१८ ,, वृत्ति, जयतिलकीया, ६९४९ पा रा भ
१९ ,, ,, पुण्यकीर्तिकृता ४०० डेक्कन कोलेज पूना-भण्डारे.
२० शीलोपदेशमालावृत्तिः, सोमतिलककृता रचिता १२९४ वर्षे राजनगर, बृ टि.
२१ हितोपदेशमाला, प्रभानन्दकृता गा ५२६ बृ टि
२२ ,, वृत्ति स्वोपज्ञा श्लो ९५००, जेसलमेर बृ टिप्पनिकाया च
२३ उपदेशमणिमाला कुलक, जिनेश्वरसूरिकृत जैनग्रन्थावली पृ. १९७
२४ उपदेशमाला जिनदासगणिकृता गा. ५४२ छाणी-लींबडी भ जिनरत्नकोपे.

चेतसि परमोच्चकक्षा भजमानाया अस्या ह्युपदेशमालाया नाम-
एतेनेद स्पष्टतर प्रमीयते यत्-कल्याणकामि-सुयोग्यधर्माराधकाणा चेतसि ... चिख्यापयिषुभिर्बहुभिर्विद्वद्भिर्विविधं साहित्य
सञ्ज्ञामादाय हितेप्सुत्वमूलिकसद्भावनातो विरच्यमानामौपदेशिकाना स्वग्रन्थानां महत्ता
निर्माय निर्मायमुपदेशमालाया महत्त्वमुद्घोपितम् ।

मानसिकदुर्वृत्तिना
तथा च परमगुरूपदिष्टे मुक्तिप्रापके आराधनामार्गे निराबाध सञ्चरिष्णुभिः विवेकिभि सुतरामुपादेयभूताया. लघुबृहद्वृत्त्यादिस्वरूपेण नानाविध विव-
निग्रहे चाऽश्वाना प्रग्रहवद् दुर्दान्तवृषाणाञ्च नथ्यावच्छेष्ठोपायभूताया अस्या उपदेशमालाया
रणात्मकसाहित्य सस्कृत-प्राकृता-प्रभ्रश-गूर्जरभापादिनिबद्ध समुपलभ्यते । तेनापीदं ध्वन्यते यदय ग्रन्थ भूयान् प्रीतिपात्रमाराधने-
प्सूणा मुमुक्षूणा, तथाहि—

१ कर्मस्तवसूत्रवि, माइप्पभावनिका पूर्णर्षि वि सं.
शिष्य श्रीमपवीर्दैव १११

२ देवेन्द्रसैन, १५ श्लो
सुमेतामिशिष्याः सिद्धर्षिणा

३ „ कर्मिका १९२७४ श्लो मागेन्द्र-
गच्छीय-विजयसेनसूरि शिष्या जयप्रभाचार्या १२९९

४ कर्मस्तवस्य विवेक-(पोल्यो')वृत्ति, ११६५ श्लो
हारगच्छीय वादिदेवसूरिशिष्यश्रीरत्नप्रभसूरिणा १२३८

५ कर्मस्तवसूत्रवि परमानन्दसूरिणा

६ „ गुणस्थान तपागच्छीय सुमति
विजयगणिशिष्याः १११२

७ „ ७१ श्लो सुमतिविजयगणि-
शिष्य रामविजयेन १७८१

८ „ „ तपा चारित्ररत्नगणिशिष्य
सोमधर्मगणिना

९ „ अवचूरि ४१७० श्लो. गुणेरत्नसिंह शिष्याः
सिद्धर्षिणा

१० विवरणं पत्र ११४ सर्वानन्दसुनकृ वि. सं

११ „ अवचूरि श्रीधमरत्न गणिना १५१८

१२ „ „ धर्मरत्न „ १५११

१३ „ „ गच्छीयपद्मप्रभसूरिणा

१४ „ समयपर्यायरूपा १५ श्लो.
जयसेनसूरिणा

१५ „ „ १५२९

१६ „ बालावबोध तपा० देवसुन्दरसूरिशिष्य
श्रीसोमसुन्दरसूरिणा १४८९

१७ „ १ १५४१

१८ „ „ „ श्रीसत्यविजयगणि-
शिष्यश्रीवृद्धिविजयेन १७१३

१९ „ „ सं १५०५ पत्र ३१ लिखित
११९४ वर्षे

■ ११ H. D. वेलणकरजीनी, जनदृष्टिये जिनरत्नकोषे (प. १ पृ. ५१) कर्मस्तवसूत्रस्य श्रीदेवेन्द्रसूरिविरचितवृत्तिः न निर्दिष्टा
हि निर्दिष्टस्य श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतस्य (प ) कर्मस्तवविवरणस्य निर्दिष्टम् तत्प्रकाश विना निर्दिष्ट ।

,, ,, ५००० १४९९ वर्षे लिखिता

२० ,, कथानकानि सिद्धर्पिटीकागतानि,

२१ ,, वर्द्धमानसूरि १२८४

२२ ,, कथा॰ केसरविमलगणिशिष्या॰

२३ ,, ,, श्रीकुञ्जरविमला

२४ ,, ,, कथासमास, (प्राकृत) शालिभद्र-शिष्या

२५ ,, जिनभद्रमुनय १२०४

२६ ,, ग्रन्थसूत्रार्थ-कथानकानि (सस्कृत) लिखिता १८२१ आषाढ शुक्ल १

२७ ,, टीका वेलनकरकोपे नाममात्रमुल्लिखितम्

२८ ,, ,, अवचूरि टीका च ,,

२९ ,, वार्तारूपान्तरम् खरतरग रत्नमूर्तिशिष्यमेरुसुन्दरा

३० ,, यन्त्र

३१ ,, शकुनावली[卐]

३२ ,, गाथाशतार्थवृत्ति पत्र २७ राजनगर भडार

न १९ प्रति॰ खलु श्री नित्यविनयजीवनमणिविजयपुस्तकालय-चाणस्मासत्क-हस्तलिखितभाण्डागारे (वे ११७ प्र ५९४) विद्यते, तत्र चैव पुष्पिका —" स १६९४ वर्षे फागुण सु १० भोमे तपागच्छाधिराजभट्टारकप्रभु श्री श्री पू विजयाणदसूरि-विजयराज्ये सकलपडितसभाशृगार प श्री घनहर्षगणिशिष्य प रत्नविजयेनालेखि "।

नं २० अनुयो॰ श्री उमेदवि-गणिज्ञानभडार-चाणस्मासत्कहस्तलिखितशास्त्रसग्रहीय वे. ६५० प्र० १ रुपाया एतस्या प्रते॰ प्रान्तभागे चैव प्रशस्ति । " उपदेशमालाप्रकरणबालावबोधार्थ॰ स्फुट ॥श्री॥छ॥ सङ्ख्या सहस्र ५००० ॥छ॥ स १४९९ वर्षे द्वितीय आषाढ वदि एकादश्या भौमे लिखित ॥श्री॥

न २६ अनुयोगाचार्यश्री उमेदविजयगणिसगृहितचाणस्माज्ञानकोपसत्क-हस्तलिखितसग्रहीय वे ६ प्रति ७ रूपायाः एतस्या॰

मध्ये सं १८१८ वर्षे शाके मोक्ष १४ आषाढमासे शुक्लपक्षे १ तिथौ वार भौमे । पं ज्ञानविजयगणि लिपीकृतं श्री पार्श्वनाथजी प्रसादात् श्रेयः सुरपत्तने××××" इत्येवमेता समुपलभ्यते ।

सं. ११ प्राकृतसंस्कृतविधर्मिसंमतेषु ममापि प्रायः श्री उपदेशमाला प्रकरणस्य-प्रतिष्ठासिका उपलभ्यते । वेविध-संस्थानक-विशदवंशमुनिराजश्री लक्ष्मीचंद्र. (त्रिपुटी) विरचितनिर्भरप्रवचन-श्रीजिनशुद्धिशीलिकामन्नाय इत्यस्मे परिशिष्टे श्रीउपदेशमालागाथा-बहुभेदरूपिमलोपदेशमालाकर्ता सर्वोत्तम प्रभुमणी व्यवहरति । तथा च प्रवचनमार्ग-श्रीतपागच्छाधिपति श्रीविजयसेनसूरिप्रभासमीहप्रभसेवरसहमहत्त्व श्रीसेवमप्रवचनाम्य (प्रवास ४ म ११५. ११८ पृ १ पं. ४) माघोर श्रीधर्मेण शोभमानस्य इत्यमो हि प्रश्न एवमुपलभ्यते यत्—" तथा धर्मिअस्त्रपक्षी प्रार्थनां करोति तदर्थमुपदेशमाला-गाथा श्रोतव्ये पुण्यं जायते नवेति प्रश्न । यदि स मिथ्यादृष्टयः प्रार्थनां करोति तदर्थमुपदेशमाला-गाथाश्रवणे सर्वथा पुण्यं जायते भवतीति ।" अनेन धर्मोपदेशमालाप्रभावकनवतत्त्वा विषयम् प्रतीक्ष्यम् भवत्ये भवेदिति विवर्तनं सहसा भवति । एतत्धर्मोपदेशमालाया सर्वाक्षरयोपयोगित्वा प्रतिपन्नवाचनामृतेषु प्रमाणस्य विशेषं ।

पदस्य मूल्य विषय विज्ञापते ।—मान्यविषयविनेयजनमुपदेशमालामस्युपकारिणीमुपदेशमालां विविधमनकतमप्रसरे । सुगमा विविस्मृत्य पूर्वाचार्यप्रणितिमिरेतस्य समयेजनीनता व्यक्ता । अस्याः समर्पणनिमाताश्रिमिनेश्वरपदाम्भोनिधिस्फलोकमर्मेषु हरिकसूरिभिर्नवतिसारस्वतस्वधर्माख्याववसूलोपमाप्रवृत्तिभि श्रीयशोविजयवाचकपुङ्गवैः कुन्दमारप्रभावस्यवर्णकेषु सप्तसत (१२५) धर्मजिनस्य (१५ ) गणनामितेषु श्रीसीमन्धरजिनविज्ञप्तिस्तवनेषु ढाले २ पद्यप्रमाणगाथा साक्षित्वेनोद्धृतस्य समस्तसाहित्यावर्जग-मूलस्य ग्रन्थस्य प्रमाणीकृतेति स्पष्टं प्रतीयते तथाहि—

## श्रीसीमन्धरजिनविज्ञप्तिस्तव ( १२५ गाथा ) गतोपदेशगाथोद्धारः ।

| | ढा० | गा० | | |
|---|---|---|---|---|
| १ जेह राखे पर० | ४ | ११ | जइयाऽणेण चत्त० | ४३४ |
| २ नाणरहित हितपरिहरी० | ६ | ९ | गुणहीणो गुण० | ३५१ |
| ३ सूत्रविरुद्ध जे आचरे० | ६ | ११ | जो जहवाय ण कुणइ० | ५०४ |
| ४ पामरजन पण० | ६ | १२ | लोएऽवि जो ससूगो० | ५०८ |
| ५ निर्दय हृदय छकायमा० | ६ | १३ | छज्जीवणिकायदया० | ४३० |
| ६ साधु भगति जिनपूजना० | ६ | १४ | अरिहृत-चेइआण० | ५०२ |
| ७ जे मुनिवेष शके नहि० | ७ | १ | जइ ण तरसि० | ५०१ |
| ८ ते पण मारग माहे० | ७ | १ | सविग्ग-पक्खियाण० | ५१४ |
| ९ मृपावाद भवकारण० | ६ | १ | सुद्धं सुसाहुधम्मं० | ५१५ |
| १० वदे नवि वदावे० | ७ | १ | वदइ णय० ५१६ ओसण्णो० | ५१७ |
| ११ आप हीनता जे मुनि भाखे० | ७ | २ | आयरतरसमाणं० | ५२४ |
| १२ प्रथम साधु बीजो० | ७ | ३ | सावज्ज-जोगपरिवज्ज० | ५१९ |
| १३ शेष त्रणभव मारग० | ७ | ३ | सेसा मिच्छादिट्ठि० | ५२० |

## श्रीसीमन्धरजिन-वृद्धविज्ञप्ति (३५० गा.) स्तवनगतोपदेशमालागाथोद्धारः ।

| | ढा० | गा० | | |
|---|---|---|---|---|
| १ अज्ञानी नवि० | १ | ११ | ज जयइ अगीयत्थो० | ३९८ |
| २ जिम २ बहुश्रुत बहुजन | १ | १४ | जह २ बहुस्सुओ० | ३२३ |
| ३ पामी बोध न पाले० | १ | २३ | लद्धिल्लिय च बोहिं० | २९३ |
| ४ जे निरगुण गुणरत्नाकर० | २ | १० | गुणहीणो गुण० | ३५१ |
| ५ पायच्छित्तादिक भाव० | २ | १५ | जो चयइ उत्तरगुणे० | ११७ |
| ६ द्रव्यक्षेत्र ने काल० | ६ | २ | दव्वं खित्तं काल० | ४०० |
| ७ सचित्त अचित्त मिश्र० | ६ | ३ | जहठिय दव्वं ण० | ४०१ |
| ८ क्षेत्र न जाणे तेह० | ६ | ४ | जहठिय खित्त ण० | ४०२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ग० गम | | ग० गम० |
| ९ मानविहुणिखन | १ ९ मावे विहु–भिखले ४ १ | १४ माम मात्र आगे जे० | १ ११ अह साहंमि० ४१५ |
| १० अवनरहित जिम | १ ७ अह गम चोर ४०५ इच्छइम ४ १ | १५ सर्व जगमें पम तप | १ १९ अपरिभिमयगुण० ४१५ |
| ११ अनीयर्य मिम आमे | १ ८ | १६ आमाचर्य विम० | १ ११ अभ्मार विम चरम० ४०५ |
| पवमणीकवे० | ४ ७ मह गो अवर अमीभो ४०८ | १७ पमाभिने मो० | ७ ७ फमो गुणमागम० १५७ |
| १२ पच्छिसे अविमात्र | १ ९ | १८ तमिति गुणनि वम० | ७ ८ सिद्धिमेरसमिओ १५८ |
| गुणे च हो मविम | ४ ९ अमामण मिच्छतं० ४१ | १९ गुरूअरमाणमि वय | १५ १ पाचमिओ चरम० ४११ |
| १३ उवरी अमानुम्व विस्संतो | १ १ | २० मवि माय्य गर्मे० | १५ १३ परमम्मि भवि माय्य ३९१ |
| अमृगुणो पवसी० | ४११ देगिमपइय गोदिम ४११ | २१ दव माम वम० | १५ १५ दीमणाचि गुरु० ३४८ |

इत्येवमपरेण श्रीमद्भिः श्वेतिजयन्तामैर्विहितेन स्तवेन १ यत्तैकमासममोरमेरमवाणुसारास्त्रिउम्मा गर्त्तीनिमाविमाद्दन-स्थानमस्तोत्रं पूर्णमोलं गतवनो मर्त्तिको भवति ।

अपरश्च देवाम्विवगुणपूर्णो ब्रह्मानिवसविभाजिनी परमशावविद्भिः श्रीमद्भिः परमतीर्थङ्करमहावीरजिनगुणानताचने चरन् कारीविधिसिध्धैः अग एव परमेष्ठिगुणमान्मोपचिमि तद्धर्मोविमविमलप्रपनावमपर्मगगणविन्दैयायकस्य प्रसिद्धिमागतैः श्रीविजयसेनसूरिणरणमो मम्यतिवतोऽप्यत्र पूर्णमादममार्ग स्यात्रैव्यं गत्मेधिकस्य पर्मसोच्येन विरचितेनमुपरोयमस्य मव्यानां गुरु प्रतमर्ज्यि स्वाम्यपेतिमनादिम कण्ठस्थिता गुमनोरममहामाणपुरुयेतम्मनिगन्नामरुपौ मेरमामकस्पयमाकीर्तिपानरतौ पुण्यमाला ततन्मेनमा नीविक्रमगुरवलदीविरूरयवाणेवम गमयन्तं छात्रसाह्रोरपरि च गैरामिकनामित्रात्रितस्यतोरीमाटीकम तर्हि मान्य मित्र !!!

अत एव धुरन्धरैर्विद्वद्भिः स्वमतिप्राग्भारफलेग्रहिताये सोत्कण्ठैरस्या विविधविवरणादिषु प्रयतितम्। चतुर्विधसत्त्वाप्याराध-
नाप्राणभूताश्चेमा नितरामतिशयितस्वाध्यायाविना प्रख्यापितवन्तश्चतुरतमा सुदीर्घदर्शिन गीतार्थवर्या।
परं साम्प्रतीना कतिपये विद्वद्वर्या ऐतिह्यसंशोधनरशि सर्वप्रमाणोपजीवकामत्यमूल्कागमप्रामाण्यं शिथिलयन्त दृष्टश्रुतग्राहि-
बार्हस्पत्यानुकारिण तथाकथितविद्वांस इवानुमानप्रामाण्य बाहुल्येनोपजीवयन्त सन्तो विप्रतिपद्यन्ते यत :—प्रस्तुतोपदेशमालाकर्तार
श्रीधर्मदासगणिवरा श्रीमहावीरप्रभुहस्तदीक्षिता न सम्भवन्ति, श्रीवीरप्रभुनिर्वाणत पञ्चशतवर्षभाविनीनामपि घटनानामत्रोल्लेख
दर्शनात्, एते एव प्रतिपादयन्ति यत् —श्रीउपदेशमालाया श्रीवीरनिर्वाणतोऽर्वाग्भाविना श्रीआर्यमहागिरि (१५२) श्रीआर्यसम्भूतिविज-
यशिष्य (६६) श्रीस्थूलभद्र (५९) चन्द्रगुप्तगुरुचाणक्य (१५०) पर्वतक (१५०) उपकोशा (६१) उदायिनृपमारक (३१) अव-
न्तिसुकुमाल (८८) तुरुमिणीयदत्तनृपमातुल-कालिकाचार्य, (१०५) वज्रस्वामी (४८–९३)त्येतेषामुल्लेखेनैतत्प्रन्थकर्तार उल्लिखित-
व्यक्तीनामर्वाक्तनकालभाविन इति स्पष्टतर प्रतीयते, ततश्च शाश्रूयमाण हि ग्रन्थकर्तृणा प्रभुमहावीरहस्तदीक्षितत्त्व न सङ्घाघटीति।
फलत आधुनिकै कैश्चित् विद्वद्भि एतस्या रचनासमयो वीरनिर्वाणाब्द ५२० तोऽर्वाक्तनीयघटनानुल्लेखात् वीर नि स ५२०
मितप्रायोऽभिमन्यते। पर वस्तुतत्त्वगवेषिकया समीक्षात्मिकया दृष्ट्या विचार्यमाणे चेदं सर्वं घर्मक्लिन्नहिमवद्विशीर्यते, यतः—
" जगचूडामणिभूओ० " संज्ञद्वितीयगाथाया युगादिप्रभो. सिद्धिस्थानस्थितत्वेन चूडामणिभूतता युगादौ च प्रकाशकत्वेनादित्यस्वरू
पता व्यावर्ण्य श्रीवीरप्रभो महनीयताव्यञ्जकाभ्या त्रिलोकश्रीतिलकत्व-त्रिभुवनचक्षुष्ट्वविशेषणाभ्या ग्रन्थरचनासमये जीवितत्वं स्पष्ट
मेव ध्वन्यते, वर्तमानकाले शोभावृद्धौ व्याप्रियमाणत्व एव तिलकोपमाया सार्थकत्वात्। भगवत तत्तत्पदार्थसार्थविवेचनकार्ये
साक्षात् प्रयुज्यमानत्वे सत्येव त्रिजगतश्चक्षुर्भूततायाश्च निर्व्याजं सङ्गच्छमानत्वात्। स्फुटतरश्चाय अर्थ व्याख्यातृचूडामणिभि पूज्य-
वर्यैं श्रीसिद्धर्षिगणिवरैर्हेयोपादेयाख्यवृत्तौ प्रारम्भ एव विवृतोऽस्ति। तथाहि—" xxx वीरे भगवति जीवति सति गुणस्तुतिरियं

मकरणमरेव भगवा पके भगवो जगत्प्रमभिमूतोऽमुना मुक्तिपदस्थितवध चतुर्दशरज्ज्वात्मकलोकस्योपरिवर्तित्वं वीरः पुनः प्रस्थोपसत्समास्थस्य त्रिलोकमौलिकमे भुवनलक्ष्मीमण्डनमिति भावः। तथाऽनयोर्मध्ये एव भगवो लोकशिखरो सुगतो प्रमाद एव निःश्रेयसविनोपहारेण प्रसार्योपवरेण निखिलस्वजनशरणत्वात्। एवं पुनर्वीरप्रभुः त्रिभुवनस्य। इदानीन्तनमनुष्यमूर्धाभिमानं भाषमाणस्तीति××" अस्य 'अनुगम्मय भगवं (गा ११) विपविविधस्स" (गा १४) गाथायुगरसार्थनिधारणात्पयतमर्थ व्यनक्ति च मनुजमध्यवर्तीनामनन्तमहत्तरतास्य नैजपादमुक्तसाभीपरिहृत्य विनयीभूतत्वमध्यापि विमथ्यत्वने प्रत्यक्षे दृष्टेनोद्दिष्टलक्ष्यस्य पञ्चसहृमिति। एवमग्रेऽपि 'पञ्चमीति य पुच्छर (गा ५७) 'बर पचअतृछाद्" (गा ५८) गाथयो मेर्मोपर्यावरण्य चरणविम्बमर्थान् उपसरणमानस रागमूर्छमूर्च्छाया दीक्षामसातोर्थपञ्चमहावीरवर्धमानस्वामिजीवितकल्प एव संभवोपसृप्तमनिमेषं मनुष्यशरीरसदृशमचे आद मचेतिष्यमुत्रां दृढीकरोति। तथा चेतत्प्रमथनं मनुजशरीरसमभाविकार्थं कृपणा-शरिसन्निवेश (१५६) ष्टमगाथयावेन संधाद् परिपादुमारब्ध इतिहासोल्लेखेन स्फुटतरं प्रतीयते यदागाथाकारैरपिनसूरिभ्यो हि श्रमणानां पोषणादृपरिचर्या सांसारिकं कार्यं। तदुद्देशेषु निष्क्रमणकल्पपरिभोगस्यानुग्रहात्तमेवासनादिमध्यमस्थानेषु च पोषणागारेषु सम्भूप्सितनिष्क्रमणपोषणपरिमाणं प्रदीप्तमेव। निष्क्रमणस्य पोषणपारणस्यपार्श्वसन्निधानपर्यनमेव हि मम्म तेजः मनुष्यशरीरस्य मराक्तिमत्त्वं स्थापयति।

तथा चास्मिन् प्रकरणे वीरनिर्वाणात् ५२ पर्यन्तीपकरणोल्लेखेन मथकर्तुरन्तर्भावरोक्तमावित्वमलनपेक्षस्य तु तेषामेव विमर्शनिष्पन्नत्वमुपजीव्यगविषमस्य वादीत्वानशात्मशीलपरमार्थपोषणप्रभिमस्य तदुक्तेनैवाभिमतसमहोत्सवेत्परोत्सुखलक्षणस्य युक्तिगम्य मतेन्। मूलपाठप्रयोगस्य सम्यक्तमविस्मयपरीक्षितस्य मथकर्तुलक्ष्मसमाऽनेकरीभनवसितो समर्थः आगमेषु हि स्थाने स्थाने एतादृशप्रयोगस्यानुस्मरत् गणधरो हि दीक्षाप्रेरणया निपतनमेव त्रिपदी प्रभुमुखात् समधिगम्य तन्मुखेनमा-

समेपागाचालगोपानां प्रतीतिचरमेव । तत्र च भगवतीसूत्र–ज्ञाताधर्मकथो–पासकदशाऽ
त्रैणैव सकला द्वादशाङ्गी प्रणयन्ति, इत्येतत्तु द्वादशाङ्गीप्रणयनकालार्वाक्भाविप्रसङ्गाना भूतकालीनप्रयोगसनाथा उल्लेखा
न्तकृद्दशाऽ–नुत्तरौपपातिकदशा–विपाकसूत्रादिषु च भूतकालीनप्रयोगैरपि निर्देशमात्रेण न तेषामुक्तिरवितथ-
सन्त्येव । अतश्चातिशयज्ञानवद्भिः स्वार्वाक्कालीनप्रसङ्गानामागमानुसारिशैल्या तथा चैपोपदेशमालाऽपि श्रीमद्भिर्धर्मदासगणिवरैरनागत
टनार्वाक्कालभावित्व सद्गुरुवाससमुपबृंहितसन्मतिवता धीमता प्रतिभासेत । विवेकसमुद्भातसज्ज्ञानविसर प्रपि-
ससारावस्थीयरणसिंहाख्यपुत्रस्य भाविनीं कलिमलसूचिका दशा परिभाव्य तन्मानसपरिमार्जनाय पडशीत्यधिकचतुश्श-
थयिपुभि निर्मिताऽस्ति । एतत्समर्थनश्च प्रस्तुतदोघट्टीवृत्तौ उपक्रमे एत्र प्रथमगाथावृत्तौ उपन्यस्ताया कथितमस्ति यत् —" कलिकालमाहिणा,
तगाथामिताया श्रीरणसिंहकथाया प्रस्तुतग्रन्थोत्पत्तिबीज व्यावर्णयद्भि श्रीरत्नप्रभाचार्यै अणागय चेव तेण मयडिया ।
विजयसेणमुणिणा विभावितेनाय । उवलद्धधम्मदासाभिहाणसारेण सगुणेहिं ॥ तुह पडिनोहणिमित्त अनु० उमेदचि० कोशे
सुगइ जिजासुणा सवुधणसमाला महासत्त ! ॥" उप० ( गा १ दोघट्टीगतरणसिंहकथा ) ४८५–४८६ श्रीउपदेशमाला 'बालाव-
ते ६ प्र ९ समर्थक्रियोद्धारक पू प श्रीसत्यविजयगुरूत्तसशिष्यरत्न श्रीवृद्धिविजयमुनिवरै लिखितस्य अवधिज्ञानइ आग
बोधस्य प्रान्त्यभागे एवमुल्लेखोऽप्युपलभ्यते, यत् —'xxxजे माटिं ताहरउ कलिनइ देखनउ कल्याणउ स्वरूप अतीत–
लयी जाणिनि श्रीधर्मदासगणिइ तुझनइ प्रतिबोधवानइ अर्थि ए श्रीउपदेशमाला कीधी कइxxxश्रीधर्मदासगणि विमाश्रमणइ
अनागतभाव अवधिज्ञानइ जाणी ए श्री उपदेशमालानी रचना कीधीxxx' । एतेनानागतकालीनपदार्थावबोधक्षमावधिज्ञानसम्पन्नपूज्य
श्रीधर्मदासगणीतिप्रसिद्धनामश्रीविजयसेनगणिवरैर्विरचिताया अस्या उपदेशमालाया केषाञ्चनार्वाक्कालीनानामुल्लेखमात्रेण प्रभुमहा-
वीरस्वामिहस्तदीक्षितशिष्यावतसकर्तृत्व न सङ्गच्छते इत्याधुनिकविदुषा तर्कः खलु न घटाकोटीमाटीकते इति निश्चप्रच प्रतीयते ।

---

१ एतत्प्रतिप्रान्त्यभागे चैवं पुष्पिका —'सूर्यपुरबंदरे गानक श्री यशोवि. प्रसादात् १७५५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ भौमे मनरूपसागरेण लिखिता'

सम्मत्यैव मम्बरुन्मानसमाणो वैमत्तुभिस्सितमस्ति यत् ।— सोऊम फायमिमं पम्मेय वामो रज्जमा वस्स । न य वमिमं वेरग्गं जाणिम वर्जसंघाणी ॥ ५१४ ॥ एषा गाथैव मम्मकर्तुरविसम्पनवतो स्मानयति प्रभुमहावीरसीर्यस्वसमकालीनत्वम् च नयति । यो हि विसिद्धाविसर्यमिमं विना या समर्थसद्गुणनिर्मितमन्तरेण सुलभत्वस्तावयोपशमसद्गुरुसमिमायसमुपलम्भ विविस्सरूपविशुद्धारसममेकम् वस्तिकुमपि प्रभुः ? । यो वा मधुरचनाया विशिष्टावयोपशमतो महस्याविसंपिमानवर्जेनाऽपि मावं गहुररसमूर्तं यच्च प्रेम्योर्यक्तुमलम् ? । भावकर्म हि पाविम्पविचायमेवनासूत्रे च मानाचारविचारव्यावर्णनप्रसङ्गे मम्मचरणमेवनार्थं भोम्भोसमत्तामनुत्पसिद्धान्ते —त्वावधरैरत्नकरनस्याठो पठनादेरपिपरत्वेन निरूपितमस्ति व्यम्मव एवा येन महुयमस्मस्त सिद्धान्तमावर्तं यदकर्तुः सान्निध्यान्तरमात् प्रभुमहावीरस्वतीर्थेऽस्याय मम्मयाऽस्य सिद्धान्तयवोचितीम येव । मस्यम कर्तुः प्रभुमहावीरस्वतीर्थेऽस्य समर्थकत्व इमानि च प्रमाणान्तराणि समुपलभ्यन्ते । तथाहि—१ मुखमागमसुधा सम्पत्परमतिप्रमुखमागमोद्धारकसर्वसममजीवितसाधनामूर्ति-समर्थमौलिकपुरुषप्रवरः प्रमाणस्मृतिपूज्याचार्य-श्रीआनन्दसागरसूरि पादा हि मयवारिमीतेमयम्राम्मर्तिर्मितोपदेशमालापरम्-पुण्यमालया वचोऽयवे मिश्रसमुत्तरमेवोविरचितम् यत् ।— ××× त्रिज गज्जनुयमवीषातु–मगवमहावीरवरकममनीमिर्सा धर्मदासगणिमि श्रीउपदेशमालाभिधं प्रकरणं प्रकटितं प्रागिति तदनुकरणेनमत्पुत्र सूरयोऽमुतोपदेशमालाभिधानमस्य××× २ पूज्यागमोद्धारकसर्व प्रमाणितोपदेशमाला (मूलमात्र) प्रतो सीर्यमगे एत्तु 'श्रीवीरप्रभुशिष्य श्रीमद्धर्मदासगणिकृते'-सुलिखितमस्ति । ३ मस्तुतोपदेशितोऽस्ति श्रीरत्नप्रभाचार्यो अपि द्वितीयाध्यायतो श्रीरा पुत्र मनमोर व्यमात्मव×××मानीमयमस्तुवपत्मूर्तमममार्यमानप्रमात् । एवं च तीर्थकरोमवस्य शुभोपदेशेन प्रकरणरचने भगवति महावीरे विद्यमाने प्रकरणमिदमकारीति भवना मत्यमासः×××' एतुस्सेवीन सुरसमापापितपक्ष मम्मकर्तुः प्रभुमहावीरसमकालिकत्वं । ४ तथा ५११ गाथायो प्रकरणसङ्क्षेपनिर्दिष्टेन समर्थेमाप्येवसमर्थ्ये तथाहि ।— ×××भोविजयसेनमपुरायो×××परमेश्वर-श्रीमहावीर (पारम्येन) हस्तरपेण प्रत्याय×××वीयतो । ×××विमानमपोऽनुपमनिधामासधर्मदासगणिनमनवेपोऽपविमानी×××तीर्थहरस्येवा

सिद्धेनाध्ययनप्रबन्धविधित्सुरचभिना स्वपुत्रस्य प्राप्तस्वकीयराज्यस्य भाविनी कलिकल्पनामालोक्य प्रतिबोधविधानाय यथार्थोपदेश-
मालाप्रकरणमुत्पाद्याङ्गकार, पाठयाञ्चकार च पुत्रप्रतिबोधसन्निमित्ते तन्मातुलकगोत्रेण यथासमये समेत्य कलितकलितः स्वयश्री-
यस्त्वया प्रतिबोधनीय इति ' इत्येतत्सर्वं 'वृद्धानामुपदेश' इति ग्रन्थोल्लिखितमस्ति । 'अभिधानराजेन्द्रकोशे' भा. ४ पृ. २७१९
'धम्मदासगणि'-शब्दे एवम्भूतोल्लेखः दृश्यते तथाहि —'xxx अनेन भगवता 'उपदेशमाला' नाम ग्रन्थो रचितः। अयमाचार्यो
वीरप्रभोरपि पूर्वं बभूवेति प्रसिद्धि जे ३ । तथा चाहुः प्रतिकृतसकलकल्याणोद्धृतालभिधा धर्मदासगणिलिसा' प २०, तयाऽप्राग्
भगवान् धर्मदासगणि दर्श० ४ तत्व ।' एतेनास्या उपदेशमालाया कर्तुः श्रीधर्मदासगणीन्द्रस्यातिप्राचीनत्व प्रभुमहावीर-समकालीन-
नत्वसम्भावनाया पोषणञ्च ध्वन्यते । ५ निर्ग्रन्थि० (चाणस्मा) सत्ककोशे ने ४० प्र ११५ तपागच्छाधिराज-श्रीसोमसुन्दरसूरिशिष्य
श्रीमुनिसुन्दरसूरिक्रमाम्भोरुहभृङ्ग हर्षभूषणगणि १४८६ वर्षे रचिते अञ्चलमतमदुरस्वरूपे श्रीश्राद्धविधिविनिश्चयाख्यप्रकरण-
ग्रन्थे पृ १५ स्पष्टतरमुट्टङ्कितमस्ति । यत —'xxx उपदेशमाला च सर्वेषां प्रमाण तदुक्तानीनां मध्येमुख्यत्वेन क्रियमाणत्वात्,
स्वपुत्ररणसिंहप्रतिबोधनार्थं श्रीमहावीरहस्तदीक्षित-श्रीधर्मदासगणिकृता गाथोति धर्मदासगणिकृताचापुराय' । ६ निर्ग्रन्थि०
चाणस्मा कोशे वे २० प्र ४४ अष्टाविंशतिपत्रात्मिकाऽतीवप्राचीना उपदेशमालाया श्रीसिद्धर्षिविवरणप्रतिरस्ति । सभाव्यते नैतदेव
विवरण श्रीसिद्धर्षिकृत-हेयोपादेयावृत्त्यपेक्षया लघुवृत्तित्वेन प्रथित भवेत् । अत्र चासौ २ गाथाविवरणे 'xxxअद्यापि वीरं जीवति
सति गुणस्तुतिरियं प्रकरणकृता कृता च कृxxxअधुना वीरजिनो कीर्तितः प्रत्यक्षत्वात्xxxत्रिभुवनस्य, आधुनिकजन्तुप
ज्ञुर्भूतागमार्थोxxx'इत्यादिसन्दर्भेण सुतरा स्पष्टतर उपदेशमालाकर्तुः प्रभुमहावीरसमकालीनत्व व्यज्यते । ७ नि भ चाणस्मा वे.
११७. प्र ५९४ वि. सं. १६९४ वर्षे फा सु १० भौमे तपागच्छाधिराजभट्टारकप्रभु श्रीविजयानन्दसूरिविजयराज्ये सकल
पण्डितसभाशृङ्गार प श्रीधनहर्षगणि शिष्य प रत्नविजयेन लिखितस्य श्रीउपदेशमालावचूर्णिक-प्राकृतस्योपरस्य ३९ पत्रात्मिकप्रतौ
प्रारम्भ एव द्वितीयगाथायाव्याख्याने 'xxx अनङ्ग प्रत्यक्ष उपलक्षणाण भणी श्रीवीर त्रिभुवनलक्ष्मीभवन जाणिउxxx' इत्याद्य-

प्रतयेव समुपलभ्यते । ८ श्रीस्थेरापि कोषे ज्ञानस्य. पे १ म १० पं १४९९ वर्षे द्वि. आषाढ व ११ सोमे लिखिता ७० पत्रात्मिका ज्योतिष्करण्डक-सावचूरिकोपलभ्यते । तत्र च द्वितीयपत्रस्य प्रान्तभागे- ×××श्रीआदिनाथ प्रसादात् प्रसादतु एएह गुरु ×××यकाई श्रीमहावीर देवाई शासन हुआ वर्षतां यावत् ××× इत्युल्लेखम् । प्रान्तभागे च लघुतरमुद्रितस्येदम् यत् ।— ×××श्रीधर्म- प्रसादिता वचनमाहि दोष सर्वथा नहीं पूर्वगुरुना महुवामध्ये प श्रीतपगच्छमाम श्रीमहावीर जीवना लिपनी, तेह मणी श्रीसिद्धस्य माग यामिनी××× इत्येते एवादीनां प्रामाण्यवरैर्निवासमेयर्द्दरीक्रियते पतिगुणरत्नमाला श्रीमहावीरपरमात्मतदुत्तरीणाविशेष धर्म- सागरेण मातिमस्यसत्त्वोदितपविधर्मविज्ञयपत्रमवमेत्पृहिता विरचितेति मात्र प्रथम बहुलेहमिदम् ।

## । गाथासङ्ख्याविचारः ।

यद्यपि ज्योतिष्करण्डकप्रमाणं प्रस्तावनायामिदं ह्येव प्रथमम् (५४२) गाथासंख्या 'गमाले सम्माले पंचसया पेव बायाला' इति चत्वारिंशदधिकमप्रमाणमिदं निर्दिष्टम् तथापि समयोपलभ्यमानासु प्रति-पुस्तकेषु इयत्संख्या पंचाशं च गाथासंख्याधिक्यं दृश्यते । यथाहि ।—सम्पतीर्थीय-श्रीमुनिकलाचार्यश्री-कोषे (पे ७) ज्योतिष्करण्डक (सं १००२) लिखितस्य ५४ प्रमाणं दृश्यते । मोहनलाल दलीचंद देसाई संपादितश्रीजिनविजयमुनिप्रतिप्रमत्तसहर्षिते 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' ग्रंथमध्ये (पृ. २१-२२) ज्योतिष्करण्डकविवरणप्रसंगे ५४ गाथा निर्दिष्टा । परमेव सामान्यतः ५४१ गाथासंख्यामुपलभ्यमानासु प्रतिषु निर्दिष्टा प्रतीयते न स्वतन्त्रमिति व्याख्यायते । तथा जिनरत्नकोषे (पृ. १५) ५४२ गाथाप्रमाणोल्लेखः । स्तम्भतीर्थशान्ति० कोषेऽपि ५४२ जैन ग्रन्थावलीप्रकाशितग्रन्थावली (पृ १०२) कोमदी (सं १५८०) ५४१ गाथाप्रमाणोपलभ्यते । श्रीसरस्वतीकोषे ५४१ गाथामितम् । एक प्रति (सं सं १४८) तथा भाण्डारस्य नीति भाण्डागारे प्रतिवृत्ते (पे. २ म. ४१ ४४) प्रतिः । तत्र गाथाङ्कोपरि गाथाप्रमाणं मात्रं ५४४ मितं प्रसिद्धं प्रतीयते । अनेकत्र तारतम्यानां गाथासंख्योपलभ्यते । यथाहि ।—भाण्डार कोषेऽपि संभवे (पे ६) प्रति

१०२-३-२८-२९-प्रतिद्वय, स्तम्भतीर्थे शान्ति० (वे ११) एका प्रति., तथा (वे. ११७ प्र. ५९३-९४) प्रतिद्वय, स्तम्भतीर्थे शान्ति० (वे ११) एका प्रति., तथा १०२-३-२८-२९-

चतुष्क। नीतिवि० संग्रहे (वे. ११७ प्र. ५९३-९४) प्रतिद्वय, स्तम्भतीर्थे शान्ति० (वे ११) एका प्रति., तथा १०२-३-२८-२९-
चतुष्क। नीतिवि० संग्रहे बाहुल्येन ५४४ गाथा। जैन ग्रन्थावली (पृ १७१ निर्दिष्टा) मध्ये एका प्रति.। लींबडी-
३० सङ्ख्यमञ्जूषकेषु पञ्चदशप्रतिषु प्रायः बाहुल्येन ५४४ गाथा। जैन ग्रन्थावली (पृ १७१ निर्दिष्टा) मध्ये एका प्रति.। लींबडी-
स्थकोशे ६४९-७४८-८६८-११०२-२८-२९-१४२४-१५३८-१६०७-१७१७-३४२४ सङ्ख्या प्रतय ५४४ गाथाप्रामाण्यभाज.
सन्ति। पूज्यवर्यागमोद्धारक-सम्पादितमूलमात्र उप०-श्रुतज्ञानअमीधारयोश्च ५४४ गाथा। लींबडी० (म. १३०३) चाणस्मा-
उमेद० संग्रहे (वे ६. प्र ५.) च ५४५ गाथाप्रमितोपदेशमाला दृश्यते। एवञ्चाधुनिकसाहित्यसृष्टौ उपदेशमालागाथावैविध्य-
मुपलभ्यते। तथाहि :—खभात-शां० ता० भ लींबडी, जैन-साहित्य-इतिहासादिषु ५४० गाथा। जिनरत्नकोश-ख शा ता भं
लींबडी भण्डारद्वय,-जैन ग्रथावल्यादिषु ५४२। लीं चाणस्मा नीति० समहयोः ५४३। चाणस्मा उमेदवि० ४, नितिवि० २,
खभात शा० ६, जै म. १, लीं. भ. ११, पू. आगमोद्धारक-प्रकाशितमूलप्रति. १, श्रुतज्ञानअमीधारा १, ५४४। लीं. उमे-
दवि सं १ ५४५ गाथाः। परमेतत्र ५४४ गाथाप्रमाण प्रामाणिकतर दृश्यते, बहुश उपलभ्यमानत्वात्सुविहितगीतार्थाचरितमर्या-
दाङ्कितत्वात् युक्तिसगतत्वाच्च, तथाहि —"इय धम्मदासगणिणा, जिणवयणुवएसकजमालाए। मालव्व विविहकुसुमा, कहिआ य
सुसीसवग्गस्स ॥ ५४० ॥ संतिकरी वुड्ढिकरी०, ५४१। इत्थ समप्पइ इणमो० ५४२। जाय य लवणसमुद्दो० ५४३ ॥ अक्खर
रमत्ताहीण जं चिय पढिय अयाणमाणेण। त खमह मज्झ सव्व जिणवयणविणिग्गया वाणी ॥५४४॥" एतस्मिन् उ० गाथाप्रबन्धके
वस्तुत सापेक्षभावेण विचार्यमाणे विवक्षावशादल्पाधिक्यसभवो जाघटीति, यत :—ग्रन्थकृद्भिरुपदेशरूपविषयसमाप्तिस्तु त्रयस्त्रिंश-
दधिक-पंचशततमगाथयैव कृताऽस्ति, ततः पर गाथात्रयेन प्रस्तुतप्रकरणस्य सारमयता सूचिता, ततश्चैकगाथया ग्रन्थोपसहाररूपेण
पकरणज्ञानसफलता वर्णिता, तदनन्तरीय ५३७ गाथायाञ्च ग्रन्थकृद्भिर्निगूढाक्षरपद्धत्या स्वाभिधेयससूचा विहिता, जिनवचनम-
हस्य कल्पवृक्षौपम्येन निदर्श्यैतत्प्रकरणाधिकारिण सूचिताः। तदनन्तरञ्च ५४० तम गाथाया पुन ग्रन्थकद्भिः स्वाभिधेय व्याकुर्व-
द्भिरुपसंहार कृतः। अत्र चैव वितर्क्येत यदि तर्हि नासङ्गतं यत् :—ग्रन्थकृतः स्वाभिधेय ५३७ तम गाथया गुप्तरीत्या वर्ण-

कृत्वा स्वकृतौ [illegible] सन्ता पुनः गाथाद्वयमस्यामेव स्वनामसहस्रे सहरूपमे [illegible], [illegible] किमिति ? अत्र यदा गाथां पाठकेन केनापि प्रक्षिप्तमभिमन्यामिथ्यावासीकृता 'संखिप्ते' ५४ तथा यदि स्वीक्रियते तर्हि सर्वं सुस्थं भवेत्, एतत्र [illegible] दुर्गं समस्स गाथायां गाथाप्रमाणसुखमपि सङ्गतं भवेत् [illegible]-[illegible] अपेक्षत ? । अतः दुर्गं समस्स गाथां प्रक्षिप्तमभिमत्य [illegible]५४ [illegible] प्रतिभाति । एवञ्च प्राङ्निर्दिष्टानां ५४ गाथाप्रमाणोल्लेखप्रवीनां प्रवीनां मामान्य [illegible] पूर्ति[illegible] न भवेत् । संखित्ते दुरुक्खिते गाथाप्रक्षिप्तां स्वीकृत्य [illegible] गाथामेव चरमां गाथां विकल्प ५४२ गाथोल्लेखोऽपि प्रमाणिकतर एव रक्ष्यते । [illegible] मध्यस्थ मध्यवर्त्तिप-[illegible] हि ५४१ गाथोल्लेख इत्यनुमीयेत तर्हि वरं ! यतः ५४१ गाथास्वपि चरमग[illegible] एवमेवोपलभ्यते । ५४५ गाथासङ्ख्यायामपि पूर्वोक्तप्रक्षेपस्य [illegible] गाथाद्वयमेव प्रक्षिप्तमात्र [illegible] करणीया । [illegible] हि ननु एवमत्र बोद्धव्यो यत् ५४४ गाथाप्रमाणे गाथाद्वयप्रक्षिप्तत्वेन न्यूनाधिक्यं वा नहि कल्पनीयं [illegible] अनेकत्र च पुस्तकेषु स्वनाम्नां गाथाप्रमाणस्योपलभ्यमानत्वात्तस्य [illegible] ५४४ गाथाप्रमाणं सुनिश्चिततरं सुसङ्गतं प्रामाणिकञ्चेति सुनिश्चीयते ।

अथ [illegible] यस्या [illegible] प्राक् निर्दिष्टा [illegible] विवरणकृतः [illegible] विप्रसाः [illegible] अस्तूयते ।

[illegible] प्रसिद्धेयं हि वृत्तिः [illegible] श्रीपद्मप्रभसूरिकृतेः [illegible]–[illegible] [illegible] अनुसारेण गाथार्थपद्धतिं [illegible] विशेषचूर्णिरूपमियं [illegible] वि सं १२१८ [illegible] [illegible] निर्मितवत्

सर्वं घृत्तिप्रान्तभागे प्रशस्तितोऽवगम्यते । घृत्तिप्रणेतारो हि रत्नप्रभाचार्या परमोत्कृष्टसंयमाराधनापरायण–शासनप्रभावक-सकलशास्त्र-
पारावारपारीण-श्रीमुनिचन्द्रसूरिपट्टप्रभावक–प्रखरतपस्वि–वादकलानिपुणाऽऽशाम्बरीयदिग्गजवादिगदोन्माथि–पूज्याचार्यश्रीदेवसूरिप्रमुपट्टा
वतसभूता' सन्ति । अत प्रथम श्रीमुनिचन्द्रसूरीणां ततश्च वादिदेवसूरीणामैतिह्यज्ञानमावश्यकम् ।

प्रभोर्महावीरदेवभगवत पट्टपरम्पराया श्रीसर्वदेवसूरि(द्वितीय)पट्टे एकोनचत्वारिंशत्तम पट्टधररूपेण श्रीयशोभद्रसूरि–श्रीनेमिचन्द्रसूरि-
सज्ञितौ गुरुभ्रातरौ सूरिवर्यौ सञ्जातौ । वीरगणिरचिताया ७६७१ श्लोकप्रमाणपिण्डनिर्युक्तिघृत्तेरसशोधनकारिभि श्रीनेमिचन्द्रसूरिभि
स्वगुरुवर्यप्रदत्तसूरिपदाङ्कितगुरुभ्रात्राष्टकत श्रीविनयचन्द्रोपाध्यायशिष्यश्रीमुनिचन्द्रसूरिभ्यो गच्छभार योग्यतानुरूपं ददुः, चत्वारिंशत्तम
पट्टधररूपेण तेषा प्रथितिश्च कृता । यत उक्त :—

'गुरुबन्धुविनयचन्द्राध्यापकशिष्यं स(!)नेमिचन्द्रगुरु । य गणनायमकार्षीत्, स जयति मुनिचन्द्रसूरिरिति ॥ उपा० धर्मसागर० पट्टावली ।'
इति निर्णीतम् । इमे हि सूरिवराः

एवञ्च सुगृहितनामधेया हि पूज्यवर्या श्रीमन्त मुनिचन्द्रसूरिवरा' चत्वारिंशत्तमा पट्टधरा इति निर्णीतम् । इमे हि सूरिवराः
बालदीक्षिता' अकुण्ठब्रह्मचारिण सत्तर्ककर्कशप्रमाणशास्त्रवादतत्त्वादिदुर्बोधपदार्थसार्थमर्मस्पर्शिज्ञातार अत्युत्कटविशुद्धसंयमपालनपरा-
श्चासन् । एते सूरिवर्यै भवावटपातप्रत्यला दुरवगाढभवसमुद्रमीपणावर्त्तसमा षडपि विकृतय मोहोत्पादविकारोत्पत्तिप्रभूष्णव इति
सम्यगवबुध्याजीवनं षण्णामपि विकृतीना सर्वथा परित्यागः कृत आसीत् । रसास्वादघृत्तिनिग्रहाय च सौवीरापरपर्यायभूता काञ्जिका-
मेव शरीरयापनाय जगृहुः, अतश्चेतेषा 'सौवीरपायी'तिशरीरनिरीहताप्रकृष्टत्यागितासूचकमर्थानुगुण नाम विद्वत्समाजोपाङ्गणोपाङ्गनं
प्रथित जात, तथाहि —

'सौवीरपायीतितदेकवारि–पानाद्विधिज्ञो विरुदं बभार । जिनागमाम्भोनिधिधौतबुद्धि–र्ये' शुद्धचारित्रिषु लब्धरेख' ॥
संविग्नमौलिर्विकृतिश्च सर्वास्तत्याज देहेऽप्यमम सदा य । विद्वद्विनेयाभिघृत प्रभाव–प्रभागुणौघैः किल गोतमो य' ॥ तपा० पट्टा० ।

पूज्या हि सूरिपुङ्गवा अतिमुक्तस्मरवक्षतिमत्र आसन्। एकदा मदीयेऽत्र चैत्यविचित्रविषयेऽहिहपुरपत्तने समागता आसन्। तत्र च सत्पंकजुरुममानसं हारिभद्रतिरक्तनमम्पयमानायम् 'हारिभैवाख्यातिसूरिचर्यान्' वन्दिता प्रमामसम्मयाचनामन्मयीकपार्श्वे उपविष्टा, मया च तेऽनुपक्रमसमाननरूपा अद्यावरूपेणैव प्रमाणप्रज्ञानानुभवमतेषोधसमस्य वाचनं दृष्टम्। अत्यन्तदुष्टममा सम्पत्सार्थानां सुमिलं प्रमादस्तं प्रपञ्चन कृपापि शिष्यप्रमनसमारितपुर्णाम–परमर्थममनुष्य गुरुमपि मसमनिहुनम्यार्थं पुरस्तस्य आमिमम्प्रणमानोः विनिर्मिता स्वयम्। तथैव सूक्ष्मावधारणप्रत्यक्ष–विशिष्टपदुमारम्याशसितसम्पन्नैः श्रीमुनिचन्द्रसूरिभिरपीव चिनयमावेन विज्ञप्तं मम् प्रभो! तत्रभवतो पार्श्वे पुस्तकानि मयूख वाचनार्थे समानयत एव प्रवरदानाधिकारिण ! तथाप्येऽपि ! इत्येवं गम्भीरसूक्तवचनमाविं श्रुत्वा वर्णितो हारिभैवाख्यसुरभिः सम्मतो मत्पार्श्वे कृपयाविनिहितपीयूषमाम्मतपवरिसुगुरुसुगुरुसस्य व्यक्तिविशेषमूक्ष्मपयसः प्रविदिवसीमानव्रत आविर्भ एतानपवारणसामर्थ्ये श्रीमतां प्रस्तावितप्रसादपेयोमि हारिभैवाख्यसूरिवर्यैरतिसम्मानपूर्वकं तत्सविषो संस्थाय प्रमाणस्वकत्व विविधप्रकरणपरिपोषऽभ्यासा सोत्कण्ठं कारिता। एतेन च प्रसङ्गेन श्रीमतां स्मरणतिरुपितमगुणमन्सी विशतुरमयैर्हारिभैवाख्यैः चारित्रस्य प्रमाणशास्त्रसुसूक्ष्मतत्त्वाभ्यासपरेण पूज्यश्रीहरिभद्रसूरिवर्यैरचिता-नेकमन्त्रपरम्परा–अतिविस्तृतदिनैकविषुवीयमत्न्वमाख्यापरिष्कृतया सर्वं हारिभद्रियोगमिति सर्वम् भवति। उक्तं च—

"हरिभद्रसूरिरचिता श्रीमदनेकान्तजयपताकेयम्। व्यवनग्र विपुलानामप्यनुपा दुर्गमा येऽत्र ॥

सत्पञ्जिकाविरचिता–विरचना या ममाका कृत्व येन। सत्यविषयमपि सुगमास्ते सर्वे विरचितिमुरूपा ॥" यथा पञ्च

तैः विरचितं साहित्यमेतदुपलभ्यते तथाहि।—१ दैवेन्द्र–नरकेन्द्रवृत्तिः। २ सूक्ष्मार्थसार्थसप्तकचूर्णिः। ३ अनेकान्तजयपताका-वृत्तिः। ४ श्लोकवार्तिकः। ५ सर्वज्ञसिद्धपञ्चाशिकावृत्तिः। ६ धर्मबिन्दुवृत्तिः। ७ कर्मप्रकृतिटिप्पनकम्। मैत्रप्रमाण (१२ श्लोकप्रमाणा) वृत्तिः। तत्त्वतरङ्गिणीव च अनुमन्यानां विशतिश्च एतदुपलभ्यते तथाहि।—१ आवश्यकसप्तिका २ आवश्यक-

(पाक्षिक) सप्ततिका, ३ वनस्पतिसप्ततिका, ४ गाथाकोश, ५ अनुशासनाङ्कुशकुलक, ६–७ उपदेशामृतकुलकद्वयम्, ८ उपदेश-
पञ्चाशिका, ९–१० धर्मोपदेशकुलकद्वयम्, ११ मोक्षोपदेशपञ्चाशिका, १२ प्राभातिकस्तुति (संस्कृत) १३ रत्नत्रयकुलक १४ शोक-
हरोपदेशकुलक, १५ सम्यक्त्वोत्पादविधि, १६ सामान्यगुणोपदेशकुलक, १७ हितोपदेशकुलक, १८ कालशतकं, १९ मण्डलविचार-
कुलक, २० द्वादशवर्ग । अत्र च द्वितीया कृति 'पाक्षिकसप्तति' सञ्ज्ञया पूज्यवर्यै. दर्शनशुद्धि-प्रमेयरत्नकोशनिर्मातृ-श्रीचन्द्रप्रभाख्य-
स्वगुरुभ्राता वि स ११४९ वर्षे उद्भावितस्य पूर्णिमामतस्य निरासार्थं सन्दृब्धास्ति । तथा चैतिह्यविद्यानिपुण-मुनिश्रीजयन्त वि.
म सङ्कलिते श्रीशङ्खेश्वरस्तवनावली-लघुपुस्तके पृ १३३ समस्तकल्याणनिधानकोश० इत्यादिदशगाथामित श्रीसखे० पार्श्वनाथ
स्तोत्रमन्यत्रकुत्राप्यनिर्दिष्टमनुपलब्धञ्च तदपि पूज्याना कृति । अपर च जैनग्रन्थावली (पृ ३४१)मध्ये 'रमाउला'ख्या प्राकृतसुभाषितकृति.
पूज्यवर्याणाँ नाम्नोल्लिखिता यस्या हि एकादशपत्रात्मिका प्रति राधनपुरभण्डारेऽस्ति, अप्रसिद्धा तेषा समीक्षापूर्वक गवेषणीया विद्वद्भिः ।
तपा० पट्टावल्ल्या तेषा स्वर्गमनकालो ऐव निर्दिष्ट', उक्त च '—

"अष्टद्वयेश (११७८) मिताब्दे, विक्रमकालादिवगते भगवान् । श्रीमुनिचन्द्रमुनीन्द्रो, ददातु भद्राणि सङ्घाय ॥"

प्रात स्मरणीयानामेतेषा विशिष्टो हि निर्मलावदातोदन्त पूज्यवर्याणा पट्टप्रभावक-शिष्यावतंसै वादीन्द्रश्रीदेवसूरिभि सन्दृब्धाया अपभ्रंशभाषानिबद्धाया श्रीमुनिचन्द्रगुरुस्तुतितोऽवसेय, या च स्तुति श्रीजैन श्वे कोन्फ० हेरल्डाख्यमासिके (पु १३ अं ९ पृ ३२४ त ३३५) मुद्रितास्ति ।

श्रीमुनिचन्द्रसूरीणा स्वर्गगमनानन्तर तेषा पट्टोदयाचले भास्वत्सूर्यसमा' श्रीमन्तो वादिदेवगच्छत्तमा निजोर्जस्विवादकलयाऽऽशाम्य-
रीयदिग्गजवादिनिग्रहेणावाप्तप्रोज्ज्वलयशस्विन सुगृहीतनामधेया श्रीदेवसूरय सञ्जाता । एतेषा हि जन्म वि स ११४३ वर्षे अर्बु-
दगिरिप्रत्यासन्ने मडाहृतग्रामे समजनि । ११५२ वर्षे दीक्षा, ११७४ वर्षे आचार्यपद १२२६ वर्षे स्वर्गगमन चाभूत् ।

एते हि सूरिवर्याः [illegible] सन्तः सूरिपदप्रतिष्ठा[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिमया विजित्य [illegible]। तथा च [illegible] [illegible] [illegible]सूरि–[illegible]–[illegible]सूरि–श्रीमहेन्द्र[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समुपस्थे [illegible] [illegible] च [illegible] [illegible] विजये सम्प्राप्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पूज्यपादाः [illegible] सूरिवर्याः। [illegible] [illegible] [illegible]।

श्रीमहेन्द्र[illegible]सूरिणां [illegible] [illegible] यं तेषु गुरुक्रमेण [illegible] इतिहास' इति [illegible] [illegible] [illegible] 'किं पुण्यं मनसु यत्र इति श्लोकेन च [illegible], ते हि [illegible] 'श्रीमहेन्द्रसूरयः' [illegible] पूज्यपादाः श्रीरत्नप्रभसूरयश्च विशेषेण प्रसिद्धाः सन्ति। एतेषु श्रीमहेन्द्रसूरीणां चारि[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] श्रीमहेन्द्रसूरय[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]–श्री[illegible]सूरि[illegible] (श्लो० २८१–२८४) सं० १२११ वर्षे महेन्द्रसूरिभ्यो गच्छभारं समर्प्य [illegible]।

■ [illegible] [illegible] (पृ० १ ) ** [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

प्रागव्यावर्णितमहत्त्वभाज उपदेशमालाप्रकरणस्य दोघट्टीसंज्ञया प्रथिता विशेषवृत्तिर्यल्लु ११९५० श्लोकप्रमिता इमे निहन्मतद्रजे
श्रीरत्नप्रभसूरीन्द्रै: वि. सं १२३८ वर्षे माघमासेऽश्वावबोधतीर्थरूपश्रीभृगुकच्छे आबालवृद्धविद्वज्जनानामुपयोगिनी दृष्टान्तप्रचुरा
परमभावकरुणार्द्रचेतसा निरमायि। इमे हि रत्नप्रभाचार्याः अतीव सूक्ष्मप्रज्ञा तार्किकोत्तमा विद्वद्गणप्रष्ठा आसन्निति खलु नादिदेव
सूरिभि स्याद्वादरत्नाकरे (पृ. ५१)—

'किं दुष्कर भवतु तत्र मम प्रबन्धे, यत्रातिनिर्मलमति· सततामिमुख·।
भद्रेश्वर· प्रवरसूक्तिसुधाप्रवाहो, रत्नप्रभश्च भजते सहकारिभावम्॥'

इत्युल्लेखेन निष्टङ्कित निस्संशयमिति मे मति·। श्रीरत्नावतारिकापञ्जिकाया श्रीरत्नशेखरसूरिभिरपि '×××श्रीरत्नप्रभसूरिभि.०' श्लोकेनैतद्वृत्तिविधातृणा महत्त्व व्यञ्जितम्। "प्रज्ञात पदवेदिभिः स्फुटदृशा सम्भावितस्तार्किकैः, कुर्वाण· प्रमदाद् महाकविकथा सिद्धान्तमार्गाध्वग। दुर्वाद्यङ्कुशदेवसूरिचरणाम्भोजद्वयीषट्पद·, श्रीरत्नप्रभसूरिरल्पतरधीरेता व्यधाद्वृत्तिकाम्॥" रत्नावतारिकाप्रान्तभागीयेनैतेन श्लोकेन मिथ्यामवाप्लावितवाग्विसरशङ्कालेशोद्भावना कार्या, यथायथ माध्यस्थ्यवृत्त्या रत्नावतारिकागतसुरम्यसाहित्यिकपद-
पद्धति-गहनपदार्थनिरूपणरवरसवाहिशैलिप्रभृतिसमीक्षणेन प्रमाणीकृतवैदुष्यवत ग्रन्थकृतो यथार्थाक्तिमत्त्वाव्याघातात्।

एतेषा रत्नप्रभसूरीणा जन्मादि प्रामाणिकसाधनानुपलब्धेरज्ञातचर एव, वस्तुत महाभागपुरुषोत्तंसाना मौलिकशक्तिविकासरूप-नानाविधसत्कार्यजात तद्गुणगानमेव चातिशयेन प्रथित भवति, अत एव नानाविधेषु सैद्धान्तिकग्रन्थेषु श्रीमतां रत्नप्रभसूरीणा विद्वत्त्वमेतद्विरचितप्रस्तुतवृत्तेश्च प्रामाणिकत्व ख्यापयमाना विविधा उल्लेखा दृश्यन्ते, तथाहि —श्रीकुलमण्डनसूरिप्रणीतश्रीविचारामृत सारसङ्ग्रहे (२३ पत्रे) "×××उपदेशमालावृत्तौ ××× श्रीरत्नप्रभसूरिकृतायामेवमर्थोऽस्ति ×××" तथा चाग्रे (२७ पत्रे) चतुर्दश्या पाक्षिकस्य नैकशास्त्रसम्मततां दर्शयद्भि ××× "श्रीरत्नप्रभसूरिभिरुपदेशमालावृत्तौ" इति शब्दैरपि प्रस्तुतवृत्ते· विशिष्टत्वं ख्यापितम्। अन्यच

श्रीमन्नमिजिनस्तवप्रकरणे (वामस्तवमनुप्रियतमवति) परेविषे विमाऽपि योपयमद्गुपमावोसमपनि xxx 'पवे दोषड़ी—स्तोत्रमस्य पूर्वार्थ xxx' इत्यादिरूपेण मनुप्रसुस्तेनोऽस्ति। तथा धामेऽपि (१६–१७ पत्रे) विलसो हि इत्यत्र स्तवेन xxx श्रीरत्नप्रभसूरिविरचित दोधड़ी—स्तोत्रमालानुविमन्मुद्रेति—पाधिकविधि xxx' इत्यादिप्रकारेण स्तवेन समुपलभ्यते। एवमिदमनेकविधमिनाऽप्रत्यमनिवेरितैः पत्रमालयैरपि विधपिमालीये तम्यगुम्फश्च विविधं साहित्यं निर्मितमिति मान्यतास्वतीर्गितप्रविसप्तम्प्रकर्षेण पुरस्कोसेवैरौ प्रतीयते तथाहि:—भवपरीषापपालती श्रीनेमिजिनचरितं प्राकृतं गद्यपद्यमयं (प्रन्था० १२१ ) श्रीकृष्णपमास्य मं २८९४ (संलग्न) (पृ टि) श्रीमुनीन्द्रचरित्रसंलेख (विषमपदपर्यायस्या) (वि मं) श्रीपार्श्वचरित्र समासतवदवलब्या (मं ९५७) सम्यक्त्वसप्तिका (गा १ १)। एतेन प्रस्तुतविकृतिः विविधमाषासु मान्यविषयोपयोगितादित्वनिर्माणपथकं पुरस्तात् प्रतीयते।

तथा पादविसर्गकसौर्णविस्तरस्तवन—रघुलवर्ष विरचितोत्थानमरत्नाकरम्याकरमप्रपवविस्तो विशिष्टपदव्यासगुणमप्रसोत्तम सम्यगुणसारीविधिनाम्मूलप्रमुक्तसाहित्यस्वस्वविभावितं विशिष्टरतिमयनप्रमाणममेवसुपंकपावपरिपूर्णी श्रीरत्नाकरपरचरित्रं विरच्य श्रीमद्भिः सर्वतोमुखिकम्पविमावन रसमागमिकरकृति सद्भावो विख्यात। एवंविधसारैश्रीमत्विरताऽपिवेरितः सूरिवरैः निरन्तरं आत्म-चरणविम्ब मानिमात्रदिवचरितया श्रीरत्नशेखरमाजना विविधमानसमीरवे समति गुरुपाठनाकपमामिविर्यविस्वेपस्त गाथासु दृश्यते श्रीरेसूरिममये। निर्धिष्टं वतस्मकापुरस्वानं सुमतश्रीपनवरित्रायाम सुगमवयाधिगतार्थे प्रस्तुतपूर्तिमपवने परमप्रियेषुतनेनापि, 'श्रीरत्नप्रभसूरिणा हृश्यते श्रीरेक्सूरिममये। सिम्पेव मेघमथारि सम्मवत्से वृत्तिविक्षेपाभिमतम् ॥" (प्रस्तुतमम्श्रीप्रशस्तौ) 'वृत्तिविक्षेपाविश्व' मिति-पदेनैवास्य वृत्ते विशेषवृत्तिरितिमिधानं प्रमाणमिमतं प्रतीयते। अपमन्यतारे विहारसमाजे च बहुशोऽस्य दोघट्टीति संज्ञया व्यव (हित्)संज्ञकतो श्रीरत्नप्रभाचार्येरपि, भवत्वपुष्पमेघरूपोऽयोऽपि नामेति। श्रीजीवानुशासनप्रकरणवृत्तावपि दोघट्टि

वसतिपासे, श्रेष्ठिश्रीजासकस्य दानरुचे । तदुपष्टम्भात्परत्र भाविकाया पमुन्धर्या ।' श्लोके श्लेषदृष्टिप्रयोग दृश्यते ।

श्रीमद्भि वृत्तिकृद्भिरस्या वृत्तौ गाथानामर्थ श्रीसिद्धर्षिगणीयवृत्त्यनुसारेण व्यवस्थापित, कथानाश्च विस्तर स्वोत्प्रेक्ष्य स्थाने स्थाने विहित. तेन चैतद्वृत्तिप्रणयने बीजभूतस्य वृत्तेरादौ (गा ५) 'सविशेषकथार्थिना गन्त' इति शब्दैर्निर्दिष्टस्य कथाकथनानुक्रमस्य चरितार्थता व्यञ्जिता । अतश्चेय वृत्ति आन्तरप्रीतिसमुत्पादपूर्वकं तद्ग्रन्थस्याध्यायाविषु मन्दमतीनामपि प्रवृत्त्यर्थं पदे पदे सुविस्तर-सुरम्यकथा-दृष्टान्तपरिपूर्णा सुरम्यसुभाषितसन्दोहभ्राजिता स्थाने स्थाने मार्मिकप्रसङ्गानुकूलै संस्कृत-प्राकृताऽपभ्रंशभाषानिबद्धै सूक्त-रत्नैश्च शोभिताऽतएव साहित्यसुधापानलोलविदग्धचेतसां प्रीत्यास्पदा ।

अस्या खलु वृत्तौ खण्डद्वय, तत्र च ६००० श्लोकमित प्रथम, मूलग्रन्थस्यैकत्रिंशगाथावृत्तिपर्यन्तो द्वितीयखण्ड ग्रन्थ समाप्तिसमं सपूर्णो भवति, तथा च विषयविभागदृष्ट्या ग्रन्थप्रणेतृनिर्दिष्ट विश्रामचतुष्कमपि दृश्यते, तत्र प्रथमो हि २३९० (प्रत्यन्तरे २६३६) श्लोकमित द्वात्रिंशत्तमगाथाविवरणे पूर्णो भवति । तृतीयो ननु ८९९ श्लोकमित २२८ गाथावृत्तिपर्यन्तो पूर्णतां भजते, चतुर्थविश्राम. ग्रन्थेनसह समाप्तिमान् भवति ।

प्रवरज्ञानिधुरन्धरैर्वृत्तिकृद्भि. सकलभव्यजीवानुग्रहबुद्ध्या मोक्षाध्वनि सुरसञ्चरणोपयोगिना कतिपयकथानामतीव मार्मिक विशद च वर्णनमस्ति, यथान्यत्र दुराप दुरवगाहं सुधर्मनीनाञ्च सुभाष्य सन्ति, तथाहि —

प्रथमगाथावृत्तौ ग्रन्थोपक्रमे ग्रन्थकृत्सामारिकपुण्डरीकणमिदं राह्न प्राकृताऽपभ्रंश-संस्कृतमूलकं नगरादिवर्णनं मयी सुन्दरा कथा, तत्र भाविकलिकालदुर्वृत्तवर्णन कलिपुरुषप्रश्नोल्लेखमनाथ सुगुरुगमनीयोपयोगि । ११ गाथावृत्तौ सूरिगुणवर्णन शिक्षावर्णन नानारीत्या षट्त्रिंशद्गुणवर्णन मनोरमम् । गाथा २८ वृत्तौ सनत्कुमारचक्रिकथा भावविशुद्धितासतीव रोगिनामति विपुलका । एतत्कथागमो सुरन्तोऽन्यत्र कुत्रचित् दुरापस्तथाप्येतस्याप्रामाणिकत्वशङ्काऽत्र न विधेया । तत परत्र कथाप्रसङ्गाः नन्तु

श्रीधर्मदासगणिकृत उपदेशमालाप्रकरणे गा. ४५०–५१ मध्ये स्फुटमेव दृश्यते । गाथा २९ वृत्तौ सिद्धान्तसमोवसरणादिसूचितक्रिर विषयिणामसदसरेणमुक्त्वा [illegible] व्याख्याने इदं मस्ति ।

श्रीभगवतीसूत्रे (श. १४३–७ सू. ५२५) [illegible] समवसरणानामीदृशी व्याख्या श्रीअभयदेवसूरिणोऽपि न व्याकर्णयन्ति । किं चीर्णं भवेत् ? वस्तु शाश्वतं परमेष्ठोऽर्थो दृश्यते गुणान्तो हि [illegible] भवेदिति [illegible] मतान्तरं विना मान्यवस्तैवाऽवतिष्ठते । [illegible] सूत्रापितरेव प्रस्तुत कल्पीव एव विषद्रूमिार्थ समाप्यत्वा [illegible] समेतं विचमायनिवेदिति ।

गाथा ११ वृत्तौ श्रीमहावीरचरित्रं प्राकृत–संस्कृतगद्यपद्यमयवाणीनिबद्धा हि इत्ती कथा (५५६ श्लो मिता) [illegible] रमणीयाऽ-वधारणीया च । गाथा १७ वृत्तौ [illegible] धर्ममाहात्म्यप्रकाशके श्रीजम्बूस्वामिचरित्रे संस्कृत प्राकृतगद्यपद्यमयवाणीनिबद्धं गद्य-पद्यमयं सुमधुरमवगाहनीयं प्रणिधारणीयम् । पद्यमिममितीये जम्बूस्वामिने [illegible] (पृ. १११ १११) [illegible] सम्यगावधारणीया च । गाथा ४८ वृत्तौ श्रीवज्र-स्वामिचरितं । गाथा ५९ वृत्तौ श्री [illegible] चरितं गा ९१ वृत्तौ श्रीमेतार्यमुनि(प्राकृत)कथा । गा १४९ वृत्तौ श्री [illegible] चरितं विविध-[illegible] सरसं च । १८ वृत्तौ [illegible] [illegible] स्फोटस्ति । गाथा ४३९–४० वृत्तौ [illegible] चरितं [illegible]-[illegible] इदमस्ति । [illegible] चरितं [illegible] [illegible] । [illegible] वृत्तौ [illegible] [illegible] पठनीयमस्ति । [illegible] [illegible] विदुषामपि [illegible]-

तत्त्वमस्ति। सामान्यत' वह्वीकथा प्राकृतभाषानिबद्धा । तत्राऽपि कथासु सूक्तिवैचित्र्य स्यात्क्षीरे शर्करा तदे'ति वृत्तिकृदुल्लिखितभाणकानुसार सस्कृत-प्राकृताऽपभ्रशभाषासु सूक्तीना बाहुल्यन्तु स्वर्णे सुगन्धानुकार वृत्तिकृता प्रकृष्टसाहित्यिककोटिकोटीरहीरायमाणत्व प्रमाणयति। अपभ्रशभाषानिबद्धा षट्कथा सन्धिशब्दोल्लिखिता उपलभ्यन्ते, सन्धिशब्दो हि कवडकसमुहात्मक हैमीछन्दोऽनुशासने।

सन्धिसज्ञितापभ्रशभाषानिबद्धकथानकानि।

| | | |
|---|---|---|
| १ ऋषभपारणासन्धि गा. ३ श्लो ७८ | ३ गजसुकुमालसन्धि गा ५५ श्लो ८१ | ५ अवन्तिसुकुमालसन्धि ,, ८८ श्लो ५७ |
| २ चन्दनवालापारणासन्धिः ,, १०१ | ४ शालिभद्रसन्धि ,, ७५ ,, ९४ | ६ पूरणर्षिसन्धि' ,,१०९ ,, ३२ |

अपभ्रशप्रकीर्णकपद्यसुचि —मकरदाढावेश्याकथाया सनत्कुमारचक्रिकथाया ब्रह्मदत्तचक्रिकथाया सुन्दरश्रेष्ठिकथाया विजयसुजयकथायां ढण्ढणमुनिकथाया श्रीवज्रस्वामिचरित्रे श्रीस्थूलभद्रकथाया श्रीमेतार्यमुनिकथाया दृढप्रहारिकथाया चाणक्यमन्त्रीकथाया अन्येऽपि संस्कृत-प्राकृतभाषानिबद्धा कथा सन्ति।

उपर्युल्लिखितसूच्यतिरिक्ताश्चसर्वाः कथा उपदेशमालामूलनिर्दिष्टा एवश्चेय वृत्तिर्नैकतात्विकवार्तासङ्कुलत्वेन सज्ज्ञानपिपासूना विदुषामुपादेया सती विशदसुरसपूर्णकथाप्राचुर्येण चाबालवृद्ध सामान्यज्ञानवतामपि प्राणिना सुग्राह्या चादरणीयतमा सञ्जाता। वृत्तेर्प्रान्तभागे सुललिता प्रशस्ति' प्रथमादर्शलेखापक-श्रावकसत्कृत्यवर्णनात्मिका पुष्पिका च।

एतादृशबाल-विद्वदुभयवर्गात्यन्तहितकारीरिण्यावृत्तेः प्राच्यहस्तलिखितताडपत्रीय-कर्गलमयप्रतिसन्दोहं सञ्चित्य सशोध्य योग्यरूपेण बहुपरिश्रमसाध्य सम्पादन विधाय प्रकाशनविधानप्रेरणादिविधातृभ्य एतद्वृत्तिसम्पादकेभ्य गीतार्थसार्वभौमागमोद्धारक-शिलाताम्रपत्रोत्कीर्णागमकारक-ध्यानस्थस्वर्गताचार्य श्रीआनन्दसागरसुरीश्वरविनेयावतसेभ्य शासनप्रभावकपूज्याचार्य श्रीहेमसागरसूरिभ्योऽनर्गला

सत्कर्मक्षयोपशमपुण्यविनिर्मितमस्मान सत्कार्यं कृपावाक्यया सम्यक्तया प्रवास्यन्त्येवेति मे मतिः । मदीयास्य मतिविभवगाम्भीर्य सम्यगपरिपरिपूर्य क्षमिष्यन्तावश्यं मानपूर्वकं समर्पणमात्र एव पूज्यवरेभ्यः ।

परमपूज्यपादाचार्यसार्वभौमागमोद्धारकश्रीमद्‌ध्यानयोगीश्वरागमप्रभाकरकल्पतरुकल्पानाम् आचार्याणां श्रीमानन्दसागरसूरीश्वराणां सुमतिस्मेरमनोज्ञ-व्याख्यानमूलप्रेरणयैव प्रसादं च विहितं विवरणमिति सम्प्रत्ययज्ञानुभवमुपजीव्य सूरीश्वराणामागमोद्धारकश्रीणां पुण्यस्य महोपमपि मत्युपकृतिमहत्त्वविचारपरिणतिपुण्यागमनिरपेक्षितसमये स्मृत्वा प्रणिपात च सम्यगनुमन्येऽहम् ।

पट्टोर्मैः परिष्कारपरिगतिविमलमवाप्ते पठन्ति मत्पुण्यरमणीयप्रभवोपेक्षमविकलेऽनुमूर्तिमूलमस्तविमलमपि मम विनयस्य स्मरणमूलपूर्वकमिति श्रीमत्सागरागमन्त्रोद्धारकमहाविद्वान्‌श्रीमत्सागरसूरीणां विगुरूणां प्रसादमधिगम्य मार्दवपात्रताममपि मत्पुण्यफलावत्पुण्यमविकलमपुण्यकार्ये नियोजयन्ती सम्यक्त्वमनो पूज्यागमोद्धारकाचार्यपदुविभूषक-गच्छाधिपतिपरमपूज्य मूर्ति-पठन-पाठन-सम्यक्‌श्रुतिरिविविधानिष्ठ-आचार्य म श्रीमाणिक्यसागरसूरिविद्यागमधुरीणानाम् आ. श्रीहेमसागरसूरीणां मनीषि-पाण्डित्यपुण्यसत्त्वानामनेकवर्षाणां वीक्षितपरमपाठकप्रमाणपरिपाकोपकारार्थं पुण्यपात्रपूज्यगुरुमुनिसत्तम श्रीधर्मसागरगणिवर्य-श्रीणां च धर्मस्नेहपरिपूर्णा मन्मानसरञ्जनानां सन्देशाः सम्प्राप्य सत्सद्गुरूणां प्रवर्तितं । नाऽत्र विशेषमेतैः पुण्यकार्यसमाप्तौ गवेषणीयं सर्वथापरम्परागमपरम्परया धर्मनिर्वाहेण सत्यपि मम सत्सद्गुरूणां च मतिरिति प्रथममूलस्य मदनुविरचित गुणान्वेषिणामस्मीः इत्यलमिह निर्विहितमिवाकरणीयम् ।

एतस्मिन् कार्ये साहित्यसंशोधनविद्यावगाहनलब्धविस्तृतयशोगौरवोत्कटतमसर्वविद्याधुरीणमुनिपुङ्गवपूज्यविजयजीमहाराजेः, धर्मपरायणानिपुणवादिसुमुक्षुपञ्चमीक्ष्यविज्ञस्वपीमुनिप्रवरसूर्योदयसागरजीमहाराजैः संयमज्ञानरत्नैरपि गुणावलिप्रसन्नमनसा-धर्मसिद्धिविवेकसमेत संकलनविचारप्रमार्जितसंशोधनविचारसमेत सहयोगः प्राप्त धर्मस्नेहभावोपहितकल्प्यसमर्पितस्मेयाभारप्रकाशनेन संस्मरणमर्थं मन्ये । एवमेव नानुमार्गे परिशिष्टनिर्माणसमेत सामग्रीसंग्रहणे प्रयतित तेषां धर्मस्नेहपूर्णं प्रयत्नमनुमोदन-स्मरणं च क्रियते ।

प्रान्ते मतिमान्द्यादनवधानतो वा क्षयोपशमवैचित्र्याद् वस्तुतत्वप्रतिपादने शास्त्र-परपरा-सत्पुरुषोपदर्शितिह्यविरुद्धं वोल्लिखित सर्वस्य तस्यात्मशुद्धये मिथ्यादुष्कृतदानपूर्वक विज्ञप्तिं कुर्वे । 'गच्छत स्खलन क्वापि०' न्यायानुसारमुपेक्ष्य भाविताद्दशक्षतिरोधनार्थं कृपया सूचयितव्योऽय महाभागपुरुषावतसचरणारविंदमिलिन्दायमान' जन । प्रान्ते चैतदुपक्रमणिकाया विनिर्दिष्टमहत्त्वस्योपदेशमालाग्रन्थस्य विविधतत्वव्यावर्णनपराया एतद्विशेषवृत्तेश्च विविधात्मशक्तिसमुज्जृम्भकनानापदार्थानवबुध्य सद्धर्माराधनाया च तानुपयुज्य कर्मनिर्जरार्थकमुमुक्षुप्रवृत्तिव्रातस्य फलेग्रहितायै सत्प्रयत्न भावुका भव्यजन्तव कुर्युरिति शुभाशसा देवगुरुकृपात सफलतरा भवतु इति।

वीर सं २४८४, वि सं २०१४
द्वी श्रा कृ ८ शनिवासर
जैन उपाश्रय भटेवापार्श्वनाथ तीर्थम्
चाणस्मा ।

श्रमणसङ्घसेवक
पू आ श्री चन्द्रसागरसूरिवरशिष्यावतंस–
श्रीधर्मसागरगणिवरशिष्याणु मुनिश्री अभयसागरः।

## पछीथी थयेल सहायक-ग्राहक महाशयो :—

१०००) श्री शान्ताक्रुझ तपगच्छ जैन सघ ज्ञान खातामाथी

| नकल | ग्राहक |
|---|---|
| २५ | श्री गोडीजी महाराजनी पेढी ज्ञानसमिति मुबइ |
| १० | देवकरण मुलजी जैन देरासर पेढी ज्ञानखातामाथी, मलाड मुनिश्री मनोज्ञसागरजीनी प्रेरणाथी |
| २० | मलाड श्रावक भाइओ तरफथी मुनिश्री निर्मलसागरजीनी प्रे |
| ५ | मातुश्री शान्ताबेन रतिलाल धीया ह: रसिकलाल, मलाड मुनिश्री बलभद्रसागरजीनी प्रेरणाथी. |
| ५ | वकील सोमाभाइ पुनमचंद, कपडवज मुनिश्री महाभद्रसागरजीनी प्रेरणाथी |

उपदेशमालाविशेषवृत्तौ कतिचिदशुद्धिस्थानानि ।

| पत्र | पङ्क्ति | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | पक्खरसंवरि | १९९ | २ | सुवाम्भु | ३०३ | ९ | मामम्मरविला | ३४७ | २ | कम्मु(पु) मनिवाय |
| ५ | १ | सासयसुवि श्लोक | २०६ | ११ | कप्पूर०श्लोक | "४ | १२ | अवि | ३५१ | १७ | वावेइ |
| ८ | ९ | मयणाइवि | २१४ | १६ | " | " | ११ | मक्कासमेय | ३५५ | ४ | •संपुष्कस्स |
| १५ | १५ | वायव | २२ | १ | किजमोहम | ९ | २ | गुम्मा | " | ८ | खोपवंगी |
| २८ | ४ | हरिवासो | २११ | १५ | तम्मीवह | " | १० | कमूछ | ३५९ | १ | मुहाविई |
| २९ | ३ | उबरे गणय | २१२ | १ | ७१ श्लोक | ३०७ | ८ | मं मीसियामि | ३६४ | १२ | वाइएगाए(रे)वि |
| " | ६ | सुविसह | २४९ | ११ | हत्थाहवि | ३१२ | ६ | नेसि | ४ | ३ | वीसमाव |
| ३३ | ४ | विजमंहविहि | २५४ | १२ | मम्मी | "४ | ७ | भारहीएसारत्थूमो | ४२३ | ४ | पावसाया |
| " | ६ | पवसुमरन | २५५ | ९ | पराजइ | "९ | १ | वाऊ | ४२९ | ७ | नरमिस्सं |
| | १२ | वेसाइं | "६ | १२ | मेयणइ | ३१८ | १६ | वीसवाससरवाभो | " | १६ | जाइ |
| ३६ | ८ | वरिदि–वावि | २६४ | ५ | सूया | ३२१ | १ | हत्थमइ | ४८८ | ९ | जुमजुव |
| ९८ | १ | कडुयावित्र | २६५ | ११ | जमेरमेहि | ३२६ | १६ | गने गुरीतो | " | १२ | नाणगिवर |
| ११६ | ८ | मझिमंसी गा | २६८ | ६ | कस(म)राम | ३३३ | १३ | गुम्मगुम्मरजासो | " | १७ | ११ श्लोक |
| " | ९ | वीडिपम | २६९ | १२ | पयावयमार | ३३७ | ७ | विविसपावामि | ४८९ | ३ | मीर्वीर |
| १८ | ७ | पयाणीसो | २७५ | ७ | कडूमेपहि | ३४१ | १७ | मन्नकपूवउप्प- | " | १६ | सावेग |
| १८१ | २ | देवविवक | २८९ | ८ | मामग | | | सेय(सेव)मणा | ४९१ | ९ | वेयप्पम |
| | | | २९२ | २ | कोइलियमुड | ३५६ | १ | मसाइ | ४९४ | १५ | सग श्लोक |

—पुस्तकनुं संपूर्ण मुद्रण [illegible] समये प्रत [illegible] मति उपरथी [illegible]—

[illegible] दाजीनी [illegible] मुंबई [illegible]—[illegible] १५०१ [illegible] साइज [illegible] इंच,

[illegible] ११८ [illegible] १ [illegible] मुद्रादि, [illegible] संपूर्ण.

सूचना—[illegible] —संशोधक आ. हेमसागरसूरि।

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | 14 | [illegible] | १४१ | 2 | [illegible] | १० | 0 | [illegible] | १५१ | 17 | [illegible] |
| १५ | 15 | [illegible] | १८ | 6 | [illegible] | १ ५ | 2 | [illegible] | १५८ | 17 | [illegible] |
| १ | 4 | [illegible] | | 7 | [illegible] | ११० | 17 | [illegible] | ११० | 12 | [illegible] |
| ११ | 3 | [illegible] | १११ | 15 | [illegible] | ११ | 1 | [illegible]— [illegible] | १ १ | 10 | [illegible] |
| ११ | 4 | [illegible] | १५८ | 14 | [illegible] | १११ | 10 | [illegible] | १८१ | 1 | [illegible] |
| | 8 | [illegible] | १ | 16 | [illegible] | १११ | 1 | [illegible] | १८१ | 6 | [illegible] |
| | 12 | [illegible] | ११२ | 10 | [illegible] | ११ | 5 | [illegible] | १८१ | 16 | [illegible] |
| | 18 | [illegible] | १२५ | 5 | [illegible] | ” | 7 | [illegible] | ११८ | 17 | [illegible] |
| ११ | 10 | [illegible] | १११ | 11 | [illegible] | ११ | 17 | [illegible] | १ | 3 | [illegible]— |
| ११५ | 6 | [illegible] | १५१ | 12 | [illegible] | १० | 2 | [illegible] | ११२ | 13 | [illegible] |
| ११ | 8 | [illegible] | १५ | 4 | [illegible] | १५ | 3 | [illegible] | ११२ | 15 | [illegible] |
| ११ | 11 | [illegible] | १५ | 6 | [illegible] | ११ | 0 | [illegible]— | ” | 16 | [illegible] |
| ११ | 3 | [illegible] | १११ | 2 | [illegible] | ११ | 17 | [illegible] | १११ | 10 | [illegible] |
| १० | 11 | [illegible] | १११ | 6 | [illegible] | १५ | 4 | [illegible] | १४१ | 3 | [illegible]— |
| १ | 5 | [illegible] | १११ | 9 | [illegible] | १५५ | 8 | [illegible] | १११ | 17 | [illegible] |
| | 6 | [illegible] | ११० | 6 | [illegible] | १५ | 8 | [illegible]— | ११ | 14 | [illegible]— |
| | 8 | [illegible] | ११ | 4 | [illegible] | | | | | | |
| १ १ | 6 | [illegible] | ” | 0 | [illegible] | | | | | | |

॥ ॐ अर्हम् ॥

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नम । श्रीदेवसूरिगुरुपादुकाभ्यो नमः ।

श्रीवीरविभुदीक्षितधर्मदासगणिप्रवरप्रणीता

श्रीरत्नप्रभसूरिकृत'दोघट्टी'तिविख्यातविशेषवृत्तिसमलङ्कृता

# श्रीउपदेशमाला ॥

यस्यारघट्टस्य घनोपदेश-मालार्पितध्यानघटाघटीभिः । संसारकूपाद्भवभृज्जलाना-मूर्ध्वं गतिः स्यात्सङ्गिनोऽव्रताद्वः ॥१॥

रागादिक्षपणपटुः स केवलश्रीजृम्भारिव्रजमहितो यथार्थवाक्यः ।
नाभेयः स भवतु भूतये सदा नस्तीर्थस्याधिपतिरयं च वर्धमानः ॥ २ ॥

पायं पायं प्रवचनसुधा प्रीयते या प्रकामं, स्वैरं स्वैरं चरति कृतिनां कीर्तिवल्ली वनेषु ।
दोग्ध्री कामाननवरसैः सा भृशं प्रीणयन्ती, मादृग् वत्सान् जयति जगति श्रीगवी देवसूरेः ॥ ३ ॥

विशुद्धसिद्धान्तधुरां दधानां, संसारनिस्सारकृतावधानाम् ।
श्राद्धः सुधासिन्धुमिमां विशालां, प्राप्नोति पुण्यैरुपदेशमालाम् ॥ ४ ॥

तस्यामपि सत्यतो ग्रन्थिमुख्याः प्रारम्भप्रयोऽपि। तत्पवि पसाम्मामिह सन्निवेपकशाविनां यत्नः ॥ ५ ॥
तथाहो मंगलमभिधेयमभिप्रतिपादयन्नाह—

नमिऊण जिनवरिंदे इंदनरिंदच्चिए तिलोगगुरू। उवएसमालमिणमो वुच्छामि गुरूवएसेणं ॥ १ ॥

अत्र पूर्वार्द्धेन निर्विघ्नमारब्धप्रकरणसमाप्त्यर्थमिष्टदेवतानमस्कारस्य मङ्गलमपरार्द्धेन पुनरभिधेय-सम्बन्ध-प्रयोजनाभिधेयस्याभिधेय-सम्बन्धो साक्षादेव, प्रयोजनं तु सामर्थ्येन लभ्यते, अयमत्राभिप्रायः प्रयोजनाभावाद् व्याख्यातारमपि प्रवृत्त इति स एव तत्र उच्यते 'नत्वा'—प्रणम्य जिनवरेन्द्रान्, रागादिजेतृत्वाज्जिनास्ते च छद्मस्थवीतरागा अपि भवन्त्यतः केवलिनस्तेभ्यः 'वर'प्रधानम्। जिनानां वरा जिनवरास्ते च सामान्यकेवलिनोऽपि सुरलोकाधिपस्त्वं मिन्द्रमप्यतम् जिनवरामिन्द्रा जिनवरेन्द्राः जिनस्ते केवलिनो च सति तीर्थकृन्नामरूपपरमैश्वर्यलक्षणत्वात् स्वपतिवात् तमिमान् नत्वेति इत्येव विशेषणमीयते भगवतीमुपेत्य जिनवरेन्द्राणि 'स्वभिधानं जिनानां जिनवराणां च तत्सत्त्वानां स्मरणार्थम्, तेनाम्मनस्तुल्योऽपि प्रतिपन्नगुणपरिकरसंयम वा नरेन्द्रा-पार्थिवास्तैः पंचकल्याणकेष्वर्चिताः पूजितान्, तैलोक्यस्य—स्वर्गमर्त्यपातालरूपस्य लोकत्रयस्य केवलालोकेन यथावस्थितवस्तुस्वरूपप्रकाशनाद् गुणस्थिति-रूपा ये तानिमोपदेष्टुन् अनेन भावधिकारमाश्रित्य भगवतः प्रोक्तौ, जिनवरेन्द्रामित्यनेन त्वपायापगमातिशयो रागपरा-जयमेनैव जिनत्वस्य सिद्धेः, यद् वा ज्ञानातिशयोऽप्यनेनैवोक्तः प्रत्यक्षः। केवलित्वे सत्येव स्वामिमिति' जिनानां वरत्वस्य समा-यात्, सुरनरेन्द्रार्चितमित्यनेन पुनः पूजातिशयोऽभिहितः एवं चैते जगत्समोर्द्धमतिशयचतुष्टयारोऽपि प्रतिपादिता अतिशयोत्की-र्तनमेव हि स्तुतिरभिधीयते तथाऽऽसाधारणधर्मांस्ति निरुक्त स्तोत्ररूपमिदमाः स्यात् ततोऽसमा—हितार्थाऽभिधायकमाकर्णयन्तो मार्गा-परम्परां वक्ष्ये यथा—

१ पु०

आणणे कि तए न सुय ॥ २५ ॥ "सावक्कुवि सुविणीओ, तणओ जो होइ कुलीणओ । जाओ वि जणणिहि होइ नेव जइ पुण [1]अकुलीणओ ॥ २६ ॥ रामुवि कियकेगइहिं आण वणवासह चल्लिओ । परसुरामि रेणुयहि किं न सिरु कट्टि विघल्लिओ ॥२७॥ एकु केसरिनहर सिहरग्ग अरु ल्हरिहालाहलिहिं । अवरु कवल किर कालकूडहि चल्लतउ पलिवणउं एहु सत्तू करि एक्कु कूडिहिं ॥२८॥ नारि निरुत्ती विहि घडी मह फिट्टउ संदेहु । अजया जीविउ[2] व ज हरइ, सुयह दहइ महदेहु ॥ २९ ॥" ता घरवासो पासो, रज्जमवज्ज सुही वि धुवमसुही । भोगा खयरोगा खलु, नारी चल्लतिया मारी ॥ ३० ॥ ता एत्तो पज्जत्त, इमेहिं कुणिमो भवस्स पज्जत्त । सार सिरिवीरजिणदसजमं सपवज्जामि ॥ ३१ ॥ इय नियवसपसूय, अहिसिंचिय [3]कचि अचलचित्तेण । राया विजया तब्भाओ, सुजयजुत्तो वि विजयसेणो ॥ ३२ ॥ इह भवपारावारे, अणोरपारे महापवहणेण । सयमेव पउमहत्थेण, दिक्खिओ वीर-वरपहुणा ॥ ३३ ॥ अइतिव्व तवइ तवं, आगममागमइ सिक्खए सिक्ख । झाण झायइ सम्म, रम्म धम्म कुणइ एवं ॥ ३४ ॥ कइवय कालविलंबे, सो जाओ जायओहिवरनाणो । ओयंसी तेयसी, महातवस्सी जससी य ॥ ३५ ॥ सिरिवीरजिणिंद-पयारविंदवरुसारुदारमई । गीयत्थो स महीए, विहरइ सह साहुणा तेण ॥ ३६ ॥ रणसीहो सजाओ, नववित्थरमाणजोव्वणा-रभो । सुदरदंसियसुदरतत्ति खेत्ते पवत्तेइ ॥ ३७ ॥ गामसमीवे खेत्तस्स, नाइदूरे य देवदेवस्स । सिरिपाससामिणो भवणमत्थि जक्खेण कयरक्ख ॥ ३८ ॥ [4]सतुल सकणालि सपुप्फमालिय सगुडदतिकुंभालं । वरसकलसालि सोहइ, ज पट्टणहट्टघट्ट व ॥३९॥ विजयपुराओ पइवासरपि आगम्मधम्मियजणेहिं । न्हवणविलेवणपूआ–पेक्खणया जत्थ किज्जति ॥ ४० ॥ चित्ताइ विचित्ताइ, अतुच्छअच्छच्छवीसु भित्तीसु । पडिबिंबाइ वि नजति, जत्थ जत्तागयजणस्स ॥ ४१ ॥ अधणाण धण अदुह, दुहीण दोहग्गियाण सोहग्ग । निरवच्चाणमवच्च, निच्च पणयाण ज देइ ॥ ४२ ॥ रणसीहो सपत्तो, खेत्ताओ खेत्तखेयखयहेउ । केलीकयलीहरसीय-लम्मि तत्थेव तित्थमि ॥ ४३ ॥ पडिमाइ पलोयतो, जावच्छइ ताव तत्थ सपत्ता । चारणमुणीणजुयली, विमला कलहसजुय-

१ अकुरी० । २ य-ध्युय । ३ कपि O । ४ सतुग D ।

पुर्व । संपारिअम सहसा स जम्पिओ जम्ममहिसीए ॥ ९ ॥ राइस्सिए तासिपासेण तीए वि पत्तक सुरेहे । दूरे खित्तविओ सो बरा पुहर सव्वं मयउ ॥ १ ॥ ता एयम्म नियय पज्जोइण विहिम्मसम्मास्स । विलासम्मरिण्णी[1] सुर-मारिण्णी होइ वि महिम ॥ ११ ॥ जणमणोमेणअणा सा भणि कुमउम्ममाणरउ । बगममहिसी वि पर अमय् नमयस्स कि भणिमो ॥१२॥

"जम जणम न जामइ महिम मूहमइ पवसर्वतरि होइ । बंतंपि इ माइ मुणइ ता वरि किमइ जेव जुणइ मिमपरन्नि-वरि । भरिस असरिसमसमवा वामइ मेव मवरि ॥ १३ ॥" इओ य-

मुणिहुममो सम्मसहो जइमणो सुरसमप्पिमासोय । विजयपुरस्साघणे भासि सुसाहोम्म वरगामो ॥१४॥ ओहुमिएय वणमम वासिम्म मुंदरेण सो जाओ । जमगहमम जमागमण मामो मिरसमाओ ॥१५॥ पविसिय ससंममोपरविसमवीसमाल गुम्माओ । मम्मिमजपहिमे पि य पाणिसंपुडे कुमर हरिसेण ॥ १६ ॥ "जं मर दिवसंमिय मि म सघर्दि, पारि म मि बालकिसोरपुरबाहि । तं बणवेसु मि कम्पु बक्वाइ, बवर मवंद मि मिरि मिरमवाइ ॥ १७ ॥" पाविय अभिमाणमिमाणमम्म सो मणामो सगोरमि । 'सुर्वं मचोरई पिम, पम्मपिमार समप्पेइ ॥१८॥ वमतेवमाय पसो अमम्मपुमम्म पुमओ पिभो । सुरवम्मपोउरो पिम, पाके-वम्मो बमतेम ॥ १९ ॥ समर समागमंमि जम एमसिमउसमिताम उच्चाहो । बरिउरपयहारोहइ पवमीगाए कीडेइ ॥ २० ॥ भणाणि विजयसेणस्स रारुपे पम्मोगमम्माओ । वेमाणि वर्ष कहे तं समहसममममहिसीए ॥२१॥ "बरम्मम सुरसुंदरी, वोरिय रमिपाई समपाणाई । सुद्धा वि गोमिमंतात्, पमईसुवि तरमसिमे ॥ २२ ॥" मवनिमी मामम्म, सम्म पिढेइ तीए सुबरिवं । 'जाइ जाओ हवीए, न रामम य मिमइ बम्मं' ॥ २३ ॥ कि मेपमंम को वा, य पसासी ईसिओ सपावि मए । सुमममहर मसामीए, बमइ बइ मारिओ तीए ॥ २४ ॥ भजए बमयसमहग मिमासमयसिमविक्कमपडिपाबे । कुमरिपमममओहकिम-

1 पारम्मी । 2 सुर्वं B. D. ।

देउलसीहो सीहस्स, मज्झ ता किं इमो काही ॥६४॥
रालदाढालो ॥ ६३ ॥ चिंतियमिमेण सीहो, एसो अहयपि होमि रणसीहो । जो नेवज्ज सज्जिय,
इय नीसको जा हक्किऊण, त अक्कमेइ चकमिरो । ता सो कत्थइ नट्ठो, गवेसमाणो ण मे विदिट्ठो ॥६५॥ किर जेमइ ताय
जिणस्स खेत्तमि जेमिउ लग्गो । तो वेलाइक्कता, पत्ता सिसुणो दुवे मुणिणो ॥ ६६ ॥ पडिलाभिऊण जा ते, ता तेसिं
जज्जरसरीरा । थेरा मुणिणो पत्ता, पडिलाभिय ते विंचिंतेइ ॥ ६७ ॥ जइ ते चारणसमणे, सपइ पावेमि पावपकरवी । नाल्पपुण्यैरवाप्यते
सेसपि हु, देमि सजम्मफल लेमि ॥ ६८ ॥ "सत्पात्र महती श्रद्धा, काले देय यथोचित । धर्मे साधनसामग्री, भोय-
॥ ६९ ॥ कृपणेन शवेनेव, मृतेनापि न दीयते । मास वर्धयता तेन, का कस्योपकृति. कृता ॥ ७० ॥" धन्ना ते सप्पुरिसा, होऊण तस्स
णसमये समागए जेहिं । गुणिणो मुणिणो विहराविऊण सेस सय भुत्त ॥ ७१ ॥ अह अवगयतचित्तो, जक्खो पत्तं । तहवि
पच्चक्खो । तुह सत्त असवत्त, अहह वर वरसु इय भणइ ॥ ७२ ॥ मह नत्थि पत्थणिज्ज, तुह दुलह जेण दसण सयंवरे
तममो[1]हमच्छुत्ति, देव ! छिंदेसु दारिद ॥ ७३ ॥ इय भणिए तेणुत्त, कणयपुरे कणयसेहरनिवस्स । कणगवईतणयाए, करिस्सामि
झत्ति गतव्व ॥ ७४ ॥ परओ करेमि ज किंपि, त तुम वच्छ ! पेच्छ अच्छेर । आजम्मं साहिज्ज च, सुमरिओ ते धवलजमलजाए,
॥ ७५ ॥ इय भणिऊणमदसणमेसो पत्तो तओ स रणसीहो । चउपचवासरेहिं, सयनरामडव सुणइ ॥७६॥ तो ससेणिसकित्तं ।
जायवले जोइऊण लहुवसहे । निसियपरसुल्लपाणी पत्तो सो नगलारूढो ॥ ७७ ॥ कणयपुरे पेक्खइ लक्खसरखोणीस ॥७९॥
[1]सचिय मंचपवच, सयंवरामडवमखड ॥७८॥ [2]निप्फट्टपट्टदोगुल्लपल्लवुल्लासिलंवपालव । मरगयमोत्तियमाणिक्कचकचक्कियसुथभ पुरओ,
कणयवइपि पलोयइ, सियवेसविसेससोहियसरीर । करधरियपवरवरमालमागय सरसईव सय ॥ ८० ॥ पुहईसाणं खित्ता
चकमिरी दीवियव्व सा सहइ । पुरओ पयासमधारयं तु पच्छा पयच्छती ॥ ८१ ॥ जाव न कस्सइ खलु खत्तियस्स सुमुही ।
झडत्ति सा कठे । ताव विलक्खा पेक्खति, खत्तिया सावि खणमेग ॥ ८२ ॥ अह चलिया वेगेण, हालियरणसीहसमुही

1 घव । 2 निप्प ।

जिण ॥ ४४ ॥ ऐवं वंदिय जा जाइ, ताव सीहेण पुरिससीहेण। अमियंगिभा निरिक्खइ, दोणीमज्झम्मज्झगयाई से ॥ ४५ ॥ आसीसिमय मुणिय फरुसा पम्मसेसम्म तस्स। सिरपरमंगपुरस्स पुरओ निसामस्स ॥ ४६ ॥ गयवरकंतम्मभमियतरु-अरपरमंडिओ। वरभविरचणरयणीवओमस्सुवरलाएमससिमो ॥ ४७ ॥ मयविग्गमुक्खमंकंतभविरसुवओ। पम्मि रम्मि निरयगु रम्मुवमि' होइ मिरुतओ ॥ ४८ ॥ सोऽहमणरिमंगरिसरिसु मयाइ धम्मरम्मु कुपि। मठु सूय सत्ति मंसे विवइ तं भवइ मुणि ॥ ४९ ॥ पम्मु मुरड सो धाडिमरि जिय धाम्मि मिलम्मइ। पाडिवइ सीहंगसहस साहु मु पुण सिम्मइ ॥ [illegible] ॥ निसियं विरककयारि–विम्म पव एयइ आवत्तओ। भवयकसमइ मावसाव भावण मणियओ ॥ ५१ ॥ जो धम्मसीहम्मवमालमइं, परिमो म सयर् पम्मगुड। पामर मुकोवि एरकुवि मिमसु भमे म हेइ धाविम्मु मुण ॥ ५२ ॥ एवाइ म मेवमवि विभिम विभिम मेकेवि म परियरिइ। महम्मेयपुर भवमि भवमिं, जिय'मुरिसम पूरिइं ॥५३॥ पमाकंटयवकार–कयाणि मंडिति मुत्तानिसियो'परिइं। भवाइ भव'मिरयविसम'भमिय जिय महरिसि ॥५४॥ एविपइ मणिय परकुवि मुपरि मिपमयुवि' जे पुणु भवाइ। ते पुरुष भम्मसयेवि एवि दिवइरिकओ निम्मइ मरहि ॥ ५५ ॥ मव ऐसमाअसाण भणिमओ सो पम्म निम्मरणविम्म। पाम्मिवस मेघि सो भाव, माइ! मम्म 'रतिवं मुहम् ॥ ५६ ॥ म म मंयमविराणं, मुकमणिहाणं जिमस्स भायमि। मणिवं मुणिम्म विय मति मिम्मओ इम्मिवं हेइ ॥ ५७ ॥ जइपि म मंयमविम्मरपारगो भवपि दोहपिडीमि। धम्म ऐमरेवस्स समवइ मुंमसु समवि ॥ ५८ ॥ एसो धम्मिमइमो मिएवअपाविमओ होविंति। मुर भासमकरीओ, मुनिमम्मकिममो समयाइ ॥ ५९ ॥ पम्ममिमणारमंगीमरेगु सेम्मअमिंगरिम मुणिम्म। गयमंगममकीम्म सपवि गमो निम्ममेससमि ॥ [illegible] ॥ निसमनिसमं मिरसीमं, पमुरु भइपासरोपि घोपइ। परमेसरस्स पुरओ मुरमंगाइ मेघमं ॥ ६१ ॥ चिंतामणिमरमीम्मं, परिमिराउं ऐसमंवयमुपरे। तस्सा-मिणइमंगापम वीसिओ भेसरविमसोरे ॥ ६२ ॥ परसमइरसमइपइमका–धमासम्मिमबकम्मकम्मओ। कमनिम्मरगुंमारे, मइमुरिकम–

१ महिंदि B। २ म B D। ३ म D। ४ विय D। ५ म। ६ मुरि O। ९ O।

पभणइ कणयनरिंदो, हरिसनिसप्पतपुलयपब्भारो । अच्छरियं अच्छरियं, गच्छ ! इमं कह कयं तुमए ॥ ९६ ॥ दलणाइणेण
एक्केण, धाडिया सगुडगयघडा एए ।' अयमाह एस केली, महफय रस्सयरस जक्खस्स ॥ ९७ ॥ अह कणयसेहरेणं, भूनरफु-
च्छुयविहत्थहत्थेण । तह विन्नत्तो सहसा, जह जक्खो होइ पगस्सो ॥ ९८ ॥ रणसीहकहा कहिया, तेण गयस्स कणयरागस्स ।
जम्माऽवहारपमिई, जाव मए अयमिह्राऽऽणीओ ॥ ९९ ॥ ता विजयसेण-विजयाणमेस तणओ न एस कोडवी । तणयविओय
पलित्तेहिं, तेहिं अगीकया दिक्खा ॥१००॥ अह सो ते पुहईम्मे, हकारवेइ हरिसपडहत्थो । सुरकहिय कहिऊण, सव्वे सम्माणिया
तेण ॥ १०१ ॥ गरुएण पवघेण, वीवाहमहुस्सव पवत्तेइ । जामाइयरस देस, फरिहरिरद्धपत्तिणो देइ ॥ १०२ ॥ निहियपडिवत्तिणो
ते, विसज्जिया आगया महीयइणो । सीहो वि हु विसयसुहं, सह कणगनईए अणुभवइ ॥ १०३ ॥ ससुरसमप्पियदेसं, अह पत्तो
पालए नएक्कनिही । रणसीहो नरसीहो, नियरज्ज वज्जियाऽवज्ज ॥ १०४ ॥ सह वल्लहाए सुदरकोडवी आगिओ मपासमि । उचि-
यन्नू उचियाइ, चिंतेइ स रज्जकज्जाइ ॥ १०५ ॥ सोमापुरीए पुरिसोत्तमस्स, रन्नो सुया रइव्व मग । कणगवईए पिउन्ना[1] भूया
अमविंसु रयणवई ॥ १०६ ॥ तीए कणगवईए, विवादअच्छेरय सुणतीए । मुहिओ खणेण अणुरायसायरो रायरणसीहे ॥१०७॥
जह उवइट्ठ मिट्ठ, न तहा दिट्ठ त्ति जयठिई एसा । रमणीण पुण विसेसो, परपगयनन्नुपेक्खीण ॥ १०८ ॥ पुरिसुत्तमेण तत्तो,
तक्खित्त पुत्तिगाइ जाणित्ता । सीहाणयणनिमित्तेण, पेसिया नियपहाणनरा ॥ १०९ ॥ वरसुंदरायं दित्तो रणनई नायनाहरिज नर ।
पूगतरु व तमीहइ, आहार इय भणेज्जाह ॥ ११० ॥ पत्तेहिं तेहिं सीहस्स, साहिओ पणमिऊण नियपहुणो । सदेसो नीहिण रि,
भणिय जाणेइ कणगनिवो ॥ १११ ॥ तो जोहारिय सीह, नीहरिया कणगसेहर पत्ता । पुरिसोत्तमसदेसं, दिसत्ति पणमिय मुहा-
सीणा ॥ ११२ ॥ भणियमिमेण मह मायणेज्जिया सा[2] अत्तया मज्झ । ता तीए विवाहो, धुव मए नेय कायव्वो ॥ ११३ ॥
लहु हक्कारइ ताहे, रणसीहं कणयसेहरो पासे । अइगुरुमामभीए तेहिं सम नेव पेसेइ ॥ ११४ ॥ सो पाडलिसडपुरे, अत्थ-

1 कनकलता पितृस्वसु पुत्री रत्नवती । 2 ति द० D ।

सिवेसुमि ॥ ११५ ॥ तस्स पुमरे परमम्मंमि आपासिओ सुवपएवे ।
वनगनमई गंनली । गोमामनीय धीगग्गमयस्स ॥ ११६ ॥ सं पत्तमिऊण तममत्तवारणे पाय विपुर मिसिरे । प पविमसेपमसुग्गमाए
पविगनमिगोपे, विणमनिमननमवुत्तो ॥ ११७ ॥ सिमममुममेपमनो मए पमसिए होए सिवम पत्तो । पनमपमाम्म भएप मपोरपा के म सिपसंवि
मनमममुगा ऽथावे ॥ ११८ ॥ पमोममि पावमिमपयमिपममपमेपमपयूमा । पमजनई मयमेपं पवपिपममनि मंदिरे ॥ ११९ ॥ सुपसुपसिसुमपंक-
मपमिईपपपपमपपाणीप । पपुगममममामममा सुमेगामम सुपएवीप ॥ १२ ॥ सिपसंपनेपनीसुपमेहिं पपमीन सिसुपमणप्पी ।
पुणिप प गंगे पग मिहा पमिपए म पछा ॥ १२१ ॥ पममीसरस्सईओ सिरोहिमीओ सहिंसि न हु देप । पमपसमामारेपं मपे
सिहिप पप पगा ॥ १२२ ॥ मपमसरा सिर पुंप, पमंपसि म मेसिं मामसं मेपु । पम्मेपमम ईसे, पपासु सिमम पसु
पपपमा ॥ १२३ ॥ पमऽपसं पुममपमयमसेम सहिपम्म एवं । मए सिपमस मिसमिपमंमि महोमपी
सिपमंमममीममाप पामपसंगपणमरधो । सप्पमोहिसोपामनिगमरो
मीमममीम ।

जइ नहु एयंता मज्झ, जीविएणावि लोयणेहिं जाणिज्जइ जणाण ॥ १३४ ॥ गिहमइगयाए तीए, चिंतइ एसो अह विवाहेमि । जइ नहु एयंता मज्झ, जीविएणावि
लोयणेहिं जाणिज्जइ जणाण ॥ १३४ ॥ गिहमइगयाए तीए, चिंतइ एसो अह विवाहेमि । अज्जवि किं किज्जइ विलंबो ॥ १३६ ॥
पज्जत्तं ॥ १३५ ॥ आवासे सपत्तो- विन्नत्तो पुण पुरीए पत्थाणे । पुरिसोत्तमपुरिसेहिं, अज्जवि किं किज्जइ विलंबो ॥ १३६ ॥
भणियमणेण इह मह, पओयण किपि अत्थि तो ताव जाह भो तुब्भे । सिग्घमविग्घ अयमहसुवेमि हियइच्छिए जाए ॥१३७॥
तत्थत्थि भीमराओ, रायसुओ कमलसेणसेवाए । तहिमागओ समीहइ, कमलवइं सो वि उव्वोढु ॥ १३८ ॥ तीए धाई उवचरइ,
धीरकप्पूरकचणाईहिं । सा कमलवइ पुच्छइ, नेच्छइ नामपि तस्सेसा ॥ १३९ ॥ उवचरइ पवचइ, चारुचाडुचाहेइ चक्खुखेवपि ।
जो सो ताण तण पिव, सरति वामाय वामाओ ॥ १४० ॥ जक्खगिहे गच्छंती, नाया सा तेण तोऽऽणुमग्गेण । पत्तो महुरा-
लावेहिं कहवि जइ नाम इच्छेज्जा ॥ १४१ ॥ धणदाणजणसम्माणरूवसोहग्गपेसलाऽऽलावा । तिणमिव सव्वे तं किंपि कारण
रम्मपेम्ममि ॥ १४२ ॥ सुरगिहदुवारदेसे, उवविट्ठो जाव चिट्ठइ स धिट्ठो । ता कयपूआ सा आह, हेल्लि कह गच्छिमो गेहं
॥ १४३ ॥ एसो दुवारदेसे, जापस्सइ किपि अहव इह एही । ता तं चिट्ठ दुवारे, वारेसु तमेत्थ पविसत ॥ १४४ ॥ तीए
तहा ठिआए, विजणमि मूलिया मयच्छीए । कमलवईए कन्ने, बद्धा जा पुव्वमुवलद्धा ॥ १४५ ॥ जाया पुरिससरूवा, नीहरिया
पुच्छिया कुमारेण । देवचय[1] किं अज्जवि, न सुदरी नीइ मज्झाओ ॥ १४६ ॥ तेणुत्त इयमेसा, अवरा पुण कावि नहु मए
दिट्ठा । इय भणिय गया गेह, मूलिं कन्नाओ गोवेइ ॥ १४७ ॥ सुरभवण नीसेस, दु तिवारा पिक्खिऊण सुविलक्खो । पत्तो स
नियावासे, सुमंगलाकुमरिपासमि ॥ १४८ ॥ को भट्टिदारिए[1] एस वइयरो कहमिहागया तसि । भणिया सुमगलाए कमलवई
कहिउमारद्धा ॥ १४९ ॥ ओसहिपभावओऽह, पुरिसो होऊण आगया इहइ । जो तेण पुच्छिओ तह, दक्खविया [1]तेण त च
तहा ॥ १५० ॥ सुण ओसहिउप्पत्तिं, चिंतामणिभवणमेगयम्हि गया । विज्जाहराण मिहुणं, पलोइय तत्थ चकमिर ॥१५१॥ चिंता-
मणिमदिरतुंगसिंग अइलघणेण खडहडिय । पूयापहाणवावारवाउल तजि[2]सेवेइ ॥ १५२ ॥ खयरीए मज्झ विज्जाबलेण कन्नंमि

१ जेण जे D । २ वेसे ।

मूच्छिय पडइ । मा मज्झ समरेऽवसरिमणो होउ लज्जोत्ति ॥ १५३ ॥ न मए नायं एयं ता जाव पुणोवि तं गयं मिउणं । पच्चक्ख
पुरिससयं ते जे सिक्खामि बच्चाणं ॥ १५४ ॥ हियए वसविक्खए, जाणन्तो कोउओ समगोवि । सिसुमरिय पवसीए, ता
वम्मे मूच्छिय मिट्ठा ॥ १५५ ॥ बहुवक्खेवेमि सव्वं, न धाराविसरीरया जाव । मम्मो धीय पहाओ ता सीलोवविय मए वरिया
॥ १५६ ॥ वाण्डऽस्सरिसेण य भीमरपरसुमारेण बहुपयारेहिं । कम्मणीए माए कुमरीणामे कम्म पयम्म ॥ १५७ ॥ कम्मक्खिवि-
नामाए इमाए, रायणो सारिमम्मसारो । बीयदिणे णियाहो कम्मखणे सामिअम्मेणं ॥ १५८ ॥ न भक्खइ न पीमइ न हसइ
न सुयइ न वंसियइ गायणाइं । कक्खिमारिओ करेमी य सुलम्भे पाव्वइ नेय पयं ॥ १५९ ॥ बेउनिमा मेमाहं, मिहाए पक्खा-
रिऊण तं वयणं । तस्सेव पुरो वच्चं, सचिविविं इय विण्णिवेइ ॥ १६० ॥ नाय सामिणिस्समए, परियारं बंधिऊण मीहरिया ।
पत्ता रायस्स पुरो एसामुसम्मडुमारया ॥ १६१ ॥ तं वच्च सुरम्माम्ने, पाहुणो होसि कोवि पुत्तो य । जमसे मम्मेउ को
कम्मयसि कमक्खसरसे ॥ १६२ ॥ तम्मि हु करेसि किं नाम मइ पसे मूयमप्पणो कम्मा । इय मम्मिय गया एससीहगुरु-
सम्बरगहवे ॥ १६३ ॥ नस्सातस कहो पासो मियनिमिडजवरिज्जय । मरणेकम्मममगमरसमिवीए तीय मवियमियं ॥ १६४ ॥
पत्तामलोयपामो । सिसमो कम्मारमो सुणइ मए वयणं । एससीहमरमोरेकम्मकमसाय मए बहुया ॥ १६५ ॥ मायविइयम
कमिमियवेरिया गुणलोय पेसविया । इह हि मरिस्समवस्सं वच्चं न ममपरिहणी होमि ॥ १६६ ॥ पियविरहरमसूमिसमाम-
माणसगुणीए मे ममत्तू । णिच्चं होही वीमंसियाए ता पीमिएण वच्चं ॥ १६७ ॥ निप्पसरममवसमणिवेहिं वोच्छिंअं पक्खइ नत्थि संदेहो ।
इय नाम कहो सीहो वाओ वा होइ जमसवे ॥ १६८ ॥ इय मणिऊणं पढो, णिवेसिओ मिणिवपासगंठीए । पेक्खिमपावासं
मुच्चे कम्मा निपकमो ॥ १६९ ॥ वरुणमम्मोसे कम्मा सुमंगलम रत्न नाय वोल्लइ । वच्चमगसे वा पेक्खाइ, तं कंवं मिरयणं
॥ १७० ॥ हारारयं कुणंतीए, तीय रत्नागओ कुमारो वि । मा साहसं ति जंपइ छिंदइ सुरियाए पासं च ॥ १७१ ॥ सुच्चमवि

१ वीय ।

मीलियच्चिछ, अचलवाएहिं वीइऊण खण। पुच्छइ सुदरि। का तसि, साहस इय किमारद्ध ॥ १७२ ॥ वुत्तं सुमित्तमित्तेण सामि नज्जइ न अज्जवि किमेसा। पभणइ सुमगला ही, कुमार। किं तुह विपम्हुसिया ॥१७३॥ जणणीए कमलिणीए एसा कुमरस्स मीमरायस्स। दिन्ना कल्ले लग्ग, ता ववसियमेयमेईए ॥१७४॥ तो उच्छगियहियय, इमीइ संवाहिय कुमारेण। किंचि स चित्ते चिंतिय, कुमरो वुत्तो सुमित्तेण ॥ १७५ ॥ मूढेहिं किमच्छिज्जइ, किज्जउ वारिज्ज कज्जमिह सज्जो। को खलु खीरिमुवेक्खइ, छुहिओ पच्छा लभिस्सामि ॥ १७६ ॥ उवलद्धचेयणा सा अइलज्जती पमोयमज्जती। गंधव्वविवाहेण, परिणीया निव्वुया जाया ॥ १७७ ॥ रयणीए चेव पत्ता, सम सुमित्तेण नियगेहमि। सवाहिया विवाहाय, वासहरे हारहीरेहिं ॥ १७८ ॥ मइ सइ सूरे मित्ते, स भीमराओ हद्दा निसि वराओ। अज्ज विडविज्जिस्सइ, इयव्व अत्थगओ तरणी ॥ १७९ ॥ सपयासे लक्खिज्जइ, कवडविवाहोऽहवा इमा जंती। कमलवई करुणाए व दिसाओ अधारियाओ व ॥ १८० ॥ परिणयपमोयहल्लप्फुलेण चलिए कुमारभीमे सा। परिणयदिक्खावेस, रहसि सुमित्तस्स अप्पेइ ॥ १८१ ॥ निवसिय सय तु तव्वेसमासु सीहस्स पासमल्लीणा। अणिमिसमिक्खतेण, तेण वि आलिंगिया गाढ ॥ १८२ ॥ काऊण राहसिया सुमगला कवडनववहूपासे। गच्छंतीए तीए, कवडकुहेडुव्भडा धरिया ॥ १८३ ॥ हरिसभरनिब्भरगे, कुमरे गयखधराधिरूढंमि। तत्थागयमि लग्ग, दिएण त साहिय सिग्घ ॥ १८४ ॥ कायव्वेसु कएसु, कोउगमगलगणेसु सव्वेसु। पत्ताई ताइ भवणमि सव्वसन्निहियभोगगे ॥ १८५ ॥ अइपेसलेहिं अइकोमलेहिं आलावएहिं आलवइ। नववहुय नवनेहेण भद्दभद्दासणासीण ॥ १८६ ॥ वारवारपि न देइ जाव पडिउत्तर नमिरसीसो। ता पाणिप्फसेणं नाय जह एस पुरिसोत्ति ॥ १८७ ॥ को तंसि तुज्झ दइया नववहुनेवच्छलंछिया होसि। पुरिसस्स व तुहफासो ता भण किमतुच्छमच्छेर ॥ १८८ ॥ पाणप्पिय। मुणसि इम, त चिय माहप्पमप्पणोऽणप्प। पाणिग्गहणमहूसववसेण जो कुणसि पुरिसत्तं ॥ १८९ ॥ ता वद्धावेमि इओ, गंतु ताय च मायर च लहु। कुमरपभावेणाह, सुयावि तुम्हं सुओ जाओ ॥ १९० ॥ नवनवभवंतअव्भुयवियप्पपज्जाउलस्स तस्सेव। उट्ठित्तु सुमित्तो झत्ति, तत्थ जाइ रणसीहपासमि ॥ १९१ ॥ कहिओ य वइयरो तेण

समयम्मि संपत्तो। सोमामभवीए पवरपउमपहस्स निवेसम्मि ॥ ११५ ॥ तस्स कुमारे वरजम्मम्मि आवासिओ सुयएसे। परियणसहिओ तेणं, निययमनिमहसमणुपत्तो ॥ ११६ ॥ तं पत्तमित्तस्स उम्मच्छारणे जाव चिंतइ निविट्ठो। ता एक्किक्कमेक्कगुरुप्पमाय सिक्खागुणाऽऽरोयं ॥ ११७ ॥ सिक्खागुणमेक्कओ मह अमित्तइ होइ विणए पत्तो। अकयप्पसायएन महइ मणोरहा जे न सिज्झंति ॥ ११८ ॥ एयन्तरम्मि पाउब्भियपरियणकलेवरपूया। कमसमाई मासेणं, पत्तमिक्खमम्मि महिंदे ॥ ११९ ॥ सुरसुरपरिजणमुक्क-मणिमिईपयडसयपहसमणीय। अणुगम्ममाणमग्गा कुमैगयस्स कुमारीए ॥ १२ ॥ विसट्टवणेक्कनीलुप्पलेहिं पच्छीम सिसुकुरंगच्छी। पूर्णिम य तेणं सा दिट्ठा कलिसाइ न कुड ॥ १२१ ॥ कमलीसरस्सईओ विरोहिणीओ सयावि न हु तेण। कमलसमायारेणं, मणे विहिणा कया एसा ॥ १२२ ॥ मयणहरा किर कुंभा, पयंति य जेसिं मायसं भेत्तुं। तम्भेयक्कम इंसे, कयासु थिरया सस्सु कयमया ॥ १२३ ॥ एसाऽमरसं दुस्सहवम्महसरसल्लेण सल्लियस्स दढं। मह हियस्स विसल्लीकरणम्मि महोसही पवरा ॥१२४॥ कमलं दिवसंतसमंगम्मय कोरम्मतंगमरओ। सअणोमुक्कसोवाणविणमहो इव कुमारोहे ॥ १२५ ॥ इय चिंतियस्स तस्सवि संमुहं नेह मीसहसतीय। कामसरविम्हरिं नयणाहिं चोइए जाइ जम्मपुरे ॥ १२६ ॥ कुमुय पत्ताइ कमलाइं, देव। अकारणवियसिय एवं चिय विपमेविउजणाणं देवि भवणे ॥ १२७ ॥ पुण्णंपि मए दिट्ठा, कमय इमिह हु मयिविहियवरो। अणुसमे आयनिपं, इय चिं तिय मणिमणोमिवि ॥ १२८ ॥ सह नेव निकमाइं, ओयमकरस्माइं वंतपंति य। पुत्त पुत्त मि वं सपेम्मं, पेयवंती सा गया सगिहं ॥ १२९ ॥ [1]बाहुलेहोमि संमन्नमासयरेणं कयविक्कम पत्तं। नामामिमायम्मरईणं परोप्परं आमिणं तेहिं ॥१३ ॥ एयसीहो धाइ निस्सपलसेव चिंतामविस्स तं भुवण। भुवणं पि निवइ भुवणं सो पत्तो सिप्पमाणसं ॥ १३१ ॥ कमसमाई सीवहिणे, सीमं वाणइ पुरत्व पाई। पंचमपंचम सवेन्न, चासरसुपत्तमामम्मि ॥ १३२ ॥ सीहस्समंतूणं मयाऽऽसीयस्स सम्मयमवसह। दीव निवेदीय सिरिपउमिनिस्स करिमो जम्म ॥ १३३ ॥ तोसो वा रोसो वा अणुरागो चाऽणुरागमंको वा। भज्जोवि चिक्कमो

[1] पा ७।

जीविएणावि

लोयणेहिं जाणिज्जइ जणाणं ॥ १३४ ॥ गिहमइगयाए तीए, चिंतइ एसो अह विवाहेमि । जइ नहु एयंता मज्झ, जीविएणावि
पज्जत्तं ॥ १३५ ॥ आवासे सपत्तो- विन्नत्तो पुण पुरीए पत्थाणे । पुरिसोत्तमपुरिसेहिं, अज्जवि किं किज्जइ विलंबो ॥ १३६ ॥
भणियमणेण इह मह, पओयण किंपि अत्थि तो ताव जाह भो तुब्भे । सिग्घमविग्घ अयमहमुवेमि हियइच्छिए जाए ॥१३७॥
तत्थत्थि भीमराओ, रायसुओ कमलसेणसेवाए । तहिमागओ समीहइ, कमलवइ सो वि उव्वोढु ॥ १३८ ॥ तीए धाई उवचरइ,
सीरकप्पूरकचणाईहिं । सा कमलवइ पुच्छइ, नेच्छइ नामपि तस्सेसा ॥ १३९ ॥ उवचरइ पवचइ, चारुचाडुचाहेइ चक्खुखेवंपि ।
जो सो ताण तणं पिव, सरति वामाय वामाओ ॥ १४० ॥ जक्खगिहे गच्छती, नाया सा तेण तोऽऽणुमग्गेण । पत्तो महुरा-
लावेहिं कहवि जइ नाम इच्छेज्जा ॥ १४१ ॥ धणदाणजणसम्माणरूवसोहग्गपेसलाऽऽलावा । तिणमिव सव्वे तं किंपि कारण
रम्मपेम्ममि ॥ १४२ ॥ सुरगिहदुवारदेसे, उववि‌ट्ठो जाव चिट्ठइ स धिट्ठो । ता कयपूआ सा आह, हेल्लि कह गच्छिमो गेहं
॥ १४३ ॥ एसो दुवारदेसे, जापस्सइ किंपि अहव इह एही । ता तं चिट्ठ दुवारे, वारेसु तमेत्थ पविसत ॥ १४४ ॥ तीए
तहा ठिआए, विजणमि मूलिया मयच्छीए । कमलवईए कन्ने, बद्धा जा पुव्वसुवलद्धा ॥ १४५ ॥ जाया पुरिससरूवा, नीहरिया
पुच्छिया कुमारेण । देवमय ! किं अज्जवि, न सुदरी नीइ मज्झाओ ॥ १४६ ॥ तेणुत्तं इयमेसा, अवरा पुण कावि नहु मए
दिट्ठा । इय भणिय गया गेह, मूलिं कन्नाओ गोवेइ ॥ १४७ ॥ सुरभवण नीसेस, दु तिवारा पिक्खिऊण सुविलक्खो । पत्तो स
नियावासे, सुमंगलाकुमरिपासमि ॥ १४८ ॥ को भट्टिदारिए ! एस वइयरो कहमिहागया तसि । भणिया सुमगलाए कमलवई
कहिउमारद्धा ॥ १४९ ॥ ओसहिपभावओऽहं, पुरिसो होऊण आगया इहइ । जो तेण पुच्छिओ तह, दक्खविया [1]तेण त च
तहा ॥ १५० ॥ सुण ओसहिउप्पत्तिं, चितामणिभवणमेगयम्हि गया । विज्जाहराण मिहुणं, पलोइय तत्थ चक्कमिर ॥१५१॥ चिंता-
मणिमदिरतुंगसिंग अइलघणेण खडहडियं । पूयापहाणवावारवाउल तजि[2]सेवेइ ॥ १५२ ॥ रयरीए मज्झ विज्जाबलेण कन्नंमि

---

१ जेण जे D । २ वेसे ।

मूक्खिम पद्य। मा मज्झ समरोइहरिसमो होउ जयरोवि ॥ १५३ ॥ न मए माये एवं ता जाव पुत्तोवि दे गय मिसुवे। पच्चक्ख
पुरिससस्स इं जे सिक्खामि अप्पाणं ॥ १५४ ॥ विवर पसविआए, जायप्पो बोहमो समग्गोमि। मिसुमरिय जम्मीए, ता
जम्मे मूक्खिम विद्या ॥ १५५ ॥ जाजुष्मोरेमि दप्पं ता साहामिक्खसरिया वाप। मज्झो तीए पहावो ता संगोविय मए मरिया
॥ १५६ ॥ जायाऽऽमरिसेण य भीमपव्वुमारेण बहुपच्चएहिं। कमलाई माया कुमरीताये कम्म पउणा ॥ १५७ ॥ कमलिसि-
नमाय इमाए, पहुप्पो साहिकुमारउ्थो। भीयहिमे सिवाहो कमलाई आमिअमेवं ॥ १५८ ॥ न भवइ म जीमइ न हसइ,
न सुयइ न वयसियाइ आवइ। पडिमारिओ जाओहि व सुप्पमो पाउमइ नेय तई ॥ १५९ ॥ वेकविभा वेज्जाई, निसाए पवा
रिउम तं वयरे। वस्सेव पुरे मुद्दं, सन्निसिवि इय विचिंतेइ ॥ १६ ॥ जाय जामिणिसमए, परियारे वंचिऊण मीहरिया।
पत्ता वस्ससस पुरे सवसुचक्कउमारउ्थ ॥ १६१ ॥ तं भय सुरप्पहाओ पाहुयो होसि कोमि पुत्तो य। कमपं सम्मेव बो
कपमसि काकहरसे ॥ १६२ ॥ जयवि हु करेसि किं नाम मह बसे नूणमप्पणो अप्पा। इय भमिय गया रयणीइगुरु-
सन्नवसमये ॥ १६३ ॥ तस्सासर भवो पासो निवमिपिवइवरिजेण। मरमेवज्जामयसविवीए तीए भविवमिवं ॥ १६४ ॥
भणामवयसबाओ! दिसाओ सव्वाओ सुन्नय मह बम्हं। रयणीइलयक्खोहेवमसयाय मए बहुहा ॥ १६५ ॥ जायाहियप्प
वणिमिसवेरिणा गुरुमीय वेअविभा। इह हि भणिसमयस्स एवं न अमरलिहम्मी होमि ॥ १६६ ॥ पियविरहवाइमिअमास-
मारुसउमिय मे मच्चू। निच्चं होही वीयवियाए ता वीयपन कहं ॥१६७॥ निच्छयसमयमविचेएहिं वोहिवं भवइ मसि सीहो।
एय मणु मा हे मीहो जाओ ता होउ जयसमये ॥ १६८ ॥ इय भणिरं चेठे निवेसिओ निविडपासगंठीए। पडिप्पायाइं
मुणो अप्पा मिरालंवो ॥ १६९ ॥ अणुमगोयं कमह, सुमंगाल तत्थ जाय कोप्पइ। तस्समगा य पेच्छइ, तं कंठे निरालंबं
॥ १७० ॥ हाहारवं कुणंतीए, तीए कयवाओ कुमारो वि। मा पत्तस्से वि संपइ सिवाइ कुरिस्सए पासे य ॥ १७१ ॥ सुप्पमणि

१ कीय।

मीलियच्चिछ, अचलवाएहिं वीइऊण खण। पुच्छइ सुदरि! का तसि, साहस इय किमारद्धं ॥ १७२ ॥ वुत्तं सुमित्तमित्तेण सामि नज्जइ न अज्जवि किमेसा। पभणइ सुमगला ही, कुमार! किं तुह विपम्हुसिया ॥१७३॥ जणणीए कमलिणीए एसा कुमरस्स भीमरायस्स। दिन्ना कल्ले लग्ग, ता ववसियमेयमेईए ॥१७४॥ तो उच्छगियहियय, इमीइ संवाहिय कुमारेण। किंचि स चित्ते चिंतिय, कुमरो वुत्तो सुमित्तेण ॥ १७५ ॥ मूढेहिं किमच्छिज्जइ, किज्जउ धारिज्ज कज्जमिह सज्जो। को खलु खीरिमुवेक्खइ, छुहिओ पच्छा लभिस्सामि ॥ १७६ ॥ उवलद्धचेयणा सा अइलज्जती पमोयमज्जती। गंधव्वविवाहेण, परिणीया निव्वुया जाया ॥ १७७ ॥ रयणीए चेव पत्ता, सम सुमित्तेण निययगेहमि। सवाहिया विवाह्मय, वासहरे हारहीरेहिं ॥ १७८ ॥ मइ सइ सूरे मित्ते, स भीमराओ हहा निसि वराओ। अज्ज विडविजिस्सइ, इयव्व अत्थगओ तरणी ॥ १७९ ॥ सपयासे लक्खिज्जइ, कवडविवाहोऽहवा इमा जंती। कमलवई करुणाए व दिसाओ अधारियाओ व ॥ १८० ॥ परिणयपमोयहल्लप्फुलेण चलिए कुमारभीमे सा। परिणयदिक्खावेस, रहसि सुमित्तस्स अप्पेइ ॥ १८१ ॥ निवसिय सय तु तव्वेसमासु सीहस्स पासमल्लीणा। अणिमिसमिक्खतेण, तेण वि आलिंगिया गाढ ॥ १८२ ॥ काऊण राहसिया सुमगला कवडनववहूपासे। गच्छतीए तीए, कवडकुहेडुब्भडा धरिया ॥ १८३ ॥ हरिसभरनिब्भरगे, कुमरे गयखधराधिरूढंमि। तत्थागयमि लग्ग, दिएण त साहिय सिग्घ ॥ १८४ ॥ कायव्वेसु कएसु, कोउगमगलगणेसु सव्वेसु। पत्ताइ ताइ भवणमि सव्वसन्निहियभोगगे ॥ १८५ ॥ अइपेसलेहिं अइकोमलेहिं आलावएहिं आलवइ। नववहुय नवनेहेण भद्दभद्दासणासीण ॥ १८६ ॥ वारवारपि न देइ जाव पडिउत्तर नमिरसीसो। ता पाणिप्फसेणं नाय जह एस पुरिसोत्ति ॥ १८७ ॥ को तंसि तुज्झ दइया नववहुनेवच्छलंछिया होसि। पुरिसस्स व तुह फासो ता भण किमतुच्छमच्छेर ॥ १८८ ॥ पाणप्पिय! मुणसि इमं, त चिय माहप्पमप्पणोऽणप्प। पाणिग्गहणमहूसववसेण जो कुणसि पुरिसत्तं ॥ १८९ ॥ ता वद्धावेमि इओ, गंतु ताय च मायर च लहु। कुमरपभावेणाहं, सुयावि तुम्ह सुओ जाओ ॥ १९० ॥ नवनवभवतअब्भुयवियप्पपज्जाउलस्स तस्सेव। उट्ठित्तु सुमित्तो झत्ति, तत्थ जाइ रणसीहपासमि ॥ १९१ ॥ कहिओ य वइयरो तेण

कस्स सम्मो समोसामयस्स । पहसइ साहसकलं, घइ तीय अम्मामीए ॥ १९२ ॥ पमणइ सहासमेसो परनारिसहोयरस्स नाहस्स । परपरिमीया पसंमि पसि पम तीसि बाहि बहि ॥ १९३ ॥ स पमोम मीमराओ सासुसमुरयण पासमखित्त । चाइ समित्पमओ, तुमइ मुम कि सुमो बाओ ॥ १९४ ॥ मिमसुसमिमराइ ममवाइ, सुवियममय समज्मा समगिम्पी च । तो बा- मासओ किमेयंपि च पममइ पमओ बाओ ॥ १९५ ॥ मणइ मरिगो कि ममममाममाऽऽममसि मयस[1] गसिसेम । मेगममि- विम मिहो मुमोच मरनारिसरिमतो ॥ १९६ ॥ तो मुवसो पुसो ममऽम्मो सेय सतु विममबेम । मिमंति सामि मुसेम मुसिय ही मबे मेम ॥ १९७ ॥ मसुरपसासु महसरिसमसु ममीसु सा गसिट्ठावि । मास न सिहु ता सामि मूसमिसामि रोमंति ॥ १९८ ॥ मइ कममाए सम, मसरिसासममाम मम सिममरो । मममममूममूंपिमासमिमो मसु जाओ ॥ १९९ ॥

मसीसमं मिसिराम ! रमसमसेसीम्मेसुम्म मसिम्म मसा सहिसमेम सिममसमी गमाऽऽसमसा सुमये ।
मोमोमापिममसिमसममममसम सुममे मसि, माममसो मिमि समसमामम सम ममोसमो मोमबे ॥ २ ॥"

कहिसं मेममसि गोसे ममममाई ममम मए सिद्वा । मूमं ममोसम नेमसममिमसामो म महीमाई ॥ २ १ ॥ मइ सो मीम हुमारो मिमसुममममिसीमेसुरमिममे । सह मुसससहस्सेहिं ममसमाहो महामसो ॥ २ २ ॥ ममसमसरमासमो रमसुससंमरेम रमसीई । संहरिसं संपत्तो स हरिमसूरोम्म मुससं ॥ २ ३ ॥ महसमसरेम महम्म ममसमो मिमइ ममसमसमो सि । रमसीहेम सि सेम्म महसा समोसम्म ससो ॥ २ ४ ॥ मिमनिसमसमसममसिसमिमसमासम रोमइ सि ममममं । ममममिगमम ससो स पमहो समरसंमहो ॥ २ ५ ॥ समाहि—

ममिहूममई ममममसमई, पसमरिसमसमसमसरिमसहि । सिसिसमहि समसर समसरेहि, ममसमामसुमाम सिसिममसरेहि ॥ २ ६ ॥

1 ममिमम-ममम्म म. ० ०. ।

फारक्क १फरफर्हिं सुहडवग्गि, धाणुफियदुफाहि तदणुमग्गि। वरभल्लभल्लिनाराछसेल्ल, पेल्लति वीर गयालमल्ल ॥ २०७ ॥ तो छत्तचिंध-धयवड पडति, कुंताहयकुंजर आरसति। भडभालभिउडीउब्भड भिडति, सिरपाणिपायपाडिय पडति ॥ २०८ ॥ करिनरह मुड-रुडइ मिलति, अपुरुव्वसिद्धि उद्दिय कहति। धडधावर्हि उक्खयखेडखग्ग, हुंकारु करहिं सिर धरणिलग्ग ॥ २०९ ॥ उत्तालताल-वेयाललक्ख, किलकिलहिं भूयभेसहिं अलक्ख। फिक्कारफारफेर विफुरति, डक्कारहिं १डाइणि हडहडति ॥ २१० ॥ गरिसइ महा-रणि भग्गइ भडगणि अत्थमियउ चारहडिगुणु। चिंतामणि झाइओ अग्गह ठाइउ रणकुमारु उट्टेइ पुणु ॥ २११ ॥ मडलियचंड-कोदंडदंडपामुक्कसरपहारेहिं। रणसीहो रायधले करेइ वट्टाइ कोट्टाइ ॥ २१२ ॥ मुडेइ मत्थयाइ दाढाओ दाढियाओ उक्खणइ। कप्परइ कन्ननासा, नीसको सिफरोओ य ॥ २१३ ॥ जीयाउ चायाण लुणेइ रग्गाण स्वराग मुट्ठो। फरग फारफाण फाडइ फोडइ गुडाओ वि ॥ २१४ ॥ अह नघिऊण आणइ पाडइ पाएसु पायउ भीम। आयासनपयद्ध धरेइ समुर रक्षारुढ ॥ २१५ ॥ तो निबलमयत धचापुरिस व पेक्खिऊण निव। पयडेइ पुत्तिगाग सुमगला सव्ववुत्ततं ॥ २१६ ॥ नववहुवेसा एसा अव्वगयआगा-४ सपासतायरस। पाएसु पडइ भीम मोयावइ लज्जमाणमुही ॥ २१७ ॥ रणसीहो जोहारइ पागी पिट्ठीग देइ नरनाहो। कुमररस कुलक्कमविक्कमाइ जाणित्तु सतुट्ठो ॥ २१८ ॥ महया विच्छड्डेण विवाहूसनविहाणओ रन्ना। सकरेण मुया मीलिऊय अप्पिया सीह-कुमररस ॥ २१९ ॥ हरिसभरनिन्भरगीग तीए सद्धिं दिणाणि कइवि तहिं। अच्छिय कमलवईए सह चलिओ आगओ नगिहं ॥ २२० ॥ न उणो रयणवईए परिणयणत्थ गओ स सोमाग। कमलवईलाभेण सुणिउ कगकिगमप्पाण ॥२२१॥ मज्झंताण ताण सावार तक्खणपि पच्चूह। विसयसुहामयसित्ताण, कोइ कालो अइक्कमइ ॥ २२२ ॥ अह रयणवई नितेइ सुकओ मोडग्गिओ स रायसुओ। आगच्छतो वलिउं गओवि किं अज्जवि न एइ ॥ २२३ ॥ हुं विन्नाय जाउड पडिया कावि सा गन्तु पवासा। नि-क्खफडफ्खखेवेण जीग स जडो धस नीओ ॥ २२४ ॥ निब्भर भरिग हिययंमि तीग तस्सथि मन्न नोगासो। न नहिं तुलइ

१ प D २ ओहिं B। ३ ग। ४ गा D।

चिमेमो कुमे कम्मोमसम्मारे ॥ २२५ ॥ च तम्मि वासंमि पावेमि सिरिमि वेम्मि परिभावे। नियमाभिष्ठिपमासुरियउम पयाहण
मवरं ॥ २२६ ॥ जइविनक्कुसमपुरिसपमवाय सम्मं मरिसकुसियप। तो गम्मूसिया नामियम्म संमासिय तम्मि ॥ २२७ ॥ मह
परियं संसार सुनिसारसुयं कुमारोमसमो। मयमाइ माए मंतइयम्मसमं पत्तं कि वे ॥ २२८ ॥ संगीमसम्ममियं मंसरिय गम्मू
सिया पत्तो। अचिरेण चिय पत्ता पत्ता कुमरस्स मवसिमि ॥ २२९ ॥ कमामइं तम्मि मायमिदिमिय वेण पइ पाइ सप। कम-
गमईय पत्ते कुमारअभिजससंवो ॥ २३० ॥ नयमनकुरगमराति कम्मसमं साउमोइ सविसेसं। मीसासपासपरिसम सुरेण संचिमप
जेण ॥२३१॥ कइयाचि कमसमपरमयाससमयकमाईस पाणाए। रयणीए निसीहे गंयमूसियम्म सुउहिमम्म ॥२३२॥ पेम्मासासाउमो
कमसमं पासमंदिरसंवो। कुमरस्स ईसिमो पवइमेव परपुरिससंचारो ॥ २३३ ॥ तहवि म सो पविसइ सुपरीक्खियप चोक्क-
सीसमीयम्म। कमसमईय कम्मे सीसंमि म होइ कइयावि ॥ २३४ ॥ सक्कं पेम्मरइ वसम्मू परपुमिसं सुरिसपवं चिरं। चेे
वाम विसेयवं चिविमाय निच्छिमपमाम ॥ २३५ ॥ नर कुम कुम पेच्छंतो कुणउ पाममिय चिमेयंति। एयमपमाई जं मह
मपंपि परपुरिससंचारं ॥२३६॥ पिय! मंगमयसीए कुमसए ममस जसमसमिमीए। कम्माई मगम कुमासु जाणि चिरपरिचि कुए
सिद्धिं ॥२३७॥ देवि देवि! चिम्मे पमुंमरे चिमरमायरेण मई। पविसिसु सत्ति कुमसममेरिसं जेण म सुणमि ॥२३८॥ कुमइ
कुमारो वसं कसइ कमयस्स वाइण एमयस्स। इय मवसामो कि कुमि पूमय कम्माइ कुरे ॥ २३९ ॥ 'जइवि तयंमि वयस्स
वसमइ 'वाए, मवयस्सियइ'मसमिनीए मयम्मिईं मणुसय। तहवि निरंतरसंगमि परियमिममयमो "कपमरयसाउ म भिंनु होइ
[1]निसुम्ममसमो ॥ २४० ॥" तो गंयमूसिय वम कम्मगंसोमसमोयम्मसेसु। चिरेसमाम मंयं मूसि जेमं पमीम ॥ २४१ ॥ तम्म
समोगिमि पमोपमं च समयजीविस्मो चि। तम्मसमो सीसे तमयम यो अमर समस्मोपम ॥ २४२ ॥ कोमपयमाय संतावियम
वो तेम वयसिपं एवं। मीसारिजह एसा पेसिजह पेम्मपरिमि ॥ २४३ ॥ तो पयइयमपमं पभीवे संपि देइ मारेसं। पममस

१ कुमी B D। २ समम B। ३ क। ४ च। ५ मतु D।

इय तेहिं रहारूढा विहावरीए
रेवि किमेव पुण पहुआणत्ति मन्नंति ॥ २४४ ॥ हक्कारेइ कुमारो त सामिणि काणणंमि पासुत्तो । इय तेहिं रहारूढा विहावरीए
इमा निहिया ॥ २४५ ॥ दाहिणलोयणफुरणाओ जाणिय मारणतिय वसणं । तहवि तक्खणा पाणा मह त्ति ज होइ त होउ ॥२४६॥
इय आउलाए तीए तेहिं रहो पेल्लिओ सुवेगेण । भणियमिमीए किमज्ज वि न काणण एइ जत्थ पिओ ॥ २४७ ॥ जंपियमिमेहिं
सामिणि ! पेइयवासाय पेसिआ तंसि । पिउवइवासनिवासाय पेसिया किन्न ता भणइ ॥ २४८ ॥ असमक्खियमपरिक्खियम-
कज्जमेयारिस कुणतस्स । कुमरस्स अवस्समहो होही अणुतावदावग्गी ॥२४९॥ अचिरेण चिय पत्ता पाडलिसडस्स सीमभूमीए ।
आहेसा सप्पुरिसा ! भो भो एत्तो नियत्तेह ॥ २५० ॥ तरुणो तेऽमी सुगा चगा दीसति पाडलिपुरस्स । जामि सयमेव एत्तो
तुम्हाण न अत्थि एत्थ बल ॥ २५१ ॥ अह पणमिय सारहिणा वुच्चइ पच्चक्खसीललच्छि ! अह । इय कलुसाऽऽणाकारी सजाओ
कम्मचडालो ॥ २५२ ॥ सुपुरिस ! को तुह दोसो ससामिणो सासण कुणतस्स । उवलो व सेवगो वा खिप्पइ चिंतिज्जए जत्थ
॥२५३॥ पहुपारवस्समन्न सलुद्धया दूरदेसदरिसावो । जुत्तं वुत्त तत्तन्नुएहिं सेवासु ण य वित्ती ॥ २५४ ॥ मह वयणमेगमिणमो
तस्स कहिज्जासु मंदभग्गाए । ‘ मह तुह कुलपेम्माण कस्सऽणुरूवं तए विहिय ’ ॥२५५॥ रुयमाणी सा मोत्तूण सदण वडतलमि
उवविट्ठा । जोहारिऊणमेय नीहरिया ते विहु रहेण ॥ २५६ ॥

“ विहिए अहिए कज्जे सफिज्जइ तप्फलं सुह सहिउ । अलियकलकेण पियप्पवासवेससमहो दुसह ॥ २५७ ॥ ”

सियअसियकारगो मह तमासि अज्जेव इय पयासेसि । खणरत्तविरत्ताण हहा नराण नमोक्कारो ॥२५८॥ इह एहि अव ! हत्थं
वच्छाए वच्छला तुम आसि । असरिसदुहदावानलपज्जलमाणिं मम रक्ख ॥२५९॥ अहवा माए ! मा एसु एत्थ त जाहि सुन्नरन्नमि ।
मह दुहदंसणसवणेहिं तुज्झ फुट्टिस्सए हियय ॥ २६० ॥ वरचिताए कुमारी परिणिज्जती पहारपीडाए । संपइ एरिससावाय ते अह
ताय सजाया ॥ २६१ ॥ मुद्ध सुपरिक्खियसीला पाणपिया राय ! खलु पियस्साऽहं । ता कस्सइ भूयस्सेह कुमइणो इय परिप्फंदो

॥ २६२ ॥ मे ^अविसिस्सं पेईबहरमि [illegible] । कोसग्गिसेण पुरिसो होई [illegible] सण्णेर ॥ २६३ ॥ [illegible] मणिमयमुरएणेव पर्यपर [illegible] । निविविम्मिय[illegible]पिय पडिपम्पेम [illegible] ॥ २६४ ॥ तेणेव तरुणीओ दाणनाहो समपमपसीय । [illegible] न होंति दिम्मं [illegible] वा न इमाई मायेइ ॥ २६५ ॥" सीओ य मणुस्सस्स [illegible] सयाणमादि । एक-म्मि विम्मुम्मि नो इस्कोमो न परामेमो ॥ २६६ ॥

सीओ साउवणिय परमपविसं [illegible] मिसे । उपमकितिनिम्मिसे मुविमुरएपसाहण[1]मिमिसे ॥ २६७ ॥

[illegible] सर्व सीम, मूसमरीसिय मूसर्व परमं । परोसे निमोई, सम्पविमुक्कस्स निवसम्मो ॥ २६८ ॥"

[illegible] होइ इम्मु हिमसीमक्क, वेमिङ्गम मोक्क पत्तु उवइ गिरिसरिअक्क ।
[illegible] सम्भरस्स [illegible] कोइ न कंपरि निम्मसमीसमयापि पीय पापि [illegible] ॥ २६९ ॥"

सो [illegible] पारमिसुरपत्थिमासु [illegible] । [illegible] पाए [illegible] पुमानुवर्त ॥ २७० ॥ इमोप- पत्तीसि लेहि कहिओ [illegible] सम्भो । [illegible] सो इमरो नगरपसीवाइ मादएणो ॥ २७१ ॥ [illegible] मए इव [illegible] संती । [illegible] कि पीवाइ किमेइ पियरम्म पर्यमि ॥ २७२ ॥ [illegible] साहमो [illegible] को-इसिमं । निमनपर्व हाइसं [illegible] ॥ २७३ ॥ [illegible] पुई [illegible] म मे केण चिंतिर्य एवं । [illegible] म पुस इव मामी कंपिय पीय ॥ २७४ ॥ [illegible] पुमाए [illegible] । कि गपसमीवमओ निवाइ मनु मलय मया ॥ २७५ ॥ सा गंधमूसिपा सावि निमाया रीतए [illegible] नेव । सो रायसीहो [illegible] पीम पामाप् पासमिसे ॥२७६॥ [illegible] निविमुपायणर [illegible] । [illegible] देश्या सा कदिमु एवं गयपुरस्स ॥ २७७ ॥ सोमापुरीए तीए गंतूर्ण

१ [illegible] D ।

पुरिसुत्तिम भणाविय पेसइ पुरिसे पुणो तमाणेउ । ते
साहिय समग्गपि । तो रयणवई रयणीयरि व्व हरिसुद्धुरा जाया ॥२७८॥ आसाए तस्स ठिया सपइ
कणयपुरगयकणयसेहर विन्नवति तहा ॥ २७९ ॥ अह्नपहाओ वलिओ तया कुमारो तहावि रयणवई । तह पावकारिणो किं जुत्तमिण तहवि
पेसिज्जउ कुमारो ॥ २८० ॥ भणिओ ताहे सीहो मन्नेइ नेव अन्नो इमाए से जम्मो । सुहसउण मगलाईहिं निग्गओ सोहणमि दिणे ॥२८२॥
उवरोहो ॥ २८१ ॥ कमलवईए पाडलिनयरे अन्नेसणाय तह चलिओ । आवासिऊण गच्छइ चक्कहर देवमच्चेउ ॥ २८३ ॥ एत्थतरमि फुरिय दाहिणनय-
कइवयपयाणएहिं पत्तो चक्कउरबाहिरुज्जाणे ।
णेण तस्स कुम्मरस्स । नाय च तेण सूयइ पियमेलयमेयमुत्त च ॥ २८४ ॥
" सिरफुरणे किर रज्ज पियमेलो होइ अच्छिफुरणमि । बाहुफुरणमि पियजणमुयालयालिंगण जाण ॥ २८५ ॥ "
पच्चभिजाणाइ वडुओ
फुल्लाइ फुल्लवडुओ पाणितले तस्स सो समप्पेइ । कुमरोवि ताइ गिण्हइ दाउ मोल्लं च नियहियय ॥२८६॥
रणसीहो वि हु चिंतइ पेच्छतो फुल्ल-
नाहो सो एस मज्झ रणसीहो । रयणवइ परिणेउ पुणो वि सपत्थिओ मन्ने ॥ २८७ ॥ हक्कारिऊण नीओ निययाऽऽवासमि अतिहिपूयकए ।
वडुयमेयमहो । कमलवई त नियपाणवल्लह चेव पेक्खामि ॥ २८८ ॥ परिहावेई त धोयपोत्तिय सारसुकुमार
कुमरेण सो उग्घडियपुव्वपेम्माणुभावेण ॥ २८९ ॥ अग्गासणोवविट्ठ भोयावेऊण भूरिभत्तीए ।
॥ २९० ॥ भणिय रणसीहेण त पेच्छतस्स अणिमिसच्छीहिं । केणावि हेउणा भूमिदेव ! तित्ती मह न होइ ॥ २९१ ॥ विप्पो
पभणइ नणु एवमेव भुवि कोवि कस्सइ सुहाइ । चदस्स चदिमाए चदमणी झरइ किमन्नो ॥ २९२ ॥
कुमार —गतव्वमत्थि पुरओ मह दियवर ! जइवि तहवि कह जामि । तुह नेहसकलाओ सकलियं ज मणो मज्झ ॥२९३॥
ता चलिज्जउ सह चेव देव ! किज्जउ महोवरि पसाओ । वलिएण मएऽवस्स तं इह आणित्तु मोत्तव्वो ॥२९४॥
विप्र —अलमिमिणा विग्घेण अणत्तरय चक्कपाणिपूयाए । तह मह राईहिं अदभवभयारिस्स किं कज्ज ॥ २९५ ॥

कुमार—असंखम्मसमयस्स हरियाणगरिजमाणसा तुब्भा। जइ न कुणमेसि वयणं होई फलेण वलम्भो ॥ २९६ ॥ सविवेयंपि निसुणं पेच्छिऊण कुमरस्स सो तहा भणिओ। जइ तइ धम्मत्थ सम्मेसमेव वायं कुण पसायं ॥ २९७ ॥ अणिसइ पक्कइ पिउइ नेमइ समोइ सुणइ धीकेइ। पडिविंयो य्य कुमारो रज्जं तेणेव सह कुणइ ॥ २९८ ॥ कइयावि माणगुम्मायमाणयरं निएऊ सो पुत्तो। केरिसीय चमक्कं जीए य्य तम्मसि कमेणं ॥ २९९ ॥ कुमरेणुत्त तीए पभिणइ किर विओगजीवाए। ता तेण पवयाइय्य गुणमइय चेव मिम्मरिया ॥ ३०० ॥ भणे पडसम्मिणं आगम्ने गिरिसुयाय 'सारिच्छ। सुंदरं नेमीण वि न दीसइ नारिसं सामि! ॥ ३०१ ॥ संपइ पुणममसेसं चित्तं न मनामि मित्त! तीय विणा। किंतु मइ तुमस पासे मणम्मे संपयाए सो-क्खं ॥ ३०२ ॥ भणियं रिणय सुंदर! मा तम्मसु एयवत्तं य्य तीसे। अणाइरिए वि विहिया सोयंति तवं न सप्पुरिसा' ॥ ३०३ ॥ अणवरयपयाणेहिं कुमरो पत्तो पुरीए सोमाए। सत्तोभमिए कयविरिएहिं पुरिसुत्तमो पत्तो ॥ ३०४ ॥ पुरिसुत्तमेण पुरिसुत्तमेण परमूएवेण सोमाए। परिमव वहिणा तोरणवयारा य पवेसिओ कुमरो ॥ ३०५ ॥ सव्वजिण्णसविचमिचि राम रिसओ वसा धरणासमओ। ओऊसिय विसोहिय-वारओगनरगयवम्मोमि ॥ ३०६ ॥ मंगलतूररवेणं नवियरयविविहसरसमुदयेणं। चित्तं पविगाहणं कुमरेण समं कुमारीए ॥ ३०७ ॥ कइवयपरिमाणि यसेण पारिओ परिवारेण रमसीहो। संपयाइ सुरेण सह रिसम दिव्वंगमसवाहिं ॥ ३०८ ॥ एक्कया रयणीए पुच्छइ रिवमोगया समयाए। केरिसिया चमक्कं मया वि या एयइ तुर हियं ॥ ३०९ ॥ अवकुममोयमाणमहि मज्ज अायं वओ तुमं पून। वपमायवीओ पीए पच्छयसि तो 'भणिओ ॥ ३१० ॥ पमिचमिमेणं पाइ मम दीसम अवि अरिसी वयणी। ता तुए सादेमि अवायिरेण केओसमाणेण ॥ ३११ ॥ तीए' विमोए जाए विविहपारेण देवि परिणीय। तीरी न जाव कम्मइ ता रज्जइ अंतवडिम्मावि ॥ ३१२ ॥ रामरिणाम तीए तओ सगम्मे पया-हिणं सव्वं। जइ गंपमूसिया सा पच्छइ पेसिया तुरिए ॥ ३१३ ॥ जइ परपुरिसपसंगो भासिओ पेडगम्मभोभेण। जइ तुए तीए

1 सम्मरिसं B D। 2 भणिओ O D। विम्माए तओ।

मतेहिं सुत्तिओ चित्तविद्देसो ॥ ३१४ ॥ कमलवई कुमराण समक्खमक्खियमिम तओ एसा । समुद्देण तीए अवणीयलछणा निव्वुया
जाया ॥ ३१५ ॥ रणसीहो सोऊण उब्भडमिउडी विडकियनिडालो । रयणवइ निब्भच्छइ हच्छ रत्तच्छि दुप्पेच्छो ॥ ३१६ ॥
आ पावे पावमिणं कुणमाणीए तए विसकाए । खित्तो दुहन्नवेऽह अप्पा नरयधकूवंमि ॥ ३१७ ॥

" कुकुरकेरीघरणि साहु साहुल पोक्कारइ, अनउ नारि ज जणु गणेइ वइसणइ महारइ ।
कोवि[1] किंपि जइ देइ तसुवि कुक्कुरी न मुक्कइ, दाणु माणु दिंतह वि महिल पुणु मारण-दुक्कइ ॥ ३१८ ॥ "

जमलियकल्कपकेण धाडिया पाडिया दुहचियाए । कमलवई कमलच्छी, हाहा पच्चत्तमणुपत्ता ॥ ३१९ ॥ रे रे काहारनरा
कट्ठह अविलम्बमेव कट्ठाइ । धवलहरस्स दुवारे चिय सुसचं पवचेह ॥ ३२० ॥ जा नऽज्जवि कमलवइ दुहदहणाडम्बरेण डज्झामि ।
जालाजालजडाले चियाऽनले ताव सुज्झामि ॥ ३२१ ॥ कहकहवि चियाए सचियाए चिंताउरेहिं तेहिं तहिं । चलिओ चडिउ सो
परियरेण पडिसिज्झमाणो वि ॥ ३२२ ॥ इय सुणिय निवेणुत्ते धिद्धी एयाए कवडभरियाए । नरयगइ गामिणीए निंदिय अवि-
सिट्ठसिट्ठाए ॥ ३२३ ॥ एवपि वयमिमीए सिरमि निवडउ अणज्जकज्जाए । अलियकलककय पुण इहइपि हु मत्थए पडिअ ॥३२४॥
एव खिसिज्जती पुरलोएण पए पए पावा । लुयपुच्छकन्नधूसरखरपिट्ठारोविया का ॥ ३२५ ॥ विग्गोविऊण नयरे रन्ना निव्वा-
सिया परिव्वाया । नारीजणो अवज्झो त्ति तेण जीवतिया मुक्का ॥ ३२६ ॥ कुमरो वि मतिसत्थाहसाहुपमुहेहिं पुरपहाणेहिं ।
वारवार वारिज्जमाणमरणेक्कताणो वि ॥ ३२७ ॥ लज्जतेण पुरिसुत्तमेण पडिरुज्झमाणमग्गोवि । तमि पएसे पत्तो मिलियाखिललोय-
लक्खमि ॥ ३२८ ॥ तत्तो हाहारववाउलाणणे नरवइमि नयरजणे । मच्चुसुनिच्चलचित्तो चित्त चडिओ चियाए सो ॥ ३२९ ॥
सियवत्थविलेवणकुसुमदामलकारसेयमुत्ति वि । रणसीहो कमलवईअणुराएणं दढ रत्तो ॥ ३३० ॥ तव्वयणाउ हुयासो जा किर पउ-

---

१ विहि B । २ वु D ।

बीभच्छो विवायस्से । ता एग्म किमतो विण्हुमारो सविमस्से ॥ ११९ ॥ मयम पुण वण्णमिसो न कयाविं दुक्कए कओ एसे । एए नइयवि दु मग्गु कहा विरमइ पण्णवो पावाओ ॥ ११२ ॥ विष्णेण तेण भणिओ स भइ ! किमिमे तए समारद्धं । जिण-वयोविस्साइविविये य सुद्धरूपसूरूव ॥ ११३ ॥ कामं य तण्ह दुमए पवरपाव ममाण्डवेण । मसिये कयविणोए तुममणोमन्न मुणिस्स ॥ ११४ ॥ कम्मकाइ‌भाणवाव पाव पावस्स दुक्खिय सको । मच्छिमवसणस्स कम्मकसाएण वा वेरिसी दुक्खी ॥ ११५ ॥ कम्मकाइं तव मया वम्मिडम्ममवोराहेण मा मएह । मिवविणकम्मेहिं कहिं पि वाइ को कम्मं पीओ ॥११६॥ दुक्खीइ वोमिस-स्सोवकम्मिवओ सम्मओ वि संसारो । वा तत्व तत्व भवण न वंति पीवा सकम्मेहिं ॥ ११७ ॥

किञ्च—" सगुणे य निग्गुणे वा कम्मकरण समायरेण । परिणामो सम्मत्त वि विसेसओ बहुगुणमण्ण ॥ ११८ ॥

तत एवं— सगुणमगुणे वा कुर्वता कर्मवादं परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥ ११९ ॥

अपि च— इह महत्याने यत्नस्य प्राणान्तमावहत् ॥ १४ ॥"

यत—मा स्म सन्ति विवानन्तु मा स्म सन्तु विमहम् । यद्यस्य पवि गृण्वन्ति नृपस्येमैव पण्डिताः ॥ १४१ ॥

तथा—जुण्णा पाणे पाविसयस्स मा नाम संगमो होइ । पाणपरिवायणस्समेव मेत्तमाओ दुक्खो ॥ १४२ ॥

कुमार! एमत्तं सम्मोहं च—किमार ! हयमसवखे निरविक्खिम अविरयम च वेमवि । कयाइ निपनामणम्मकेण काविय मइए वीमही ॥ १४३ ॥ हरिसमयमाणेण य ताऽऽमुहं कमेमुहसिरो । किम कामगुणय मह सिम्म विग्याव सओहिसि ॥ १४४ ॥ भइ वरकुमार ! निस्सार मोहसुहकयओ मए जाया । निब्बिणो पासे सा अत्थि सुरिसया ता दुइ गिराए ॥ १४५ ॥ विविणस्से अमायं सस्से मिस्सेम्पु तं साममि । सच्चं सविच भाइ होइ निठुय ता कमरुमोहं ॥ १४६ ॥

कुमारः—भो भूमिदेव ! अज्जवि किं किज्जइ कज्जउज्जमो नेय। किं कुमरदक्खिणाए विणा पसिज्झेइ झाणकला ॥ ३४७ ॥

कुमार—मणमप्पिय पुव्व ते सपइ अप्पावि अप्पिओ एसो। अवराहिं दक्खिणाहिं दिएस ! बज्झाहिं किं सज्झ ॥ ३४८ ॥

विप्र —तुह पासमि तुहप्पा अच्छओ विप्पस्स मज्झ किं तेण। ज मग्गेमि जयाह तइया त मज्झ दिज्जासु ॥ ३४९ ॥

कुमार —इय एवमत्थु किं वित्थरेण आणेहिं झत्ति पाणपिय। अह स दिओ झाणे इव आसोणो जवणिया मज्झे ॥३५०॥ अच्छरिय अच्छरिय आगसजीवणोसहि सा दट्ठव्वा दिट्ठिया मए इन्हि। इय रणसोहे जाए हरिसभरुब्भिन्नरोमचो ॥ ३५१ ॥ कटरि गुणेहिं अणप्पो विप्पो भुवणे वि नेरिसो च्छइ ज मया वि कमलवई। एव पुरि नरनाहे जाए तदंसणुम्माहे ॥ ३५२ ॥ गयणगणमि विज्जाहरीसु करधरियकुसुममालासु। छोडियकन्नोसहिओ कोवि। जइ सव्वमिण होही इय हलबोलाउले लोए ॥३५३॥ अवणीयजवणिया सा पलोइया पुलयपेसलगेण। रणसीहकुमारेण सच्चिय एसा पिया स दिओ अभविसु कमलवई ॥ ३५४ ॥ तुट्ठेण लोयनाया ॥ ३५५ ॥ रइरमरूवरेहाइ गव्वसव्वस्स निस्सरणसरणी। गोरिअभगुरसोहग्गमग्गअग्गमि अग्गलिया ॥ ३५६ ॥ पञ्चयनिमित्तमुत्तं तओ कुमारेण। भो भो पेक्खह पेक्खह एस पिया मज्झ कमलवई ॥ ३५७ ॥ लायन्नवन्नसोहग्गचगिमागारमेय मिक्खता। रयणवइ चिंतता भणति लोयाइ इम मिलिया ॥ ३५८ ॥ चामीयरस्स पुरओ जारिसिया रीरिया गुरुगणस्स। कमलवईए पुरओ रयणवई होइ तारिसिया ॥ ३५९ ॥ ता ठाणे पडिबधो कओ कुमारेण मुत्तु रयणवइं। को सक्करारसन्नू कडुयकसाय अहिलसेइ ॥ ३६० ॥ तो रन्ना सा न्हविया सव्वालकारभूसियसरीरा। देवगभूसणधरा विहिया कप्पद्दुमलयव्व ॥३६१॥ पचप्पयारभोए तीए सद्धि स भुजिउ लग्गो। तेत्तियविओयवासरसगुणियं सोक्खमणुहवइ ॥ ३६२ ॥ पुच्छइ पिए वराओ वडुओ दुहमच्छिहदी सविहि पासे। तीए वुत्तो तो सो ओसहिलाभाइवुत्ततो ॥ ३६३ ॥

जमि य—मिम्मिउ[1] मंडवि केज्जु कमलपवलंजल, फिर अवर्हत मर्हतर तुम्हु सजल्ल ।
इयविहिविहिय 'मम्महु निट्ठुर मुट्ठि विणि, मइ निवसम यवलंबह पिम्मु पल्लंकु सिणि ॥ १६४ ॥

सिवइ एसा रयणाईए विम्मेहय सिविओ । वाइम्मिलेहो वाओ भवलवामो पुत्र मयम ॥ १६५ ॥ एसा वाइवि पयाई सम्म-
रयमा पयोमरोहेम । तहवि हु मए एमिए जणपरिकम्मं किमजेय ॥ १६६ ॥ अपाराह अपार पु किवाइ अमपलिकमहयं ह
रियइ । बयपयाई अपार परंध, पत्तिरी कीए मणि गुणवाद ॥१६७॥ पढम वि पको हरिसेण नियपरं पत्तिको पयवेण ।
पुमरो कमलमईए तेयुतं मज्झु वं देमि ॥ १६८ ॥ बइ एवं च एस ससुम्मा मज्ज सरिसिया सामि ! । एवं पुण्णावि मयसवि
मयलतगुपेण माहप्पे ॥ १६९ ॥ अइ पयाए कमसवि दीए पायाए पेमियाए कवं । तहवि हु मइ पमियव्वं विसिट्ठकुलसंभवो
देसि ॥ १७० ॥ इत्थी निरवरिस्मा ईसाविसमोसिया सम्मयरए । पुरिसिओ एस बलओ एवं दीए कुमंदीए ॥ १७१ ॥ अह
समय कयाई विमतो परियको कुमारेण । कमलपुरीए पयमे अणुगामइ सो वि समयम्मू ॥१७२॥ मयुराणीवासमूसणदीमंसुय
पुंडुमाइ छमय । सेणाहिय सयुहिया पत्तिया माससु मियपम्मे ॥ १७३ ॥ करिपुरकसहयाईकंचणकम्मोपमससमारेसाई । रायम्म
रमसीहो विहियपणामो अणुगओ ॥ १७४ ॥ संचक्किओ सुसुद्दे पारम्मिदेवस्स सीमभूमीए । सेणासामग्गीए समगाए वाम
संपत्तो ॥ १७५ ॥ ता पुण्णमेव विमाय भम्मुयम्मुक्कुसुयंयो । पत्तो पयोमीए स कमलसेणो महासेण्णे ॥ १७६ ॥ साहुक्कमो
साहुक्कमो चरिओ सो तेय कामि रियवाई । कमलवाई कमलस्स विय अम्मुपचरिया सुगोरविया ॥ १७७ ॥ पारम्मसम्म पयावी
सिरसम अपिडिमिम्म वयंमो । कमसिर्म सा मणिय वयमाणीए कमलिणीए ॥ १७८ ॥ पहुपरिभूयम्मसे पसा किं मेइ कुसिस
कमलारिय । पुरियव्वं पुरियव्वं, सरसं पेईम्मह्लसयसं ॥ १७९ ॥ जीमाविया सहिओ कुमरी कमलविया म मे हुमए । नाय-

१ मिम्मिरम अ। २ ममइ ।

रिणयाओ विन्नाणमेरिस तुज्झ निव्वूढं ॥ ३८० ॥ कुमरो चलिओ तत्तो पत्तो अविलम्बमेव कणयपुरे। नयरूसवेण महया पवे-
सिओ कणयराएण ॥ ३८१ ॥ अव्वो कमलवईए. सीलाइगुणाणमेयमइतुच्छ। ज विरहानलजलिओ कुमरो चडिओ चियाचक्के
॥ ३८२ ॥ सा एसा कमलवई उवागया जा जमस्स पासाओ। नियसीलपहावेण दाऊण तदाणणे धूलिं ॥ ३८३ ॥ इय सुण-
माणो मंडणभूसणवेसाइणादरकएण। पेक्खतो पइमग्ग रमणीओ धावमाणीओ ॥ ३८४ ॥ दप्पणपाणीअजणसलागहत्था करग्गक-
यकेसा। पत्ताउ ताउ देउलपुत्तलिया विव विरायति ॥३८५॥ वरच्छदलक्खणाहिं सालकाराहिं नाइविज्जाहिं। तिहिं ताहिं पियाहिं
सम स भुजए विसयसोक्खाइ ॥ ३८६ ॥ विजयपुरासन्नगामसीमसिरिपासनाहतित्थमि। कुमरो कयावि कारइ विसिट्ठमट्ठाहिया-
महिम ॥ ३८७ ॥ कप्पूरपूरकुकुमकालागुरुकुदरुक्ककुसुमेहिं। परमेसरस्स पूया पेक्खणगाई कयं वहुहा ॥ ३८८ ॥ तो जक्खो
पच्चक्खो अक्खइ अगीकरेसु नियरज्ज। अवरस्स कोऽवगासो सइ पुत्ते विजयसेणस्स ॥ ३८९ ॥ तव्वयणाणतरमेव देवपायप्पणा-
मपुव्व सो। विजयपुर सपत्तो कुमरो सेणानिवेसेण ॥ ३९० ॥ अप्पवलो सो राया तस्स न सक्केइ समुहे होउं। कोट्टारोहण-
ठिओ तओ दुवारे कुमारोवि ॥ ३९१ ॥ कयनीरऽन्ननीरोहो नियडप्पाओ सुढंकियदुवारो। कुमरस्स सो नरिंदो, सघं चिय
गोत्तिओ जाओ ॥ ३९२ ॥ सरविसरजतवाहणसुतत्ततेल्लेसु खिप्पमाणेसु। पइवासरपि किज्जतएसु अइगाढढोएसु ॥ ३९३ ॥
पडियासु विणिज्जतीसु झत्ति खडीसु भज्जमाणासु। जतेसु गओ मासो न होइ नासो अहव तासो ॥ ३९४ ॥ गयणगणग्गलग्गा
आगच्छती कुमार आरयणी। जक्खेण दसिआ सा धसक्किओ नासिउ स गओ ॥ ३९५ ॥ झत्ति पविट्ठो तुट्ठो पुरमज्झे विजय-
सेणअगरुहो। ठविओ पिउस्स पट्टे मिलिऊण पुरप्पहाणेहि ॥ ३९६ ॥ सज्जेइ सज्जणाण ससग्गि दुज्जणाण वज्जेइ। साहुणमसाहु-
णय अणुग्गह निग्गह कुणइ ॥ ३९७ ॥ पारद्धिजूयमज्जाइयाइ वज्जेइ सत्तवसणाइ। निस्सारइ नयराओ व देसाउ तह अप्पणि-
ज्जाउ ॥ ३९८ ॥ सुरभवणेसु पयट्टइ पूयाउ पायडेइ जत्ताउ। अट्ठाहियाउ नट्ठाऽहियाउ कारइ जिणहरेसु ॥ ३९९ ॥ आसन्नाउ

१ 'माइ' शब्द इवार्थे।

गामाउ णगया एए जम्मुणरुईणी । महविविधमुणिसओ सो पेवराइ ममो घडियरुण्णो ॥ ४०० ॥ भणिओ ओसीम पि जाव म
दिट्ठो वच्चो वहिं ठाणे । तुज्झं मोरसं मिहितु चिप्पियं रोयम् सिर्व ॥ ४ १ ॥ मगारगओ मरियस्सं वावय पुरपवरसिट्ठिपु-
त्तस्स । केण्णवि कड्डिय नीयं सीसं सेसं पडं पडियं ॥ ४ २ ॥ उवयम्मुखियणरामोहिं ववरामे एवरमोहिं मुद्देहिं । दिट्ठो गवे
समागेहिं जम्मुणो पुत्तमेहिं च ॥ ४ ३ ॥ भणियं किमेत्व मोहे चिप्पियहियं किमिह कट्टिपारामो । जोदवि आय तं वाम
पुत्तसीसं पमोएवि ॥ ४ ४ ॥ तो बंधिऊण मीओ जमवसासे कव्वयपासेण । वेगुत्त भिमरे वेरमासि वं मारिओ पाओ ॥४०५॥
णाइ मणियमम्मुणेण न किंपि याणामि सामि ! भणइ पुणो । रमणि पुच्छिओ सो एवं चिय भणइ पुलच्छं ॥ ४ ६ ॥
एवा—भणइ मवाणि पणो कि जंपसि रे भणेसु परमत्थ । जम्मुंणा—एय एसाए कहिय वि देव ! को पवओ होइ ॥ ४०७ ॥
तुम पण अवि पइमारिपाए मारितु मिसि पडं रमियं । तुरक्कमंससिसियमणुसारि राहिय[1] निट्टुय ॥ ४ ८ ॥ भणियं भणइ
णाणइ रमियं मइ मारिओ पडं पस । करपरिय सओहियकचिरल एवा एवा भाइयं ॥ ४ ९ ॥ गओ पुच्छिओ स भणइ
उम्मत्त भणइ भणइ चि । सच्चहिययत्तिय भाइय मरवसमाओ न कि भणइ ॥ ४१ ॥ दीए तस्स य सीसं कम्मउ वाणिय
मिसेण सो मुओ । संपइ मि पुण होही मइ कम्मेहिं न याणामि ॥ ४११ ॥ वो भायविरायपडुम्म पयंपियं भाइइ मुद्धपिट्ठोऽसि ।
करकमलकलियमसवओ वि जं एवमुल्लवसि ॥ ४१२ ॥ जम्माइइ रे एवं तो गुम्मरोसवस्स सो मीसो । भइ सायेगो पुरिसो पत्तो
भइसमणिगयमे ॥ ४१३ ॥ वेगुत्त भइ एवं मारिस्सइ तो [2]तुमेपि मारिस्सं । एवं च एवं पाओ समये एम्मे मिय तेण
॥ ४१४ ॥ तो निवसामणीए एच्च मुरवेसागाओ तत्थ । मुमंसस्स स बाओ निवस्स पायव गरसमओ ॥ ४१५ ॥ [3]कुंजास
ईसपच कूरम्म मासं च वसिमयारत्वं । नायप्प वि भराव भवंपि न किंपि से मुखं ॥ ४१६ ॥ एवमीहमहापल्ल जाणिमं
म्म न एसु भरसमओ । जम्मो एक्को व भव भइया भूओ पिसाओ वा ॥ ४१७ ॥ [5]पूयमम्मुखसल्लेण तेण भणियं भणेसु

१ भय उत्त गणं D । २ मि D । ३ पुरो C. D । ४ तुमेमि D. [तुमेपि] ५ पूय भणइ B. ।

अवराहो ॥ ४१८ ॥ लहुओ होऊणमिमेण जपिय सुणसु त महाभाग[1] । जो होसि । अमुणिय परमत्थाण अम्हाण न एत्थ अवराहो ॥ ४१८ ॥ लहुओ होऊणमिमेण जपिय सुणसु त महाभाग । भरहे महेग- नियविक्कमेण अहय सुराण असुराण वि असज्झो ॥ ४१९ ॥ अहय दूसमकालो कलित्ति नामेण म जणो भणइ । भरहे महेग- छत्त रज्ज निव[1] सपइ पवत्त ॥ ४२० ॥ इह आसि महावीरो गुणेहि मह वेरिओ महावीरो । एगुणनवइपक्खेहिं तस्स निव्वा- णपत्तस्स ॥ ४२१ ॥ मह अवयारो रज्जस्स सपय जयइ अखलियपयारो । सिक्खा कया मए च्चिय कुडुम्बिणो एवमेयस्स ॥४२२॥ आणाऽइक्कमकारी महेस जो चिब्भिड तया लेइ । दुगुण मोल्ल मेलित्त कच्छाए सुन्नए चेव ॥ ४२३ ॥ मह परसओहरो भाइ एस सुन्ने वि मेल्लए मोल्ल । खोलाउ तस्स कट्टिय चिब्भिडय दसिय तेण ॥ ४२४ ॥ जो जोयतो अच्छइ जणो निवो तावसोवि सेट्ठिसुओ । तत्थागओ गिहाओ उट्ठिय सजायसज्जसिरो ॥ ४२५ ॥ सह सयणसुयणवग्गेण [1]अक्खओ चोक्खओ य तूरतो । विम्हयमुव्वहमाणेण राइणा सो कओ अके ॥ ४२६ ॥ पचगपसाओ अज्जुणस्स विहिओ निवेण गुणनिहिणो । अह कलिपुरिसो माहप्पमप्पणो भणिउमारद्धो ॥ ४२७ ॥

सर्वत्रोद्गतकन्दला वसुमती वृद्धिर्जडाना परा, जात निष्कमल जगत्सुमलिनैर्लब्ध्वा घनैरुन्नति ।
सर्पन्ति प्रतिमन्दिर द्विरसनाः सत्यक्तमार्गो जनो, वर्षाणा च कलेश्च सप्रति जयत्येकैव राज्यस्थिति ॥४२८॥
विधत्ते यत्तोप जडपरिचितिर्गोपतिकरा, कठोरा जायन्ते कथमपि न तृष्णा विरमति ।
मुदे दोपारम्भो भवति भुवि वैरस्य घटना, तदेव ग्रीष्मर्तुं किमु न कलिकालस्तुलयति ॥ ४२९ ॥
अनृतपटुता चौर्यचित्तं सतामपमानना, मतिरविनये धर्मे शाठ्य गुरुष्वपि वंचना ।
कृतकमधुरा वाणी साक्षात्परोक्षविघातिनी, कलियुगमहाराजस्यैता[1] स्फुरन्ति विभूतय ॥ ४३० ॥

१ अक्खवरकओ ० ।

धर्मो प्रमाविलतप भासयता सर्व स्थिर्व दूरत:, पृथ्वी मम्बरम नृपाम सुकुदिस पुम्पवनि संसत्न।
केशः पीतसमः सितोऽसितपक्ष कोमैककाद हिमा:, सद्गु पीतमि दुर्मेम प्रमवति मास प्रविष्ठ कमि ॥४११॥

अवि य—भावसुभो कुमो महिजर ठिवाए तरकमो। गमी पामद बच्छीव संप्पपूमा न गवयस्स ॥ ४१२ ॥ अंगुठंगु डीमेसवर्यमि इत्येवि इत्थिओ होइ। अप्पूरसंपजाईवि विस्सगंम्म उस्सविसिय ॥ ४१३ ॥ कहिय जेवेहिं कंठपम्म सिव्वंति सुंगकडीओ। सिद्धेहिं पमाणएवि मइ वाम रज्जठिई ॥ ४१४ ॥ मम्मिसं रमा एप पमत्तवमिरोहियो दि सिढ़ेवा। भवइ कमी नासमनु जमो माणउसिव परमत्वो ॥ ४१५ ॥ पसिवमिवाई परिमव। कुमाहिंगो कुसुंमिमाऽऽमाहा। पूरिज्जवा अवमयमकोम्म सोहवधा हुता ॥ ४१६ ॥ नवमयरोहिं संपइ वेतुं कोकुमिवाहिं इमाई। रायमो अप्पाणं हुम्मरकुम्मसी मरिस्सवि ॥ ४१७ ॥ भाम पयोपये केसिम्हो पवरपवमार्य च। गमिमे पयस्सीपिव पुमिम वे वमस्सं किमा ॥ ४१८ ॥ बहुमा जामिव सम्मापरेण पम्मोभावसमिमिहि। वे वेहिं रामिस्सवि किंचिमरोसे भवोसे वि ॥ ४१९ ॥ भइमहुपयमपुर्व पुमिम परिमामिमम निवमस्सि। मास्सगमी पम्मवि पूरए सम्मसामत्ति ॥४२० ॥ पम्मसुम्म कासमं सिमइ भसस सुम बमनुरस्स। सिविआइ मिम्महो पम्मामि दु वीए समाजो ॥ ४२१ ॥ गमवम्म पुण्मिमम्मो पूमंमय सुमोमही भमिही। मिमुहाम सप्पाय च वारिसंवो पवेसो वि ॥ ४२२ ॥ मिमुप्प परोवमनी पवमपाईव गोरमिवसि। इमिहिमसंमामिवेहिं मि मुमिवाहिं भमममं ॥ ४२३ ॥ भगुरुस्स व भंगुमिसमवाम सम्मभवसंसिद्धी। सवहुस्स सुमस्स पुरवि पिवरमत्ति विसेसेव ॥ ४२४ ॥

यथा च— पूजनं चास्य विधाय त्रिसन्ध्यं समाधिना। तस्याऽनन्तरोऽनुष्ठेय तस्यापोषितस्य च ॥ ४२५ ॥ अभ्युत्थानमितोगम्य वस्त्रे विपुलासनम्। समागतम नाऽन्याने नामर्मन्मर्थ कथित् ॥ ४२६ ॥ सारमर्व च प्रमाणित, पवातीनां निवेदनं।

1 मर्वादि D 1 २ व D 1

जायाए जायाए सपइ कत्तोवि चित्तमेलावो। अविरलकलिहिं माया
परलोक क्रियाणा च कारण तेन सर्वदा ॥ ४४७ ॥" जायाए जायाए सपइ कत्तोवि चित्तमेलावो। अविरलकलिहिं माया
निस्सारिज्जइ घराओ वि ॥ ४४८ ॥ सरला सुहया उचियन्नुया य न वहु सुहाइ थेरीए। कुसल घरस्स नेयाए जाउ ता जत्थ
पडिहाइ ॥ ४४९ ॥ उयरे धरेइ जा मसपेसिय कुणइ कामदेव च। वहुयसगो त धाडइ पुत्तो मह पेच्छ माहप्प ॥ ४५० ॥
कप्पूराइसमाणा सुसाहुणा सीलसुरहिणो हुता। सुगुणप्पिएहिं वरसावगेहिंतो गोरविज्जता ॥ ४५१ ॥ मीलविहुणा सीयलविहारिणो
दाविणधारिणो गिहिणो। ते अहुणा सजाया लोएहिं वि अवगणिज्जति ॥ ४५२ ॥ इत्तियकाल [2]साहारपायवाणं व सज्जणजणाणं।
सुविसट्टकटए कट्टिऊण किज्जति या रक्खा ॥ ४५३ ॥ सरलसुसीलास धम्मधारिणो धाडिऊण दूरेण। ठाणेसु तेसु सपइ निवईहिं
निवेसिया पिसुणा ॥ ४५४ ॥ ता इय गव रणसींहराय! रज्जट्ठिईं इमा मज्झ। एत्तियमेत्ताइफासकारी मा होज्ज वच्छ! तुम
॥ ४५५ ॥ छलिऊण कली एव सीह सहसा अदसणीहूओ। निव! अज्जुणा जणा तह जहागय पडिगया सव्वे ॥४५६॥ कलि-
आलावे सोऊण तस्स जपंति दुन्नयनिसाए। हियय धरइ सहावो तमल को अन्नहा काउ ॥ ४५७ ॥ सद्दोलय घोलिरोवि
पुव्व व पालइ स रज्ज। तहवि स खलियारिज्जइ लोलेहिं सुणेइ तव्वयणं ॥ ४५८ ॥ भणितुं लग्नश्च लोक —
"घटवत्परिपूर्णोऽपि, विदग्धो रागवानपि। महीतु शक्यते केन, पार्थिव कर्णदुर्बल ॥ ४५९ ॥ अविवेकिनि भूपे च,
कुर्याद् गृद्धिं समृद्धये। गच्छेद्देशान्तर मन्ये, समारूढ समृद्धये ॥ ४६० ॥" कलिकलहदेसणाऽऽउनरेण जाणित्तु किंचि तरलमण।
निवइ समए माउलजिणदास महामुणी पत्तो ॥ ४६१ ॥ विजयपुरस्स दुवारे आरामे उग्गह अणुन्नविउ। तसपाण-
वीयरहियंमि थडिले चिट्ठइ सुवुट्ठो ॥ ४६२ ॥ मुणियतदागमवुत्तत तोसओ तास सव्वरिद्धीए। वद्दणवडियाए तस्स निगाओ
गरुअभत्तीए ॥ ४६३ ॥ पत्तो तमि पएसे काऊण पयाहिणाउ तिक्खुत्तो। रइयकरजलिकोसो पणमिय पुरओ निसन्नो य ॥४६४॥

1=कलिकालस्य। २ सहकार=आम्रवृक्ष।

पम्मासाए असीसिऊण सुविय समागयमसिया । पत्ता पम्मघरा गयउग्गमीरयोसेण ॥ ४६५ ॥ मो मरमाह[1] निरुत्ते नरतमे समणमणकयीयानं । सुहदुक्खाइ विसेसो पुर्ण पार्म पयासेइ ॥ ४६६ ॥ सुहसाहणय सुहसाहणय पाम्मी पयासमाविसइ । आसव दारनिरोहो सोहइ सुहसमसुरमिपयाओ ॥ ४६७ ॥ पाणिवह-मुसावाय अदत्त-मेहुण-परिग्गहा पेय । आसवदारा एए पंच पयत्तेण विरिकमा ॥४६८॥ एएहिं पयाहेहि व पुरिसाइ पावनारिणा पीयो । पिरिएसु तेसु न मवस्स आगमो संवियस्स रओ ॥४६९॥ वच्छ[1] सहामो सुह एस नास्ति मसवणिरोहओ पाव[2] । कम्मिअकम्मायी सुम्मियसंगमो[3] किवि वयाणेओ ॥४७०॥ सुससमणओ मनाइ कमिवि सो[3] मपाइ बंधेइ । वेयमिअस्स कस्सावि पयरस्सेव पीळइ ॥ ४७१ ॥ जइ तस्स मज्झ हिओवएसमुहिय वा जमाओ वि । किनइ तहावि पार्म मरणं न विसासिओ होइ ॥ ४७२ ॥ सिग्गसवसंपयाई पळीए सिग्गयपा मनु मयंति । नरयंमि किं न मारेइ सम्मियं निसि सिसे विसमे ॥ ४७३ ॥ मयसिम्पविओवमो अणवलमो एस जाव संजाओ । सुविण भणियं ता वच्छ ! तापसुविगो सुनसु वयणं ॥ ४७४ ॥ कसिअकम्मोहिय विजयसेणसुविणा सिमयविते नावं । मयणसुपम्मरा-पम्मियमसारेण सगुणेहिं ॥ ४७५ ॥ तुह पविबोहमिमित्त पयागयं पेम तेण संपविया । सुगई जिगसुया सद्गुणसमासम महा-सत्त[1] ॥ ४७६ ॥ तहणिसमाणं अत्ता—

जं भणमाइ रमा पगईओ ते सिरेण इच्छति । एय गुरुवयणसुहमणियं अपंजलिअईं सोवयं ॥ ४७७ ॥ अभिगमण-वंदण-नमंसणेण परिपुच्छणेण साहूणं । चिरसंचियं पि कम्मं खणेण विरलत्तणमुवेइ ॥ ४७८ ॥ मवसयसहस्सदुलहे जाइजरामरण-सागरुत्तारे । जिणवयणंमि गुणायरे ! खणमवि मा काहिसि पमायं ॥४७९॥ पिअयामरिणी कमेण मसमय अवसरंमि निवमाया । भाईरिसोमणसा वच्छ ! अणसमाउंयं ॥ ४८ ॥ ता मूसओ एवं पवेसु [4]विहवेसु मोयणवरसोमरे । तुम पम्मत्तसगणि-

1 वच्छे B । 2 कमयो मिति ततोओ B. D । 3 मो-मियो B. C । 4 अर्थन ।

महरिसिरस पिउणो समाएस ॥ ४८१ ॥ अह भणिया जिणदासेण साणुमग्गेण निवइणा वि तहा । मेहानिहीणमहवा किमसभवि भाविभहाण ॥ ४८२ ॥ परिवत्तणाए तीए वारवार अवारियाए सया । नवनवमवंतसब्भूयभावेणाभावियप्पाणो ॥ ४८३ ॥ कमलवईए पुत्त रज्जे अहिसिंचिऊण समयमि । मुणिचदसूरिपासे सजमरज्ज पविज्जिसु ॥ ४८४ ॥ चिरकालं त[1] पालिय, खालियपंको वएसु अकलको । आराहणापडाय, पाविय पत्तो सुदेवत्त ॥ ४८५ ॥ कमलवईपुत्तेण वि पढिआ एसा जणेहिं सव्वेहिं । अणिस पढिज्जमाणी इय पत्ता एत्तिय जाव ॥ ४८६ ॥ इति रणसिंहकथा समाप्ता ॥

अनेनोपोद्घातेनारब्धायामस्यामेतावन्त कालं परिपाट्या प्राप्ताया च सकलमङ्गलमूलकल्पे निकाचितस्यापि कर्मणो निर्जरैककारणे च तपसि श्रीयुगाद्यपश्चिमतीर्थाधिनाथाभ्या स्वयमासेवनद्वारेण श्रीरणसिंहसूनोस्तद्द्वारेण परेषा च मुख्यमुपदेश दित्सु श्रीधर्मदासगणिस्तयोरेव तावन्माहात्म्यमुपदिशति—

जगचूडामणिभूओ उसभो वीरो तिलोयसिरितिलओ । एगो लोगाइच्चो एगो चक्खू तिहुयणस्स ॥ २ ॥

व्याख्या —ऋषभ प्रथमतीर्थाधिनाथो जगतश्चूडामणिभूत' शिरोरत्नालङ्कारकल्पोऽधुना मुक्तिपदस्थायितया चतुर्दशरज्ज्वात्मकलोकस्योपरिवर्त्तीत्यर्थ । वीरः पुन प्रत्यक्षोपलक्ष्यमाणतया त्रिलोकश्रीतिलकस्त्रिभुवनलक्ष्मीविशेषक इत्यर्थ । तथा अनयोर्मध्ये एक ऋषभो लोकादित्यो युगादौ प्रभात इव विवेकप्रतिबोधद्वारेण पदार्थद्योतकत्वेन च निखिलव्यवहारकारणत्वात् । एक पुनर्वीरश्चक्षुस्त्रिभुवनस्य इदानीन्तनजन्तुचक्षुर्भूतागमार्थभाषकत्वात् ॥ २ ॥ इत्थ च तीर्थकरोभयस्य गुणोत्कीर्त्तनेन प्रकरणकारो भगवति महावीरे विद्यमाने प्रकरणमिदमकारीति काक्वा ज्ञापयामास । लघुवृत्तौ श्रीसिद्धव्याख्यात्राऽत्र सूत्रे व्याख्यान्तरमपि कृतमस्ति । विशेषार्थिभिस्तत एव

१ परि ।

अपि भावेयम्। यतो यथा सूत्रस्याशेषविशेषार्थव्याख्यानं तात्पर्यमनुपपन्नं तस्याशक्यत्वात्। किन्तु सूत्रस्यानुगाममर्थमात्रं व्याख्याय युक्तिमार्गेणैव समर्थ्यते पर्यवसानमस्य सूत्रस्य यदि ज्ञायते। 'धन्यास्तु युक्तिमेतीयं व्याख्यां सुधियः सदा।"

इदानीमेतन्निदर्शनेन तत्र स्पष्टयन्नाह—

संवच्छरमुसभजिणो छम्मासे वद्धमाणजिणचंदो। इय विहरिया निरसणा जइज्ज एओवमाणेण ॥ ३ ॥

व्याख्या—संवत्सरं-वर्षमेकमृषभजिनो निरशन अपि इत्येवं वर्षोपवासमकरोदुपसर्गसहिष्णुरहत्येवं विहृतवान्। षण्मासान् वर्धमानजिनचन्द्रोऽपि विहृतवान्। संवत्सरषण्मासग्रहणम् "अत्यन्तनोरुत्कृष्टसंयोगे" इत्यनेन द्वितीया। मानिन्यां दिवा रात्रिमेव तयोर्दीर्घं तपश्चरणम् इत्यादिकम्। अनिमित्त भावतोऽल्पकर्मक्षयार्थं तदनुपविश्य शिष्यं प्रत्याह—एवं-तपःकर्मणि यत्नो कुर्यात्तदनुगमनेन तत्तत्परमतीर्थंकरसादृश्येन। यद्यपि संप्रति संहननादिहीनत्वात् वर्षोपवासादौ शक्तिर्नास्ति तथाप्यन्निवृत्ति-श्रीरैः यत्नो कुर्यादित्यर्थः। परमतीर्थकरस्वसमाधिमयत्वाभावात् भगवदनुयायिनां नाम निर्वहे यतो यथाशक्त्या सन्निकृष्टमुत्तिगम-मेव तपःकर्मणि तदुपमानपरेण भवितव्यमिति तात्पर्यम् ॥ ३ ॥ यतः—

"मलप्रलम्बोरसौ वनमध्यमिव भूयसी भक्तया योगावलोकनयोग्य सुरभिसरसमालम्बितं मनोज्ञकान्ति।
मार्गे पर्णे हरिणैः किसपयमयता तीर्थंकरसमाधि-शरीर सेवं यदीय निरुपधिवपुस्तस्य कृत स्वारसाद्यः ॥ १ ॥

अन्यत्र— न समस्ति कृपणचकविक्षिप्ता यस्मिन्नसी ईदृशं सम्भा यानि विचित्रकल्पसमिता यज्ञेऽपि मान्यम्।
तदुत्तमपि मनोज्ञमहो यस्य पुण्यदृशा विचारेण न संकल्पोऽस्ति परं तीर्थं तपस्यताम् ॥ २ ॥

अनयोः व्याख्याने च समस्तानिरूपणेनावसेयेः। प्रकृते तु किंचिदिदानीं मोच्यते—

ज किर पाधपकु पक्खालइ, भवियह मोक्खसोक्खु दिक्खालइ। सघिवधसवंध[1]रवन्नउ, चरिउ त[2] रिसहजिणिवह वन्नउ ॥३॥
दाहिणभरहखडचूडामणि, सावसुवन्न नाइ[3] सोयामणि। अत्थि अउज्झनामि सुपसिद्धी, नयरि पउरधणवन्नसमिद्धी ॥ ४ ॥
पढमरायकारणि काराविय, मणिकचणिहि सक्कि सपाइय। सिहरचारुचेइयहरचगी, सयलविलासिलोयनवरगी ॥ ५ ॥
सरलपियालवणुज्जलवाडी, जिव जहिं [4]तरुणितेव परिवाडी। गयवाहणहयसाहणहिंडर्हि, ईसरलोय तहा विजमडहिं ॥ ६ ॥
जिणमदिरउब्भडधुव्विरधयवड, रणझणतकिंकिणिरविण। जा गव्व निरतर हसइ गुणुत्तर, सक्कनयरि [5]नियवेहविण ॥ ७ ॥
कुलगरु माहिपुत्तु त पालइ, रिसहनरिंदु सुरिंदु व लालइ। पढमुज्जनयनिहि पढमु पयावइ, जणववहारु पहिलउ दावइ ॥ ८ ॥
घरणीघणुज्जलपेमगहिली, तासु सुमगलनामि पहिली। अवरवि आसी सुनंदसुराणी, सयलतेउरमज्झि पहाणी ॥ ९ ॥
पढमु सुमंगलदेविहि दुद्धरु, वमी जुयलि जाउ भरहेसरु। वाहुवलि वाहुवलि सुनदहि, सुदरिजुयलि जाउ जस कदर्हि ॥१०॥
राणी पुणु पसवेइ सुमगल, सीलसमुज्जलकयजयमगल। अट्ठाणवइ [6]जणेइ तणुब्भव, अउणापन्नजुयल अपुणुब्भव ॥ ११ ॥ दस-
दुगुणा लक्खह पालि वि पुव्वह कुमर वासुलीला लडहु। तेसट्ठितिअगल पुणु कयमगल रज्जलच्छि पालेइ पहु ॥ १२ ॥ जहिं
केवलु वज्झहिं मत्तदंति, ससुवन्नदंडवर[7]छत्तपति। निवडति पास जूयारहट्टि, पुणु मारु सुणिज्जइ सारिवट्टि ॥ १३ ॥ निसु-
णिज्जइ वेसह केसभारु, अहलोयहिं मुणि परपरह दारु। दारिद्दमुददीसेइ देसि, वरतरुणिजणह मज्झप्पएसि ॥ १४ ॥ घणवत दिंत
नहु करहिं काणि, उग्गाहहिं निवइ [8]नविउण दाणि। [9]समुवि अवजाणहि धणि जणाह, छलु आणाहिं नो पुण लोभिताहं ॥१५॥

1 रवन्नउ रम्यमित्यर्थ। 2 स B। 3 नाइ शब्देन उत्प्रेक्षते विद्युदिव O। 4 तेवतरुणी D। 5 निजवैभवेन। 6 पवर। 7 छत्तर।
8 नउणि। 9 सेतु।

एमर-ममर-भिमरस्स इय नीइ पयइँ थिमूण। मणु करिवि चाविवणु विष्णु चवेइ सिवि रायसनेयसु सिरस्त होइ ॥ १६ ॥
एम भणु तोसेविणु एम्पुरुसेविणु पुम्मसरमेसहि पाणु। सिरिनाभिकुसुम्मसु गयमयसंभसु, एंकमरसु मरेवइ थणु ॥ १७ ॥
रिमु मय महिलमु सियसी[1] करवि सि पुम्मकसरमयवासी। कोगविवरेवेरि विमयव, ताणु रेइ कारिसिव निरचउ ॥ १८ ॥
एव्व अवर विरिद कमोय विमयइ अमइ परिपाहस्स। मरगम्मोविपमाविम्मइए पक्रमरएव अप्पइ अवरीय ॥ १९ ॥ गय-
इप गयसार कमवारहि, वेवि करेइ समसु सुसारहि। अमुणि कमममसोय मि रेी इय मगमवम सम्मासेइं ॥ २ ॥
कमममहमवारहि मरिविरिं, एइं वमसउथिहिं कमगमेरिहि। परिवजिय साकम सपुरअसु, पणु चाहिमो विवेकिय मंगसु ॥२१॥
विपव गुरुकुमि अणुवपुवमि रिसहमु सिककमणि। कवीस मुणिविहि विधिक्कविहि सेविर संजमु केइ [2]सवीन ॥ २२ ॥
कसिकुसिक चोमकरवमार कमामर पणु सिरइ निरचय। वजसाव कम्मुहि करेई, पंचम इमिविमसु करेई ॥ २३ ॥ मंस-
वाकि चोवेवसियामारि, सरहि सिपोमइ सिमगाइवमिहिं। विमविरसमंगमि में मंगककमममसुपरि मीसुपम ॥ २४ ॥ कप्पा
क्षि मि रिसरममो[3] मिण अमुमानि न कम विवि रिमी। विहरहि जिण अणुमणि सि कमा, [4]कमवंबइ जिम रिसयस-
ममय ॥ २५ ॥ निक्कमार नमिविनमि विविमइ, भसिवर करहि सेम सप्पंवइ। पोइमिवमपुरमिहि छंदहि, पुम्मयकड पणु
पुरओ पक्कहि ॥ २६ ॥ धम्म रिमइ अमवइ मविस करमइ, पविमइ जिण अमगइ सुपरि। नमिविनमि कुमाइ विमइ,
[5]समर पमसरसु देमसारि ॥ २७ ॥ मिरछणु झमि मोमि पणु विरइ, मिवमियारि महिमंडलु मेवइ। जवि मवि मरस्सयसु
विर कप्पाह, मकिमइ मोरवेसु मिम विपइ ॥२८॥ कोवि मिमय मिमरपर म कामइ, अमवि बसु विवि मिमय न कामइ।
कुमिओ पिवासिओ वरि वरि हिंडइ, वीगसु कमयमसु मवि मवइ ॥ २९ ॥ विवि [6]मक वरउ विसय मुम्मारिहि, सामि निमेवहि
विमुम्मसारिहि। कमयमयप कविमुपविरिवरि, अवरि पवर कपूरिहि [7]वीविहि ॥ ३ ॥ वारवरककरविरमकवसियरहि, हरि

1 मी B। 2 पवि B. D.। 3 वि D। 4 वि B। 5 सुमरि। 6 कयं O D। 7 मा D। 8 D।

सपरावस जा खलु पेक्खहिं। अवरि ताओ ढोयहिं नियकन्ना, तइयहिं जेहिं दिट्ठु ते धन्ना ॥ ३१ ॥ सामि सव्वुत्तमकप्पु निगप्पहिं, झत्ति नियत्तइ किंपि अजपि वि। कन्छपमुक्ख भिक्ख अलहृतय, छुहवाहिय हुय तावस ते गय ॥ ३२ ॥ जिणु निरसणु हिंडइ दुरियइ खडइ, मडलि मह्यिलु नियपइहिं। तहिं समइ जि वदहिं ते चिरु, नदहिं संपूरिजइ सपइहिं ॥ ३३ ॥ उन्हालइ दीहरतरवासर, अग्गिफुलिंगतुल्ल तरणिहिं कर। तिव्वु तवइ तवु जगि वक्खाणिउ, तहवि न सामिउ पारइ पाणिउ ॥ ३४ ॥ वरिसकालि घणु वरिसइ वाइ, जणसरीर थरहरहिं खराइ। निप्पकपु निम्मलउ निरुत्तझाणु झाइ जिणनाहु तिगुत्तउ ॥ ३५ ॥ सीयालइ सीयलउ समीरणु, नाइ तुसारसारु सोसियवणु। अइदीहररयणीसु निरतरु, अविचलचित्तु झाइ परमेसरु ॥ ३६ ॥ विहरिवि पुरपट्टणगिरिगामिहिं, निरसणपाणु अडवि आरामिहिं। वच्छरछेहिं जिणिंदु तिगुत्तउ, गयपुरपट्टणवारि पहुत्तउ ॥ ३७ ॥ ज जणिहिं खन्न तरुवरछन्न, धवलहरिहिं अइधवलु किउ। धणधन्नसमिद्ध भुवणपसिद्ध, [2]महिमहिलहिं तिलउत्ति ट्ठिउ ॥३८॥ त सोमजसु महाजसु पालइ, नियकुलु गुणगउरवि उज्जालइ। तसु सेयसु आसि जुवराऊ, पुत्तु पवित्तकित्ति जसराऊ ॥ ३९ ॥ सुरगिरि सुमिणइ सामु सुपिक्खइ, अमियकलसि सित्तउ सइ लक्खइ। अइअइयारितेण सो सोभिउ, विज्जुलचक्कालु न[3] थभिउ ॥ ४० ॥ किरणजालु रविबिंबह पडिय, कटरि [4]सहइ पुणु कुमरिहिं जडिय। सिट्ठि विसिट्ठि दिट्ठु एयारिसु, सुमिणउ सोमजसिं [5]सुणि जारिसु ॥ ४१ ॥ समरंगणि जुज्झतह वीरह, कुमरि दिन्नु साहिज्जु सुधीरह। तिणि परपक्खु परोवि पराइउ, भुवणि जेण सो चेव विराइउ ॥ ४२ ॥ पसरह ते अक्खरहिं मिलिया एक्कहिं, निय सुमिणइ परिसापुरओ। परमत्थु न बुज्झहिं[6] नरवर पुच्छहिं, सो कहेइ फलु कुमरुदओ ॥ ४३ ॥ अह सेयसु गवक्खि निसन्नउ, रिसहजिणेसरु पेक्खइ धन्नउ। आसि गयपुरपुरपोलिहिं पविसतउ, गुत्तिमतु जिणधम्मु उवित्तउ ॥ ४४ ॥ पुलईवि तं सउन्नउत्तसु, सुमरइ पुव्वजाइ सेयसु। आसि वइरसेण तित्थकरपासी, वइरनाहु गच्छाहिवु आसि। अहमवि विदेहवासि हुउ सारहिं, वइरनाह पुहवीसरि सारहिं ॥ ४५ ॥

1 वर B। 2 महियलिहिं B। 3 न इवार्थे। 4 सहइ=राजते। 5 सु, B D। 6 इ B।

साणु सेसु संसारउ जइ सम्मदुसियमणि पयपउ ॥ ४६ ॥ कविउ कुमारु वारु संपइ हउ, बहुएसेण विसेयउ सुमरउ । तासु
वेसविसेसु भदउ, रिसदु वि जिणमणु पणु पयउ ॥ ४७ ॥ जिरसणु सिणपयणु विहरिउ अण्णउ, जिएयविउ वेण्णवि मणु ।
जइ मणु भणगवि जणवियमणि, णउ ण मिरपरेमि पणु ॥ ४८ ॥ चिरुतरु परिसु वारिसणु सेपसउ सामिउ जपि पयिणु । जो
हरिसि माइ म कुमारु भणि मो भरि म भारि णणु पुणि पुणि ॥ ४९ ॥ चिरउ सुपुडुरउं कज्ज चाउ, हउं वसणु विसेयउ
पडुपउ । मई पणु एआर संसारपार, सपाविउ णिउ णिम्मुहमुणार ॥ ५ ॥ मई समा भमंगाइ भमणाउ उप्पाविउ कलकलउ-
हउ । मई विसु णरयहुक्खविहाणु, समपाविउ ण तासवमुणिहाणु ॥ ५१ ॥ पविसणउं भणु जणवणाणु भणु होमि हिपपणिम्मुह
सम्मणु । मह भण्णु ऐ भरमूरिमणउ, पम्मीरिएहरमणूएमण ॥५२॥ पुव्वंतरि पयउ पञ्चसमिविपउ, मणुव मुणीसणु दोपएणु ।
होअविउ व केविणु 'करिहि करेमिणु, कुमउप्पयउ हरिसपणु ॥ ५३ ॥ पावि पियामणु पावि पसायउ, अविवरपपरजाणि विरा-
पउ । सिरि सेणसु कुमारु पभेयउ, उहि महुणवरसईम चिरोयउ ॥ ५४ ॥ साउ समार जेय गिरिधुंवउ, गंगासणु धुवि पय
वेयउ । पीसइ रसविसेणु सोहेवउ, ण जण विसेसपणमुणि पंपउ ॥ ५५ ॥ मिणु भणिउपयि तेयंजणि मिसुवि पयउ नेप मए
भीयणि सणु सिइ वाह वाण रमिसंकणु, पासि पसुहर विसुणि मो पमडु ॥ ५६ ॥ सेपसि सुहावर 'भिणमाइ सम्मइ, समर
पणु मणपोसरसु । पणमुण पपविउ पणु मिम्माविउ, भिलारिउ विपडोप पमु ॥५७॥ पणु पणु सम्मुणणु सामिउ, विणु पविणु
मविणमणिउ । विणु दोपपणु भवसरि भाविउ, सिहि मेअणउ पुणदि पाविउ ॥ ५८ ॥ जं गोभाजणवि रिसि सिमउ, बणु
मि वरिसु पड संपमइ । जं पुणु सिवर जिणपणु पयउ, पम सुवणि वणु पमु वरिसउ ॥ ५९ ॥ 'पवि साणु 'गोगण्णु सिउ
वउ, मुणवि अविक भाणउ भवि 'मगुर । मोगामनेगुरण्णमणि मुणसह मणु मंकिवि सुणु सिविसिरि सापउ ॥ ६ ॥ पणु वि पप-
पणु वरिसिमउ, कि विवणमणि पाहवि सिम्मउ । सुरपरमोभणु वै सासउ, विवरमणि पुणु ठामण भामउ ॥ ६१ ॥ मवि

१ मो । २ ( B ) । ३ विसुमिय B विसु मिय a, b । ४ पय a, b । ५ सोवरं । ६ वंदर b । ७ म b ।

रयणि सुयन्निहि अरु पणवन्नहि पुप्फिहि पयरु पवंचियउ। गुडी उन्नाविय[1] गुडहि गतिग नयर नयरु पसोभियउ ॥ ६२ ॥ पहि
उप्पाइय देविहि पवहिय परि कुमरहि कुमनमहानिहिय। कुरगह थवर नवराउ मास, आवदउ गहारागरगाम ॥ ६३ ॥ पहि
रेवि चिर नयरगत्त, पविमनि तरुणि गहिर[illegible]। सोमनि वाद कुसुमगयक, पल्लविया[2] विज्जहि करागमण ॥ ६४ ॥
गज्जति तूर अत्तारताल नचंति नारि अइसरताल। विन्नाणमि पयडहिं भूरिभट्ट, अरु उज्जो [illegible] चोगिन्द घट्ट ॥ ६५ ॥
तह पल्लवीलावइ सरील, गाण वि कुमारह मनुस्सीलु। [illegible] भालाढि, [illegible] पयडहि पाम(?)हि ॥ ६६ ॥
नवपल्लवसोभिय तोरणउब्भिय, गयगहि पयरयाहि उगि। नरसागर थिरहि [illegible], [illegible] मनि ॥ ६७ ॥
परमेसरु पारिवि गओ विहारि, पुणि नयरि वेणि कुरुपुरि[illegible]हि। अवंति कुमर पवहि पमोय, ते पुच्छहि नाय स [illegible]
॥ ६८ ॥ पारणविहाणु पइ स्थि कुमार[1], जाणियउ जिणउ करनुकरगार[1]। सेयंसु पयासइ पुच्छा तिय नाउ नयरि [illegible]-
णियउ मन्त ॥ ६९ ॥ पुंडरिगिणिनयरिहिं विमहजिनु, तिरियउरनाभु नमाउलीय। विन्नाणमि आसि सुविप्पलाणु, [illegible]-
रणेपमाणु ॥ ७० ॥ हउं सारहि तिणि महु गहियदिक्खु, मिसिमयरअम्मा [illegible]। मई जाणिउ मुणिहि अकप्पु कप्पु,
तुम्भवि कहेमि तं जण अणप्पु ॥ ७१ ॥ जाणिवि सेयंसह पासि सुयंगउ, जण अगयहिमिस्साय [illegible]। जो [illegible] नर-
णवुणीमाह, भिच्चयपयडइ सोक्खनिहि ॥ ७२ ॥ निहुणिवि परिमगहनु [illegible] तउ [illegible] जाव [illegible] करागउ। [illegible]-
फग्गुणमासाह, पुरिमतालि सिणुयासि विलासह ॥ ७३ ॥ समवसरणु मडिहि कराविउ, तहि सिउ पडिहि सयु सुहाविउ। भर-
हह पंचपुत्तसउ दिक्खिग, तह नत्तुअ सयसत्त सुसिक्खिया ॥ ७४ ॥ चेणि [illegible] गणहरस [illegible], दे सामि माहु नमुत्ता।
पारासी गणहरह सु(सु)गणह, भरहपुत्तु पुंडरिउ महानइ ॥७५॥ [illegible] उह महाकलुनाम, गिरि [illegible] माहुणी सुणनाम।
मग्गु पगिन्न सायरु सुपसरि, गोमुहु नामु वेणि नरेसरि ॥७६॥ तमि कमि पदुनवइ तासरि, नागिपुरा मजाया पेवनि।

[1] उल्लास द। [2] पीठय प।

सामिहि पुण्णजसु पभाउ, ते चउदसी पुणु सम्पाउ ॥ ७७ ॥ एसापहविहि सादुरु सह मह बाहुहं महुराह विण्णिमरिपु।
मरहम वेरसि निस्सम सुहएसि गउ पिम्माणि सुगयहिमु ॥ ७८ ॥ इति सुपभवारणसमत्थिया ॥

एवमेव मङ्गलोपयोगीति नाभिमनोवमिमवं, तर्हिम तु तस्य चरित्रमन्वेपणीयम् । श्रीमहावीरस्यायमेवोपमिमनत्र्वे यथा–

विसमसेविकुसिरसमासा, पविमम्मलसमयमेरह । सिमसुसमयुगमसीरह, फरसमधि भणइ जिणवीरह ॥ १ ॥ पण्णिम
परंमि संजाणइ, एसिसरु गापु विरप्पवउ । हुस्सारपावपविराहइ, आसि मयह म करेहिं पणाइ ॥ २ ॥ जहिं मिण-
मंमिरमंडविसोहहिं, मणिपुरमिमंत्ति मणुपोहहिं । मगपनिरिरिरमकहसिगिपत्ती अमिमिसअम्भर मे गुहो ॥ ३ ॥ ते पसिद्ध
सिकार मेरु, भमि मंगिपाठु वसकरु । भगविमगुणागसिद्दि पसिद्ध भवसमरेवमलोहिसमिहर ॥ ४ ॥ पत्थपरसा
एवु भनवसिमाल्लु असरंगिमसिसेउमुह । णायपि पहाला अइयसु गन्ध पालह इंदिमारसमपुर ॥ ५ ॥ पासु सहोयम आसि
कमिसूर, महमासु नामिव तुसमेरुर । सुरमिरि सुरवसुरिमि कपमसरु पवसेसमिसमसमसम्पत्तु ॥ ६ ॥ तेण मंगिपठणु आ-
पुण्णिउ, मिमसु पुन्नु मह संपइ मिण्णिउ । जे मायासिपरिहि पहसेसिहि माइं पमपु होमि जीवहिहि ॥ ७ ॥ पसमु माइ पर
केउ पराहं पुणु संपइ समोमि पसपाहं । माय ! करेहि पिउ या पजाहे, समुमाणइ पम्मल पमसलो ॥८॥ वीरह वलसु हुमिमि
पमविपु, समपसो सिरि मिलह गापिपु । भावमीसमीसंपमसमकह, मणइ मंगिपठणु कपनिग्गउ ॥ ९ ॥ पंचवह पणइ हउं
परिपरउ तार्ह माय । किसिय दिय । संपइ पइ मुयउ पाइ पहि वसउ वा हिवई कुहिसइ मह ॥ १ ॥ विग्गोसु मंगिपठणु
सिम्प, पुत्त मणु न सामि कोमसु करेउ । समागि वसपरेहिं ताव परिहरमिउ बच्चइ होमि ताव ॥ ११ ॥ तो तर्हि पपमि
कुसमिसयु भरमधि पउइ पहु मयसाउ । करमसु नमु भसंगमेउ परिहरिय सम्पसावज्जजोगु ॥१२॥ पवसरिय सिरि अंगिसिणहिं

१ मम B D ।

वयसमउ सामि विन्नत्तउ तेहिं। वियरइ अणच्छु वच्छरिउ दाणु, पसराउ जाव सिर उवरि भाणु ॥ १३ ॥ मोत्तियमरगयमाणिक्कअक, मणिकचणक[1]कणकिरीडचक्क। हयगयरहपडिकप्पडपडप्प, मग्गणजणाहिं दिज्जइ अणप्प ॥ १४ ॥ इय तीसहि वासिहिं विहिं, उववासिहिं चदप्पह सीवीयाए एगओ। अवरण्हह गिण्हइ वइ तारुन्नइ, मग्गाइम दसमीहिं वउ ॥ १५ ॥ तहिं खणि मणपज्जाउ जिणिंवह, उप्पन्नउ पयपणयसुरिंदह। विहरिवि नाइसडवणहुतउ कुल्लागसन्निवेसिय पहु पत्तउ ॥ १६ ॥ गोवुवसग्गिनिसिहिं सताविउ, बलभमणि पायसु पाराविउ। सहइ दुवालसवास सुदूसह, सामि उग्गउवसग्गपरीसह ॥ १७ ॥ कहिं विकरालताल उत्ताला, भेसहिं भीसणतणुवेयाला। कहिंवि सुमत्तदतिदतग्गल, दुक्कहिं चुक्कचित्तकोवग्गल ॥ १८ ॥ कत्थवि खरनहरकुरदुद्धर–केसरिकेसरभासुरखधर। कत्थइ फुडफुलिंगफारप्फण–कुडिलकरालकालफणि उव्वण ॥ १९ ॥ जिव मेरुमहीहरु सिहरनिरतरु, नहु वायहिं कपावियइ। उवसग्गपरीसहि अइसय दुसहि, धीरुतेव कि चालियइ ॥ २० ॥ वरिसि दुवालसि महि विहरतउ, दुसह परीसह अहियासिंतउ। उग्गुवसग्गिवग्गु अपमत्तउ, सामि विसालु कोसविहि पत्तउ ॥ २१ ॥ नवउ नियमु तहिं लेइ जिणेसरु, एयारिसु तिहुयणपरमेसरु। रायकन्न निरु असरिसवेसिहि, रोयती सिरमुडियकेसिहि ॥ २२ ॥ गुत्तिनिहित्तनियाणियनीसहि, निगडनिज्जतिय तिहिं उववासिहिं। सुप्पकोणि कुम्मास करेविणु, घरउबरु पयअतर देविणु ॥२३॥ भिक्खकालि (वा)णियनीसहि, निगडनिज्जतिय तिहिं उववासिहिं। सुप्पकोणि कुम्मास करेविणु, घरउबरु पयअतर देविणु ॥२३॥ भिक्खकालि जइ टलियइ जइ जत्थइ, तो पारइ पहु अन्नह नेच्छइ। पइदिणु पविसइ सामिउ भिक्खह, दुसहपरीसह सहइ तितिक्खह ॥२४॥ खडखीरिखज्जूरकरवय, विहरावहि किंवि मडी मडय। अवर दिंति वरलड्डुय लेविणु पहु न लेइ पुणु जाइ वलेविणु ॥२५॥ पइदिणु हिंडतह दुरियदलतह, अहियासतह भुक्खतिस। चउमास अइच्छिय भिक्ख न इच्छिय, तणु हुई सामिहि सुकिस ॥२६॥ आसि सयाणिउ राउ रणुध्धुरु, समइ तमि कोसविहि बधुरु। हुति तासु मिगावइराणी, चेडारायह धूयपहाणी ॥ २७ ॥ सिरि तिसलादेविहि भत्तिज्जी, सामिहि माउलभइणि मणोज्जी। जाणिउ तीए पुरीहिं वसतउ, आभिग्गहिउ घरिहि विहरतउ ॥ २८ ॥

1 कडय B D।

विरसणु सामि देव सुइयत्ती कवड रइसि राउ रोवंती। सामिहि निसुणु कोइ नवु नजइ, भरिभरि आइवि हसति नियत्तइ
॥ २९ ॥ वा भिय ' तुम्ह रति कि निमवइ कि विमावि वाम्पि सामिदिजइ। जाम म सामि समिमाणु आणिउ अम्हु ताप गुई
राउ सयाणिउ ॥ ३ ॥ इय वयणु सुणेविणु मरणपर सुम्मणु, हयवणु मइ सुसंजम। बंदिवि ठे पुणइ साहु मुनिन्दह, पर
मज्जस्सिहि मे मिज्मे ॥ ३१ ॥ सम्मदिसमकिहि मइ मावि कहिय अयिमाइ ठेमि सम्पवि। पद्द महाविस सो पुरमारिहि
मिसु विरयमउ विविहरवारिहि ॥ ३२ ॥ वावि म्मारि मंगलु गायंती मोम्मा पइ निरंगु मिपंती। वंसपत्ती पुम्मास मदंवी
मवर विसुवजेस रवंती ॥ ३३ ॥ वावि पु पाइहि सरणि पजिय विपरइ पासिउ भावममाणिय। समरकरपपत्ती संचारहि
नमिवर धीर देइ सन्नु मारिहि ॥ ३४ ॥ वसवाद पुवमिकरेविणु ¹मंदा कोमि देइ पवमेविणु। वइवि न सामिउ पाणि पसा
उ नविमि बाद मियनिसणु म हारइ ॥ ३५ ॥ तउ देवि सयाणिउ समुं सयाणिउ सत्यवाणु सम्मो वि मणु। मइदुमयमकि-
पड सिव्व नविपड, वणडइ निम्मु ससोगमणु ॥ ३६ ॥ इमोय—राउ सयाणिउ पाहिहि चमिउ, मा५५ामसइ निमि नंदहि
मावि। निम्मसंभिउस्समु बोसानइ, सुंदाहि मोप वासु वं मावइ ॥ ३७ ॥ एवि भंगि हरिमडु नडु, हरि करि गंमु
मेसु सइ सुदुइ। पाविप पाइकि मारिमिवाणी मगुवमु वमुमइ पूव सियाणी ॥ ३८ ॥ कोमंविहि सो पुरिसु रमेई, मइ
पच्चम्पिय दोमु मवेई। मारिणी ²सीलमंकड कवंती विपवां पुट्टिनि परमवि पत्तो ॥ ३९ ॥ पाइउ पम्मुणमु करेवइ, मरिसइ
नइइ पड सुवेवड। मडुरमडुरवणिहिं संभासड, जिव गम्मसोभमाम्म सा मसइ ॥ ४ ॥ मवच्चिड सारिहि विविहपयारिहि
कोसंविहि सो पसु नड। पवरीहिवि वड्डइ सिरि सिसु मडुइ जिव पावइ पड रूपमड ॥ ४१ ॥ वाड तरव मयावहि सिसु मदि,
सा मइ सुमुमसरचापकमु। सुकुमारगोरपयकमुरेइ, ⁴नं चम्पिर सुममहुवमरेइ ॥ ४२ ॥ पेक्खिवि सिद्धि वं तरव पणु
जिव सूयहि सिसु वरइ ममणु। मवपिप ⁵पोहि सा कइप देव नं पेक्खिउ मम्मु पुसोवएम ॥ ४३ ॥ नियमरणि मिय सा

१ प D। २ ठुम B। ३ वीउ सिमय D। ४ वं सर्वे। ५ वीव सा वेद D।

॥ ४४ ॥ नियगुणिहिं तीए सेट्ठिवाल, घणकुडिलकालसुपलववाल। पुत्तिव्व तेण अप्पिय पियाए, मूलाए निच्चु निरवच्चियाए ॥ ४५ ॥ सुवणद्दवि नीसेसलोउ, फुडु विहिउ फुरियफारप्पमोउ। हिमसीयलाए सुवणप्पसिद्धु, तिणि चदणत्ति नवु नामु ल॰ ॥ ४६ ॥ जा तीए पियारी सा जयसारी, मूलाए न सुहाइ मणि। किं कत्थइ कोसिउ होइ सुतोसिउ जइ तावइ अवरि तरणि ॥ ४७ ॥ जइ हूय एह सार सोहग्गगेह मूला निएइ नवरूवरेह। ता चित्ति घसक्किय चिंतवेइ, नियभज्ज एहु नणु धणू क(ध)रेइ ॥ ४८ ॥ जो खीरिखडखज्जूर खाइ, खलभक्खणि तासु किं चित्तु जाइ ॥ ४८ ॥ किर सेट्ठिघरणि, ता हुतु मणोरह मज्झ मरणि। जइ छिंदउ वाली एह वाहि, तो होइ अवसु मह मणसमाहि। सा कुणइ तासु अवमाणणाउ, अक्कोसण–तज्जण–तालणाउ ॥ ४९ ॥ सा सहइ सव्वु जिव जच्चमिच्चु, आराहइ नियजणणि व्व निच्चु। पुण एरिसु त पइ तासु ज्झाणु, विसकुभु जेव कयविसपिहाणु ॥ ५० ॥ अह अन्नह सो दिणि अइऊसुगु मणि उस्सूरह धणु आवियउ। दासीयणु पुच्छइ कोवि न अच्छइ नियकज्जिहि को कहवि गउ ॥ ५१ ॥ ता चदण चलिय नीरु लेवि, निय तायपाय धोएमि येवि। पुणपुणवि तेण वारिज्जमाण, पक्खालइ पय विणएण एक्कताण ॥ ५२ ॥ समभरि लुलतकुंतल कलाउ, कद्दमि पडतु अवोडयाउ। सइ धरिउ घणावहि लील-लट्ठि, पयधोय जाव वाला एकट्ठि ॥ ५३ ॥ मज्जारि जेव केणइ निलुक्क, धणभज्ज सव्वु त नियइ चुक्क। चडक्किय चिंतइ एउ दिट्ठु, ता मज्झि कज्जु निच्छइ विणिट्ठु ॥ ५४ ॥ ता जाव जाइ घरबारि एहु, नियपुत्ति कतु सकलकु देहु। ता सिट्ठि पियारइ केसपासि [1]नियरोससहाववोडदिसि ॥ ५५ ॥ न्हाविउ हक्कारइ सिरु मुडावइ पाएहिं नियलइ निक्खिवइ। चारगि पइ सारइ कविहि मारइ वा(र)लवारिताल दियइ ॥५६॥ तो तीए चेडि चेडाइवग्गु, निट्ठुरगिराहिं भासिउ समग्गु। जो सेट्ठि कहेसइ एहु अत्थु, सो मारिसु कारिसु अह अणत्थु ॥५७॥ अह एइ सिट्ठि नहु नियइ वाल, गुणरयणमाल सियजस विसाल। हु रमणकेलि नीसहसरीर, सुहि सुत्ति होसइ मज्झि धीर ॥ ५८ ॥ नहु नियइ दुइज्जइ दिणिवि जाव, उक्कठवि सवुलु सेट्ठि ताव। जणु परियणु पुच्छइ

१ नियओ सुसहावओ- छोड दासि D।

आयरेप्पि, मणु भइ कोइ मूय मयण ॥ ५९ ॥ सिंदेइ सवाणि सविन्नासि मिव रमइ, कविणि सा गुम्मरासि । अइ कवणि पणु णायर णाह्यु, तो जाव खेणि कोकिल विहृयु ॥ ६० ॥ आमाकरि आमरि तव गुम्माकरि वेरासि वीरिम वरिणि । मूय हुविणिउ मयइ अइ ठिव मरणि जाव अंतीकरिणि ॥ ६१ ॥ तो मणि कुविकरव मणु अइमारि, इविव कि मोगारगाह-पहरि । अइवेगि गव भारग(ड)मारि, पर्ड अप्पमेव कुमारि ॥ ६२ ॥ निपकरकमलि कमोलु कवेवी, [1]कुडुकुराज विदु रोभंती । विविवस निएजम मुयमइ गुड़ी करि कमूकिम कमकिमि गुड़ी ॥ ६३ ॥ कुम्पिमाड तउ मोक्खु पावड, [2]मूय अणिमय किमि न पावइ । विनु कवणि कुम्मासति केमिउ, कणिम कुम्मइ कोमि क(व)रेमिउ ॥ ६४ ॥ मणु गव मिमकुम्पाकमरणि कवर हु कस्सइ सई हणारणि । मरण ते कुम्मास पओमवइ, पेरमइ कुमरे विदु रोमइ ॥ ६५ ॥ मणु वारिमु विकव वविरि वं सिकव सिरि कमासई परणइ । कइ कवणि अवकरहि पावरे कुम्मरि वो पाराकर कोमि कइ ॥ ६६ ॥ एव्वंतरि छिवेसर पवर, मंकमुलिमि पेसिकमेवर । तरणि सिमवकवेपमिराइर, कंबणु किवमकु मे वामिव ॥ ६७ ॥ कंमछु कमपमकु कि कायर, सुरगिरि अवर मणु कि वायर । कुसुमवाणु कि सिवपरसमिवउ, विरद्द आइण कम्मुवणु मवर ॥ ६८ ॥ सो परमेसर पेक्खिवि विवइ, करिरि कविमि मई पामिव संपड । कमरे मह पुमइ परिमाडी पूरी मविमि वणी रायरी ॥ ६९ ॥ कवूप पिमिक्ख वि गु परि आऊ, कवर वाहिरि मेलइ पाऊ । मयइ सवाकपवाइ कुमासहि, पावहि पइ दुंई इप कुम्मासहि ॥ ७० ॥ पणु पर मुनेमिणु निम्मु सरेमिणु कम्मारि महरणविव । मिकवामि पसारव कंवकि वारइ सा मिहरमइ कुम्पिकिव ॥ ७१ ॥ परमामिपरमस्मइरमि सपरिवारि संपवड वासमि । मारि देवपुंपुमि आमसिय, वरिसहि कुसुमसमूहुपणविव ॥ ७२ ॥ रयण कमलकमममविराए, वरिसहि कमपमि वे महुरए । वरिसरि वोरणंपुरपरिभिहि, किजहि मेहुककेम कमाविरि ॥ ७३ ॥ मउ-रि सुपमु सुमकुम्मोसहि, कमिरमुरसमूहमु वोसहि । सिरि सिरवमकमम आऊ, सरऊ वरऊ मे मोरकमाऊ ॥ ७४ ॥

[1] कुडुव D । [2] मूय न विदु किरि वरि वमइ D ।

नियलविलीणविलीणारीसहिं, मणिमयनेउरपाएहिं दीसहिं। पहिरिय पचरगपडिकप्पड-पट्टहीर नवरगमहुब्भड ॥ ७५ ॥ मर-गयमाणिक्किहिं मोत्तियचक्किहिं, पउमरायविद्दुमदलिहिं। समलंकियभूसण अवगयदूसण, पहिरिय अंगिहिं उज्जलिहिं ॥ ७६ ॥ सिंधुरखधराहिं आरूढउ, राउ सयाणिउ नीइ अमूढउ। देवि मिगावइ सहिं संपत्तउ, रायत्थाण जणोवि पहुत्तउ ॥ ७७ ॥ तहिं अन्नेवि पत्त तंबोलिय-सालिय-हालिय-नालिय-मालिय। जोहारेविणु विहुणियमाऊ, चंदणबाल सिराहइ राऊ ॥ ७८ ॥ सुंदरि सुदरु जम्मु तुहारउ, नामुकित्तणु तुह गुणकारउ। तुहुपरि तियसिहि तसु सलहिज्जइ, जगधवलहरु जेण धवलिज्जइ ॥ ७९ ॥ पइ पाराविउ वीरजिणेसरु, अन्नहि कसुवि न एत्तिउ गुणभरु। किं मायगह घरि करि बज्झइ, रकह कामधेणु किं दुज्झइ ॥८०॥ एवहिं पइ खालिउ महिलह टालिउ थीकलकु नहु सघडइ। चंदणह महामइ देवि मिगावइ इय भणेवि पाइहिं पडइ ॥ ८१ ॥ निवु वसुहारहिं सत्तण लग्गउ, तउ सक्केण निरक्खिउ थक्कउ। धणु जसु कासुवि चदण अप्पइ, लहइसु एत्थु न अन्नु पहुप्पइ ॥ ८२ ॥ ताउ धणावहु सो धणसामिउ, तेण तीए तसु चेव पणामिउ। नरनाहेण वि तसु अणुजाणिउ, घरअब्भितरि सेट्ठि पराणिउ ॥८३॥ सपुलु(ण्णु)नामि महल्लउ आसी, आविउ देवि मिगावइ पासी। चंदणबाल तत्थ सो पेक्खिवि, पायपडिउ रोयइ उलक्खिवि ॥ ८४ ॥ कहइ मिगावइ भणिउसु तक्खणि, एह रायदहिवाहणनदणि वसुमइ त्ति निरधारिणि जाई, जाणिउ चपाभ-गिहि इहाई ॥८५॥ तो देवि नियती भणइ रुयती भाइणिज्जि तुह होसि महु। वच्छे! आलिंगसु मइ निव्वावसु इय आलिंगइ सा सुवहु ॥ ८६ ॥ कयजोहारु रायउ सुरराइ, भणिउ निसुणि मह सासणु काइ। बाल नेहि नियगेहि नरेसर! पालहि केवि मास सुहनिब्भर ॥ ८७ ॥ वीरह नाणि जाइ उक्कोसइ, सिस्सिणि पढमपवत्तिणि होसइ। करिहिं चडाविउ चंदण तक्खणि, नीय नरेसरि नियमदिरि खाणी ॥ ८८ ॥ गयउ सक्कु धवलहरि धरेविणु, चंदण देवदूसवर देविणु। कन्नतेउरमज्झि रमंती, अ-च्छइ जिणकेवलु पडिखती ॥ ८९ ॥ गामागरनगरिहिं विहरतउ, जमियगामि सामि सपत्तउ। उजुवालियनइतीरि जु साल्हु, तसु तलि ठिउ तवछट्ठ विसालु ॥ ९० ॥ अह वरिसि दुवालसि गयइ अणालसि छहिं मासिहिं पक्खगलिहिं। सियदसमिविसा-

एए थिमुयमन्नाइ नमु आउ खमिकसिमिर्हि ॥ ९१ ॥ मिकिमनवीसविषसेस पाकिम्यऽऽसम्प महिम मामस्स सस्सऽऽआईवि परज्ज। अह समवसरणु विरयावलीमाकि(पउ)पं, रयय-सकमिय-रुप्पीहि रुपाइयं ॥९२॥ तत्थ सिलेसु सोहंत सीहासणो, कणु सम्मसीव होउम बखाणो। पगु तत्तोवि पावाए पावगुणो तत्थ किर्ल समक्षेइ मवह जिणो ॥ ९३ ॥ ठविय ताव एत्थ रगुम्पगुम्प गम्मय गोयमाई वरा म्वगणा। तिप्पसमाहेण खमाविय बंदणा विविसप्प मप्पइरी ठविय सामिणा ॥ ९४ ॥ पुन वि विरए मदि माइ मंडिय, मविय कमसाई माणुम्म मासंदउ। ताइयं देसयं सेविय पाविउ, किमनामं मइयं समस्ता-
पि ॥ ९५ ॥ सिद्धत्थाइ मेरु भवमिकंण्णु केसरिविकम्मकंडिवर। करणाइ थाइ घाइसइ सामिय, सुवसइ देउ देव मइ मंडिम्मउ ॥ ९६ ॥ पडिकहि पविहि प सहि तए, देव सुम्मनु गोसालु गंजिउ बए। मज्झिमं पतु पावापुरि पण्णो, कामिहमं व निप्पाउ निस्समगुणो ॥ ९७ ॥ चरमु निस्समु समोसरणु मुणिपत्थं, सुंकपारमए पावाए आपूरियं। तीसवासाई सुमसासि गिहवासिरो बारसाई(वं य) छउमत्थवत्यपरो ॥ ९८ ॥ तीसखम्माई एयं तए पालियं, किमु सुपसन्नु सम्मत्त विलासियं। सामि सम्माइ बाहत्तरी वेनियं सयाइखप्पमामेव निप्पाहियं ॥ ९९ ॥ समत्तु पयस्सु कणरत्तु तुह सासणे आसि मासंतु नामेण मणपूसणे। सम्मदिट्ठीण सारेत्तणे रक्ख, देवय तुम्ह सिरंमि सिद्धत्थ ॥ १० ॥ सिरिजिणसमवेण्णु कमपकउविगु पणसम-सम्मसंठियउ। कप्पिम्मासस्सइ ठाइहिं गोसहिं पमो विय निम्माणि गउ ॥ ११ ॥ इति श्रीजगसाम्यपरम्पसम्पिका समाप्ता ॥

साम्प्रतं वचनप्रमाणे समाऽपि मगलपरिसमसेष्वमेन कर्तव्येत्याह—

जइ वा विरोपनाहो, विमइ बहुपाई असरिसमपस्स। इय बीर्यकराई एस समा सम्मसाहूमं ॥ ४ ॥

यदि तावत् विरोपनाथो भगवान् महावीरो सुपरिविमस्स विप्पवर्ग विहारस्थात् एमवीरमहापवस्सपि मीमहावीरस्येव सुम-मीमत्थात्। तदपि यन्तमभपपि कार्यंतानीति गम्यते। मीवस्यापि बमस्स सम्ममिति मीवसगकप्पेनामहुपमावामसतीव तुर्विम

कलामा इतीति नगनासमनिपातप्रहारेण जीविताद्व्यपगमि सर्वस्मादिति गिरह्नो-प्रगो, गम गर्ववपि मानुषिरेव भगवान्तो ॥४॥

यथा—" मूग पायमूलको विगुरा तम्मिय निघामये, मूर्ति पर्वपूर्णं स्वायम्भू नुयनर्गानिव मोनामडे ।

या जन्य प्रकृति. मतां गिनुर्णा कि नगाला विनाश, पूर्वमन्तिक कर्मन्ननिगारस्त्वेनाय गतन्तो ॥२॥ "

ननु भगवीक्षराज्ञयोपशिक्षमानाम् कथम् "मम मना मन माहन" निर्मुक ?, [illegible] श्रीनिर्मानायेन तस्य

ऽतेजयत् तपुरस्कारेणान्येन नोपशिक्षमाणावरोगः । [illegible] गर्भगतजावेन [illegible]—

न चइज्जइ चालेउं महइ महावद्धमाणजिणचंदो । उवसग्गसहस्सेहिं वि मेरु जह वायगुंजाहिं ॥ ५ ॥

न शक्यते कम्पयितु—[illegible] किमुत पाण्डुरलोकस्त्वामिस्तवनन्दजिनचन्द्र इति [illegible] । हेतुद्वारेण विशेषमाह—महति फले मोक्षलक्षणे या [illegible] इति गम्यते । तथा च " [illegible] वा [illegible] वा, [illegible] वा नीरयुक्तानि वा । कहि [illegible] निग्रन्थानां, न ननमि न गीरे [illegible] ॥ २ ॥ " महा—महामिनान् महे-शान्तरसैकस्वामित्वोपमेयमित्यन्न महानामयुक्तानि । [illegible] यदि [illegible] वायुगुञ्जाभिः न [illegible] । [illegible] शैलराजमिव [illegible] भाव ॥ ५ ॥ अधुना गणधरेणैव विनयोपदेशमाह—

भद्दो विणीयविणओ, पढमगणहरो समत्तसुयनाणी । जाणंतो वि तमत्थं, विम्हियहियओ सुणइ सव्वं ॥६॥

प्रथमगणधरः [illegible] समस्तश्रुतज्ञानी [illegible] । [illegible] विस्मितमना शृणोति । [illegible] 'अपि' [illegible] । [illegible] सर्वं [illegible] गुरोरेव श्रोतव्यम् ॥ ६ ॥ [illegible]—

जं आणवेइ राया, पगईओ तं सिरेण इच्छंति। इय गुरुजणमुहभणियं कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ७ ॥

यदाज्ञापयति राजा प्रकृतयो–लोकाः शिरसा प्रतीच्छन्त्यनुमन्यन्ते इत्यनेनैवोपमाप्रकारेण गुरुजनेन मुखेन भणितं कृताञ्जलिपुटैः–मौलिकरकुड्मलैः श्रोतव्यम् ॥ ७ ॥ गुरोरेव विनयेन यतः प्रधानत्वमस्त्यतः प्राधान्यप्रकारमाह—

जह सुरगणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो। जह य पयाण नरिंदो गणस्सवि गुरू तहाऽऽणंदो ॥ ८ ॥

यथा सुरगणानामिन्द्रः प्रधानो यथा वा ग्रहतारकादिगणस्य देवस्य च चन्द्रः प्रधानः यथा च प्रजानां नरेन्द्रस्तथा साधुसमुदायस्यापि गुरुः प्रधानम्। हेत्वन्तरेण विशेषणमाह—आनन्दो यतः ... आनन्दकः ... ॥ ८ ॥ एवमपि कस्यचित् ... लघुतरं गुरुं कश्चिन्मुग्धः परिभवेदनुशास्ति दृष्टान्तेनाह—

बालोत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरुउवमा। जं वा पुरओ काउं, विहरंति मुणी तहा सो वि ॥ ९ ॥

बालो त्ति —बालोऽयमिति कृत्वा महीपालं न प्रजा परिभवति ... महीपालो त्ति द्वितीयास्थाने प्रथमा, प्राकृते विभक्तीनां व्यत्ययात्। एषा गुरोरुपमा। गुरुमपि तथैव न कश्चित् ... परिभवेत्। ... यं वा ... गीतार्थत्वं ... पुरतः ... गुरुत्वेन गृहीत्वा विहरन्ति मुनयः सोऽपि तथा गुरुरिव महीपाल-वन्नैव परिभवनीयः ॥ ९ ॥ ... गुरोः स्वरूपमाह—

पडिरूवो तेयस्सी जुगप्पहाणागमो महुरवक्को। गंभीरो धीमंतो उवएसपरो य आयरिओ ॥ १० ॥

अपरिस्सावी सोमो संगहसीलो अभिग्गहमई य। अविकत्थणो अचवलो पसंतहियओ गुरू होइ ॥ ११ ॥

पडिरूवो —प्रतिबिम्बं ... रूपं यस्य स प्रतिरूपः—प्रतिबिम्बरूपः, तेजस्वी—दीप्तिमान्, युग—... ... अस्मिन् प्रधानं ... आगमः ... युगप्रधानागमः, मधुरवाक्यः ... गम्भीरोऽ

तुच्छ,-परैरलघु मध्य इत्यर्थ । धृतिमान्-निष्प्रकम्पचित्तः उपदेशपरश्च मद्वचनैर्मार्गप्रवर्तक आचार्या भवति ॥ १० ॥ 'अपरिस्सावि' तथा अप्रतिश्रावी-परकथितात्मगुणप्रलापप्रतिश्रवणशीलः। सोम्यो-मूर्तिमात्रेणैवाह्लादसम्पादक । सग्रहशील'-शिष्यादियोग्यवस्त्रपात्रागा-दानतत्परस्तथाविधस्य गणवृद्धिहेतुत्वात्। अभिग्रहेषु मतिस्तद्ग्रहणग्राहणपरिणामो यस्यासावभिग्रहमतिकः। अविकत्थनो-मितभाषी अनात्मश्लाघापरो वा। अचपल-स्थिरस्वभाव प्रशान्तहृदय-क्रोधाद्यस्पृष्टचित्त । एवम्भूतैर्गुणैर्युक्त' आचार्यो गुरुर्भवति । तदुक्तम्—

"प्राज्ञ प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदय. प्रव्यक्तलोकस्थिति', प्रास्ताश. प्रतिभापर प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तर ।
प्राय प्रश्नसह प्रभु' परहिताधायी पराऽनिंदया ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधि' प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः ॥ १॥"

गाथाद्वयं चैतत् षट्त्रिंशतः सूरिगुणानामुपलक्षणम्। तथा चैवमेते प्रवचने प्रोच्यन्ते—

"आयाराई अट्ठउ तह चेव य दसविहो उट्ठियकप्पो। बारस तव छावस्सगस्स व, सूरिगुणा हुति छत्तीस ॥ १ ॥
आचेलक्कुद्देसिय, सेज्जायररायपिंडकिइकम्मे। वयजेट्ठपडिक्कमणे, मास पज्जोसवणकप्पे ति ॥ २ ॥

दशधा कल्प'। शेष सुगमम्। यद्वा—

सम्मत्तनाणचरणा, पत्तेय अट्ठ अट्ठ भेइल्ला। बारसभेयो अ तवो, सूरिगुणा हुति छत्तीस ॥ ३ ॥

अथवा—अट्ठविहा गणिसपय, चउग्गुणा नवरि हुति बत्तीस। विणओ य चउब्भेओ छत्तीसगुणा इमे गुरुणो ॥ ४ ॥
१ आयारे-२ सुय-३ सरीरे, ४ वयणे ५ वायण-६ मई ७ पओगमई। एएसु सपया खलु, अट्ठमिया सगहपरिन्ना ॥ ५ ॥"

१ तत्राचारसम्पत्तावदित्थंचतुर्द्धा—१ सयमध्रुवयुक्तता २ असम्प्रग्रहता ३ अनियतवृत्तिता ४ वृद्धशीलता।
२ श्रुतसम्पत्—१ बहुश्रुतता २ परिचितसूत्रता ३ विचित्रसूत्रता ४ घोषादिविशुद्धिसम्पन्नता।
३ शरीरसम्पत्—१ आरोहपरिणाहयुक्तता २ अनवद्याङ्गता ३ परिपूर्णेन्द्रियता ४ स्थिरसंहननता।

४ वचनसम्पत्—१ आदेयवचनता २ मधुरवचनता ३ अनिश्रितवचनता ४ असन्दिग्धवचनता।

५ वाचनासम्पत्—१ विदित्वोद्देशनम् २ विदित्वा समुद्देशनम् ३ परिनिर्वाप्यवाचनता ४ अर्थनिर्यापणा।

६ मतिसम्पत्—अवग्रह २ ईहा ३ अवायो ४ धारणा।

७ प्रयोगमतिसम्पत्—१ आत्म-२ पुरुष-३ क्षेत्र-४ वस्तूनां परिज्ञानम्।

८ संग्रहपरिज्ञासम्पत्—१ दुर्बल-ग्लान-शैक्षकादियतिनिर्वाहयोग्यक्षेत्रसंग्रहणा प्रथमा २ निषद्या-प्रातिहार्यपरिहारपीठफलकाद्युपादानविषया द्वितीया ३ यथासमयमेव स्वाध्याय-प्रत्युपेक्षणा-भिक्षाग्रहणोपधिसमुत्पादनाविषया तृतीया, ४ यथायथमभ्युत्थानकरणा विनयप्रतिपत्त्यर्थमासनदानाभ्युत्थानादिकोपग्रहकरणा चतुर्थी।

विनयचतुर्था—१ आचारविनयो २ श्रुतविनयो ३ विक्षेपणाविनयो ४ दोषनिर्घातनाविनयश्चेत्येवं नव चतुष्काः षट्त्रिंशत्।

यद्वा— १ देश-२ कुल-३ जाइ ४ रूवी ५ संघयणी ६ धिइजुओ ७ अणासंसी। ८ अविकत्थणो ९ अमाई, १० थिरपरिवाडी ११ गहियवक्को ॥ १ ॥ (पं १ )

१२ जियपरिसो १३ जियनिद्दो १४ मज्झत्थो १५ देस-१६ काल १७ भावन्नू। १८ आसन्नलद्धपइभा १९ नाणाविहदेस-भासन्नू ॥ २ ॥

२०-२४ पंचविहे आयारे, जुत्तो २५ सुत्त-त्थ-तदुभयविहिन्नू। २६ आहरण-२७ हेउ-२८ कारण-२९ नयनिउणो ३० गाहणाकुसलो ॥ ३ ॥

३१ ससमय परसमयविऊ, ३२ गंभीरो ३३ दित्तिमं ३४ सिवो ३५ सोमो। ३६ गुणसयकलिओ जुत्तो पवयणसारं परिकहेउं ॥ ४ ॥

एतेपासुपयोगद्वारेण किंचिद्व्याख्या—१ आर्यदेशोत्पन्न सुखावबोधवाक्यो भवति । २ पैतृकं कुलं-विशिष्टकुलोद्भवो यथोत्क्षि-
प्तभारवहने न श्राम्यति । मातृकीजातिसुसम्पन्नो विनयान्वितो भवति । ४ रूपवानादेयवाक्यो भवति । ५ दृढसंहननो व्याख्यान-
तपोनुष्ठानादिषु न खेद याति । ६ धृतियुक्त—कथचिद्व्यसनोत्पातादौ न दैन्यवान् भवति । ७ अनाशंसी-श्रोतृभ्यो न वस्त्राद्या-
काङ्क्षति । ८ अविकत्थनो-बहुभाषी आत्मश्लाघापरो वा न भवति । ९ अमायी-न शाठ्येन शिष्यान्वाहयति । १० स्थिरपरि-
पाटि -स्थिरपरिचितग्रन्थस्य सूत्र न गलति । ११ गृहीतवाक्य -अप्रतिघातनीयवचनो भवति । १२ जितपरिषत्-परवादिक्षोभ्यो
भवति । १३ जितनिद्रो-अप्रमत्तत्वाद्व्याख्यादौ प्रयतते, प्रकामनिकामशायिनश्च शिष्यान् शिक्षयति । १४ मध्य.स्थ—सवाहको भवति ।
१५-१६-१७ देश-काल-भावज्ञो-देशादिगुणानवबुध्य यथायोग विहरति, हृदयगमा च देशना करोति । १८ आसन्नलब्धप्रतिभो-
जात्युत्तरादिना गृहीतो प्रत्युत्तरदानसमर्थो भवति । १९ नानाविधदेशभाषाविधिज्ञो-नानादेशजविनेयप्रत्यायनसमर्थो भवति । २०
ज्ञानाचार-२१ दर्शनाचार-२२ चारित्राचार-२४ तपाचार-२४ वीर्याचार-रूपपञ्चविधाचारयुक्त श्रद्धेयवचनो भवति । २५
सूत्रार्थोभयज्ञ -सम्यगुत्सर्गापवादप्ररूपको भवति । २६ उदाहरण-२७ हेतु-२८ कारण-२९ नयनिपुणस्तद्गम्यान् भावान् सम्य-
क्प्ररूपयति नाऽऽगममात्रमेव शरणीकरोति, तत्रोदाहरणानि वक्ष्यादिसिद्धौ महानसादयो दृष्टान्ता, हेतवो ज्ञापका धूमवत्त्वादय.
कारणान्युत्पादकानि परिणाम्यादीनि कुम्भादेर्मृत्पिण्डादिवत्, नया-नैगमादय । ३० ग्राहणाकुशलः-शिष्यानकुशाग्रमतीनप्यनेकधा
ग्राहयति । ३१ स्वसमयपरसमयवित्-सुख परमताक्षेपद्वारेण स्वसमय प्ररूपयति । ३२ गम्भीरो-महत्यपि कार्ये निर्वाहिते नोत्कर्ष-
मुद्वहति । ३३ दीप्तिमान् दृष्टोऽपि परवादिना क्षोभमुत्पादयति । ३४ शिवो-मारिरोगाद्युपद्रवविघातकृद्भवति । ३५ सोम्य'-प्रशान्त-
दृष्टितया सकलजनप्रीत्युत्पादको भवति । ३६ इत्यम्भूत एव शेषैरपि गुणशतै कलित सन् प्रवचनसारमागमरहस्यं परिकथयितु
युक्त -समर्थो भवति ॥ ११ ॥ केन कारणेन गुरोरियन्तो गुणा वीक्षणीया इत्याह—

अप्पाणि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पयं ठाणं। आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥ १२ ॥
अन्येऽपि येऽपि अभूवो भविष्यन्ति जिनवरेन्द्राः सम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रसमर्थं मार्गं भव्येभ्यो दत्त्वा अजरामरं-मोक्षं प्राप्ताः तद्-
नन्तरं अनुक्रमेण तीर्थं प्रवर्तितं वर्तते एव। साम्प्रतमाचार्यैरस्मत्कृते समस्तमपि प्रवचनं ध्रियते तस्माद् गुणा गवेषणीया एव। अन्-
यथा व्यवच्छेदस्य कर्तुमशक्यत्वात् ॥ १२ ॥ शिष्यस्तु गुरुविनयमुपदिशन् गुरोश्च विनयोऽयं गुणः, साध्व्यस्य प्रतिनीत्या
विनयोऽयमाह—

अणुगम्मई भगवई, रायसुयज्जा सहस्सविंदेहिं। तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं ॥१३॥
दिणदिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा। नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्वअज्जाणं ॥१४॥
अत्रार्थे कथिते जनेन प्रव्रज्या प्रबन्ध इति तेन तदनुच्यते—

कंपीपुरम्मि सेट्ठपडमाणो आसि सेट्ठि इब्भसुओ। सो निम्मलगुणधारियगुणिओ निम्मओ वणो ॥ १ ॥ परिवारमाणो महिमं-
तो। तरुणि सुमणोमियमा-पसंसणिया व्व सा सहइ ॥ ३ ॥ पत्तकमलिणीकमलमंसा महोसयमा। मुणिनिकमेहा पाण्डु
सिरिम्मि सा वहवि निच्चं ॥ ४ ॥ विमलगावलमालो सरवल्लयसारससिरि व्व। परमहिमसीलं सा हेमकसिरि व्व
रेहंती ॥ ५ ॥ सम्मतमविलगत्थ-सोहि सत्ताणूण गहयरि। गुणवरि सागुणीहिं पय पय अणुगामिणंती ॥ ६ ॥ सव्वसीलंती
सव्वेहिं गुरुरयणप्पहासेहिं। सेट्ठगेव सव्वेण्णमणेण प्पुत्तो मणो पत्तो ॥ ७ ॥ स्म एसा गयलेसा सुरकेस्स सरसाव्व
नियवेसा। वेट्ठवं पविणय-पसुप सिरिसिणी पसमा ॥ ८ ॥ सामिस्स सामिणी साहुणीव सव्वाण ते व सेव क्या। अंतम-
सत्त पंतस्सीमम्म पुष्फी सदारेण ॥ ९ ॥ सो वसुमणगम्मो स गमो सुणिमच्छुरस्स पसमीए। समिसंतियसेलसिट्ठो प्पुत्तो सुरिहिं

मुणियगुणं ॥ १० ॥ हे वच्छ ! अम्ह पासे, पत्तोसि पओगेण मेन तुम । तिहुयणमोहम्माइ कारणं काइ मेहुणगो ॥११॥
वसहीए चइणाए गयाए परगमभोगओ रिसे। मिताइ सा पुरकारम-नीरागली अहो एए ॥ १२ ॥ पयमाऽऽगयाणं पइमोगमग्गा
रत्तामयरो गुणिसु । अद्धुदियदीणकरुणा-पसाहणा पुरिसरयणाणं ॥ १३ ॥

" आधिव्याधिव्यसननिवहानुद्धुरानर्दयन्त्यां, जन्तूनुच्चैर्निधिगमभगवान् शिव मायाम् ।
सत्कारुण्यप्रसरतरसा त्राहि सर्वां निवृत्तिमार्गेण भवानि शुचि ते कृत्य न सुरमेसरा ॥ १४ ॥"

कोइ पो(पो)उपडोसिय, मायगीए कवि इमे पडुगो । तीए वि गणिज्जा, अज्जाए पुणो इ(ए)य कयग ॥१५॥ मा निद्धुणिय
पव्वय पवि य पव्वज्जमज्ज संजमि । अह रागमोल रिसा, गिरना य गुरूहि से दिन्ना ॥ १६ ॥ सूरीहि गिरीकराय, पेमिओ
पइण्णयसणि । गीयत्थसाहुमहिओ स तीए अब्भुट्ठिओ तुरा ॥ १७ ॥ समीयारा मम्मुरनुगाणगा ओयमागयं दिय । नवि
निसन्नेहि दिमतीए वि तमिन्दाइ न एसा ॥ १८ ॥ पुन्नाइ आगमारवोगस न ताहि मिहिग पुण्णो । रज्जनरसंजमिछेगा
चिंतइ सो जयइ जिणधम्मो ॥ १९ ॥ संजममग्गाणुगा मिगुरप्पभिइ आइ गुणा । पुच्छिहि पेमिओ इह मयानमाली न सयाणा
॥ २० ॥ गिरचित्तो एदधम्मो, छोऊण निगओ स गमणीए । इय अम्हाहि ति अज्जाहि गिरावियो पुनेयरा ॥ २१ ॥ गाथा-
र्थस्तु—अनुगम्यते भगवती राजपुत्रा आर्यान्त्यस्माऽऽलोकतान् । पुन्नमदुर्गगतादि ज्ञानमकारं न करोति ॥ २२ ॥ यया माता-
मुताऽस्य सर्वाऽऽर्यावर्त्ता च कथं द्रमकराग्युत्थानादि करोतीति, तत पयमाद्वि-नारी तावत नूनं निश्चित करेइ गुणा माता-
त्स्य न ममेति ' दिणेत्यादि ' सहन् ॥ १३-२७ ॥ तत कि निवृत्ति आह—

वरिसमय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहू । अभिगमण-वंदण-नमंसणेण विणएण सो पुज्जो ॥ २५ ॥

धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो । लोए वि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ २६ ॥

संघाडगस्स रम्मो, तइया वाणारसीए नयरीए । कल्लाससस्सयहिये आसी किर ससंतीव ॥ १७ ॥
तहवि य सा रायसिरि, उल्लटंती न ताइया तार्हि । उवरहियएण एक्केण, ताइया अंगवीरेण ॥ १८ ॥

'परिवसय' गाथा व्याख्या । नवरमभिगमनमागम्यत अभिमुख्येन गमनं प्रवर्तनं—गुणवतो 'धम्मे' तत्स्यसंबन्धास्। समस्तैः प्रसन्नरलसत्यकतरिम महीमण्डनम् ॥ १५ ॥ किमित्येवं साधुः साक्षीनां पूज्य इत्याह—"धम्मो" गाथा । गुणविप्रमुक्तन् वस्तून्, यस्मात् कारणे सदा । 'यदे तस्मात् शुभे स्थाने तस्मात्कर्म इति स्यात् ।' स गुणपरिज्ञानमन्ये गणधरेभ्यः पुरुषेभ्यः एव प्रवर्तते, के सूत्रस्य सूचितत्वात् कथितत्वापि गुणैर्न प्रतिपादितत्वात् पुरुषपरीतीर्थकृद्भिरेंद्रियोऽपेक्षा कथिता । पुरुषस्येष्ठः पुरुषोत्तम इत्यर्थः । कोऽप्यधिकारिणा सम्यक् ॥ १६ ॥ कथार्थकथानकमाह— संघाडगस्स गाथा । "तहवि य" गाथा ।

वाणारसीए संघाडगस्स रम्मो आसि सुविख्यातं । कहियं सहस्समज्झसुणस्सपरमसूरिसमायं ॥ १ ॥ एगाए गुणिपमीए देवी(पत्ती)ए जाओ महीनाहो । अवरा रायसिरी तेसु कमेणं ताहिं ॥ २ ॥ मेमिनिमित्त पत्तो निवारिया ते न महलेवे मे । अवरे देवीए जणिया वेगओ अंगवीरो त्ति ॥ ३ ॥ तप्पुत्तसमवाओ परसमं पवित्तिसार जामस्स । रहियस्स तेसु रज्जं समिसेसं कुणइ गम्मो त्ति ॥ ४ ॥ एवमनुसारेण गाथाद्वयस्यार्थो सुगमः । अन्तःशी—विशदमतीरयन् ॥ १८ ॥

परिमाण सुबहुयाणवि, अम्हाणो इह समत्थपरसारो । रायपुरिसेहिं निस्सा, जमेहि पुरिसो जहिं नत्थि ॥१९॥
किं परसमहुयाणायार्हि परमप्पसमिस्सय सुरूवं । इय माहणकामी, पमाणपंसो य विबुहा ॥२०॥

तथा—"महिलाण" गाथा ॥ १९ ॥ यथाऽयं धर्मो लौकिकध्यानैः पुरुषप्रधानः मोक्षलब्धा ये च लौकिकपरस्तारिणा धर्मो एवस्मिं लभ्यते स एव धर्मो मवेदिति चिन्तयता प्रत्याह—"किं पर" गाथा किं परधर्मस्य प्रतीमिवर्णनामी एतमभिरामम् अभिमुख्येन सत्यानिसूचितमेव सुरूपं मन्यते । इह परलक्षणकामी मनोमनाम नरेन्द्रो दृष्टान्तो ॥ २ ॥

इह हि परकज्जलग्गेनेह दसादाहपूरियपयासे। सिरिरिसहनाहदीवे देवे निव्वाणपत्तंमि ॥१॥ तिदिवं तिदिवेसोविव, अखंडछक्खडमडियं भरह। सिरिभरहचक्कवट्टी, पालइ लालियपयावग्गो ॥२॥ उवभुंजइ सज्जियसारफारसिंगारहावभावाहिं। चउसट्ठिसहस्सेहिं तरुणीहिं समं विसयसोक्ख ॥ ३ ॥ हरियंदणगरागो देवगनिवत्थवत्थवित्थारो। कडयकडिसुत्तकुडलकेऊरकिरीडलकारो ॥ ४ ॥ इय विरइयसिंगारो आयसघरमि विमलफलिहमए। पविसइ सरीरसोहादसणकज्जेण स कयावि ॥ ५ ॥ वारवार जा अगमगमिक्खेइ मुद्दिया ताव। गलिया अगुलिकिसलाओ सा विसोहा तओ जाया ॥ ६ ॥ ववगयसोह त पासिऊण सव्वगसगि आभरणं। मुक्क साहावियरूवदसणत्थ महीवइणा ॥ ७ ॥ ता तक्खणेण पेक्खइ पउत्थसुपसत्थसोहसभार। ससरीर अवरमंडलं व गयतारतारगण ॥ ८ ॥ कमलायर व अहवा विलूणनीसेससारतामरस। सिररज्जुवद्धचम्मावणद्धकीकससमूहमय ॥ ९ ॥ चिंतइ गुरुसवेगो उल्लसियउद्दगवग्गु वेरग्गो। हा किमसारस्स सरीरयस्स न मए कयमिमस्स ॥ १० ॥ कालागुरु–कत्थूरी–कुंकुम–घणसार–गधसारेहिं। वरवसणाभरणेहिं य तहावि पगई अइअसारा ॥ ११ ॥ पिउवण कीलोदर–दाहदूसिओ भूसिओ वि सव्वग। जह नियपगइ परिहरइ, नेव तह एस हयदेहो ॥ १२ ॥ एवंविह निंदियदेहकारणा कहवि मए महापाव। कयमच्चतरउद्द अहो विमूढेण चिरकाल ॥ १३ ॥ कह वा विसयाऽऽमिसमोहिएण जिणनाहदेसिओ धम्मो। निपुन्नएण न मए सिवफलउ सम्ममायरिओ ॥ १४ ॥ किं चिंतामणि मह कप्पतरुवर कामधेणुमहवा वि। कोवि सयण्णो धन्नो, लहूण परम्मुहो होज्ज ॥ १५ ॥ ते वाहुवलिप्पमुहा, धन्ना मह भाउणो महाभागा। जेहिमसारसरीरेण सारिओ सुंदरो मोक्खो ॥ १६ ॥

किंच—"स्थिरापाय काय प्रणयिपु सुख स्थैर्यविमुख, महारोगा भोगा कुवलयदृशः शल्यसदृश·।
गृहावेश· क्लेशः प्रकृतिचपला श्रीरपि खला, यम स्वैरी वैरी तदपि न हित कर्मविहितम्" ॥ १७ ॥

१ दक्खदिसा।

एमाइ सुरम्मसाम्मसम्मयाउपडीमिओ झत्ति। निरहो वणरासि व्व मोहपसरो मयस्स ॥ १८ ॥ कम्माविले व पेमसनामे निप्पयाय सुरेहे। देवसमप्पियजीवो गेहाओ निग्गओ पाहे ॥ १९ ॥ दसहिं सहस्सेहिं नरेसराण समुक्खाविक्खिराय। परिवरिओ मयम मयट्ठेमडी विहरए वसुहं ॥ २ ॥ इति मयणकुमारचरियसमत्तं।

पोयणपुरम्मि रम्मे मदीनाहो आसि सोमपउत्ति। अकरिंसु कुमारं मम्मथारओ मम्मण(ग)म्मि वो ॥ २१ ॥ पारिग्गिरेवीए ज्याओ य नायमत्तठिममिवस्स। विद्धुरविरिंक्कविद्धुम्स विहुमेग सिरे पमिए ॥ २२ ॥ मरणमरवेग्गियिंमु विरायमीयस्स अंकुरविसेसो। स पम्मपुरिममणोरपाणसाऽऽसमो पत्तो ॥ २३ ॥ वयपरिणमविपाकवणविपक्कमस्स रम्ममाणस्स। कणुई सम्मुवमंकी पयम नत्तपूमक्षेत्रम ॥ २४ ॥ मत्तिर्ण तीम पूजो देवाऽऽगओ दुवारदेसे व्व। पिक्खइ अम्लाइ वा पिय। द्धओ धम्मस्स पऽमस्स ॥ २५ ॥ धऊग्ग कम्मणाले, तो पलिर्न दंसिअं महीनाहो। जपिअं पाओ तओ व सामि ! किं कहसि कराए ॥२६॥ मल्लिममिमेव सऊ समइक्कतो कुग्गमो निपओ। दुम्मे पमाइया दुम्ममेव पज्जिमामाओ मे ॥ २७ ॥ पर्योण व साम्प्रतं मे विपहे पत्ता— वमासा सहुस्सी मम्म इव्वेंम विम्मया मग्ग। त्तारयम्मि व्वरयम्मि आयम्मि मामिने विस्सा ॥२८॥ तो रज्जे भरिसिंचिय, व्वहिरेण पसमवंसुवयरणं। सह पारिग्गिरेवीए, वणवासे तावसो जाओ ॥ २९ ॥ वणवासए देवीए, गम्मे समरंमि धारओ जाओ। वक्कलचीरी नामेण ठविओ वक्केहिं जओ ॥ ३ ॥ पसवाऽऽसमएण मरिऊण धारिणी तावसी ससि विमाणे। जाय देवी पुव्वाणुपसिनेहेण पइ रति ॥ ३१ ॥ वणमहिसीए दुद्धं व्वम्म पायइ पवरयेवत्तं। पिउणा पालिज्जंतो, देवणं दुम्मम नइइ सो ॥ ३२ ॥ वणमिरजियवस्स सिसुणो पिमरिसियो दं व पाडुवंजस्स। जाएमइमिगम्म व्वस्सइ न वम्मिओ दुरमम्मूई ॥३३॥ निवडीय पिमुणसीगो दुर्गम्मम्मे कुसीलसंसग्गो। सिसुपाऽऽमपरिगयओ रिसीयमामेइ बहुमयं ॥३४॥" वक्कचीरी सो वरसोम्मवसरंमरमणियरो जाओ। इय दुमिय मिओ पेसइ तावसवेसाओ वेसाओ ॥ ३५ ॥ वणकेमिमक्रम मसरेहिं मप्फरे मइ वम्मइ भागेइ। ममरमणमासिंगारसारकहाहिं वेसाहिं ॥ ३६ ॥ व्वभिम विवपमोयामोपमणुवाय वार पत्ताए। सो

मस्स सावमीआउ किंतु नहु दिंति दरिसाव ॥ ३७ ॥ अइमहुरमोयगे दूरवूरओ तरुतलेसु ठाविंति । तेसिं रसन्नू दूरेवि जाइ ताओ स आलवइ ॥ ३८ ॥ भो तावसा किमेसो [1]नवक्खओ तुम्हमगविन्नासो । सुरहि सुकुमारमहुरो तरुमूलफलाणि ताणि तहा ॥ ३९ ॥ भणिय तरुणीहिं तओ तावस ! एसाऽऽसमो अइअसारो । पोयणपुरासमे पुण, उडवाईण वि नवो मग्गो ॥४०॥ परिरभलमलोभेण निव्मरुब्भिन्नविब्भमेहिं च । कयवीसमो भन्नइ, आसमम्हाणमेहि तुम ॥ ४१ ॥ वरतरुफलाइ देमो कुणिमो जेणाऽवरपि ज भणसि । कयसकेओ अवरमि वासरे ताहिं सह चलिओ ॥ ४२ ॥ इताओ सोमाउ रामाउ ताउ झत्ति नट्ठाउ । अढिओ अडवडमाणो अडवीए थेरओ स चिर ॥ ४३ ॥ तमणिक्खतो पत्तो सोयतो आसममि अह ताण । वक्कलचीरी पयम-मालग्गओ भमडिउ[2] लग्गो ॥ ४४ ॥ समतिसछुहाभिभूओ रहिणा एगेण वणनिगुजेसु । परियडमाणो दिट्ठो भणेइ अभिवाद-यामोत्ति ॥ ४५ ॥ भणिओ रहिणा तावसकुमार ! तुह अत्थि कत्थ गतव्व । पोयणपुरासमे ह जामि न जाणामि पुण मग्ग ॥४६॥ तत्थेव गतुकामेण तेण भणिओ स वच्चिमो समग । रहिभज्जमाह सो ताय ! ताय ! तीए तओ भणिय ॥४७॥ को उवयारो एसो, महिलाए मज्झ वल्लह ! कहेसु । तेणुत्त मा कुप्पसु, अदिट्ठइत्थीजणो एसो ॥ ४८ ॥ दिन्नेसु मोयगेसु, भणेइ सो भक्खि-याणि पुव्व पि । पोयणपुरआसमतरुफलाइ हु नायमेयाइ ॥ ४९ ॥ भण वणमिगा किमेह, वाहिज्जते अउव्वरूवा य । स भणइ पोयणआसमपयमि अवरपि वहु नव्व ॥ ५० ॥ पत्तो पोयणपुरपरिसरम्मि भासइ रही रिसिकुमार । सो एस आसमो जस्स दसणे आसि ते आसा ॥५१॥ सवलयमप्पिय किंपि तस्स मोल्ल च तेण भणिय च । किणिऊण पन्नसाल चिट्ठसु त जत्थ पडि-हाइ ॥ ५२ ॥ पइघरमडमाणो सो, अहो किमेयति को दुहल्लेण । वेसाघरे पविट्ठो, तीए अब्भुट्ठिओ तुट्ठो ॥ ५३ ॥ पइमहि-लमाह अभिवादयामि अभिवादयामि ताय ! तुम । परपडिवत्तिपहाण, निवेसिओ विट्ठरे पवरे ॥ ५४ ॥ ममउ हुहुति भणतस्स, काराविय नहुल्लिहण । पट्टसुयाइ पहिराविऊण परिणाविओ भूय ॥ ५५ ॥ गुमगुमिरमहलुहामसद्दसम्मद्दतारताललउ । किज्जइ नव

[1] नवरसो कमो॰ B [2] दए भुल्लो B D ।

असणिकसपेसले पेम्मगुम्मगो ॥ ५६ ॥ इओ य—आसूले वेसाइ तीए कहिओ नियस्स पुत्तो । आयाउ दूरे पत्तो
सो सहिमन्देहिँ ॥ ५७ ॥ तो सोमरायपरमेसरमच्चं सुमित्तु रूवओ । अवसीयाय जम्हे दिसो मिसि कवाइ पसया ॥ ५८ ॥
कणिट्ठ ताओ दया हा अकलन्तीरि वच्छ ! कत्थ तुमं । कहविमईओ निट्ठुरसि न तायपासे न मइ पासे ॥ ५९ ॥ कामिणि
सुहासमय आसारमत्तो सुमेह पियमन्नं । मज्झ मए सिसिरसुयो मणोरहा कस्स रे पुत्त ॥ ६ ॥ पुच्छेसु पेम्मकम्पसवार
रम्मोहम्मेस को नाम । सह परिहारेणं कुमिणी तओ आगय तत्थ ॥ ६१ ॥ विमलइ देव ! तुम्हं न कनिट्ठपयं पेम्मयं तओ
दुम्मिओ । तामसकुमारवीसाहिवस्स पूवय कमाइ ॥ ६२ ॥ मेमिविएण मइ कहियमासि को पहु वच्चमावरिओ । तस्स तए
पम्मना दुहिया दुहिया जइ न होइ ॥ ६३ ॥ विहिवं तमजं सुओ, किंजइ सुमसुमिरमहसमंतो । मिलई विवइ मा होज्ज
मज्झ माण य मीरिवि ॥ ६४ ॥ तो तत्थ पेसियाओ पवमिअमंती ताओ वेसाओ । सो येन सोवि कहिओ, पुरईसो सह
रिसो ताओ ॥ ६५ ॥ आसाए वं न मिसओ से अवलं अणम्म परिगइ । अप्पेइ तेवि पार्मिमि पगारिसो पुम्मपुमान
॥ ६६ ॥ करिकंपरविसओ समं कयोसप पोइपुम्मम । मिपपासाए रजा, पवेसिओ परमरिद्धीए ॥ ६७ ॥ कमाओ कयाओ
कम्माओ वि सकम्मे(सुंके)ह सवयाओ । पेसिय पुरिसे पिओ इव पुत्तं कहावेइ ॥ ६८ ॥ नारसकरिसेसु गएसु सारमोगुम्म
यरि तीए समं । विवइ कयाइ सो सोमराय ताओ कई ताओ ॥६९॥ तत्थ निजमइ नियसायकमम्मराइ महमहियपीडिओ ।
पुव्वर ससन्नं, सह सहिओ आसमे सो वि ॥ ७ ॥ तओ पिओ पायसु पडइ पसरंतपुम्मपप्पारो । सुदीय पाणिणा सो
पसवियं पयसुसइ ॥ ७१ ॥ वक्कलचीरिविओएण सोयमाणस्स तस्स नयणेसु । पीओ आवेसि न स तेण पायवडिये निवं नि-
वइ ॥ ७२ ॥ वक्कलचीरिं पायसु परिणमइ सुसु पराणुकंपस्स । गलिय पीडी आवेत्तयारमरोग सह तस्स ॥ ७३ ॥ तओ
पिवइ सत्थं पसिवसिमेहसंमयायओ । आसीसिडम्म रीमयसिममंके कुणेइ कई ॥ ७४ ॥ सो पहुय पत्तो रज्जंतरे
विक्कमसायर । वेसरियाई समारपमप्पयो ताव जोएइ ॥ ७५ ॥ मरसुरओ य आसमाग्गसरणो मवे सिय निम्मइ । सह

सज्जियपव्वज्जो सन्नो जाओ सुरवरेसु ॥ ७६ ॥ अणुचिण्णं सामन्नं, नीसामन्नं समरेऊण । वेरग्गमग्गमुग्गं, पत्तो निव्वेइ गच्छि-
यमलो ॥ ७७ ॥ तियसेसु तारिसे, भुंजिऊण भोगे अभंगुरा भोगे । विरसेसु तेसु माणुस्सएसु मूढो कह रमामि ॥ ७८ ॥ इय
अणब्भुयसब्भूयभावणा भावणेण हयमोहो । सव्वागकेवलालोयलाभयणो लोयइ तिलोया ॥ ७९ ॥ काउं केवलिमहिमं, आगच्छन्ताण
हत्थममराण । गयग रयणनिमाणेहिं आसि पणुल्लिरवण य ॥ ८० ॥ कणपंचसुद्धिलोयस्स अप्पिय देवगाहि रयहरण । तो पाय-
पणामपरागणा जणा तेऽखिला जाया ॥ ८१ ॥ आगम्म रम्मआमोगगामला सोमरायगो । नरकेवलिस्स पाएसु तस्स पडिगानि
गुणचडिया ॥ ८२ ॥ अह सो सुरकयकंचणकमलासीणो कुणेइ धम्मकहं । सजलजलहरगम्भीरवाणी विलासेण ॥ ८३ ॥
भो भो भव्वसत्ता ! पमायनिद्दाउ निद्दवेऊण । अइरम्म जिणधम्मं, सम्मं मन्नेह उज्जमओ ॥ ८४ ॥ सप्पव कप्परुक्ख, तुच्छो
पत्थेइ पत्थरथल सो । जो पत्ते मणुयत्ते विसयसुहे नेव पीढेइ ॥ ८५ ॥ मग्गाऽपवग्गमंमग्गमणुग्ग न धम्ममासमगि । अणी-
करेइ अइतिक्खदुक्खसंदोलियाहकारि ॥ ८६ ॥ विसएहिं विसतुल्लकाम्मउकल्लेहिं अलमलमिमेहिं । रज्जेण वि किं कज्जं, दुग्गइ-
चारगदुवारेण ॥ ८७ ॥ तडितरल तारुण्णं, काओ अथिरामरोगमपाओ । कल्लोललोलल्लीलालच्छीओ निव मयच्छीओ ॥ ८८ ॥
तो सासयसुहसाहणपहाणहेउम्मि सजसुजोगे । कुणह पसत्त चित्तं, सणइ चित्तं पसाएह ॥ ८९ ॥ पेऊस पिव पाऊण देसण सो-
मरायरागाणो । विरइविहियाणुराया, जाया सम्मत्तथिरचित्ता ॥ ९० ॥ यथकपोरी पत्तो गुरुलच्छी पडिच्छिओ मिच्छा । सह
गवु जिणपासे, केवलीपरिसाए आसीणो ॥ ९१ ॥ रागाग्नि पोयण पाडयेइ वेरग्गमग्गलग्गमणो । सामी वि विहरमाणो परिवाडीए
तहिं पत्तो ॥ ९२ ॥ तियसेहिं समोसरणे असमोसरणे कयम्मि आसीणो । सामी वद्दमाणस्सियाए निमाओ नरयई वि लहुं ॥९३॥
पडिनियपुव्ववेरग्गपायवो देसणाए सामिस्स । सयुय मिमुणि रज्जे निवेस पाए उज्जाहो ॥ ९४ ॥ अइसुम्मासमगीए जिस्सतो
निरयसामिपासम्मि । सिस्सो सिवराइ अणगूणमासि अचिरेण गीयत्थो ॥ ९५ ॥ सह पहुणा रायगिहमि आगओ एगया स
रायरिसी । काउस्सग्गेण ठिओ, अवरमगो पुरपए ॥ ९६ ॥ सेणियराओ सामिस्स पज्जुवासणाए निग्गओ जाव । ता सुमुहदु-

ससुरेहिं, मरनमनरेहिं सो दिट्ठो ॥ १७ ॥ भरावगाणापगओ धम्मिमसुत्तसुणिपनाहगो । सिरिउरीए संपट्ठिओ भव पएस देवेण
॥ १८ ॥ वरमतरुवरुधम्मिसंकमपराकिरणसिरिमिलिमतारो । तपवेमविओ वाओ सरिसम्म पसो त्ति दंसिओ ॥ १९ ॥ भणियं
सुरुरेण नाहो, भमतार कोमि पवमहप्पओ । भपवओ सम्मो वा पाविनाओ वरसमेपस्स ॥ १ ॥ भर सुम्सुरेण भणियं
सुणिमिमिओ सो पसमसंतोत्ति । को मम ममममेभस्स भेइ सिद्धि वयम्मस्स ॥ १ ॥ धम्मिम सुवस्स सिसुओ विमासियं एवम
पओ इमिपा । सुरिवाइ पहुणा वरिसंपि सीमाइपाईहिं ॥ २ ॥ सामममहसापरिपब पसमनंतो स एस पानमई । एवाव मोइ
भाइ, मेवीहिं इमस्स नाममुओ ॥ ३ ॥ संपाविवेम पविवाइमेप वमीकमम्म एवसिरी । संतेसर-पवओ पसाइव वाइ कोमि कहिं
॥ ४ ॥ सुणिमम्म भम्मणिमसरम्म प पार्मि वाइरवमस्स । एरगाले स सिमाइ भपपओ वमगुरुमिमिपं ॥ ५ ॥ रे कुरमवा !
तइ मम पोसिमा तोसिम प एमेहिं । महइ वरिमम पहुणा सुहासिम जं तमा म कमा ॥ ६ ॥ पीमममहीयस्स ! रे,
रहिपाहन ! सुरामि वायरी । इन्हि पि सुमसमओ मिइ जीमसार्व भुं वेमि ॥७॥ भरमपत्तंमिपवं मिरवमाइ पहरमासपामीहिं ।
मिमम वेम सुरेण सुमिसरं मिरो मिभइ ॥ ८ ॥ पमरइ मापमोसो जमइ मए एस कोइ सुपवस्सी । माहइ पओ माहसुस
दंसिसमगमपानवं सुपइ ॥ ९ ॥ समवसरणमि पत्तो, पत्तमिव परमेसरं निसन्नो सो । पुच्छइ वस्स तवस्सिस्स, विम्हयमाइस्स
कम्म गई ॥ ११ ॥ भणियं पहुणा सत्तममहीए तो सो समणिओ पिये । भइ कुमाई इमेण वि ता सुगई होइ केमेइ ॥११॥
भइना मए न सम्मं सुयं मणिस्साइ पुच्छेमि पुच्छिमस्सं । भवसरमवेभसमामो भपमइ पुच्छइ पुणो सामि ॥ १२ ॥ पममइ
पहु मि संपइ सुवस्सी सो करेइ को मम । तो सममूसिमाले पा समस्य भमिमपुमोहो ॥१३॥ मरनाहो विम्हयमामसमासो भइ
एवइ मिसेपामो । मूपं मिसुपं सम्मं न मए इय नाव चिंतेइ ॥ १४ ॥ ताताऽत्थ पहूमि मए, मणियं सुमियं च न मममा
मए । किं पुन सुरेण मनेन सो तया भयिव सुमेवो ॥ १५ ॥ कहिओ पसममपसस्स माहवो सुसुर-सुम्सुराणं च । जा माम-
सेम मारेइ वेपिमो रसमसुमी ॥ १६ ॥ हरिम्म हरि च मरिम्म करि च सुरेण एम सुरं च । ता कममइरममोक्खो

बाहेइ कर सिरक्खस्स ॥ १७ ॥ ता लुचिय कुचिय चिहुरसचय चेव फरिसइ सिर सो। जाणइ जाओ म्हि जई तो मिच्छा-
दुक्कड देइ ॥ १८ ॥ चत्त कलत्तपुत्ताइ, दतिदेसाइ किमियमारद्ध। गिरिसिहरंमि चडतो, पडिओऽह गरुयगड्डाए ॥ १९ ॥ मग्गेसि
मोक्खसोक्ख खले खणेण खणेसि खलु एव। कवलेसि कालकूड, ता नूण जीव! जीयट्ठी ॥ १२० ॥ परिहरिय अप्पकज्ज, पर-
कज्जे उज्जओ म्हि ही जाओ। इय भावणाए सव्वट्ठदेउ इमिणा कय सुकय ॥ २१ ॥ एत्थतरे सुओ दुंदुहीए उद्दामसद्दसम्महो।
किमियति पुच्छिए सेणिएण सामी समाइसइ ॥ २२ ॥ तस्स पसन्नस्स महामुणिस्स सुपसन्नचित्तवित्तिस्स। पवरज्झवसाण विसु-
ज्झमाणभावस्स अणुसमय ॥ २३ ॥ लोयालोयविलोयणलोल केवलमियाणिमुप्पन्न। अमरा आगम्म करिति, तेण पूयामहिममेय
॥ २४ ॥ इय सत्तममहिवद्ध धसिय अवरपि घाइमोहाई। वरकेवली स जाओ, परजणजाणावणाहिं विणा ॥ २५ ॥ अह आह
निवो एय तु केवल कत्थ सामि! वोच्छिज्जा?। पहुणा पुरो निविट्ठो, तो कहिओ विज्जुमालिसुरो ॥ २६ ॥ श्रेणिकः—देवाणवि
किं केवलमत्थि?। जिन –इओ सत्तमे दिणे चविउं जबुनामो होही पुत्तो अयमुसभदत्तस्स ॥ २७ ॥ सीसो सुहम्मपहुणो य,
सोउमेय पणमिउ लग्गो। सहसा अणाढियतियसो, पुच्छइ निवइ किमेय ति? ॥ २८ ॥ आह पहू एयस्सेस पुव्वभवव-
से सेहरो होही। लहुय वोणो वयाइयमाविस्सइ तेण तुट्ठमणो ॥ २९ ॥ चवमाणस्स वि तं विज्जुमालिणो विज्जए जुई। तहिं
सो सिवभवतवप्पभावो त्ति वदिउ निग्गओ निवइ ॥ १३० ॥ इति प्रसन्नचन्द्रराजर्पिकथा ॥

तदेव न जनरक्षनाप्रधानो धर्म, किन्तु चित्तशुद्धिप्रधान इत्युक्तम् ॥ २० ॥ अधुना या पुण्यपापक्षये दक्षा दीक्षेय पारमेश्व-
रीति वचनाच्छैववत्तद्वेषमात्रादेव तुष्येत्त प्रत्याह—

वेसोवि अप्पमाणो, असंजमपएसु वट्टमाणस्स। किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २१ ॥
धम्म रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अह। उम्मग्गेण पडंत, रक्खइ राया जणव्व ॥ २२ ॥

अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहो होइ ॥ २३ ॥

जं जं समयं जीवो आविसइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २४ ॥

धम्मो मएण हुंतो तो नवि सीउण्हवायविज्झडिओ । संवच्छरमणसिओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २५ ॥

जनरञ्जनो वेषोऽपि रजोहरणादिरूपोऽन्यथाभावे धर्माचरणाभावे प्रति निर्गुणिक इत्यर्थः । प्रश्न ? असंयमस्थानेषु वर्तमानस्य पुंसः । उच्यते समर्थस्ते किं परिवर्जितवेषे—उन्मत्तेऽपथ्यं पुरुषं विषं उपभुक्तं च मारयति ? मारयत्येव । एवं साधुवेषमपि पुंसांसम संयमस्थानि संसारमारेण मारयन्ति । न वेषो रक्षतीति भावः ॥२१॥ एवं तावत् धर्माभावममीप्सता व्यवहारविशेषेण विशेष किं वेषेण ? उच्यते—निश्चयनयस्यैवमेतत् वल्कलचीरिभरतादौ व्यभिचारदर्शनात् व्यवहारनयात्तु वेषस्यापि धर्माभावहेतुत्वं भावधर्मस्यानुपकारकत्वात्, धर्मस्य प्रसाधकमिति इति व्यवस्थितं । व्यवहारोऽपि च निश्चयनयवत्प्रमाणमेव । जनविदितस्वामिनिरोधीपुरीनामा तेनैव प्रवृत्ति दर्शनात् । यथा च— जइ जिणमयं पवज्जह, तो मा ववहारनिच्छए मुयह । ववहारनउच्छेए, तित्थुच्छेओ जओऽवस्सं ॥१॥ एवं व्यवहारमुपकरणे वेष इत्याह— धम्मं" गाथा ॥ धर्मं रक्षति वेषमुद्रामवलोक्य लज्जया सत्पुरुषाचारमकर्तव्यतोपरतसंवात् । उन्मार्गप्रवृत्तमनसोऽप्यकार्ये पुरीत्येषा लज्जते वेषेण हेतुभूतेन दीक्षितोऽहमिति मत्वा । दृष्टान्तमाह—यथा जनैरपराधोत्पन्नेन पतन्तं पतन्तं पुरुषं राजा रक्षति । यत उक्तम्— एवमपमत् एवं मानरूपमो जना । पराक्रमेणमसामान्य स्वभावेन चोत्तमा ॥ १ ॥" जनसरो वा सामिकलोकसत्पुरुषो वा तथा वेषोऽपीत्यर्थः ॥ २२ ॥ निश्चयतस्तु—" अप्पा " गाथा ॥ आत्मा यथास्थिता शुभपरिणामोऽशुभपरिणामो वा तमात्मा जानाति न तु परः, परचेतोवृत्तेर्ना दुर्लक्षत्वात् । तत्र आत्मसाक्षिको धर्मः, अध्यात्मसम्यग्विवेकः जीवस्तथा करोति यथात्मना सुखावहमनुष्ठानं भवति किं परप्रत्ययेनेति ॥ २३ ॥ भावस्य शुभाशुभस्वरूपत्वे सति किं भवतीत्याह—" जं जं " गाथा ॥ स्पष्टा । किन्तु जं जं समयं जीवः शुभेनाशुभेन च भावेनावस्थितीति पूर्वार्थः ॥२४॥

ततः शुभ एव भावो विधेयो न गर्वादिदूषित इत्याह—"धम्मो" गाहा ॥ यदि शब्दस्य गम्यमानत्वान्मदेन यदि धर्माऽभविष्य-त्ततोऽपिशब्दस्य सभावनार्थत्वान्न समाऽयत एतद्यदुत शीतोष्णेत्यादि सुगमं विज्ञटितो—ऽयाप्तः ॥ २५ ॥ कथानक तु—

सिरिरिसहपढमपत्थिवकए कया कचणेण सक्केण। नयरी दाहिणभरहे अत्थि अउज्झा अरिअउज्झा ॥१॥ रविससिमणिमयाओ दिणेसु रयणेसु सालभजीओ। जलणजलइदयाल व जत्थ दसति गेहेसु ॥२॥ पयडसुवन्नसुवन्ना, पयाहिणाए सया कयानासा। भरहमहीमहिलाए, मज्झे नाहि व्व जा सहइ ॥३॥ मुणिमणुयवसभउ(व)सभगजायजेट्ठो य गुणगरिट्ठो य। सिरिभरहेसरराया, त पालइ लालइ पयाओ ॥ ४ ॥ वलिमझ्झाए आखडलस्स, खडित्तु चडिमं जइ सो। रज्ज हरेज्ज ता उनसमेज्ज मन्ने भुयाकडू ॥ ५ ॥ गयमयरायासघो, जो लट्ठअणट्ठअणहपयपसरो। भरहस्स तस्स सरहो, लहेइ कह नाम सम(तह)सीसिं ॥६॥ रज्जमवज्जनज्जियमेयस्स कयाइ पालयतस्स। दूओ वद्धावइ धाविऊणमत्थाणमायाओ ॥ ७ ॥ जह देव ! देवदेवस्स, अज्ज पुरपुरिमतालउज्जाणे। पयडियलोयालोओ, सजाओ केवलालोओ ॥८॥ विन्नवइ परो दूओ, आउहसालाए अज्ज पहु ! जाय। दसदिसि पयासरस्सीहिं, झलहलतं अहो चक्क ॥ ९ ॥ भरहो चिंतेइ अहो, जुगव जाया महूसवा दोवि। पढम करेमि केवल—चक्काण कस्स पूयमह ॥ १० ॥ आसासु निरवसेसासु अधयाराई सहरेमाण। मायडमडल पिव पयडपिंडियपयासोह ॥ ११ ॥ सप्पंतदप्पभावारि, वारविणिवारणे कताणगुण। भुवणेक्कचक्कवट्टित्तकारण एयमुभयपि ॥ १२ ॥ ता केवल च चक्कं च दोवि एक्कारिसाइ चक्कस्स। मज्झे होऊण जिण, पूइस्सामो भणियमेत्थ ॥ १३ ॥ पूयाऽवसरे सरिसो, दिट्ठो चक्कस्स त(सि)पि भरहेण। विसमा हु विसयतण्हा, गरुयाण वि कुणइ मइमोह ॥१४॥ अहह अजुत्तमजुत्तं, चिंतियमेय मए हयासेण। परमेसर—चक्काण, तुलाए अद्दोलिय हियय ॥१५॥ सुरकरिखराण मणिकक्कराण कप्पूरपूरपसूणं। कत्थूरिकद्दमाण, न मे विसेसो कओ कोवि ॥ १६ ॥ ससारसागरसमुत्तरणाय पोतस्तातस्तनोत्यतनुसिद्धिसुखप्रकर्षं। चक्र पुन प्रभवदद्भुतभूतभूति—भोगार्प्पणाद्विशति दुर्गतिदावदाहम् ॥ १७ ॥ तस्मादेतदन्यायुक्तम्—तायमि पूइए चक्क पूइय पूयणारिहो ताओ। इयलोइय तु चक्कं परलोयसुहावहो ताओ ॥ १८ ॥ मरुदेविं जोहारिय मणेइ भरहोऽमिव

रिया परि । मह सहुस्स रिद्धिम्मीदरे मन ! निक्खेवेदि ॥ १९ ॥ भरहम्म भमेस्सेवराय माणे निग्गिमाओ भरहो । वेमाविम्माहिमं वरं, विवस्स निष्परिद्धिमिधीए ॥ २ ॥ बनपिक्कपपमयप-जंभरमु नासीवयमयाणहिं । ममरह पीडिमंतो पुत्तो मह बमतम्मिमणे ॥ २१ ॥ तं पुण पुत्तपमकंगकोवसमोगमोगसाममरी । इय वविरपरोमंती देवी भंपम्म वाचाउसि ॥ २२ ॥ भरहो भमेह बम्मो ! सुमरिवि पेम्म पेम्म भमस्सूनं । मक्खिपमायवीयं भुमणे बमस्स बमेव ? ॥ २३ ॥ सोऊम सामिवाणि बमरपरंगिणि संपमसमाणि । वामंवाहयाणहिं, सह गया बम्मणीमी से ॥२४॥ सो मक्खिविमाणममाणाहिं माविरं मम्मणं मिरिक्खेइ । रम्ममविरमम्मव विरिविम वेमममं वमसरवं ॥२५॥ हरिक्षुमसंजसम्भूपमायमयामासपासियवमम्मा । समवरिमपेमममोसपकोमम्ल सियपवं पत्ता ॥२६॥ इय वम्मारिय वरवंवणामए तं इमाऽऽरुसि मिम्माप । परिवमेसेव वि परममेव सिमा मरहवासे ॥ २७ ॥ दिपसेहिं वम्म मकिमम मममेवी इह हिं सम्मसिद्धो वि । भरहो वि मयमं तं वंदिऊम पत्तो बमम्मय ॥ २८ ॥ पुष्फमहूपभंपेण, कुणइ बहुविं पय वमम्मस । गंतुं पत्तो व तिमममीप समगेव तं ठाइ ॥२९॥ पत्तो बमाम वो प बमहारो वविएम संगामो । बउरंगिणीए सेणाए, संगमो मरहबसीवि ॥३ ॥ तं गविमरमपुराम्मह मम्मह वधिम्मपेम्मुमहो । कुम्माहम्मेम मागवाइ तिवसे पवाहेइ ॥३१॥ बमवाने वागमिमिविराम्म सरमासु वविमम्मं । वावंति बोहिम ते बम्मो परमवावि वि ॥ ३२ ॥ मक्खिपमकमपकुंडमकिरीडेमम्मपरोवरी । बसिमसिवेपुबिमाममह सोमपीवं गवेम्म ॥ ३३ ॥ बमिहूवि वविं बाम्बमिरेसमरिमो होई । बहुविम्मह पूवं परिविम्मं वंवि सहुम्म ॥ ३४ ॥ सममोम्मेह विपुं सुसेमसेमाहिम तु पेसेह । सिपुनईमिस्सुमेम सामम्मं बहुमहमं ॥ ३५ ॥ वेयम्ममिरिकुमरं बमरं समइ वेह होमविनं । तिमिसगुहाए बमममामप्पमगं देवमोवरह ॥ ३६ ॥ भमवह तिमिसगुहं सुसेमसेमाहिवो तवो गंतुं । गम्मवमाओ पविसह विमिसंतो बमवमिविसु ॥ ३७ ॥ भागिमीरमममोमे पगुणमवासमंवमकीओ । तो मयहबमिमी पत्तो परमसमंमि ॥ ३८ ॥ मिमिमम मिसमप सह सुरेहिं मविवंसम्माह वेपूम । सुहमिमवंसपमम्मसुमारमोप मह से विमसं ॥ ३९ ॥ समह सुसेमसेमाहिवो वि मम सिपुमिम्मुवं गंतुं । मिवमाममुसमम्मूढे मिमह सबं पंथिमसरेम ॥४ ॥

नमिविनमी ससाहइ, ते घीरय- || ४१ || गगाए सद्धिमुवभुजए भोग वाससहस्स
गगादेविं साहइ त निक्खुडग सुसेणहत्थेण। वाससहस्स गगाए सद्धिमुवभुजए भोग || ४१ ||
णाइ दिति ढोयणीय। गंगाकूलाउ चलति, सेविउ सह नवनिहीओ ||४२|| ओयवइ नट्टमाल खंडगुहाए इमा अहुग्घडइ। खडगुहाए
तह चेव नीइ इह एइ भरहद्धे || ४३ || वासाण सहस्सेहिं, सट्ठीए साहिउ मयलभरह। पत्तो विणीयनयरीए विहियअइ
भूरिभडारो ||४४|| अतेउरचउसट्ठी सहसा वत्तीसमउडनद्धाण। ह्यगयरहाण लक्खा चुलसीई रयणचउदसग ||४५|| छन्नवई कोडीओ,
पाइक्काण तहेव गामाण। इय एवमाइ चक्किस्स तस्स जाया तया रिद्धी ||४६|| बारसवासाइ कओ य सव्वराईहिं रज्जअभिसेओ।
सयण समालितेण सुदरी दुब्बला दिट्ठा || ४७ || आयरिलेहिं ओलुग्गआणणा पयणुजायराएण। भणिया भरहेण किसगि! होसु
गिहिणी अहव वइणी || ४८ || सा पव्वइया भरहो अहन्नया भाउयाण नियदूय। पेसइ इमाणि मह सतियाणि रज्जाणि अप्पि-
णह || ४९ || तेण तहा विन्नत्ते भणति ते एय रज्जसामित्त। भरहस्स कह ताएण अम्ह रयाणि दिन्नाणि || ५० || पहुणा पणा-
मिय चेव, दूय! भरहोवि भुजए रज्ज। जइ न तमप्पइ अम्ह न नयपि तहऽप्पिमो तस्स || ५१ ||

"कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितो विषयिण. कस्यापदोऽस्तगता, स्त्रीभि. कस्य न खण्डित भुवि मन. को नाम राज्ञा प्रिय।
क कालस्य न गोचरान्तरगत· कोऽर्थी गतो गौरवं, को वा दुर्जनवागुरासु पतित क्षेमेण जात· पुमान् || ५२ ||"

इति विमृश्य पुनस्तैरुक्तम्—अहवा पुच्छिस्सामो सामि तस्साएस कुणिस्सामो। गतूण तओ दूएण, चक्किणो साहिय सव्व
|| ५३ || सामी वि विहरमाणो, कयाइ अट्ठावए समोसरिओ। गंतूण पणमिऊण य, त विन्नत्तं कुमारेहिं || ५४ || ता किं
सगामेऊण रक्खिमो वाइ अहव अप्पेमो। रिसहो विसयपिवासाऽपसारणिं देसण कुणइ || ५५ || अलमलमिमेहिं विसएहिं
वच्छय! अणत्थकप्पदुकप्पेहिं। आससारं आसेविएहिं नहु जेहिं पज्जत्ती || ५६ || किं च—

अवालं कारभिरवग्गमुसिवाऽपि विषय विषोनो को भेदस्तथापि न ज्ञातो मत्तममृत्।
मन्त्रा साक्षमात्मकस्मरिपाय मनसा सर्व स्पन्त छेदे हममपरिसेवं प्रसुक्ते ॥ ५७ ॥"

विसस्स विसमाणं च दूरमन्तसमन्तरं। उपभुक्तं विसं हणिद विसया स्मरणादपि ॥ ५८ ॥" तथा—इह परिमावेक्खो एगमाकमगेन खिवो। तुम्मेहि कहिअंतो विसवणिवासा पडिच्छिओ ॥ ५९ ॥ कम्मरिवसहो गिम्हे रमे एगामग्गणो एवो। पहिय कहिय पहुणं, परह मअसन्तेसर ॥ ६ ॥ करवरविधानसम्माणमाणेहिं पचमणिवासो। पावं पाणिपमुहगुम्ममागओ मरकमागम ॥ ६१ ॥ पेम्मक्क क(पिया)इणा इमं, कामोसंतं तओ णिवसो सो। पुरविक्कमाहुमए, मोहुर णिदाए कुम्देव ॥ ६२ ॥ णिव्व सुमिणंमि मउहमहुन-वाणी-कमय-परिमाओ। अम्बई सम्मे सिसिजो वहावि कम्मंमयहूमि ॥ ६३ ॥ नवर पहुमवपूमकविंदु व रेह मिहम्मो। किं सेविं सिमा कोसअ, वा न विचिमकमेहिं गया ॥ ६४ ॥ कमुणिकम मोस्से मए विस्समम्म वासमि। भिमिमेहिं मे मविस्सा, सिवो अवणिंदुनुन्मेहिं ॥ ६५ ॥ पेमाणिम मअअकं, सिपेमरो पमरेड सिपेहिं। परोगो परोगेण दुविणं होइ पम्माइओ ॥ ६६ ॥ सम्मप्पम्मु वि ठेसु, न मणे सम्मए विसइ हो बणी। विवइ समर-सिसम, मअवि कविसोऽप्ति माहुणी ॥ ६७ ॥ पेसइ वस्स वि दूरं सन्ते च विपमसानं च सिस्सविदं। पत्तो पअमपुण्णं अमिहो भाइ माहुपसि ॥ ६८ ॥ तह मेहुमाणस मअविसो मिह सम्मावगस्ममविहि। तुह साविसेस करेमि वेहुगो मवहविदं ॥ ६९ ॥

मधु—किमहुत्तं वा मम्मइ को ठस्स असम्हो तवं पसादेमि। दूत—सिद्धं सव्वंपि परं, पविसइ सामए मो मय ॥ ७० ॥
मधु—तमवं पवेसइस्सं पेक्खिय पेसदुवीणिमणेण। दूत—आणाइक्कमकारी कोवे वि तओ तं म पविसेइ ॥ ७१ ॥
मधु—समवं सावित सम्पेमि दूत—सामि! साहहि तव अप्पार्थ। अवकमसम्हामिस्स सासणं करसि जो म सिरे ॥ ७२ ॥

वाहु—रे रे विमुक्कमज्जाय दूय ! दुज्जाय ! एवमुल्लवसि । भेसिय भाऊण पञ्चाविया जओ तो सगव्वो सो ॥ ७३ ॥

एगवणुप्पन्नाणवि किंकारिसाहारसाहिणं गरुओ । अत्थि विसेसो ता ताणमपि गणणाए किं गणइ ॥ ७४ ॥ एउ स जुज्झउ फेडेमि जेण अइतिव्वगव्वसव्वस्स । वलिउ मलिउं भाऊण, त च साहेमि परिहस ॥ ७५ ॥ पडिहारेण दूओ, निच्छूढो सो गले गहेऊण । गतूण तेण वुत्तो, वुत्तत्तो एस भरहस्स ॥ ७६ ॥ पसरिय असरिसरोसग्गिउग्गउग्गमिरभिउडिभालयलो । दावइ पयाण ढक्क, चक्की अक्कतअरिचक्को ॥ ७७ ॥ सेगा समग्गसामग्गिसगओ निग्गओ गओ सीम । तो बाहुबली सम्मुहमुवागओ गरुयरोसेण ॥ ७८ ॥ लग्ग अग्गबलाण, जुज्झ विज्झइ सारहिं सरचक्क । खडइ खग्गो खग्गं, कुंतो कुंतं च कट्टेइ ॥ ७९ ॥ तरलसतेयतुरगमति क्खखुरक्खित्तधूलिधूसरय । कुंताहयकुंजररुहिरनिज्झरुज्जालजालिल्ल ॥ ८० ॥ अगेय[1] थाणसथाण-डज्झमाणप्पमाणपाणिगण । परिभमिरभूरिभीयंगिवग्गवग्गंतहलबोल ॥ ८१ ॥ हरिकरिकायरवीराइ, [2]भूरिसत्ताइ सहरेमाण । गुरुनगरपलीवणय व, भीसण त रण जायं ॥ ८२ ॥ इय असगंजसमिक्खिय, वाहुबली पजरेइ अधुमिम । किं निरवराहलोयक्खएण अगमि[3] जुज्झामो ॥ ८३ ॥ भणिओ भरहेणेवपि होउ किमइ तहा नहु समत्थो । सक्कोवि जस्स सकइ, रणमि का तस्स तइ गणणा ॥ ८४ ॥

तओ य—चिहुरचक्खुहिं अइजडाजूडसव्वगु-भूहरिकरिरहि, फडिकडिल्ल नीसल्लु[5] सज्जहि, हरिचदणु तिलउ करि वाहुदंडसुपयंडु पुज्जहिं । रणरगगणिउयरहिं पुरिससीह ते दोवि, एत्थतरि तेलुक्कु सउ मिलिउ न थक्कउ कोवि ॥ ८५ ॥

मिलिय नहयलि देव जोयति विप्फारियलोयणिहिं, चडियचारुचिंधिहिं विमाणिहिं, विज्जाहरु पत्त पुणु तहय जक्खरक्खअक्खलियजाणिहि । लोगपाल कउतिगि मिलिय चाउद्दिसिहिं घियारि, निच्छउ परिउ न सक्कहिं पसु जउ कसु पुणु हारि ॥ ८६ ॥

---

[1] ण B । [2] भूरिखाइ D । [3] गि D । गिगि B । [5] ज्ज D ।

मुरिंदु सज्जिउ पढम परिवेढु तहिं तोरिं वि मरिंमणिहिं, लम्बमाणुविहिं मुत्तिपहिं, पुणु पुष्फउ पम्परिय बरकविलमणु ससरकमियरि। वाहिरि सम्मई वेदु किउ मम्मकापेरमयरिं, पुरिसमीह दे मक्खि पुव मिरहिं 'मुरहिं मिहरहिं ॥ ८७ ॥

मह रमंगपि दोविं अमाति मम्पोयरि मयरिय, सीहणओ मीसंडु मेहरिं, पव्वरद सो वर्पिं भेय हुंगहुंगर 'मिरोस्हिं। रिम्मउरसीयेवरीरि दुवारिं पाढहिं वंप पुप्पहिं मेहिंमणस किय कपरम मस निम्मंव ॥ ८८ ॥

रिदिंवितुरिं वेरिपरे मिवासव मुपिक्तापवि रिम्मणामि तुपसेम मुप्पहिं, पाहुम्मसुक्तमसिमपहुवंगपमि न 'सुरहिं। मिउत्पुरिरिं वहिंवरिं वेतारि परेसि, सम्पसपि विम्पइ मयु यव तमु मुतिहिं गहेंति ॥ ८९ ॥

पवि संकिय विति विवेय माहुवमि अविवक्ति, पवकपरि वि पपु वेसाइ, हवं मुम्मतु पापु जिय कम्मु एम्मु सम्मंतु वेसइ। पमप्पइ मारण एवमयु पापि पमारि वि वमहु, वारि रे बय! म वारि पविसि मम्मुपि हुहुपि वि मुमहु ॥९० ॥

पविह पामिरिं पम्म कमसु मं विम्मु पुंजिरि पविह, 'महकसकम ममममपमिरि म्मारि बहु बवमाइ वं कुरिमा म्मस सिमाविरिं। एवरि मारउ माम्मवि वेरिउ वियव मसमकु, एव विवेविदु पमपम मुपमु परवडे पमकु ॥ ९१ ॥

मह दुवंतर तत्वमपर मिवंपर जमिपमसीमिरवेवपस्वपमि एवंवर, एमाएम मुहमुहमेवकसमपिवार विमाउ। सो पातु पविपमपकि निवरह तुंपि म पार, मपरह बहु म भेय बारि मिवर्वपह सह वार ॥ ९२ ॥

पविओ तोरिमिरिं वरपविमवपु एमविम्पुपमसिमिय सहु समवमवमपमवमपापरि अमुवमपेवमु बारि वपर वहु मापरि पतारहिं। विमार हुएं पविम हुं मपु सपु समतेंदु, जविम्मवत्सम मगसमर पवारि मुमम पंडु ॥ ९३ ॥

---

१ सुवरी B। २ मिरोमिरि D। ४ हु D। ५ पु D।

अहह चितिउ दुट्ठु अपइट्ठु सो भरहु सो वाहुवलि एक्कमुगह वे दल इमेरिस, नियबंधवि मारियइ जास रिद्धि मा होउ
तारिस । बलधणजीवियजोव्वणह गारवु कोइ करेइ, सउ घरि घल्लिय(उ) ससउ जिम्व जंतु न वत्त कहेइ ॥ ९४ ॥
मज्झ भाउय ते महाभाग विहिऊणउ एक्कु सउ विसय जेहिं विसतुल्ल दिट्ठा, इह परभवतावकर कडुविवाग मुहमित्तमिट्ठा ।
तायह पायपसाइ परु सज्जिउ सजमरज्जु, उप्पाडिवि त नाणवरु किउ परलोयह कज्जु ॥ ९५ ॥
अहह भरहु विमुक्कमज्जाउ अइलपडु लुद्धमणु भरहखेत्तु छक्खडु दउइ, धणु लुपइ वप्पहइ जलणु जेव नहु किंपि छड्डइ ।
लेउतमुक्खिउ तक्खसिल मइ मुक्कउ मणि रोसु, [1]एव हि तायह पायगइ गउ चित्तह खरोसु ॥ ९६ ॥
ताव मुक्कउ चक्कु सहु कोवि आभरण–आउह–कुसुम, काइ कज्जु किर रज्ज रद्धिहिं, उप्पाडइ केस सिरि वज्जसारनियपंचमु-
ट्ठिहिं । सजमलिंगु असगुभणि अप्पइ सासणदेवि, तो नवमुणिं पणमइ भरहु सहु राणिहिं आवेवि ॥ ९७ ॥
तुह कुलक्कमु एहु निव्वूढुह उजित्तउ विहिपरिहिं पइ तुहगि को गव्वु नाडइ, नियवसह सिरिकलसु अवरु कउणु वाडइ-
सिराडइ । पइ परि तिहुअण धवलहरु धवलिउ नियजसवाइ, इअ सुथुणतउ चक्कइ वेयालिउ पडिहाइ ॥ ९८ ॥
अह सुचिंतइ मुणि महानाहु परमेसरपासि हउ जाउ किंतु वरनाणहीणउ, मह केवलिनघु स विज्जतु तेण लज्जउ सुदीणउ ।
ता उप्पाडउ ताव लहु एत्थु जि केवलनाणु, अह परमेसरसम्मुहउ हउ करेसु पत्थाणु ॥ ९९ ॥
करिवि एरिसु [3]चित्तु निक्कपु पालविय पाणिजुगु नासअग्गसलग्गलोयणु, मणि निम्मउ थभु जिव काउसग्गु कप्पेइ
सोहणु । अच्छइ सवच्छरु सुथिरु मुणिवरु निरसणपाणु, परमप्पय सपयपउणु निश्चलु झायइ झाणु ॥ १०० ॥

---

[1] एय D । [2] चा । [3] अप्पु B D ।

नयुरि पुरिसाइं विजय क्सम्मु वं विवर भवभय सम भवर सम्कीरि संविर एह (वि) केमसु बार हुई जेम पार पस्यमर निम्मिय। सो दीसइ पवसतु विवि सई विजय संरंमु, सो एहु केवलन्यपि सई सो बसम्मु आरंमु ॥ १०१ ॥

पवर कुसमु सीमोमंधि विवि समवरि समसयन देवपीम्मावंपि कुमारु, निसि दीहर सयु मुणिहिं पुम्मपरस सम्मंगु सामन्य। पसि पिरिवह पेसन्न पुन्न पेमपर सुसंगु, सो वाहिम्मवइ हिमसमर सुमसस सर्पंतु ॥ १०२ ॥

तर निसुंमइ निममासंसु मायम्मिय समपह तरपि विमय लेम सामरु, समामर सुपमम अगवितीय महविस सहामइ। तापि समस्सी म सो पवम विरसमसमसमु पगरिहिं निसुहरियम वोपइ केमममसु ॥ १ ३ ॥

पडरि पावस पीरमीरिय ससरिमुसमसमवरि मेह पीसामीर गज्जरि, समवेहि-वरपसविरि ठरम मुणिहि मसु भंग मज्जरि। वरि गोसविय सामिमर पहुसम्सरसमीए, सापु सार मणि पाहुसति भवसु समीसु सपीसु ॥ १ ४ ॥

रिसु वाविमि सुसु पसार पडुमर विपि करि निपमसूसर वेमसुंदरि संपसो सार सरि मसपि मणि मणसंसुंदरि। सापि गमेसंसीमि मिस वसि वमि सुणिहिं गमिसहु, समसमसमइर पसुसवि समपि करि सो विरहु ॥ १ ५ ॥

सस(वि)पि पविपि सामिसंसिसु मेसुम! सपम मनिप होइ समु मु हमि पाविपह, सो विपह हमि करि मासु सार समर कि समपव। हुं हुं सपनिर पम मई निपसुम्मइ सम्पीरि, परिमु वविर सहसिमु सपु पविपई मामगाइंरि ॥ १०६ ॥

भमर मुसर विम सवंमस मह मासय सर मि समु समनि सिहि गुरुसुमिरि मेसु विपरिसिसम पंसिसमसमसमविय वेमसविसिमु। सुसु सामि सिवपविर एं पसिसु वे गुमसमि इस समरमिपर पाह पपि सार सुमेमसन्यपि ॥ १ ७ ॥

मिसिय समपमि विमसगमसमि वारिंदि दुंदुरि महरसुपिमसुमसमसुहि मेहरि, मपवेमसि वेम सह गमपहरिसमरमरिय मसरि। सो सुपि सपु समोसरपि पसमपविम वेर, वेमपि परिसह सार करि सासमगंतु सोत ॥ १ ८ ॥

कुत पुनर्बाहुबलिनो ज्ञानमत्रैवोत्पाद्य स्वामिपार्श्वे गमिष्यामीति स्वमत्या कृतकायोत्सर्गस्य क्लिश्यतोऽपि ज्ञानं नोत्पन्नमित्याह—

नियगमइविगप्पिय चिंतिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण। कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरुअणुवएसेण ॥ २६ ॥

थद्धो निरुवयारी अविणीओ गव्विओ निरुवमाणो। साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २७ ॥

थोवेणवि सप्पुरिसा सणंकुमार व्व केइ बुज्झंति। देहे खणपरिहाणी, जं किर देवेहिं से कहियं ॥ २८ ॥

'निजकमत्या' गुरूपदेशाऽभावादात्मीयबुद्ध्या विकल्पितचिन्तिते स्थूलसूक्ष्मालोचने यस्य स तथा तेन 'स्वच्छन्दबुद्धिचरितेन'— स्वतन्त्रमतिचेष्टितेन अत एव गुरोरनुपदेशेन-उपदेशाऽनर्हेण शिष्येण कुत परत्र हित क्रियते, न कथञ्चिदुपायाऽभावात् ॥ २६ ॥ तथा 'थद्धो' गाहा 'स्तब्धो'-गर्व्वोद्धुरकन्धर । 'निरुपकारी'-आसन्नानामुपकारपराङ्मुखत्वात्कृतघ्न । 'अविनीतो'-ऽभ्युत्थानादिष्वपि प्रमादवान्। 'गर्व्वित '-स्वगुणोत्सेकवान्। 'निरवनाम '-प्रणामार्हेष्वप्यप्रणमन्। शेष स्पष्टम् ॥२७॥ ... गुरुकर्मता ... नोऽपि न बुध्यते, महात्मा स्वल्पेनापि बुध्यते इत्याह—' थेवेणवि ' गाहा, एतदर्थ. कथानकादवगन्तव्यस्तच्चेद संक्षेपात्—

कुरुजगले जणवए, दुहा सुवत्थीहिं सुलमत्थि पुर। हत्थिणउरं ति केलीकमल व महीमहेल्लाए ॥ १ ॥ ... ... ..., असावया सावया सहति जहिं। रमणीओ नरमणीओ, अणगव्वा सुभगा ॥ २ ॥ ... सिरिवीससेण राया ... ... णजसो। पालइ पयडपयावो, सच्छेरी अगगहिसी से ॥ ३ ॥ तीसे चउदससुमिणेहिं, सज्जो विन्नुओ सुओ जाओ। ... ... पत्तो। ... सणकुमारोत्ति, तस्स नामूसवो निहिओ ॥ ४ ॥ उवचियकलाकलावो, कालेण कन्ननिव्विन्नो पत्तो। ... ... ॥ ५ ॥ वागुरावग्गु तारुन्न ॥ ५ ॥ अणवज्जाण विन्नाण, ताण मणिदप्पणो सुरूवस्स। सो ... ... ... ॥ ६ ॥ ... हरिवल्लहाए आनाससाहिणो बाहुणो तहा होति। ... तरुणीमाराण सारहो सो ॥ ७ ॥ ... ... ... न ... । निव्वाहमेइ सुकइस्स। जो पच्चेइ समत्तेउमेयं ... ॥ ८ ॥ ... ... ... ...

मयणसमाहाणत्थं च कुसुमित्तम्मं च सोत्तं च ॥ १० ॥ नवकमलेरुहकमलाए, तस्स मकरन्दरो वि स वरगओ। कुसुमसरो सको वा,
सयलं वि पाविय एवं ॥ १  ॥ स कयाइ माहवमासम्मि पत्तसु समत्तो संतो। वाहेण वाहिणवीइ कणयमय रहवरेणं ॥११॥
मलयससरीरसुमणए मीमो मिलियाई कयाओ। कुविसमेहाणीओ पेमइ मकरेण रहवेण ॥ १२ ॥ पत्तरिउ कुरगाओ परमप-
रिससमज्जिओ निस्सारंमो। परिममइ कुमारो वसमसपाऽऽसाए सम्मत्तो ॥ १३ ॥ कुमरोरयम्मसारं, परमविसयवा महारिसंजोगं।
वसुयरसमप्पिय य माणसे मिच्छ कुमाय ॥ १४ ॥ मणिरयणकुसुमसमागेहिं मोयकमोयमहुरेहिं। समयविहिं कुमारकोमिग
मामरवसरस्स वा ॥ १५ ॥ पत्तवरीग समाकसंगवं सारसोहसंचवियं। विसयवसस्स य रेहइ, नवीमरयमरकियमिरइ ॥१६॥
परमपमोयत्थं मणिमय पासाय दीवपाणीयं। पत्तो तीरे वरतरुसंमि कयाए वीसमइ ॥ १७ ॥ वायऽव्वइ घणघर, कयविहो
पुव्ववेरिय पाय। फासियरसेण वरसेण संगारेणं समारुढो ॥ १८ ॥ जाहिपासे निम्मासइ, कुमर दिसासे महरवरयसके।
सिरवरि गिरिं मुत्तं, पूरए मइसुम्मारेहिं ॥ १९ ॥ कुमरेण एवं पहरिय जमरयकुसंवरो कमो स वमो। जयमाराही मट्ठो
य मओ नमरोसि ममत्त ॥ २  ॥ इय सवियमो तेण पवरकुसमो जयगुरुकुसमओ य। पवरजमरेहिं कुम गमो महाओ
सुसुमबुद्धी ॥ २१ ॥ सिरिमसुहेणपरिमिवपुरिय विपसंगमाऽमिवामय। पवमिय विमाणमारोवेऊणं मीमो स पपरेहिं ॥ २२ ॥

तत्थ पढियं वेयालिएण—

" कुसुमसमिणी मूर्छिमेया मयि कुसुमसिणी कुसुमसमाइं कमणी रमणिय पमुहमपरणियं।
मकुमि कुसुमय होठे मया मयरय य रेयणो मवयि कुसुमो वेसम्मारे व पव वयासकुसा ॥ २३ ॥"

मल्लासगाओ निसमायुणावि जम्मुमिओ स मुसेण। पवरपविसिसिपुण्णं पत्ताये पविसिओ प इमं ॥ २४ ॥ मह मधु कम-
गओ वसि वरो मणिमयमिय कुमिया। कुमकुमसुरो मणिवरमयककविसरेण विवेण ॥ २५ ॥ होही सणंकुमारो चक्की स

दिन्नाओ कन्नाओ ॥ २६ ॥ वयमतिहीता तुब्भे, पमाणमेय जपिए कुमा-
चउत्थओ थिरत्थामो । अइसुहियाओ होहिंति, तस्स दिन्नाओ कन्नाओ ॥ २७ ॥ भणिय च भाणुणा अशिमालिणा वेरकारण कहिय । तुह जम्मन्तस्स
रेण । पढम पाणिग्गहण, विहिय सह खयरकन्नाहिं ॥ २७ ॥ भणिय च भाणुणा अशिमालिणा वेरकारण कहिय । तुह जम्मन्तस्स
रेण । पढम पाणिग्गहण, विहिय सह खयरकन्नाहिं ॥ २८ ॥ कचणपुरमि नयरे अहेसि विक्कमजसो त्ति नरनाहो । पचसयंतेउरतरुणिवम्महो वम्महो
य सखेवओ तओ सुणसु साहेमि ॥ २८ ॥ कचणपुरमि नयरे अहेसि विक्कमजसो त्ति नरनाहो । पचसयंतेउरतरुणिवम्महो वम्महो
व सय ॥ २९ ॥ तत्थेव सत्थवाहो, अहेसि नामेण नागदत्तो त्ति । विण्हुसिरी से भज्जा, रइरभारूयगव्वहरी ॥ ३० ॥ विक्क-
मजसेण दट्ठूण, कहवि अतेउरंमि सा खित्ता । अइगरुयविरहदाहो, गहिलीहूओ स सत्थाहो ॥ ३१ ॥ विण्हुसिरीमोहेण, मूलि-
याए विक्कमजसो वस नीओ । परिहरियावरकज्जो, त चिय अन्नहइ नियच्छतो ॥ ३२ ॥ ईसा विसाय विसदूमियाहिं, अवराहिं
सा विसेण हया । सत्थाहो विव रायावि, सुन्नवुन्नो परुन्नो सो ॥ ३३ ॥ देइ न देह दहिउं, मतीहिं मतिऊण धीयदिणे । निन-
चक्खु वचेऊण, छड्डिय मडयमडवीए ॥ ३४ ॥ निवई तमपेच्छतो अणिच्छियपाणाऽसणो धुम मरिही । इय अडवीए नीओ, निवइ
मडयस्स तमवत्थ ॥ ३५ ॥ गिद्धेहिं अद्धखद्धा, अताली हत्थमच्छिया अच्छी । रसपिसियपूयकीकस-वसाइ सुलसुलिर किमिजाल
॥ ३६ ॥ अइदुरहिगधफुट्टत-घाणघोरागिई महीनाहो । वेरग्गमग्गलग्गो, चिंतेउमिम समारद्धो ॥ ३७ ॥ कुललग्गामन्नाया, जसो
य मुक्का मए कए जस्स । तस्स वि देहस्स दसेयमेरिसी आसइ मूढोम्हि ॥ ३८ ॥

कुभ-कुद-अरविद-इदु, इदीवर-अमर, दिज्जता उवमाण जाइ, तसु अगइ इय गइ ॥
गधसारु घणसारु, अगुरु कत्थूरी कुकुमु, किं न दिन्नु एयस्सु, अहह पुण गधु महाऽगधु ॥ ३९ ॥

इय कुहियकडेवर कारणिण, किन्न किन्न मई कप्पियउ । धलि किज्जउ दुम्मइ एह, मइ सुरगग अप्पा अप्पियउ ॥ ४० ॥
तणमिव सव्व रज्जाइ वज्जिउ सुव्वयायरियपासे । महीनाहो निक्खतो तवेइ तिव्व तवोकम्म ॥ ४१ ॥ मरिउ सणकुमारे, कप्पे
देवो महिड्ढिओ जाओ । रयणउरे सेट्ठिसुओ, जिणधम्मो नाम तत्तो वि ॥ ४२ ॥ सावगधम्म सम्म, परिपालइ मुणि-निग्गि-

यूस्सरे । पत्तो य मगहवो अहम्मासेन मरिऊण ॥ ४३ ॥ विरियसु पिरं ममिरूप्पमम्मिसप्पमो चि बंभबो जाओ । सीहस्स पुरे पविसमिरूप्प चत्तो विसंसिपर्व ॥ ४४ ॥ इगदुगतिगपक्खेवाइ, मासक्खमणाई करिय पारेइ । अह रायगउरे पत्तो, दरिया इगपक्खमरचरे ॥ ४५ ॥ पमासपारणे पहुआ स आमंतिओ गओ गेहं । जइ पत्तो जिमपम्मो चि तत्थ केण्णाचि पम्मेण ॥ ४६ ॥ मगपेय पुण्णपेयपुपेहमो चार्यम्मचोदेन । ते सुहूले पमिर्य निय ! मुंभे दं कयरयाए ॥ ४७ ॥ एयस्स ऐसि भावे, जइ जिमपम्मस्स पुण्णि पाडुम्मे । पम्मेयंपि निपेजं महगमं चस्स सुमिऊण ॥ ४८ ॥ आइयवा परिभाव गोटि पार्म्मि भुंजइ य पुत्तो । पेगुी नि पुण्णपुण्ण पर्व 'चि सम्मं ताइए एवं ॥ ४९ ॥ गुरुपयसुस्सिरर्थ पार्ल बधम्मसयोभिपर्वि पर्व । तो गेह गेमूर्य सयले सम्मं समाचिऊ ॥ ५० ॥ जिणमुनिपाहे संपे, चरमिम्मिं पूइऊण पामेयं । गिरिकंदराए गण्डइ, अणघइ भ्पम्पसमो सो ॥ ५१ ॥ पुण्णमिमुहो परस्स पमेय सियासु विगुपि अमासु । पिसियाइचि पचिरा-गोमाउ पमुहपमीय त्ता पंचि ॥ ५२ ॥ सियरपमोपो पुण्णि (मि) चाइपसाइ पीइमुम्मारं सुहपे । दुरि मासहिं पोहम्मसाम्मिओ सो दरी जाओ ॥ ५३ ॥ मपनोचि कयपिमोगिकम्मपेयेपम्मो चरी आसि । पेमराइ पुण्णमि भवे, पुरिसं अह परमूर्य ॥ ५४ ॥ जरिसूर्य मकरियो, मन्निमाइ चपिल्ल स पपेम । जविरूपमममरसामी चि माविपसी पुमे जाओ ॥ ५५ ॥ पो मपमभमरे विरियदु सिरिऊण चिरमाई । जरिसमरो पंजामो, मम्मामपेयेन केणाचि ॥ ५६ ॥ इय पुप्पमपम्मासोन, तेम पुर पचिर्य इमं चेरं । तो भवम येम सप, सपचि कमाचि पमाचि ॥ ५७ ॥ चत्ता—" जिपाय चेरं समाणे मरोऽस्ते य पपारसे । मापिम्णोइपिये पत्ते, देव्ये येऽभिमापम्म ॥ ५८ ॥ "

जिय—" पोऽड दो हेममपो समसिमसुमा पेऽरपा के समाया चि मिपे पोऽममुपाक पमपिइ गु पिम्मभिसपी हेमपम्मइ ।
म्पपसो पोऽमुपम मचिइपपमपोयं चि गु मे म्पपिल्पे मर्पसिमपमपरिपमनरो मोपहस्स मयम्ति ॥ ५९ ॥ "

तत'—अरिजयसज्ञा पहरणविज्जा विज्जाहरेण से दिन्ना। कंताहिं ताहिं अट्ठहिं, सह निसि अह सुयइ वासगिहे ॥ ६० ॥ जाव पभाए पडिबोहमेइ पेक्खेइ ताव अप्पाण। गिरिगुरुगहणे पुहईए पडियमइकक्करालाए ॥ ६१ ॥ चिंतइ किमिदयाल एय कताउ ताउ कहिमट्ठु। दिसति फेरवीओ फेक्कारतीउ पासमि ॥६२॥ सुरवेरिणो भविस्सइ, विलसियमेयं तहा पहरियस्स। भयभूरिमगुरस्स वि, वेराउ छल नियतस्स ॥ ६३ ॥ वियरइ जाव असको, गिरिसिहरे सेहर व धवलहर। तो पेक्खइ लक्खइ इदयालमेयपि किपि भवे ॥ ६४ ॥ रमणीए रुयंतीए, धवलहरोवरि सुणेइ करुणसर। सत्तमतलंमि पत्तो, सुणइ विसेस पलावस्स ॥ ६५ ॥ कुरुकुलगयणगणमडणेक्कससहरसणकुमार ! तुम। इह मह भवे न नाहो, जाओ ता परभवे होज्जा ॥ ६६ ॥ पयडीहोउं दिन्ना-सणेण तेणेयमेवमुल्लविया। का सुयणु! तसि त क, कुमारमीहसि ? दसा किमिमा ? ॥ ६७ ॥ वुत्त तीए सुपुरिस ! सपइ मह दिवसनाह तइ दिट्ठे। मणकमल वियसइ, मउलियपि भण हेउणा केण ॥ ६८ ॥ खिइतिलए अरिमद्दणनिवस्स धूया अह सुन-दत्ति। त सुणिय कुरु कुमार, महासि आसा पिय काउ ॥६९॥ मायापियरेहिं वि, तस्स चेव दिन्नाहमुदगदाणेण। अकयविवाहच्चिय वज्जवेगखयरेण अवहरिया ॥ ७० ॥ इह सिहरिसिहरसेहर–सारिच्छे खणविउव्विए तुगे'। पासाए मुक्काह, सोयती दिवसरयणीसु ॥ ७१ ॥ एत्थतरमि पत्तो, पिक्खइ खयरो तहट्ठिय कुमर। उक्खवियतिक्खकोवो, खमडले खिप्पमुप्पयइ ॥ ७२ ॥ हाहारवमुहल-मुही धसत्ति धरणीए निवडिया सुमुही। विलवइ सुपुरिसखयका–रिणी कह ही अह जाया ॥७३॥ बहुप्पहारनिद्दट्ठुरमुट्ठिपहारेण त हणेऊण। अक्खयकाओ कुमारो, पुरो सुनदाए आयाओ ॥ ७४ ॥ आसासिया निरासा, सणकुमारेण सा सवुत्तंत। कहि-ऊण परिणीया, गधव्वविवाहसोहाए ॥ ७५ ॥ चिहुरवरहिं दलदीहवयणु निहणइ ससिपव्वण। नयण मयणभडभल्लि–गडमडलमणि-दप्पण ॥ ७६ ॥ भुयमुणालवेल्लहलपाणि अरविंदसहोदर। घणथणकंचणकलस–ऊरुनवरभखभवर ॥ ७७ ॥ तसु रुवरेहसोहग्गकल स फइवत्रण किर फवणु। जा कुरुकुमार चक्काहिवइ होसइ निरु रमणीरयणु ॥ ७८ ॥ तह दसणे वि निव्वण उव्वण उज्जिंभ-माणपिम्मगुणो। सह तीए कीलतो वसइ विसको स तत्थेव ॥ ७९ ॥ खणमेत्तेण सझावलित्ति भइणीवि वज्जवेगस्स। तत्थागया

सिरिकिरइ रोमीपसिवे मयं पसु ॥ ८० ॥ केणवि छुरेणिमिव्व माय पमाइमत्ति कयखेवा। चिन्तए वाव मारेयमुगमुय सुम
रिये वाव ॥ ८१ ॥ मेमिणिवस्स वयणं, मग्गय वावाणो वरो होही। सहरिसहियय होऊण, सा वि विवाहमीरेइ ॥ ८२ ॥
तंपि सुलंपज्जुवाय, मायनिहुसु निहुरो कुमारो। परिवेइ पम्यमइ, सा वि मणुगो सत्ति पयत्ति ॥ ८३ ॥ समुरेहिं चंदवेगेण,
मानुवेगेण एगय जया। सह सामरयेहिं, पहुमिया कुमरपासंमि ॥ ८४ ॥ हरिवंसपभुवेगेहिं तेहिं कहियं इमं कुमारस्स।
वह मवरोगजसो आलियनिवपुत्तवेवं ॥ ८५ ॥ निवसमसामन्नीए आगच्छइ मच्छरेण मणिरेणं। तं पहरेउं अमणिहिं,
तेण ववमेसा पहुविया ॥ ८६ ॥ वावमि इत्थवि केव इति पहुपासमणुवासाए। पुव्वंतरे वसतं निसुणो ईसाय मूररको ॥८७॥
मणु केव चंडवेगोप, मणुवेगो य रोमि रोमचो। कुमरसमीवे पत्ता इहेरे असणिवेगेण ॥ ८८ ॥ ममरिसवसओ ईसम
असणिवेगस्स गयणममोव। मरिरियमंडरम्मे निसुणो सेवाय हक्करोको ॥ ८९ ॥ कुमरेण गयणमणोप, केव गंमूण संमुहं वस्स।
सच्चवरपरिवारेणं पारद्धो समरवावारो ॥ ९० ॥ पत्तमेण चंडवेगो य मणुवेगो य असणिवेगेण। सह पहरेउ पसिकु परि
यरं पावियं रोमि ॥ ९१ ॥ कुमरेण समं कोगसिंगारे असणिवेगमूवेण। सुबं महारोगलं, कुमरो वारेइ गयवेहिं ॥ ९२ ॥ व
वोलवं वरममसोवं सिवरेण पडिहनेइ। सिहरेइ वायसत्तं पत्तेण एयविरमसत्तेण ॥ ९३ ॥ कमरसमरगो एगो छिन्नो अवो
पुरीमरे निसुणो। साहिम्म किसमरो वसो कमो सो असणिवेगो ॥ ९४ ॥ वरुणा वो ईमोहिरमेण निसुणणे कमरंमो।
कुमरेण असमाणो, कमो कमंवो य समवंतो ॥ ९५ ॥ [1]पयसिरी बीमेसा, संकय सासवे कुमारंमि। असिमवइ कुमरमेयस्स
वसरवमो समवर्मे वि ॥ ९६ ॥ वरहिं चंडवेगावएहिं सह पह तो स वेगहरो। मिवसविकेयमोरे असेमि ठिय सठमेसु
॥ ९७ ॥ छवणिसिसुवभवमरण-सोहसम्मि करिव समवावे। मिवावरेमि रयरा वेयरपमउमिसेयं से ॥ ९८ ॥ वह सहिय
वेयसरे सुविपसमे वव कुमर वंसिवे। कमवसरेव कवाह, चंडवेगेव सिवसो ॥ ९९ ॥ पहु! कसिरेव मुणिय्व अमिमाणिवा

१ क्षत्र ३ D।

पाणिपीडणाणुग्गहेण जम्मो इमासिं सहलत्तं । तुह पाणिपीडणाणुग्गहेण जम्मो इमासिं सहलत्तं ।

मज्झ तुज्झ धूयाण । पाणिं सणकुमारो, चक्की पीडिस्सइ सयस्स ॥ १०० ॥ वेयड्ढजिणहरेसुं, काऊणऽट्ठाहियाइमहिमाओ । सासय-असासएसु,
ता लहुउ होउ एवति, वत्तिओ वरविवाहमहो ॥ १०१ ॥ वेयड्ढजिणहरेसुं, काऊणऽट्ठाहियाइमहिमाओ । सासय-असासएसु,
पेक्खणपूयापयारेहिं ॥ २ ॥ अन्नत्थवि तित्थे वित्थरेण तित्थेसराण जत्ताओ । कुव्वतो सो पत्तो, एगमि सरोवरे रम्मे ॥ ३ ॥
अभिरामे आरामे, जावऽच्छइ पेच्छणच्छणुच्छाहो । दूरे बालवयसो, अणब्भवुट्ठि व्व ता दिट्ठो ॥ ४ ॥ हरिसभरनिब्भरेणं, रन्ना
हक्कारिओ समीवमि । कयसव्वगपणामो, अईव तुट्ठो इम पुट्ठो ॥ ५ ॥ कहमिह मर्हिंदसीह । आगओसि [1]अइमायतायभायाणं ।
भण [2]भण तणुकल्लाण, सिग्घमविग्घ च धम्मस्स ॥ ६ ॥ आलिंगिऊण उववेसिऊण पायंतियमि [3]पाणपिओ । कयपचगपसाओ,
विन्नविउ एवमाढत्तो ॥ ७ ॥ काएण सामिकुसल, अम्मापियराण न उण हियएण । तुरयाऽवहारदुव्वारदुक्खउक्खणियसोक्खाणं
॥ ८ ॥ दिसिसु विदिसासु सव्वत्थ, पेसिया तुह गवेसया पुरिसा । बहुभमिओ गयसेन्नो, अहमवि एगो कउव्वेगो ॥ ९ ॥
गिरिनगरागरकतार-पारवारावगाइट्ठाणेसु । त कत्थ कत्थ न मए, सुट्ठु गविट्ठो न उण दिट्ठो ॥ ११० ॥ एत्तिय वरिसाणते, सपत्ते
दुर्क्कयाण पज्जते । रयणनिही रोरेण व, तुमं समिद्धो मए लद्धो ॥ ११ ॥ कुमरेण वि वुत्ततो, सुमहंतो अप्पणो लहुं कहिओ ।
सा कढियखीरखडक्खेवसमा तेसिमासि दसा ॥ १२ ॥ अह वेयड्ढे पत्तो, पालइ रज्ज स सज्जियावज्ज । भणिओ मर्हिंदसीहेण,
देय । अइदुक्खिया माया ॥ १३ ॥ अइसविसाओ ताओ, ता वलिज्जउ लहुंति तो राया । मणिमयविमाणमालाहिं चलिओ अइ-
विसालाहिं ॥ १४ ॥ गयणयले अइगुरुखयररिद्धिसबधवधुरो पत्तो । हत्थिणउरमि सव्वाण, विम्हय सजणेमाणो ॥१५॥ जणणिज-
णयाण नागरजणाण जाओ तहा महाणदो । ओयविय भरहेण व, भारहखेत्तंपि छक्खडं ॥ १६ ॥ नवनिहिणो चक्काई, चउदस
रयणा य तस्स सजाया । बारसवारिसिओ, तह कओऽभिसेओऽखिलनिवेहिं ॥ १७॥ भरह पालइ छक्खडमंडिय तिक्खअक्खय-
पयावो । सोहम्मसभाए कयाइ, वासवो सुरसमूहजुओ ॥ १८ ॥ कारइ सोयामणिनाम नाडय अवसरमि एयमि । ईसाणाओ

१ अयि माइ D । २ वरतरु D । ३ पाणमिओ

संगम–अमरो पत्तो हरिसमीवे ॥ १९ ॥ निम्मेयव्वे तदभिम्म अमरेसाण वारणत्थे व । परिमयमाणो देवाणवि, पो सुण सभ-
माईसु ॥ १२ ॥ पहु[1] केण देवस्स सम्माणत्थे वसुरि तेव्वमेयस्स । हरिणा एवं एयं भासियमिन्दभाणस्स ॥ २१ ॥ सुरम्मेण
मिमेत्तं भमज्जो पाव तुम्ह पविहाइ । न विवइ व मणस्सावि पविस्स सम्मुमारस्स ॥ २२ ॥ अह विजयविजयंता भणइ
देवा इमं सुवे देव । मंदिरवि सुरा संमविस्स मणुयस्स एव भवइ ॥ २३ ॥ भइया—जं जइ ते वइ जंपेतव्वमम्हाण सुवमय
पहुवं । भणियपि सवमितव्वं होइ साभिमत्तं मेव ॥ २४ ॥ वेयमस्से भअम्म, ते सुण ते परिसिमरवे सव्वा । हरिणपुरंमि
परियसुयमुय निवयोवे ॥ २५ ॥ महसेवमेव भणियं, सपेसं समरियं तु पेसरेमो । सिरपूयव्वे कुणंता, मिरेण सुद्धा पव्वेसंवि
॥ २६ ॥ वमरम्मरियं एवं, तुम्ह मिसुणंता सविम्हया भम्हे । देसंवणइ सूएइ, भागया देजिया विसए ॥ २७ ॥ मणियं निरेस
मो मर ! मरणीगंव्वेम्मस्सावे । मिस्स तुम्भेहिं सम्म एवं पविसिस्साय निरसेसं ॥ २८ ॥ इय ते मिसजिया मज्जमाइ मज्जाइ
मिसेसओ वणी । तुम्ह इसुमसुयाहि, वंतो सव्वंगसिंगरं ॥ २९ ॥ इयणपरेइ मिण सुगोवि कप्पस्सगम्मसम्मस्सो । ते वि निमा-
येसम्म, गाय भाइसमभम्मस ॥ ३० ॥ मणियं समविम्मं पवाइरेण विमेरिसा तुम्हे । जाया मरेइ कि कारणंति वो ते
पयंपंति ॥ ३१ ॥ सयमम्मरी पयो, वंतावं भासि वारिसं तुम्ह । सकुम्म न वरिसं पत्तिसम्मेर सिगमरियस्साविव ॥ ३२ ॥ पहु
विपिस्स ही माणी संकंवा संति तुम्ह सरीरंमि । वे एक्कयंवि विवस्सय ! पइस्सवं रस्स वहा रूवं ॥ ३३ ॥ भमइ स पइ
भणिज्जइ, किं तुम्हे विसयं विपलोइ । भहवा निमित्तसमस्समरिय भासुसियं किंपि ॥ ३४ ॥ किं वा ओहिमागेय, सुणिय-
मिय पुण्णिरस्स पविस्स । परिपमिस्सरसमइरणपारिसो ते सुण आय ॥ ३५ ॥ जंपंति वसा इरियम्ममच्छरेणं वयं इहं पत्ता ।
पव पसोसि महसस्स ! स हरि वि पंसिम्म ते जाओ ॥ ३६ ॥ पढेइ रूवगोण्णमणेयाइ मरणं मज्झिम वयं वा । तेण वरं परि
हाव्व, पयस्सवं हेसरेसेम ॥ ३७ ॥ सुइ मच्छेरमेयं वं एवमेयेयमिय विपरिण्णमो । वालियसाओ पयगुम्मसेयो सुणिज्जमु
॥ ३८ ॥ इय मणिज्जं पवेसु, तेसु सव्वंमि पवयही वि । मिप्पइ मिरभोगयंगिममविपसुवकरगय समग्गे ॥ ३९ ॥ " पविपमिसेम

वि तारतेयरूवाइ जाइ जइ नास। तो दिवसमासवासेहिं, किंपि होही न याणेमो ॥ १४० ॥ किं किं न कय कलुस, कायस्से- यस्स कारणेण मए। तस्सावि वृसा एसा, ता सज्जो किज्जउ सकज्ज ॥ ४१ ॥ सुविढ सरीरेण, कस्स कस्स कज्जाइ सज्जियाइ न मे। अबलो नियकज्जेसु वि, कइ पिक्खिस्स परमुहाई ॥ ४२ ॥ सुकय सुकयं ज आसि, सपयं त गय नवं कुणिमो। कइ अब- लंगो रोगेहिं, साहयिस्सामि परलोय ॥ ४३ ॥ भोगे भोतुमसत्तो, अन्ने भुंजतए नियच्छतो। ईसा दुहं वहिस्स, सुहाय अहुणा चइस्स ते ॥ ४४ ॥"

किंच—"आस्थानी प्रथमा मलोचयमय कुक्षिः खिय कुत्सितो, विस्र्यद्भिरनुक्षण मलरसैः स्यन्द सदा तन्मय।
सस्कार प्रतिवासर यदि जलस्नेहादिभिर्नार्प्यते, काऽवस्था वपुपस्तदापि निधनेऽप्येतस्य कीदृग्दशा ॥ ४५ ॥

ततः—"कप्पद्दुम तणेण व, काणकवड्डेण कामधेणु व। चिंतामणिसुवलेण व, काएण किणामि धम्मधण ॥ ४६ ॥" इय नियपट्टे पुत्त, ठवित्तु कयअरिह-सघसम्माणो। अच्छिन्नचक्किलन्छीविच्छड्ड छड्डिय तणं व ॥ ४७ ॥ सिरिविणयंधरसूरीणमतिए अज्जिणेइ पव्वज्ज। सम्म सिक्खिय अक्खलियचोक्खसिक्खो महियमोक्खो ॥ ४८ ॥ रयणरमणीनिहाणा नयरनरनाहपमुहमणु- लग। जा छम्मासे भमिय खणपि खित्त न चक्खुपि ॥ ४९ ॥ छट्ठस्सते पारइ, चीणकूरेण छगलछासीए। पुण छट्ठाइतवाणं, पारणय कुणइ चीणाई ॥ १५० ॥ एएण तवोकम्मेण, पारणेण च अइचिर काल। पयपाणेण फणिणो व्व वाहिणो दूसहा जाया ॥ ५१ ॥ तिव्वेण तवोकम्मेण, तस्स आमोसहाइलद्धीओ। जाया तहावि वाहीपडियार कुणइ न कयाइ ॥ ५२ ॥ जाणइ जह पुव्वकडाण दुक्कडाण अवेइयाण सय। मोक्खो न होइ वेएइ, वेयणं तेण ताण सया ॥ ५३ ॥ कंडू अभत्तसद्धा, तिव्वा वि- यणा य अच्छि कुच्छीसु। सासं खास च जर अहियासइ सत्तवाससए ॥ ५४ ॥ हरिणा पुणवि पससा, कया कयावि हु सण- कुमारस्स। सक्केण वि सक्किज्जइ, न मए खोभिउमिमोऽवस्स ॥ ५५ ॥ तियसा तेम्रिय तो सत्तमुत्तम तस्स तं परिक्खिउ।

पत्ता बोयमिकोवसिर्लेया वरपिंडवेसेण ॥ ५६ ॥ सेअस्सेगस्स वहे, सव्वंतुमाये महा(गुम्मी) गुम्मी होई । दसकप्पमउससमो, खरस मिठ्ठो विरयछुरो ॥ ५७ ॥ विगुयविठ्ठमसंगमे वरसरमणोप–अमयविसो जो । अवरोमय वरपमासे य सोहिओ सो एए अवसे ॥ ५८ ॥ वासमाकम्मारिठ्ठो स सहइ असगमनिस्सरसल्लू । सम्मनिवेसं अरिमोहसिजवरसमो मय निस्समिठे ॥ ५९ ॥ पोसवि ते सव्वविक्कसो वरसूसणसपसयारे । परिहओ समणमित्त वरे एवमेव अवगेमो ॥ ६० ॥ पारिय धम्मसमो मयह मुणी सम्ममसमसीसु । परिचपरं करउ कुमेय समणाही मइवि सममा ॥ ६१ ॥ निहुवियमेयमंगुमीमाकिरिय एएए समर सव्वि । सहीओ बोसहमि य दुपेवि देमि पारेमि ॥ ६२ ॥ न करेमि पडियारं सममेव सदुवाई एवेमिति । समारणीहिं पी-सरी हुदुमरे वं पमो होहि ॥ ६३ ॥ अहु पुण पावगाही अणुमरं सवं तु समेव । होसि पुण पडियारं करेमि किरियाहिं पोरेहिं ॥ ६४ ॥ अहियमिवारे समयमाहेवं सह अरोगसवमयं । किरियावरं विसे करेमि वरमेहिं जाव स(म)ए ॥ ६५ ॥ वसवं बहुय वसायवमावरेसी सिमेहसमिहारे । समसाओ सवराओ समाओ वि य परिहरामि ॥ ६६ ॥ जाव इह पाविविमासे, एवं सामत्थमवि य भणाइ । वं वेव तेय दुमिमो, भवंति ते पवडिपसासो ॥ ६७ ॥ सिमया ते वेय वरे जे भाव जाम पाउअमे हुसा । सम्मिहेय पसंसे, भवसव्वा पुणो पत्ता ॥ ६८ ॥ तह सवपरिवरगाए, वे भगरे सहवि आगम्म मूल । मेवं महवयासं देता देसिम भवंति ॥ ६९ ॥ इम गुणावं सुमियो, पुरसो पुरसो सणयसे । इह देसमेव संपइ, जाया भगरे वि मुहस्सा ॥ ७० ॥

जय मिथ्यातमहागुरुरसनिवसमहिय, । जय असारिसंसारपरिक्कमसमहिय । ।
पडिवक्कपिक्कनियमहमहीसुपरं, जिय इहर अम्मय भणि(अ)ई पो भवइ ॥ ७१ ॥
अपरेअसि हुपसंतहि मिमिम्य भवपाहिव अणमिवगुरुसुजाममपवंता इह पामि जिय ।
तहवि मरवि मयसुमि मायसि भवपिसु, मिहु होसि मयपम्मपयमि पवि पडिय ॥ ७२ ॥

आमोसहि-विप्पोसहि-खेलोसहि पमुह, लद्धिसमिद्धिपसिद्धियसिद्धियअत्थिहिं तुह ।
तहवि वाहि अहियासहि सामि । समाहिवर, तिणि कुमार जोगीसरु महरिसि तुहु जि पर ॥७३॥

तुह रूवहिं पडिछदउ अत्थि न भुवणि जिव, अइसमग्ग निरवग्गह वेरग्गहइ तिव ।
ता मह महरिसि सहरिसु एव पसाउ करि, खमहि खमहि अवरद्धउ ज अन्नाणभरि ॥ ७४ ॥

इय कयथुवि तो देव दोवि पणमेवि पय, परमपमोयपुलयचिय निय नियठाणि गय ।
सामि सणकुमारु सो धारिय धम्मधुरु, कप्पि सणकुमारि उपन्नु महिड्ढिसुरु पवरु ॥ १७५ ॥

इति सणकुमार चक्कीकहा सम्मत्ता । एतत्कथानकानुसारेण गाथार्थ सुगम ॥ २८ ॥ क्षणमात्रेण देहस्य परिहाणिं प्रतिपाद्य शेषस्यापि सर्वस्य तामाह—

**जइ ता लवसत्तमसुरा विमाणवासीवि परिवडंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासय कयरं ॥ २९ ॥**

' लव ' कालविशेषोऽत्र प्रक्रमे पुन· सुगतियोग्यप्रकृतिबन्धप्रस्तावः प्रोच्यते । लवः सप्तमो येषा सुरविमानाना तानि लवसप्तमसुरविमानानि-अनुत्तरसुरोत्पत्तिस्थानानि तद्वासिनोऽनुत्तरसुरा एव । किल कोऽपि जीवो भावनाविशेषात् क्रमेण विशुद्ध्यन् प्रथमलवे १ सुमानुषत्वयोग्याः सत्कर्मप्रकृतिर्बध्नाति । ततो २ व्यन्तराणा योग्यास्तत क्रमेण ३ ज्योतिष्काणा ४ भवनवासिना ५ वैमानिकाना ६-७ ग्रैवेयकवर्तिनामनुत्तरवासिना च देवाना योग्या करोति । एवं च सप्तमो लवोऽनुत्तरसुरोत्पत्तियोग्यो भवति । ततो यदि तावदनुत्तरविमानवासिनस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमायुषोऽपि विजयवैजयन्तादिदेवा· स्वस्थितिक्षयात्प्रच्यवन्ते तदानीमन्यत्कतरद्वस्तु ससारे शाश्वतम् जीवाना सासारिकसुखोत्पत्तिस्थान ?, न किंचिन्नित्यमस्तीति भाव । श्रीसिद्धवृत्तावत्रापरोऽर्थो व्याख्यातोऽस्ति स तत एवावसेय ॥ २९ ॥ साम्प्रत पुण्यानुबन्धिन पापानुबन्धिनश्च पुण्यस्य परमार्थतो दु·क्खरूपतामाह—

कय तं मन्न सोक्खं, सुचिरेणवि जस्स दुक्खमब्भहियं । जं च मरणावसाणे, भवसंसाराणुबंधि च ॥ १० ॥
उवएससहस्सेहिं वि, बोहिज्जंतो न बुज्झइ कोइ । जह बंभदत्तराया, उदायिनिवमारओ चेव ॥ ११ ॥

"कय तं" गाहा । भवमार्गे पुण्यानुबन्धिनः पुण्यस्यानुचरेण व्याहरणम् । परार्थे तु पापानुबन्धिनस्तस्य सुमोमाद्यवस्थायाः ।
भवे-चतुर्गतिकसंसारे तस्य संसरणमनुबन्धात् इति संसारानुबन्धिसुखम् ॥ १ ॥ जस्स च दुक्खमग्गो सुदुक्खरिद्ध्यामपि गुरुकर्मा
कश्चित् बुज्झते इत्याह—"उवएस" गाहा । एतदर्थः कथानकाभ्यामवसेयस्तच्चेदं क्रमेण—

साकेयपुरे चन्दावडंसयसुतो आसेसि मुणिचन्दो । रज्जं सागरचन्देण, सिक्खिओ सिक्खिओ य सयं ॥ १ ॥ चिरपरमत्थो पत्तो
गीयत्थो सह गुरूहिं विहरंतो । भिक्खट्ठाए पविट्ठो भट्ठो मग्गो स सत्थाओ ॥ २ ॥ तण्हाछुहाभिभूओ पडिजागरिओ य जण-
पालेहिं । चउहिं वरगोवालेहिं बोहिया ते चउ वाया ॥ ३ ॥ चउरो वि चारुचरणं तवचरणं दुक्करं करेऊण । जाया दियसा दो
दुसुमजणाओ दुकमसाहिस्स ॥ ४ ॥ दोण्णि दुगुंछाकम्मेण तिव्वबंधणसिम जम्मम्मि । धम्मम्मि तेसु चविय य तेण संखिवणि-
स्सस ॥ ५ ॥ जसमईए जसमईए, जाया दासीए दो दसपुरे । परपीडए परोप्परपडिबद्धा जोव्वणं पत्ता ॥ ६ ॥ कइयावि रान-
मेगो खित्तचरित्तेण सुवण्णसुयाए । सप्पेणराण दट्ठो अवसप्पियणम्मसप्पेण ॥ ७ ॥ अवरोवि तम्मिरिक्खकप्परारण्णे तेण चेव
डक्को दट्ठो । कलिविसपडिवयाए दोण्णि सवि पंचत्तमणुपत्ता ॥ ८ ॥ हरिणीए कमकन्नाए कालिंजरपव्वए पसविया । सह चेव
दुवे नाडेण एगनाणेण चक्काए ॥ ९ ॥ मयंगतिरत्य एगाए रायहंसीए सह सुया जाया । संजमिय एगपासेण पासीएण हया दोण्णि
॥ १ ॥ चण्डरसीए जाया सह समया दोण्णि मूयसिम्मसस । मायंगसामिणो पोसपीइओ चित्तसंभूया ॥ ११ ॥ कासी चण्डीए तत्थ
संभो निस्संगगुणाओ मिरई । दुक्खओ कलासु तस्स वि सम्मिओ मदुर वि भामेण ॥ १२ ॥ रायपसाओ कोवायगारिणो तस्स
जासि दोस दम । मरणस्स माहुरिमा होइ किं च किंमायगास्स ॥ १३ ॥ बलिहरंमि पु(म)हंमे निवेसी सो पाणभूयविसस ।
पाणगवसिरएक्कोस्सव जम्मिओ जस दोसवए ॥ १४ ॥

लोके शोकमु(जु)पि क्षणे गतगुणे श्रेय पथे सद्व्यथे, क्रान्ते ब्रह्मणि मर्मणि स्थितमतौ संक्रन्दने क्रन्दने ।
तूर्ष्णीं पुष्णाति पूर्णिपक्ष्मलदृश चेद्राघणो नो हरेत्, तत्कि तत्पृथुकण्ठपीठलुठनाद्विश्वोत्सव स्यादयम् ॥१५॥

भणिओ तेणाऽमचो मच्चुमुहाओ तुम विमोएमि । जइ मह पुत्ते पाढेसि वाढमिह गूढगेहगओ ॥ १६ ॥ पडिवन्न विप्पेणेवि तेणेय हरिसनिब्भरेणगेण । किमकज्जपि न कज्जइ पाणपिवासाए पाणीहिं ॥ १७ ॥ अविकलकलाकलाव सिक्खवयतो वियक्खणे तणए । पाणस्स तस्स पाणप्पियाए चोरियए रमइ ॥ १८ ॥ अन्नु पाणुपाणहघरि किज्जइ, तसु जि भज्ज पच्छन्न रमिज्जइ । चरिउ एउ सोत्तियह विसिट्ठह, नहु अकज्जु गुणवतह भट्ठह ॥ १९ ॥ इय अवगयवुत्ततो पचत्तं पाविउं तमीहइ सो । इह सहइ पारदारियपराहवं को सदारेसु ॥ २० ॥ तत्तो अवगयतत्तेहि तेहिं पुत्तेहिं चप्पिओ पाओ । निस्सारिऊण मुक्को नमुई हत्थिणपुर पत्तो ॥ २१ ॥ उवयारस्सुवयारो जो सो वाणिज्जमिह न कोइ गुणो । त जीववति जे उण, ताण मह्ग्गीण किं भणिमो ॥ २२ ॥ सचिवो कओ कयाई, सणकुमारेण चक्किणा तत्थ । मणिट्ठाणे ठाविज्जइ, काओ वि अणायतत्तेहिं ॥ २३ ॥ अह विसमबाणभूवालनिजयजत्ताए सारय समय । अइतार तारुन्न ते पत्ता चित्तसभूया ॥ २४ ॥ सिंगारदिक्खदक्खे देवे दड्ढमि तमि गिरिसेण । सामरिसेण विहिणा व वम्महा निम्मिया दोवि ॥ २५ ॥ किन्नरकठा कुठा नारयवीणा वि होइ अपवीणा । ससुहेण तेसु गायतएसु कन्नाण पारणय ॥ २६ ॥ सोऊण ताण सरताणमुच्छणाछायसगयं गेय । मन्ने दिन्नासि तया कलकठीण मुहे मुद्दा ॥ २७ ॥ अह विलसेइ वसतो, पउत्थवइयाण सोसियवसतो । अविउत्ताण वसतो, जायं जणहियय-मवसतो ॥ २८ ॥ ससहरसियायवत्तो, मलयानिलचारुचामरग्गाहो । कुसुमसरसेन्ननाहो, वसतराओ जए जयइ ॥ २९ ॥ नहवा-डीए तारय-कुसुमाए काममालिएणेसो । [2]ससालिज्जइ सिंगारसारकदो अहो चदो ॥ ३० ॥ महुसमयमि पवास, माणं वा मा

१ विमासि तया कलकंठीहिं D । २ सभालिज्जइ B ।

पुरीए थेवि जए। इय भणवो कोउहल्लवसेण पावेइ पुरं ॥ ३१ ॥ तंमि य ठमे ठमे [illegible] । मिवि-म्म मंडवेहिं पवरपवरवरिं दिवि ॥ ३२ ॥ मार्गतारगामि [illegible] । सुमुयुसरेण हरिम [illegible] आगया मम्मए सम्मे ॥ ३३ ॥ मग्गए [illegible] वेसि ईसाकुमारिं केरिं पि । [illegible] पुरईसन्नो [illegible] विहाविया नयरी ॥ ३४ ॥ नयरीपवेसो तेसिं परिसिलो रायसासणेण गओ । तम्मि पुरीए पवेसे [illegible] ॥ ३५ ॥ अह सरमो संपत्तो नाम [illegible] वसनार्य । [illegible] य कुसुए [illegible] एगी सिसुपवसमन्तए ॥ ३६ ॥ [illegible] । पयडियपुप्फिम-मियंका नाय सरस्स सरियाओ ॥ ३७ ॥ पसरिय[illegible] । [illegible] ॥ ३८ ॥ [illegible], पयडि[illegible] । सिम्मपुत्ता य रोवंति [illegible] ॥ ३९ ॥ इय सारयंमि समए सेवाए [illegible] एम्मे । दोणि मि मार्गा [illegible] ॥ ४ ॥ पुरि मज्झमि पविट्ठा [illegible] सुट्ठ [illegible] । [illegible] पेच्छंती पेच्छमा[illegible] ॥ ४१ ॥ नागराणं सोहम सुंदरं तेवि [illegible] । कोसुय सरयुससेण कोसल्ल [illegible] ॥ ४२ ॥ महुरसराहरिवहिम्मा [illegible] इवि नायपा विंवि । इमिम्म सरेण किमिमे न हुंति ते केम [illegible] ॥ ४३ ॥ मरगयनेरेहिं [illegible] पेच्छिऊण [illegible] । [illegible] विद्दुमपरिं [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] पया [illegible] वरिं । [illegible] एसो [illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] एवं । [illegible] य [illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] सो पडिओ । मरणाव [illegible] कुमारदोसेण ॥ ४७ ॥

"[illegible], [illegible] कुतोऽन्येषाम् ।
[illegible] य सुवंति [illegible] ॥ ४८ ॥"

---

१ [illegible] ।

दुज्जाइदूसिएण ता इमिणा जम्मुणा वि पज्जत्त। इय चिंतिय ते चलिया उद्धमुहा कहिं त्रि मरणाय ॥ ४९ ॥ इच्छ गच्छं तेहिं सिहरी निरिक्खओ कोवि। पडणाय चडतेहिं च तत्थ एगो महासाहू ॥ ५० ॥ वाघारिय पाणिजुगो सुहुमाण पाणुतणुपरिप्फंदो। नासानिविट्ठदिट्ठी सियझाण झायमाणो य ॥५१॥ तममयनिम्मियझरहर–झरतनिज्झरणमिव निरिक्खंता। अवगयताया जाया आया अभिवदिउ पुरओ ॥५२॥ पणमिय महीनिविट्ठा, मुणिणा उस्सारिऊणमुस्सग्ग। भणिय भो के तुब्भे, किमत्थमेत्थागयाओ दुग्गे ॥ ५३ ॥ ता वुत्तो वुत्ततो निओ तओ जपए तउस्सी सो। अहह अजुत्तमजुत्त जमप्पणो घायगा होइ ॥ ५४ ॥ जाइ कलको दुक्कम्म–निम्मिओ तक्खओ तओ जुत्तो। भिगुपडणे पिंडोमिय पडेइ न झडेइ दुकम्मं ॥ ५५ ॥ नियदुग्गयस्वयट्ठा ता पव्वज्ज पव्वज्जिउ सज्जो। अहिगयसुयत्थपरमत्थवित्थरा तवह तिव्वतव ॥५६॥ एमाइ देसणा वासणाए अंगीकुणंति ते दिक्ख। देइ स तेसिपि महामुणीण मग्गो नवो कोइ ॥५७॥ लहु अहिगयसुत्तत्था गीयत्था ते खविंति अप्पाण। छट्ठट्ठमदसमदुवालसाइ तवकम्मुणा कम्म ॥५८॥ पुरनगराइविहारक्कमेण हत्थिणउरमि सपत्ता। सभूयमुणी मासस्स पारणाए पुरस्सतो ॥५९॥ गोयरचरियाए उच्च–नीयगेहगणेसु हिंडतो। धवलहरगवक्खगएण नमुइमतिणा तेण दिट्ठो य ॥६०॥ पच्चभिजाणेऊण, नियनिंदियकम्मकहणसकाए। स नयरनिस्सारण-कारणेण ताडावए तमल ॥६१॥ "उवचिणिय चित्तसका धका दुक्कम्मकारिणो निश। कयसुकया सव्वत्थवि नीसका चेव वियरति ॥६२॥" अह अविहियावराहस्स तस्स पहयस्स लेट्ठुजट्ठीहिं। उल्लसइ तेउलेस्सा, धूमेणधारिय गयण ॥६३॥ अइसुरहिसीयलाओ सुनिम्मलाओ वि चदणाहिं लहु। उच्छलइ किं न जलणो सुघण घसिज्जमाणाओ ॥ ६४ ॥ नवजलएहिं व छन्न उद्धुरउद्धूयधूमपडलेहिं। नहमडलमालोइय आया भीया पुरपहाणा ॥ ६५ ॥ चक्की वि समागतूण झत्ति पणओ पएसु विन्नवइ। जइ महारिसी वि कुप्पंति ता जल किं न पज्जलइ? ॥ ६६ ॥ "हियए मुणीण कोवो, न होइ अह होइ चिट्ठइ न चिर। जइ कहवि चिरं चिट्ठिज्जए, तदवि निव्वडइ न फलेहिं ॥ ६७ ॥" इय चक्किवि चित्तुसारणाउ अगणतयमि तया। अणुनसमते पत्तो, चित्तो सुरातरत्तविऊ ॥ ६८ ॥ पभणइ मा कुरु कोप, वहिस्सए एस पट्टण पच्छा। पढम तु तिव्वतवकम्मनिम्मिय सुकयरासिं ते

॥ ६९ ॥ तं भणिय सयी [illegible] [illegible] । तं माणु [illegible], [illegible] सगापवेहिं ॥ ७० ॥ " अह [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] । तं [illegible] तं [illegible] वि [illegible] ॥ ७१ ॥ पमाय [illegible]
[illegible] सो वीओ । विसेस [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ७२ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible] तवेण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ७३ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] परपरम[illegible] । [illegible] [illegible], पाय-
[illegible] भणिस्सामो ॥ ७४ ॥ मुणि[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] नमुइमंती [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ ७५ ॥ " म [illegible] जे [illegible] [illegible] [illegible] जे न [illegible] पूईवि । [illegible] जे वा ते पावा [illegible] वि [illegible] ॥७६॥"
[illegible] नमुई । [illegible] [illegible] नीणाविओ नयरे ॥ ७७ ॥ [illegible] [illegible] मह-
मुणिसमीवे । पत्तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नमुई ॥ ७८ ॥ [illegible] [illegible] पावेण [illegible] इव भणिइ । [illegible]
[illegible] मुणिहिं मोयाविओ संतो ॥ ७९ ॥ 'अइमा न [illegible] [illegible] [illegible] इह [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ ८ ॥" [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] तेसिं । [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८१ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८२ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] स [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] मह [illegible] परिसी [illegible] ॥ ८३ ॥ मुणिवे [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥८४॥ [illegible] [illegible], [illegible] नाम [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । ते [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ ८६ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] ! [illegible] । [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥८७॥
[illegible], [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] ॥ ८८ ॥ [illegible] [illegible]-
[illegible] वि [illegible] [illegible] । म [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८९ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-

गमि । जाया तियसा चविऊण चित्ततियसो पुरिमताले ॥९०॥ जाओ पुत्तो बम्भस्स, सो वि सभूयसुरवरो चविउं । कपिल्ले बभ-
पिया-चुलणीए कुक्खिमोइन्नो ॥ ९१ ॥ गयवसहाइचउद्दससुमिणेहिं सूइओ सुओ जाओ । अइतारतारतेओ, पुव्वदिसाए व्व दिण-
नाहो ॥ ९२ ॥ वित्थारेइ सव्वत्थ पत्थिवो पुरमहूसव परम । नाम च बभदत्तो त्ति तस्स दावइ सुहमुहुत्ते ॥ ९३ ॥ उवचयम-
चइ देहेण, तह सुनिम्मलकलाकलावेण । निरुवमनयणाणदो चदो व्विव सेयपक्खमि ॥ ९४ ॥ सइ अप्पियसब्भावा मित्ता चत्तारि
तस्स बभस्स । चउराणणस्स सन्नयणाहावयणाविव अहेसि ॥ ९५ ॥ वाणारसीए कडओ कणेरुदत्तो पहू गयउरस्स । दीहो य
कोसलाए चपाए पुप्फचूलनिवो ॥ ९६ ॥ निरवज्जरज्जचिंता-धुरधरो तह धणूमहाऽमच्चो । पुत्तो तस्स वरधणू धणिय कलिओ
पिउगुणेहिं ॥ ९७ ॥ ते पचवि रायाणो बभाइया परूढपणयवसा । विरहमणिच्छमाणा परोप्पर एवमभणिंसु ॥९८॥ पत्तेय, पत्तेय
पचसु रज्जेसु वरिसमेकेक । नियनियपरिवारजुया जुगवं चिय सवसामोत्ति ॥९९॥ कत्थइ समये कडगाइएसु पत्तेसु बभनिवपासे ।
बभस्स सिरोरोगो जाओ दावियसुयणसोगो ॥ १०० ॥ पडियारेसु कएसु वि, अनियत्त तमि तमि गुणग्गामो । उच्छगे कडगाई-
णमप्पए बभदत्तसुय ॥ १०१ ॥ जह सयलकलाकुसलो पावियनीसेसरज्जपब्भारो । जायइ सुओ ममेसो तह कायव्व त्ति ते
भणिया ॥ २ ॥

जओ—" पमुहतणुईओ अनियत्तणाउ वच्चति वित्थरतीओ । सुयणाण मित्तीओ जहा नईण य पवित्तीओ ॥ ३ ॥ "

" निद्धमहुराउ पुव्विं मज्झवि चित्ताउ अतलुक्खाउ । खलमित्तीओ भोयणवित्तीओ विव धणड्ढाण ॥ ४ ॥ "

तत्तो कमेण पत्ते परलोयपहमि बभनरनाहे । मयकज्जेसु कएसु सव्वेसु वि जणपसिद्धेसु ॥ ५ ॥ ते रज्जकज्जसज्ज सठाविय
तत्थ दीहनरनाह । कडगाई तिन्नि निवा नियनियरज्जेसु सपत्ता ॥ ६ ॥ चुलणीए दीहस्स य दोण्हवि कज्जाइ चिंतियताण ।
सीलवणदहणपउणो जलणो व्व वियभिओ मयणो ॥ ७ ॥ अगणियकुलमालिन्ना चुलणी पउट्ठत्तणेण चित्तस्स । दुरुज्झिय जण-

मम्य मगुरस्य पियपासंमि ॥ ८ ॥ गुम्मोदरमाहारमारिणी घइ सक्कप्रकम्मा य। मम्यसरा रीयपरिहि न्व गुरुग्गी न कि सरर
॥ ९ ॥ दुरिझ्माई सविमसो विसाकम्मो मोगसुमपरिम्मसे। रीयो वि रीयसुरे, दुरुगिरो मयं रेइ ॥ १० ॥ मायं मीमेसमिपं
चरियं गुरुमीए सीलमंताई। पचुप्पमाणेन विचिमिथं च गुसवं न गुमरसम ॥ ११ ॥ मलिमो य परयपू ठेम पुन ' गुमरसम
मप्पमचेन। पत्म सरीरमया मयणी मे गुरय मेम ॥ १२ ॥ समप य मायचरियं जम्मरेयपरओ मए सम्मं। जम म पारेज्ज
इमो जमरं मेमर पमेम ॥१३॥ गुमरे ममक्कमेथं संजाओ पयरजोपमसंमो। रमन्हे जमणीए चरिए सामरिगइमसे ॥१४॥
पयमीजमम्मरम मोहममाइम्मे मयऽरुजे। मेगु मपह समोसो माय! मारेमि मम्मेय ॥ १५ ॥ मम्मो वि कोरि रेज
मम्मममो हवेम यो मम्म। मम्मो निगिम्मिममो मिरवेरसमणेण सो सम्मो ॥ १६ ॥ एवं मणेगमारे विविहिगम्मेहि मरा
समासर्व। जामिगु मंमस्य रीयो गुमर्वि समुझ्मर ॥ १७ ॥ मेरं परिस्समगुरं जं मंगइ गुमम मम किर गुम्मो। मा ममइ मम्म-
माणो पम्मजरमार म सम्मयो ॥ १८ ॥ रीयो ममइ मुरे। मम्मो मोम्मर्म इमोज्जासं। मागम य गुमम य मरम्मम रोसिरी
मम्मा मेरं ॥ १९ ॥ म मारिमम इसो रेमऽपि ममरिरसपुगासम। मह सासंमि मुंसरि! गुम्यु कि होइ सरिरे ॥ १२ ॥
परगापरसम्म इयरमममम्मरमकविचार। चरियमे गुरुमीए पिरपु इस्मीम चरियाइं ॥ २१ ॥ मदि गुसम्मी सासापचि सि जा
गुम्मेसमासम। गुरुम मम्मि गुरं ही परिसइ ऐरममचाए ॥ २२ ॥ कोवि गुरियो रीयो मामो मामो गुम्मो ति गमम मम।
समुमो मायिमनी मारिमइ पीमणम मरं ॥ २३ ॥ चरिया य वेरिं ममो मसम मम मम्मपि निममुम्य मया। पाणीमं च
सर्व विमादयमम्मामुमारमं ॥ २४ ॥ मेमसमसविविहु मारगुरवेसनियमपमुमारं। मागविमं जम्मरं मागमिमिमं गुमारमा ॥२५॥
मम्मो एस मइयरो पगुम्म सो पमरमपम्मेन। मविमो स रीयपमा एम मुम्मो परयपू मम्म ॥ २६ ॥ मंगमजोम्मममगो निम्मा-
इमसे म रमममामं। ममामममऽममरो मे मगुममगु जामि मम सहिं ॥ २७ ॥ मो मम्मयेम ममिमो रीयेम ममय! एम
ममपरिमो। मममरम मरमं मरेगु परमोमऽमुमं ॥ २८ ॥ मरिमरिमम्म एवं गुरपरिगरमगुरमईए नमिमि। ममयविमा विमामम

एगा भणुणा पत्ता पत्ररा ॥ २९ ॥ परिनागगाण तह मिन्तुगाण नाणाविलाग पहियाग । भरगद्दो व्व नहिं गाग गाउं पयट्टो सो
॥ १३० ॥ सम्माणदाणगहियेहिं अप्पणो निव्विसेसपुरिसेहिं । परगाउयं मुरंग कारावइ जाव नउगेहं ॥ ३१ ॥ एवं ठियम्मि नर-
वइकन्ना सा नियगपरियरसमेया । वियाहत्थ पत्ता कंपिल्ले ऊसियपडाग ॥ ३२ ॥ गिनं पाणिग्गहणं पागगिमित्त तओ य रय-
णीए । वरधणु पहुसमेओ परोसिओ जउहर कुमरो ॥ ३३ ॥ नागजुगम्मि अइगए गिसाए पज्जालियं च त भवण । जाओ य
कलयलरवो अइभीमो सव्वओ तस्स ॥ ३४ ॥ पज्जलिय जलनिहिंमि पुरसेग्गाऽऽगम्भिऊण सन्थेण । आपुच्छिओ वरधणू किम
काडे कुमरनेयति ॥ ३५ ॥ कुमर ! तुह्नऽणभक्ष रमो वीगाहद्दरो गहिओ । एत्थ न रायकमा अवसिय काउ तम्मरिमी ॥३६॥
ता तीए मयपणओ कुमरो जपेइ किमिह कायव्वं । तो भणियं वरधणुणा पन्हिपत्ताए इहं(?) देसु ॥ ३७ ॥ दिन्नम्मि तंमि पत्तं
सुरंगदार विणिग्गया तेण । दोन्नि वि गंगातीरे [१]पत्तासम्मि सपत्ता ॥ ३८ ॥ पुव्व निय भणुणा ठविम्मि जायतुरंगजुयलम्मि ।
तस्सवणमारूढा ते पन्नास जोयणाणि गया ॥ ३९ ॥ अइदीहपहखेएण गेहगा झत्ति निवडिया तुरगा । पायेहिं तेण गतुं लग्गा
पत्ता तओ गाम ॥ १४० ॥ गोट्ठामिसाणनेग कुमरेणं वरधणु तओ भणिओ । जह बाहइ छुहा मे परिस्सतो तह दढ जाओ
॥ ४१ ॥ तो गामबहिं त ठाविऊणमब्भितरे पविट्ठो सो । घेत्तूण नाविय आगओ मुंडाविऊण सिरं ॥ ४२ ॥ अनुकूलकसायवत्थे
निवासिओ पट्टेण बद्धो य । सम्मगुणेण सन्दे सिरिवच्छो लञ्छिउ्ज्जलिओ ॥ ४३ ॥ गेरुयरत्तवासो वरधणुणा चिय तओ
परावत्तो । जह पइवि दीहराया जाणिज्जा कुणेज नो अम्हे ॥ ४४ ॥ एव ममसं पइगा गरपरिगारवेसगमणा य । गामतो सं-
पत्ता एगाओ माहणगिहाओ ॥ ४५ ॥ [२]निमन्तिम रायकेणाऽऽभासिया गुत्तेहिं गेहंमि । भुत्ता य तत्थ निरोव्विग्ग[३]भावेहिं तत्त
माणमि ॥ ४६ ॥ एगा पहाणमहिला कुमरस्स सिरंमि अक्खए खिविउ । भणइ पंधुमइए पुत्ताए होउ एस [४]वरो ॥ ४७ ॥
अच्चंत निग्गोयणपरेण भणियं अमच्चपुत्तेण । अज्जे ! निरत्तमि किं मुक्खवडुयकज्जेण [५]किमिमिणा ॥ ४८ ॥ उस्सुक्कोयलोणं भ-

[१] पत्तासमम्मि D । [२] निग्गाय D । [३] भीए D । [४] पत्ता० B D ।

निर्य करसामिणा मुम्मसु सामि ! । मेमिर्णित्रण मणिर्य मुम्मसिर्म ओ करे पत्री ॥ ४९ ॥ पड्डुम्मम्भमकम्को विरतुमो मोयम्म करिस्सइ य । पयाय नाकस्स करो स होही न सरिहो ॥ ५० ॥ ता तम्मि चेव दिवसे पाणिग्गहण करेइ सो कुमरो । अह अणु कम्मो तेसिं परोप्परं निम्मरो नेहो ॥ ५१ ॥ नीया रयणी सा तेण तीए सद्धिं सकोउगमणाए । अह्मणाण्हुममजो सबांग मयरिमवीए ॥ ५२ ॥ वीसमिमे वरतुण्ण मणिओ गव्वमसि ते दूरे । कहिंङ पंचुमईए सम्माणं निमस्स होति ॥ ५३ ॥ गमणंमि दूरे, पत्त ते दोवि वरतुरू मज्झे । पाणीयऽऽण्णमकम्प, गओ बहुं विमाओ ममाइ ॥ ५४ ॥ निसुओ वणफ्फाओ मए वहा वीरपत्नमा मगा । एम्मेवि वंममसस्स मल्लोरे विम्हाचि ॥ ५५ ॥ ता नाविमाउ दूरेण मयामार्ग करिसु गच्छंति । वाय मसमणीए पविपासि (?) सिंधा कुमारस्स ॥५६॥ वरगमेंहे ठाविसु वरमम् तं गओ सम्मिकरेइ । तार्प रिमापसाण न कय-सुगा पर पसो ॥ ५७ ॥ किंदो वीसमेरी एवं च इम्मंवउ सरोवरि । पत्तो कुमराउम्ने कर्हिचि विरतमुमंवरिउ ॥ ५८ ॥ कय-सविन कार्ड कुमारमेसो निस्सार मणवि गओ । तत्थे स विम्मवेगो पस्समम्मो सुसुपार्र ॥ ५९ ॥ केवरं कमरभेमसोगसंपम्मो गओ कस्स । इरिसपरिसो विर्पंकरि वीमरयपरिवणिगिरिकुमरा ॥ ६० ॥ पच्मकुमाणिमेतो तं कमविमइकमिसु वइपरिये । पे पत्त तावसमेग वसुसिवव्यं पसममय ॥ ६१ ॥ तदंसणमेत्तेण वि संजाया तस्स जीविषम्मासा । पयपणिवापपुरस्सरमाऽऽपुट्ठो तम सो एवं ॥ ६२ ॥ भयवं ! मे कम्मासमपरममेणं तओ कुमारस्स । मीओ समीवमामविओ य सप्पमयमेएण ॥ ६३ ॥ बहु पमासमेवं एवं सुणं लपमाणमवर्य । त मम तुह अगामयं कार्य संपइ महाभाग ! ॥ ६४ ॥ सम्मावगमममपे माऊण वरिसुओ निमणिस्स । कुमरेणं तुरंतो कहिओ सम्मोवि इमम्मो ॥ ६५ ॥ अह एम्मायमपमयरामसेप मपिओ तओ स कुमरज्य । पंमस्स तुम्म सिमो तुजम्मय अहं आसि ॥६६॥ ता वच्छ ! मिओ विय एस आसमो निम्मलं परिवसाहि । मुंचसु विसा-यमेयारिवाई संसारपरिवार्ड ॥६७॥ सहकुसेण एवं सुरम्ममाणिमम्म हे वच्छ ! । कन्ठी तवा ममवती मीर्ग नीमवरमसुसरह ॥६८॥

तथा—" समुद्रस्यापत्य प्रथितमहिमा मुद्रितभुय, स्वसा प्रालेयाशोस्त्रिनयनशिरो धाम वसते ।
मुरारातेर्दाराः सरसिरुहकिंजल्कनिलया, तथापि श्री स्त्रीवत् प्रकृतिचपलाऽऽलिङ्गति खलान् ॥६९॥

किञ्च—विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम ।
यशसि चाभिरतिर्व्यसन श्रुते, प्रकृतिसिद्धमिद हि महात्मनाम् ॥ १७० ॥"

लद्धाभिप्पाओ कुलवइस्स सो तत्थ अच्छिउ लग्गो । निमितो नियभवणिव्व केवल वरधणु सरइ ॥ ७१ ॥ सो कुलवइणा धणुवेयाऽऽइयाओ कलाओ सयलाओ । अणहिज्जियपुव्वाओ सम्ममहिज्जाविओ कुमरो ॥ ७२ ॥ कइयाइ कंदफलजलगवेसगे तावसे अणुसरतो । रुन्भतो कुलवइणा कोऊहलतरलतरचित्तो ॥ ७३ ॥ सो रन्नपरिसरम्मी आलोयतो वणाइं रम्माइ । अंजणगिरिं व तुग मायगमहो पलोएइ ॥ ७४ ॥ वरकडओ गुरुदतो सुपयडपाओ विसालवसो य । ज विंझगिरी कुमरस्स, दसणे जगमो जाओ ॥ ७५ ॥ सो दट्ठूण कुमार सम्मुहमिंत सरोससिग्घगई । चलिओऽभिमुह पगक्खमेव नज्जइ जमो भीमो ॥ ७६ ॥ कुमरेण कोउगुत्तालललालसासकर्यकचित्तेण । पक्खित्तमुत्तरीय काऊणं मडलागार ॥७७॥ सम्मुहमिमस्स तेणावि तस्सणा चेव घेत्तुमुक्खित्त । सुडादडेण नहगणमि जाओ य रोसधो ॥ ७८ ॥ त च नियमुत्तरीय गहिय दच्छत्तणेण छलिऊण । कुमरेण तो अरुत्तुद्धो विविह कीलाविउ लग्गो ॥ ७९ ॥ सुडग्गभायफसणवट्टियवेगस्स तस्स वणकरिणो । अणुमग्गगामिणो खणमह कुमरो धाविओ पुरओ ॥ १८० ॥ तत्तो कुलालचक्क व भामिओ जाऽऽसम पर पत्तो । तत्तो थमिय तद्देसचारि मयजूहमइमहुर ॥ ८१ ॥ कुमरो काग- लिगीएण गाइउ राइउ च जा लग्गो । निसुणइ ताव करिंदो निप्फंदो [1]तडुवियकन्नो ॥ ८२ ॥ दसणग्गलग्गपयपकएण पामुक्सय- लतासेण । पट्ठिपएसे कुमरेण से कओ आसणविलासो ॥ ८३ ॥ पडिपुन्नकोउगो अह सणिय सणिय समुत्तरेऊण । लग्गो गतु

[1] तडु विगय D ।

पडिपहपयम्मो मूढसिसिपम्मे ॥ ८४ ॥ तत्तो विसंठुलगाई परिब्भमंतो गईए मग्गम्म। तरेसठियपम्मसुसरओ नीहरंतीए ॥८५॥
तस्सठियं पुराण पडिपणिहि तडमिसिमिसेल। जम्मनिरुओ मणसेगमइ पासइ कुमरो ॥ ८६ ॥ तं पिच्छिरऊण संजायकोमइले
मिरिमियाई कम्मो। जा तं ताव निवण्णइ वंसकुडंग महागुमिडे ॥ ८७ ॥ पासपरिसुक्कसेवालरम्मो तो कोओण तं पमा। बाहेइ
वसपाउऊीए तीए कोमलयमासरओ ॥ ८८ ॥ पविवं वंसकुडंगे तं हरि वरतरुरुक्खमागंमि। पडिपुणवंसमंडवधरिसं तह कम्मणास
रसं ॥ ८९ ॥ रुद्धदुम दुरुवेठुमेय निद्दिष मए वमेरिसंगेरे। निहुय बवपउपगद्देवि कोवि पुरिसो वि चिंतेइ ॥ ९१ ॥ बाम्हे
पत्तेय क्लिसंतराई दिट्ठं कमलसुमणं। पायवभूमपालं विकासंसाहणकमलं ॥ ९१ ॥ अविसमरं से अपिई आय हाहा कओ मए
विग्यो। एयस्स ता विम्मेयो होज्ज मे पडिविहाणं वि ॥ ९२ ॥ इय पुरमाणहिययओ वा परिसव्वइ निहासए ताव। कयममस्स
पम्मं वहसइरे ससिणमयणं ॥ ९३ ॥ तत्त कमेणाऽऽसाओ, भूमीए सप्पमीए पेक्खेइ। एगो कमलकलिंग कम कमलगलकमलहिं
॥ ९४ ॥ सिवताएसहिं तीसे रसणसइ मुहमपलस्सा पसिय। मग्गे पविमाइ जेण तापि दीसंति वेदिं दिया ॥ ९५ ॥ कुमरो
वि तीए दिट्ठो कमुदुमियविमायवं कम्म। मुद्धा सा तेण तुमं का सुंदरि! एत्थ किं वससि ? ॥ ९६ ॥ सयलसयलसंगामए
तीए परिवेपिभं महासका !। मग्गो महसुरंतो भणसु तुमं ताव तो भणइ ॥ ९७ ॥ वेयाणगामिओ मुणसु वंसरायस्स वंसए
चोडई। पुत्तो कमलसारो समरावो रामवंसंमि ॥ ९८ ॥ कम्मपरमंतरमेव हरिससमिसेन पूरिअपिउपुत्ता। सयगुणापरोमंच-
वंचुमंचिसपरी च ॥ ९९ ॥ कोमलकमलपुरओ तत्तो च सा तस्स रोविरं कमम। कलकलमहमरसमिमेव तेणुमणं कार्ड
॥ २ ॥ कमलसरोजमासामासिय प मा कमसु सुणसु! कमुमसरं। कमसु बाहुहिमेपसस रोहपम्मासस मे हेउ ॥ २ १ ॥ परि
कुसिय मयकसमिय सा मणइ कई कुमार! हु चेय। सुकमीरेषीए सहोयरस्स एतु पुप्फभूमस्स ॥ २ ॥ गरवरुम्मो भूय
हुमय चेय विम्मय वविसमागमीए। मह विमाहस्स विसे वा बंधि दिया पकमपणे ॥ ३ ॥ पुक्विमिमि दीविपाए माणाभिसाई
पीमणी पा। विज्जहरऽऽरमेयं केयावि हुई समाणीय ॥ ४ ॥ वंचुमिरइमिमकलमलसा चेय ताव चिहुमि। ताव तुमं य

वितक्किय छिरन्नवुट्ठीसमो सहसा ॥ ५ ॥ कत्तो वि आगमो मज्झ पुन्नजोगेण जीवियव्वासा। सपन्ना तेण पुणो वुत्तासो कत्थ महसत्तू ॥ ६ ॥ जेण परिक्खेमि वल तस्साऽइ भासिय तओ तीए। दिन्ना मे विज्जा सकरिंत्ति तेण पढियसिद्वा ॥७॥ भणिय च तुज्झ एसा सुमरियमेत्ता भवित्तु परिवारे। सहियाईण कज्ज काही पडिणोयरक्खं च ॥ ८ ॥ साहिस्सइ य वइयर मज्झ सया सुमरिया तए एसा। नामेण नद्दुमंतो, विक्खाओ सो य भुवणमि ॥ ९ ॥ पुन्नेहिं समहियाए, मह तेयमसहमाणओ सतो। विज्जासिद्धिनिमित्त म मोत्तुमिममि पासाए ॥ २१० ॥ भगिणीण जाणणकए विज्ज जाणावणि च पेसित्ता। वसकुडगीगहणमि सपय सो पविट्ठो त्ति ॥ ११ ॥ म परिणेही साहियविज्जो अज्ज च सिद्धिदिवसो से। सिट्ठ कुमरेण तओ, जहा हुओ सो मए अज्ज ॥ १२ ॥ हरिसूससियसरीरा सा भासइ सुट्ठु सुट्ठु ते विहिय। ज तारिसाण दुन्नयपराण मरण चिय पहाण ॥ १३ ॥ गधव्वविवाहेण परिणीया तक्खण पणयखाणी। तीए य सम स ठिओ जा काल कचि ता निसुओ ॥ १४ ॥ सवणाण रसायण-सारसोदरो सुदरो य उल्लसिरो। दिव्वविलयाण सद्दो, पुट्ठा सा तेण किमियति ॥ १५ ॥ एआओ ताओ तुह अज्जउत्त ! सत्तुस्स नद्दुमतस्स। भगिणीउ खडविसाहनामिगाओ सुरूवाओ ॥ १६ ॥ तस्स विवाहनिमित्त घेत्तु उवगरणमागया एत्थ। ता तुब्भे थेवमवक्कमेह लहु एय ठाणाओ ॥ १७॥ जाणामि भावमेयासिमत्थि नत्थि तुममि अणुराओ। जइ होही ता रत्तं, पडागमुवरि पचलिस्स ॥ १८ ॥ अन्नह परिपडुरमेवमेस तीए विइन्नसकेओ। थेवाए वेलाए धवलपडाग परिचलति ॥ १९ ॥ दट्ठुणमवक्कतो तओ पएसाओ गिरिनिगुजमि। पत्तो दिट्ठ च तहिं सरोवर गयणसुविसाल ॥ २२० ॥ ण्हाओ तत्थ जहिच्छाए न्छिन्नपहलग्गसव्वसतावो। अग्घाइय वियसियकमलसडअइसुरहिगधभरो ॥ २१ ॥ तीरुत्तिन्नेण पलोइया य सरपचछिमुत्तरे भागे। नवतारुन्ना उन्नयपओहरा कन्नगा एगा ॥ २२ ॥ तफालाऽरोविय चावदडमुक्केहिं वम्महसरेहिं। सल्लिज्जतसरीरो जाव पलोएइ त ताव ॥ २३ ॥ धवलेहिं सिणेहसमुज्जलेहिं नयणेहिं त पलोयती। चलिया तओ पएसा कुमरेणमिम भणिज्जती ॥ २४ ॥ "अलसवलितै प्रेमार्द्रार्द्रैर्मुहुर्मुकुलीकृतै। क्षणमभिमुखैर्लज्जालोलैर्निमेषपराङ्मुखै ॥ २५ ॥ हृदयनिहितभावाऽऽकूत वमद्भिरिवेक्षणै. ।

कमण सुरूवी कोउवं सुणे ' त्पयउव पिओरेण्पउे ॥ २६ ॥" तत्तो मुहुत्तमेत्तेण पेहिया पेसिया इमीए तहिं । पत्ता समग्गियं
सयणकुमाइकोमाणमहप्प ॥ २७ ॥ तवोवं पुण्यपि य जमपि सरीरसंठियंगोमो । मणियं च तीए जा मा सरपेरंते पए हिणु
॥ २८ ॥ धवोसयाणमेवं तीए पहिय तुणं त्ता मणियं । मइसम्मुई हम तप्पउप ' म्सो महायमाणे ॥ २९ ॥ जह मए पिरणे
विणिरे जागम्भव निप्पमस्त तइ कुमरु । ता णू तत्त तुम्मे मीओ वो मंतिणईमि ॥ ३० ॥ मयकियपयरणममम मणिओ
मवी य तीए जइ एसो । तुह सामिणो सुप्पम पणिओ सिरिकंपनामाम ॥ ३१ ॥ ता तुम्मो मइणमेण णिहिये मरेण सणिरेण ।
वीयमिमे कमणमयणमुमि समुणाए सूरे ॥ ३२ ॥ मीओ रमो पउमपुरस पासमि ठेण सो पहुं । मनु(मु)हिमो विहमं पुरंमि
मइ भाउण वस्स ॥ ३३ ॥ सुहो पुत्तं सामिणो य ठेणपि जहोचियं तसो । मुणुतरमसे माणिओ य जइ तुम्हमगहेमि ॥३४॥
नामं सिसिहुसामपकिण्णं कारं न तीरए झिणि । सिरिकंताए पाणिगहणे वा चीरा इणामि ॥ ३५ ॥ सुह दिमिमि जिणो मीगाहे
पुण्णिमा जइ नमइ । सिरिकंता मइ पणामिणा चि तं मण्णु सिमासि ॥ ३६ ॥ सिवनमणपहापहकरसंगुरजिमियारए मन्नइ एमा ।
मम एस पिय परुमनाइप्पसरिपेहिओ संतो ॥ ३७ ॥ मइनिसमणियमिमं समरिसओ तह य मागरमाई । पइदिवसं इपूएं
इमंमि पुरंमि पविसेइ ॥ ३८ ॥ सिरिमहपमाए पमहणेण जाण परम्म पुत्तए । जवरि मई पिउणो परम्मा य मियजीवि
णामो वि ॥ ३९ ॥ पत्ता वासमामरं मणिय समवि पविरामणो । एए मयम मिस्सा बहुंवि तमो इहम्पेइ ॥ ४० ॥ जो मण
इएमे परणए (कोइ) मत्ता मोम्म ते मयइ । सो कहिपणो जप्पाइमस्स पहामि जं ओमं ॥ ४१ ॥ धम्मंमि दिवे पहुखेगइ
इमसिपेखिय इमं पवि । मेकिणु भाई पत्ता सरोवरं पत्त तं गरामो ॥४२॥ हिणुो तुमं धवरसमोहणि य मामिनामपयसमगो ।
इप एसो परमस्तो जो तुमए पुण्णिमो पासि ॥ ४३ ॥ सो सिरिकंताए समं विरयमुई निम्मरं पमूहंतो । पोसेइ माक-
मम्मंमि मासरे पविसमहो सो ॥ ४४ ॥ मियमसेण समेओ समीमरेसंवरहं इमिप्पमपे । पडीओ मिमामो सोनि तम मद्दि
समुपमिओ ॥ ४५ ॥ ईपमगाममयरिं पमकमसरोपपरंमि साइसवि । मामोहमो परएमू ठेणावि इमो तमो पोपि ॥४६॥ परम

घणसलिलधारा समूहसित्तव्व मरुत्थलाभोगा। उवलद्धपुन्निमाचंदकतिणो गिम्हकुमुय व्व ॥ ४७ ॥ किंपि अणक्खेय दाहपसममुवगम्म रोविउ लग्गा। सठविओ य कुमारो वरधणुणा सुहनिसण्णो य ॥ ४८ ॥ परिपुट्ठो कुमरो सुहय ! कहसु किं मइ तए विउत्तेण। अणुभूय तेणावि य कहिय सव्वपि नियचरियं ॥ ४९ ॥ वरधणुणा वि य भणिय कुमार सु(व्व)स्सउ ममावि जं वित्त। तइयाऽहं नग्गोहस्स हेट्ठभागे तुमं ठविउ ॥ २५० ॥ जलहेउ जाव गओ दिट्ठ च महासर नलिणिपुडग। घेत्तूण जल चलिओ तुहतिगे ताव दिट्ठोऽहं ॥ ५१ ॥ दीहपुरिसेहिं सन्नद्धबद्धकवएहिं ताडिओ य बहुं। पुट्ठो रे रे वरधणु ! कहसु कहिं बभदत्तो सो ॥ ५२ ॥ भणिय मए न याणामि तेहिं तो दढयर कसाहिं हओ। अइताडिज्जतेण भणिय जह वग्घखइओ सो ॥ ५३ ॥' एत्तो तओ भमतो कवडेण गओ विलोयणपहते। विहिया पलायसु मए, तुह सन्ना तो कया वयणे ॥ ५४ ॥ परिवायगदिन्ना चेयणाए सहारकारिणी गुलिया। जाओ विचेयणो तो मओ त्ति नाऊण परिचत्तो ॥ ५५ ॥ तेसु गएसु चिराओ गुलिया सा कड्ढिया मुहाउ मए। लग्गो गवेसिउ त सुविणे च्चिय केवल दिट्ठो ॥ ५६ ॥ एग गाममइगओ दिट्ठो परिवायगो मए तत्थ। सप्पणय पणमित्ता कोमलवयणेहिं आ(भ)पुट्ठो ॥ ५७ ॥ तेणुत्त तुह पिउणो वसुभागो नाम परममित्तमह। कहिय च तुज्झ जणओ पलायमाणो वणमि ग(म)ओ ॥ ५८ ॥ माया ते चडालाण पाडगे दीहराइणा ठविया। तद्दुक्खगहिलो य चलिओ कपिल्लनयरमह ॥ ५९ ॥ काउ कावालियवेसमासु पत्तो तहिं पवचेण। केणवि अमुणिज्जतेण पाडगाओ तओ जणणी ॥ २६० ॥ अवहरिया पिउमित्तस्स देवसम्मस्स माहणस्स गिहे। मुक्का गामे एगमि तुम्ह अन्नेसणपरोऽहं ॥ ६१ ॥ इहमागओ त्ति चिट्ठति जाव सुहदुक्खपुच्छणपयट्टा। ते दोवि ताव एक्को आगम्म नरो इय भणेइ ॥ ६२ ॥ भो भो महाणुभावा ! न किंचि तुम्हाण हिंडियव्वेण। जम्हा दीहनिउत्ता पत्ता जमसन्निभा पुरिसा ॥६३॥ ते दोवि लहु ताओ वणगहणाओ कहिंचि निग्गतु। महिमडल भमता पत्ता कोसविनामपुरिं ॥ ६४ ॥ वहिरुज्जाणे दिट्ठं सेट्ठिसुयाण मह तुल्लविहवाण। सागरदत्तो तह बुद्धिलो त्ति सुपसिद्धनामाण ॥६५॥ लग्ग कुक्कुडजुज्झं सयसाहस्सो पणो कओ तत्थ। निहओ सागरदत्तस्स कुक्कुडो अइसुजाओ वि ॥६६॥ इयरस्स कुक्कुडेणं विजाइजुत्तेण

वि भसतेण। भणियं वरधणुणा तो मो सागरदत्त ! जइ मन्नसि ॥६७॥ ता कुक्कुडस्स जोएमि कुक्कुडं मा न होज्ज विन्नाणं।
तक्कुक्कुडस्स कुक्कुडमेसो करे ताव ॥६८॥ जा जोयइ ता दिट्ठा मज्झेसु लोहसूइयाओ बद्धाओ। तो कुक्कुडेण मार्य जइ विसाओ
वइयरो मे ॥ ६९ ॥ सणियं समीवदेसे तस्सागंतूण कहियं तेण। मा पयडसु वइयरमखा ते पयच्छामि ॥७०॥ पच्छा(?)रस्स
तओ वरधणुणा भणियं न किंपि विन्नाणं। जइ कुक्कुडो न भग्गइ कुमरो जाणाविओ य तहा ॥७१॥ तेणावि कहियमेयं सूईओ
उम्मसमासमाइओ। आसंकिओ तओ पुन सो वेसूहो पराजिणिओ ॥ ७२ ॥ पडिकुक्कुडेण कुक्कुडस्स सो वि हारिमागओ
एवं। आया दोण्णि सरिच्छा सागरदत्तो तओ तुट्ठो ॥ ७३ ॥ तो दोण्णि मेहनिवसिरंमि आरोविउं रहे रम्मे। निययमंदिरपडि
वन्नी तत्तेण नेयंति तइयवि दिणे ॥ ७४ ॥ तेसु निसासिया आगओ य जइ एगया नरो एगो। गीओ व्वासे तेण वरधणू मासिओ
एवं ॥ ७५ ॥ जो सूइवइयरो जं पयंमि तुह कुक्कुडेण परिभग्गो। दीणारलक्खं जयो तस्स निमित्तं इमं पढिओ ॥ ७६ ॥ हारो
पत्तावणस्स मोक्खो पोत्तुमिय समप्पेउं। हारकरंडम्मइ सो गओ तओ कड्ढिओ हारो ॥ ७७ ॥ सारकमसहरकिरणुक्करो व्व
परिपिंडियकंतिसोहो। आसन्नामुक्कनिउणमिस्समयमुवाहजिओ य ॥ ७८ ॥ सो दंसिओ कुमारस्स तेण सिग्घं निमाउखवि।
दिट्ठो निम्मलमणो तोगलेसट्ठिओ लेहो ॥७९॥ आपुच्छिओ वरधणू वस्सस कम्म ! लेहिओ लेहो। सो भणइ कुमर ! को मुणइ
एवं कुसलपरमत्थं ॥ ९८ ॥ बंभदत्तसरिसनामं संविग्गे लोगे मए महीवस्स। एवं पडिवन्नंमि कुमरे मोक्खमाणो
॥ ८१ ॥ वरधणुणा वि स लेहो विहाडिओ पेच्छिया वरिं गाहा। अइविन्नसम्मकुसुमावईपरिरणी एयस्सावि ॥ ८२ ॥ परिचिंतइ
जाणि वर बंभेण संजोयणामसुवेण। जइवि तुमं चिय भणियं रयणवई मइइ मावेई ॥ ८३ ॥ वरधणुणो चिंतसंजोगमस्स मग
मण बेहमाणगो। सावम्मो बीयदिणे पव्वइय ठाणाय पुणा ॥ ८४ ॥ (मं १ ) कुमरस्स सिरे कुसुमे तहरकयं सिवित्त
बेह मणइ य। कुसल ! वासससस्सं पीयमु वी वरधणु मेइ ॥ ८५ ॥ परोवे तेण सम्मं किंचिवि सा मंतिउं तत्ति गया। तो
पुच्छेइ कुमारो वरधणुमेयाय किं भणियं ॥ ८६ ॥ हेसीसियसियवयणो सो साहइ वरधणू वाव गया। पच्छा एसा पडिवयणं मे

मग्गइ तस्स लेहस्स ॥ ८७ ॥ भणिय मए नहेमो लेहो निययभत्तनामको। रोमइ ना गरुमु तुर्म को गओ पंभदत्तो नि ॥८८॥ भणिय तीए सुण सोम। किंतु न तए पगामियव्वमिण। एत्थेव अत्थि नगरे रयणाई सेट्ठिणो धूया ॥ ८९ ॥ सा पाल्कालत्त शिय मह निद्धा जोव्वण ममणुपत्ता। तिजगनउअन्तम्गभिन्नस्स सकलभन्ति च ॥ २९० ॥ दिट्ठा दिणमि अज(ज्ज)मि, सा मए किंचि झायती। पल्हत्थियगुहकमला वामे करपल्लवे विमणा ॥ ९१ ॥ उासणिय पुगते पसत्ता सा मए जल्ह पुत्ति'। किं चिंतासायरलहरिहीरमाणव्व त भासि ॥ ९२ ॥ तीए भणियं भगवइ', नणणी स नत्थि किंचि ते गुज्झ। जं तुज्झ नो कहिज्जइ ता सुण एगगचित्ता त ॥ ९३ ॥ कुसुमउज्जाणे मह जेट्ठभाउणा तुच्छिनेण पगाए। दिट्ठो मए कुमारो कोवि सम किंतु कुसुम-सरो ॥ ९४ ॥ ण्हाए धम्मीए नाओ जह एस पभदत्तो त्ति। पत्तान्नद्धियपुत्तो कड्ढिओ य सगोरं मज्झ ॥ ९५ ॥ नप्पभिई मे हियय तत्तो नो सरइ मुत्तियाएवि। ता जइ पई न एसो मरण मरण मओ मज्झ ॥ ९६ ॥ ता पुणरवि सा भणिया मए जह धीरिम कुणसु वच्छे!। तह काहमुआम जह नपजइ चिंतियमिम तो ॥ ९७ ॥ जाया सजलण सा दिवसाऽज्जमागया मए भणिया। कल्ले मए य दिट्ठो कुमरो नयरीए मज्झमि ॥ ९८ ॥ सोऊणमिमं सा सहरिसहियया पए भणेइ ताए तुज्झ। भयव-इपसायओ मज्झ सुदरं होहिही सव्व ॥ ९९ ॥ किं पुण निस्सासकए सत्थ इम तुज्झिस्स पणव्वा। तास्स्स सम्पसु लेहं च वडुचले लग ॥ ३०० ॥ इय एस लेहगुत्तो हारो पेसू इरज्झिमत्ते। कुम्मिस्स करे दाउं सत्तरगाओ मए पट्टिओ ॥ १ ॥ इय लेहगयरो तो तीए कहिओ इगाणि पुण देहि। पडिवयण सो दिनो कुह नामंको मए लेहो ॥ २ ॥ जहा—सिरिविंभपाय पुत्तो वरधणुकलिओ निउत्तमाहप्पो। रयणाईरलित्तगओ कोमुइगिण पुत्तरंगंको ॥ ३ ॥ रयणगुणा ठविगमिम तुसंत मोउगुरूणयो कुमरो। जाओ रयणवईए उवरि अणिभालिताएवि ॥ ४ ॥

अन्नीय—"कुलसरणासि राज्यश्री, कुलस्य त्राहना। यस्य नृप निर्तिं न, नास्ति मिष निष्ठतम् ॥ ५ ॥"

अवरंमि दिसे पुरवारिपमो देसाओ वरपच्छुम्मरे । आगम्म मज्झ नो इह तुम्हमकहुाणमुपियं ति ॥ ६ ॥ पम्हा कोसकय
इम्म दीवेण गवेसणमम्म तुम्ह । इह पुरिसा पेसविया कओ य पुरसामिय्य कज्जो ॥ ७ ॥ सव्वत्तो जगह गवेसणमि इय तुम्मए
कओ गाओ । तो नायबहुरेण सागरदत्तेण भूमिहरे ॥ ८ ॥ संगोविया तुवे ते पच्छ रयणी दिसाओ तिमिरेण । आऊरियाए कम-
कमेणुम्मीलमणेण ॥ ९ ॥ भणिओ य सेट्ठिपुत्तो कुमरेण जहा तहा कुणसु अम्हं । जह पत्तो मिमामवं सिग्घइ चहुमेव एवं
च ॥ १० ॥ सोऊण सेट्ठिपुत्तो सागरदत्तो विचिन्तओ नयरा । वसहीओ भूमगा लिम्पि वि बेहं गया ताव ॥ ११ ॥ ताव
एत्थं संठविय कहवि तो दोवि गंतुमारद्धा । तीए चिय नयरीए वाहिं जलगामकयसमीवे ॥ १२ ॥ पच्छापाहणयरासठियमए एगए
तक्खमट्ठिमए । मायाविइपहरपसरिय—पवरपसमसचाय ॥ १३ ॥ दट्ठुं सायरमब्भुट्ठिऊण मणियं विपाव कि तुम्हे । पत्ताऽऽगया
चउरं निसुणिऊण भणियमेयहि ॥ १४ ॥ भद्दे ! जे अम्हे सा वि मज्झ मित्तवंसवज्जरपडुणो । अम्हेयसुवण्णं ते कहेसु ता तीए
पडिभणियं ॥ १५ ॥ एत्थेव पुरे सेट्ठी धणधरो नाम मारिया तस्स । धणसंचयाभिहाणा जाया कुणईए तीए अहं ॥ १६ ॥ अहु
अणुसरि पुत्ताण पच्छ कोमलमरए मे को वि । तस्सइ वरो तयणुं बाणरस्साऽऽरणयं विहियं ॥ १७ ॥ तेण वि मह मणियए
अत्तेण पयसरएण होऊण । भणियं वच्छे ! जह तुह वरमो यंदी वरो होही ॥ १८ ॥ नामेण वंभदत्तो मए कहं पहु ! विपक्खि-
कओ सो । मणिरमणेण पत्तं कुरुकुरुजुलंमि जो सिट्ठो ॥ १९ ॥ पुरिसस्सायरवरमसीतिम मायसे तुह एमेही । सो वंभदत्तनामो
इह दुंकरुकुलमम्मओ ॥ २० ॥ तत्थ ठिया अह रयणीए जणा पव्वागमिस्सइ तवंपि । कहियं दारावहि तुम्ह पेसियं पहु !
मए चेव ॥ २१ ॥ इय निसुणिय तुट्ठो मह रयणाए कयवरए पसा । अम्ममहा पहवरे सपहरणो मज्झ धम्मीओ ॥ २२ ॥
इय परिमाविय तीए तूरं रमो विसमिय ता वि । पहमारुहियं पुच्छइ गतव्वसिओ कओ तुम्हे ॥२३॥ मणियमिमाए सामिय !
मित्तसह मायमपुरिम मह पिअओ । माया धम्मपिहाणो वणिपुत्तो सेट्ठिपयपत्तो ॥ २४ ॥ विजयवहरेयरो सो तुम्हं मज्झ य परमि
संतोसो । महंतो गणसमयरेण परमि निवेसिति ॥ २५ ॥ ता तत्थ गओ कीरह वद्धुत्तरं तुम्ह धणए जं तं । कुणह त्ति पच्छो

[illegible] ॥ [illegible]
तस्स मयुर [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २७ ॥ तओ [illegible]
[illegible] ॥ २९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥ तओ [illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible] ॥ ३८ ॥
[illegible] ॥ ३९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४४ ॥ तओ [illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible]

पेच्छए कुमरसीहो। पुट्ठो बहुणा महाभाग[1] किं समुव्विग्गचित्तोऽसि ? ॥ ४७ ॥ परिपुच्छिय मयणसहिओ सो भणइ मई सहो-
यरो भूवो। कोऊहि समं संगममत्तो कम(य ?)मइ तत्थ ॥ ४८ ॥ पत्तो विमलयसेहरमेहो कुमरो गवेसणं तस्स। गोयममणि
भणियं, तेण वओ गामपमुहेसं ॥ ४९ ॥

" गरुयाणं चिय गुरुयंमि आवया हुंति न उण इयराण। गहकल्लोलगसणं ससिसूराणं न ताराणं ॥ ५० ॥ "

यथा—कहिं सुपुरिस कहिं, पेच्छइ कहिं मइ कहिं बहुयाइं। कहिं कुमर कहिं कोह रतं सुयण विसूरेहिं पुणो ॥५१॥

मा कुणसु एत्थ खेयं, जइ पव्वइए इमंमि सो होही। तो अम्मिही पुणं च एसा भणवी वसे मज्झ ॥५२॥ तो पेसिय
निययपए समयतो भागयहिं तेहिं समं। सिद्धं बहुा न भगेहि कोवि भाससेइभो तत्थ ॥ ५३ ॥ वेयसमिकसुमेतो पत्तो पवीयंहि
परिगय पुणं। कुमरस्स कसाइ वर्तु यमजीवासंसिहो विसिहो ॥ ५४ ॥ वसयण्णाऽऽकम्मणागयविम्हरेओ स सोइयं
सुणिरे। अह अवि विवससेसे गमेइ रयणीए पयाए ॥ ५५ ॥ सुत्तो रयणाइए सममेस निस्साए वाममेयाए। बोराय तत्थ
पसी पहिका पत्तो च इमरेण ॥ ५६ ॥ दूराऽऽगयम्मिलवमुणा सरेहिं कमुवविधा मया तेसिं। मग्गा पवंकनयेण चूणिय गइ
पव्व गवसे ॥ ५७ ॥ गामपमुख समागमेण एएमभिवंदिओ पवमसारं। को नाम इह सरिच्छो जणमणवीसमिरे पुरिसो ॥५८॥
पत्तो पयाससमए गामपमुं पुच्छिकण परिपक्तिओ। वणनिहसम्मुहं नसुरस्स सहिओ गओ भावि ॥ ५९ ॥ सामि तत्थ विच्छिम
विकसितेई अग्गिपु रयणाई। मयरम्मेवरोसमि पविसमामेच्छमेयाम ॥ ६० ॥ सिद्धसुमहुयंमवनिविहुमधिकुचितकमसुयं। कवड-
एऐमो[1]मुणसमम्मे पेयिठसमाई ॥६१॥ भासोह्यजो विसयमविविमसुपुर्सी विमसताओ। रो तत्थ भंगमसो सुहुम कुमारमेगारिं
॥६२॥ भणियं किं पूरणाणं सहासव रयसयारममीच। मयसमुरुवचितसमबुमिस्स परिसमिसमुचिवे ॥६३॥ भयिमभिमिना कमो कवे

1 कहुंमिविस्तोसस B D।

सो जो पत्तो मए भणइ तुब्भे। किज्जउ आसणगहण पसायमम्हासु काऊण ॥६४॥ इय विन्नत्तेण कय आसणगहण कओ य उवयारो। सायरमाहारपणामणाइओ तदवसाणमि ।६५। भणिउ ताओ पव(वि)त्ताउ अत्थि एत्थेव भरहवासमि। वेयड्ढो नाम गिरी झरतबहुनिज्झरजलोहो ॥६६॥ तत्थ य दाहिणसेढीमडण सिवमदिरे पुरे अत्थि। जलणसिहो महीनाओ विज्जुसिहा नाम तस्स पिया ॥६७॥ दो धूयाओ अम्हे जेट्ठो भाया मे नट्टुमतो णे। जणओ कयाइ अम्ह चारणमुणिदेसण सुणइ ॥ ६८ ॥ तायस्स वयसेण अग्गिसिहेणऽवसर लहेऊण। परिपुच्छिय जहा को भत्ता एयाण बालाण ॥६९॥ भयव ! होही भणिय च तेण एयाउ भायवहगस्स। भज्जा होहिंति निवो निसमिय कसिणाणणो जाओ ॥ ३७० ॥ एत्थावसरे भणिओ अम्हेहिं ताय ! एस ससारो। एयारिसो जिणेहिं कहिओ अलमित्थ विसएहिं ॥ ७१ ॥ दारुणपरिणामेहिं ताएण मन्निय इम सम्म। भाउगवज्झहयाए विमुक्कनियदेहसोक्खाओ ॥ ७२ ॥ तस्सेव मोयणाईणि चिंतियतीओ जाव चिट्ठामो। तावऽन्नदिणे पुहवि गामागरसकुलं तेण ॥ ७३ ॥ दिट्ठा भमंतएण अम्हाण भाउगेण पुप्फवई। तुह माउलस्स धूया कन्ना तीए हरियहियओ ॥ ७४ ॥ हरिऊणमागओ तीए दिट्ठितेयमसहतओ गओ विज्ज। साहेउ वसकुडगयमि ज पुण इओ उवरिं ॥ ७५ ॥ त भवओ नाय चिय तुम्ह सयासाउ तमि कालमि। आगम्मसामपुत्त, पुप्फवइए इम भणिय ॥७६॥ पंचालसामिपुत्त, पइ पवज्जेइ तुम्ह जो भाया। सो अलियखग्गवावारणेण इमिणा सयं नीओ ॥७७॥

" आपदामापततीना, हितोऽप्यायाति हेतुता। मातृजङ्घाऽपि वत्सस्य, मेढिर्भवति बन्धने ॥ ७८ ॥ "

तो सोयनिब्भराओ, वहिरीकयअडवि अतरालाओ। जा रोविय पवत्ताओ, ताव अइनिउणनयणेहिं ॥ ७९ ॥ पुप्फवईए सनोहियाउ तह नट्टुमतवयणाओ। विन्नायवइयराए, भत्ता एयासिं बभसुओ ॥ ३८० ॥ होहित्ति तहा भणियं न वियप्पो कोवि एत्थ कायव्वो। सुमरिज्जउ मुणिवयण मन्निज्जउ बभदत्तवई ॥ ८१ ॥ तव्वयणाऽऽयन्नणओ मन्नियमम्हाहिं साणुरागाहि। तो रहसपरवसाए तीए चलिया सियपडाया ॥ ८२ ॥ तो तह य कयसकेए विवरीयत्तणमुवागए सतो। अन्नत्थ कत्थइ तुम पउत्थमन्नेसमा-

भीओ ॥ ८३ ॥ भूमीयलम्मि रिमाणिपओ ठि(वि)याउ म य दिट्ठो । मए य तुमे विसालाओ कय भगइ समागओ ॥८४॥
वरियविसपुत्तजुत्तकुसुमियम्मसवित्तमिहुणओ । जायं तुज्झ सिणेहम्मसहुणा भणइ सुरसियाणे ॥ ८५ ॥ ता चत्तिपयक्कपत्तकुसुम !,
तुमं महायसा सुमरिऊण तदा । पुप्फवाइए वसवरम्मम्माम समीहियं कुणसु ॥ ८६ ॥ तो पमयरसवसाओ भाओ विवाहिऊण
समाओ । एवीए वासि सम कुओ पवे पमयंमि ॥ ८७ ॥ पुत्ताउ वइ समीवे पुप्फवाइए विणीयरूवाहिं । ता ठायव्व जा अम्ह
रक्खणओ सिवंमेइ ॥ ८८ ॥ इय भयाओ वि वभंसिऊण तामुं पच्चासु पासाई । जाव पलोयइ पायवपवमिह सो किंपि या
निया ॥ ८९ ॥ सिविणम्मेएण तओ मूले भाया इमा कया पवि । विस्सारंतीहिं मयमसहा इमं हरियकंठं ॥ १९० ॥ जायं सव्वं
वइ सुमरिऊण एवं वमेइ रयमाइ । सम्मेसव्वसमाममसम्मुहमवसोमए न पयं ॥ ९१ ॥ तं पुप्फम्मि पवत्ति एवं विवित्त य
मेइयाउ दिसा । म य भेई सम्मविओ ठिओ सरोओ सयं पेय ॥ ९२ ॥ सम्मेवाओ मणो महापाठे य परिसयइओ य ।
पत्तो पुरिसो परिपुच्छिओ य मो मे महाभाग ! ॥ ९३ ॥ पवंमिह सेवरस्स मस्से वा वज्ज तए दिट्ठा । वाम वासि मर्मनी इह
पुरपरिसरप्पसंमि ॥ ९४ ॥ तेसुवं मवाठे किं पुरय होरि तीए वामंति । भणिए सुमरेण भमेइ सा मए मए । रोवंती ॥९५॥
सिट्ठाअरण्णघमय वासि तुमे पुच्छिय कुओ वेइ । किं पायवं इमस्स य गोपस्स वडि व गेयव्वे ॥ ९६ ॥ वडिइयमिमीए गमार
गिराए किंची निपाभिय ताहे । भणिय वाउ मम विय ते पुच्चि दुहिणिया होमि ॥ ९७ ॥ तीए विय पुमरिऊस्स साहियं
सव्वं य सविसम्मि । भणिय तेण तुमे पहुगावेसिओ म जम दिट्ठोऽसि ॥ ९८ ॥ ता सुरयमिह जावं जं मिसिओ संपयंति सो
भीओ । संहिस तस्स गेहे कओ विवाहो य वित्थरओ ॥ ९९ ॥ एयमयंमि वसीगयाओ जा गमेइ दियसाई । ता वरयसुम
रमणिओ समागओ वग्गियं मोर्म ॥ ४ ॥ मुंजंति वंमयाई वंसप्पभेयसंपट्ठिओ तवाई । विव्वागियं वमयव वरपत्तू तस्स सं
पत्तो ॥ १ ॥ मणइ निवेइयाउ मोसमरिवे पूयणेसओ पत्तो । पउवेओ भूयरपत्तसम्मिमओ रायवरविरायम ॥ २ ॥ भणाइ मोव
मसुयवियम्माणमिह वस्स तं वमोम्म । सिवरास मवे पवम्म वमम इवंमि यरयमइ ॥ ३ ॥ मिउं सुमरख तवं भोयवसिवि

उत्तण्हिं पुरिसेहिं। बाहिं विणिग्गओ जा ता सक्ख बरधणु नियइ ॥४॥ किंपि रसतरमपुव्वमेव सव्वगमुव्वहतेण। आलिंगिओ सव्वगमेव तोसेण तो भणिय ॥ ५ ॥ " द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात्। आनीय झटिति घटयति, विधिरभिमुखीभूत' ॥ ६ ॥ " कयभोयणकरणिज्जो य पुच्छिओ तेण वयस ! तुह। वोलीणो कत्थ इमो ठियस्स कालो भणइ ताहे ॥ ७ ॥ गहणमि तमि रयणीए, तीए तुम्हाण सुहपसुत्ताण। एगेण पिट्ठउ धाविऊण निविडे कुडगमि ॥ ८ ॥ चोरपुरिसेण मज्झ बाणो बाढ निवेसिओ देहे। तग्घायवेयणाए अमुणतो महियले पडिओ ॥ ९ ॥ उवलद्धचेयणो तो तुम्ह अवाए बहू निरिक्खंतो। गोवियनिययाऽवत्थो ठिओ तहिं चेव वणगहणे ॥ ४१० ॥ वोलीणमि रहवरे तमतरालमहपायचारेण। सणियं अवक्कमतो, पत्तो गामतर तत्थ ॥ ११ ॥ जत्थ निसाए निवसिया तुब्भे गामाहिवेण परिकहिओ। तुह वइयरो विचित्तोसहेहिं मह रोहिओ य वणो ॥ १२ ॥ तत्तो ठाणे ठाणे, तुम गवेसतउ इहाऽऽयाउ। भोयणववएसेण य, दिट्ठा तुब्भे मए इहइ ॥ १३ ॥ चिट्ठंति जाव निव्वुयचित्ता विरह खणपि असहंता। तावऽण्णया परोप्परमालावो एरिसो जाओ ॥ १४ ॥ जह कालो केवइओ गमियव्वो मुक्कपुरिसगारेहिं। किंचि इओ निग्गमणोवाओ अणह उवलभामो ॥ १५ ॥ ता महुमासो पत्तो वम्महपहरिज्जमाणसयलजणो। आयड्ढियचदणपरिमलेहिं मलयानिलेहि सुहो ॥ १६ ॥ तत्थ पवत्तासु पुरीजणाण नाणाविहासु कीलासु। धणविच्छड्डुणविडवियकुवेरनयरीविलासासु ॥ १७ ॥ सुमहल्लकोउहल्ला ते वि कुमारा गया पुरुज्जाणे। दिट्ठो तत्थ गइदो अमदसंदंतदाणजलो ॥ १८ ॥ भूमिनिवाडियमिंढो निरंकुसो सव्वओ परिभमतो। रभारामनिभा(समा)ओ जणकीलाओ विलोलिंतो ॥ १९ ॥ हल्लो हलए वट्टतयमि कुलबालिया भउब्भंता। गहिया एगा तेण करिणा करुण विलवमाणी ॥ ४२० ॥ दिट्ठा सा तेण गइदथोरकरगोयरा कुमरेण। उव्वेल्लमाणकोमलबाहुमुणाला कमलिणि व्व ॥ २१ ॥ विलुलंतकेसपासा भयतरलनिहित्तसयलदिसि नयणा। नियरक्खमपेच्छती सुमरियमरणतकरणीया ॥ २२ ॥ हा माइ माइ ! गहिया रक्खसु करिरक्खसाउ म तुरिय। चिंतियमन्न तुमए विहिणा अन्न समाढत्त ॥ २३ ॥ तत्तो कुमरेणुद्धुरकरुणारसपरवसेण सहसत्ति। अहिधाविऊण

पुरओ सवीरमओसिओ स कवी ॥ २४ ॥ रे दुट्ठ[1] करिसावयकुमार ! संमंवसुवहमाहणेण । निविण सिपयस्स किं न कम्मिओ
सूहमयस्स ॥ २५ ॥ जइ कुमार निविण[1] सरणविहीणस्स निसरणाहाय । एत्थाए मारणायामो अत्तुलनामोऽसि मायसो ॥ २६ ॥
सामुंसरनिट्ठुरसरसरिसमसरिसमविवरं । सुणिऊण कुमरपत्ती तस्साभिमुहं पसरेपह ॥ २७ ॥ मोत्तुं से वाणं, रोसारुणनयण-
जुयलजुयपवणो । कयइ कुमरोऽभिमुहं उक्खणुओसिओ संतो ॥ २८ ॥ तइ विमुक्कतुमणे गहीरकुमरसरिसनहविवरो । वीरप-
सारियहत्थो कुमरपुरुपदेव सो पत्तो ॥ २९ ॥ कुमरो वि तस्स पुरओ ईसीसियवत्तयरो पाय । करपल्लवनिवेसियपवियसाणि-
विसिमपत्तासो ॥ ३० ॥ कमसविय कुमरगमाइसयपसरतमोसणवेगो । पसेस पाविओ इयमई पसो पावइ गाउंतो ॥ ३१ ॥
निपडिसममन्तसओ कुमरेणाविय सर्म तहा मीओ । चित्तविहिए व्व जाओ जाए महाकुंजरो स वरो ॥ ३२ ॥ उत्तमहमिसियमं
कुसहत्थो करिवंमरं समारूढो । कुमरो मंगलपडमेयणोहिं महियमहिं दीसंतो ॥ ३३ ॥ तह महुरमईं गिराहिं पवत्तो सो कवी जह
रोसो । तस्सोसरिओ भावम्मयमहीणो जहा विहिओ ॥ ३४ ॥ उप्पडिओ वयमरो कओ परक्कमनिही इसो कुमरो । अेम वि
मम दुरयाण समयरवंमि पक्कमओ ॥ ३५ ॥ ममवि वरवरए एय परिसमसमगो वीमि । वेमे समागाओ निवइ
कुमरगुणसमिसस्सं ॥ ३६ ॥ विम्हियमयो व पुव्वम धरे एसो कस्स विलइओ पुत्तो । वरो धम्मइयरजाम्मगम मविमेय मो कहिओ
॥ ३७ ॥ निसिरमसाओ अहियं जायं कम्मसंतओ संतो । नेह मिओ मिसमवणे कयवइ ममस्सरईणि ॥ ३८ ॥ सुत्तुसरमि रिणाइ
मदूसआव तेव कुमरस्स । सुपसममाघाउंमि व विहिओ पारिजमो ताणि ॥ ३९ ॥ कइयवत्तिमे मारसुरम्मइ पिहुंताम अम्नाम
पगा । महिय जागम्म कुमारमंसिरिं इव सम्मुबमइ ॥ ४० ॥ कुमर ! सिव होइव पुरे वेसममो माम सत्थवाहमुओ । पूय तस्स
सिरिमई सा प मए वम्मणसओ ॥ ४१ ॥ जारम्म पाविमा वा, कुमर वरिसमम्मओ जाओ तया । रविम्मपमुम्मा सा दुग्ग
वणमिमाय वयिसेइ ॥ ४२ ॥ सहसविय जीविपरावओ वि दे सारियमसरिसुम्म । वीमऽवसमोहओ एस्थ स पिमाइ सम्मजस्स

[1] कुमारसवाम्स ॥ कुमारणामस्स ॥ ।

पिय ॥ ४३ ॥ योलीणे छ्त्थिभग, नीया कए कहवि परिरणेण गिह। तत्थवि न मज्ञगाई देहठिइ काउगमिलसइ ॥ ४४ ॥ मुरियगुहव्व केवलमच्छइ परिचत्तचित्तवावारा। पुत्ति! अकडे व कीस गरिसं पाविया वमणं ॥ ४५ ॥ इय भणिए मा साहइ तुज्झ सव्व पयासणिज्ज मे। लज्जा गत्थऽवरज्झइ जइवि तहावि य भणामि अह ॥ ४६ ॥ रायमकुवाओ तओ करिणो नियपाणदाणओ जेण। परिरक्खिया मम तेण पाणिगहण जाइ न होही ॥ ४७ ॥ ता मे अयस्स मरणं मरणंति तओ निमामिउं कहिओ। पिउणो इमीए सव्वो वुत्तंतो तेण वि सनीवे ॥ ४८ ॥ तुम्हमई पेसविया थालमिम ता पडिच्छसु तुमंति। कालोयवन्नमेयति मन्निया सावि कुमरेण ॥ ४९ ॥ वरधणुणोऽमच्चेण वि दिन्ना नदाभिहाणिगा कन्ना। चिट्ठिय वीवाहजुग जंति दिणा वोन्हवि सुहेण ॥ ४५० ॥ सयलफलकमिसुणा उच्छलिया सव्वओ यिय पउत्ती। जह पचालनिवसुओ सत्थत्थ जयं उवळभतो ॥ ५१ ॥ काणणमज्झे विंझे जहा गइदो निरकुसो भमइ। वरगुणा धणुकुलनंदणेण अणुगम्ममाणपओ ॥ ५२ ॥ वाणारसिं गया ते अहऽन्नया ठविउ यहिं कुमर। कडगमिहाण पचालरायमित्तस्स पासमि ॥ ५३ ॥ गच्छेइ वरधणू ताए सो कमलागरोव्व सूरुदये। जाओ हरिसपरवसो विलोयणे तस्स पुट्ठो य ॥ ५४ ॥ कुमरपउत्तिं सेणावि साहिय जह समागओ इहइ। नियबलवाहणसहिओ निग्गओ सम्मुहो तस्स ॥ ५५ ॥ दिट्ठो कडएण निवाओ धमनामाओ निहितमेमेण। जयकुंजरमारोविय नियनामरवीइओ सतो ॥ ५६ ॥ पडिपुन्नचदमंडलनिभेण छत्तेण उवरि धरिएण। उभिनगाणवरिओ पए पए चारणगणेण ॥ ५७ ॥ सो नीओ नयरऽब्भतरंगि नियमदिरंमि ठविओ य। कडगाई निययूया पणामिया तस्स कडएण ॥ ५८ ॥ नाणाविह-रह-गय-रहवराइ सामगिगरप्पयाणेण। वित्तिओ वीवाहमहो पसत्थदियसमि कुमरस्स ॥ ५९ ॥ विसयसुहं सेवंतो जा चिट्ठइ ताव (ए) दूय-आहूया। धणुमति पुप्फचूला, कणेरुदत्तो य सपत्ता ॥ ४६० ॥ ताह सीहो नरनाहो मयदत्ताऽसोगचदपामुक्खा। नियनियवलेहिं कलिया मिलियाऽणेगे निवा तस्स ॥ ६१ ॥ जओ हि—" यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य, तिर्यञ्चोऽपि सहायता। अपन्थान तु गच्छन्तं, सोदरोऽपि विमुञ्चति ॥ ६२ ॥ " अहिसिंचिऊण सेणासामित्ते वरधणू तओ तरमा। दीहस्स पेसणकए कंपिल्लपुरंमि पेसविओ

॥ ६३ ॥ भणिओ य—" एसो विय जयगिरी पउमसूरामणी सुवण्णमओ। जो सीसे मज्झं, मित्त जयं करावेइ ॥ ६४ ॥"
जम्मतरं च गेण्हं, स पवणो ताव सीहमण्डन्न। कडगाइमरणमि तूणो सपिरिओ मगइ ॥ ६५ ॥ जइ सीहमहापओ तुण्हेमरि
बमरिसं परं पवो। जं एस पवतो तुम्भेहिं पुरस्सओ विहिओ ॥ ६६ ॥ पूलं तुण्ह म कम्मममसिय सीह समुस्सरंतमि।
पयमवितमओ भिमजमसीसविवसारिण्णविमण्डे ॥ ६७ ॥ ता एसो वि विमवइ पमसिओ भे इमोअ राओ मे। तसुरिसा विव
पवरे नरमि निमयच्या चेव ॥ ६८ ॥ पवज्ममडमिमडीभेमपवडमइसरपेसपसरेहिं। मिम्मण्डिओ स तूभो ताव य पेवाखमिव
धंमि ॥ ६९ ॥ ता मवा ताव पुरं पवित्तपयावाइवपारेहिं। सीहम रोहतं विहियं पदुपरमसमएम ॥ ४७० ॥ पयो अजुग
म्मिनो स पेमरत्तो नरिंदमायण्ण। पविसुरं दमइ नमेतवा संममसुम्मंतं ॥ ७१ ॥ तमभागसटिपाणं समजेयरि तमाम्म गुम
मम। जम्मोम्मपडिमसरजसंपरमसहाएण ॥ ७२ ॥ जइपोमविहिम्मजारयाम मीसपयाभमारताम। समनिरमवहमसहाम पूरम
घमरसमगम ॥ ७३ ॥ मीयमि उअइकमरगाणि हराभ्रहाणि आयाणि। अमोहमाणि पोणइ वि ममाय पदुपेसगराएम ॥७४॥
सीहमरेसु निम्मेयमाणस्सु पुरस्सरो होउं। मम्मंतो ममसुवावमपणो जीविभम्मसरा ॥ ७५ ॥ सीहो उम्पहियसुरमाइपुडओ
हयपि नमराओ। मिमरेसी मिअकममे ममकमिपभोमिसुमरिओ ॥ ७६ ॥ मिमाइंवि तपसरि समागयामि समेम ताम एवं।
सुमइपि ममम वायं इमसुरहं परिपमाणं ॥ ७७ ॥ पणो मुहुमित्त एउं मंतं पवमस विमपमस। पिमुवमम सीहो पमायिओ
पेमरसस ॥ ७८ ॥ पावसम्मसमेसम्मइपहिं सिरिमंसपसीहाम। पहुवि समरमरे मम्मेरमरे सुरगणम ॥ ७९ ॥ ममरविमेसमार
मिमममइम निसियममामरमइपोरं। परमारमम्मरगमामम मरमके पवे ॥ ४८० ॥ पवरसमहमाइम्मिममइ पंचममहिमंगयासमा।
ममममसिसेमं तेम पीमसीसं पमो छिमं ॥ ८१ ॥ गंपम्मसिमसेमरनरेहिं सुमाभी कुसुमपुठीओ। मुमं पडेसमाभ्रि मारएमो
इमिहमोहमो ॥ ८२ ॥ मपहो मम मगहसेसं कमलं मोमपेइ तइ पामो। पमिरमसुराम महिं मारडवमामि मचिमहो ॥ ८३ ॥
पमिमं च पेममिकि—

*कालुष्य कलयाऽपि मा क्व च नगान्माधान्न भोगभिय, मा नक्षत्रपतित्वमापदुदयं दोपाऽगमे मा गमत् ।*
*मा भून्मंडलखण्डनक्षतरुचि पश्चात्पय मा विधात्, श्रीचक्रीश्वर ! हु तथापि विदित सम्यक्कलावान् भवान् ॥८४॥*

कइयावि सुरवहुगुफिय व अइफारफुल्लमल्लेहिं । दासी सुदामगंड करमि चक्किस्स अप्पेइ ॥ ८५ ॥ तं जिंघतो महुयरिसगीययनामनाडयक्खित्तो । कत्थ य एय दिट्ठति ईहापोहं करेमाणो ॥ ८६ ॥ सुमरेइ पुव्वजाइ जह सोहम्मे सुराऽऽसि दो अम्हे । पुव्व च चउभवेसु जह जाया जमलदासाई ॥ ८७ ॥ इह कहमह स मिलिस्सइ सजीवणओसहीसमो भाया । इय अणिस झूरतो चक्की न जिमेइ न सुएइ ॥ ८८ ॥ सचिवेहिं पुच्छिएण कहिओ सव्वो वि पुव्ववुत्ततो । नरवइणा तेहिं वि मतिऊण भणिय जहा देव ! ॥ ८९ ॥ दासाइ भवुब्भासणपरायणा पायडा नियसमस्सा । वित्थारिज्जउ सव्वत्थ कहवि मा सोवि पूरिज्जा ॥ ४९० ॥ दुग्घडघडणमहुब्भडविहिवावारेण कहवि जइ नाम । इह खित्तुप्पन्नो सोवि होज्ज जोइज्ज व तुमपि ॥ ९१ ॥ अत्थि उवाओ एसो विसिट्ठिकारित्ति चक्किणा भणिय । पुव्वभवप्पडिबद्ध बद्ध एय सिलोगद्ध ॥ ९२ ॥

"आस्व दासौ मृगौ हसौ, मातङ्गावमरौ तथा ।"

भणइ निवो जो सोलसक्खर निक्खिवेइ पच्छद्ध । वियरामि तस्स सोलस दंतिसहस्सा तुरयलक्ख ॥ ९३ ॥ वालाऽवलाइवग्गो हालियवालिद्धियाइ सत्थो य । सव्वो पढेइ एयं पूरइ न हु कोवि अणुरूव ॥ ९४ ॥ इओ य—सुमरित्तु पुरिमताले चित्तजिओ पुव्वजाइमिब्भसुओ । पव्वइऊणं जाओ पढियसुयत्थो सुगीयत्थो ॥९५॥ [1]मुणिय [2]सुरोहिणा तेणमासि जह मह सुही सुरो । भरहे चक्की तव्वोहणाय पत्तो स तत्थपुरे ॥ ९६ ॥ तसपाणवीयरहियमि थडिले ठाइ झाइ परमत्थ । पढइ पुणरुत्तमेत्तो तमारट्टियनरो अद्ध ॥९७॥ सुणिऊणमिमाइ नियाइ पंच जम्माइं चक्किणा एसो । हु पाढिओ भविस्सइ, झडत्ति मुणिणा तओ पढियं ॥९८॥

[1] *झणिय पुरोहिणा तेणमासि जह मह सुही सुरो होही* D । २ सुरोहिणाणेण B ।

पक्ख॥...

'सम नो पढिम बाहिरम्मोस्साणं विमुक्कसे ॥ ९९ ॥"

इय चरियं चेमेण सो गयो बयहरिओ सिग्धं। चिरसिंसयणासे चारा सुमं पराइ बसरमिमं ॥ ५०  ॥ इय मुणिरम्मे पक्ख्यांपये हरिसभरसो ठंठो। पाजमणियो वामो तमो इयिमग्र सपबीपिहिं ॥ ५०१ ॥ सिमरे पतिसु पयं सुमिए बहुमा- पविदमो समी। या मिदिमो बमयं होसि तुमं कोवि कुरमई ॥ २ ॥ परम्मीसुमेसु इंपर परमेसरमम्मपा हमिस्साम्मो। मचि- पसिसेवं मुणिम्म पयमिभो महसेमाई ॥ ३ ॥ वत्तसरीरो पणा परमं पारियोसियं सम्मं। पमम्मेइ भए! पसेहि इ मुणि रमणिमो चेम ॥ ४ ॥ सुमपरे सुम्मणरपरिसंसपसेमंतुरो रसप। बाणंपयसमस्समनम्मो नमए मुणिं गंतुं ॥५॥ बम्माऽऽस्सी समणपासुपमो सिपसामुधीरेण। पारसा सम्मपस्स सिपस्स संसारमारस्स ॥ ६ ॥ सम बसारे सारे निस्सारे सावरे स्म संसारे। पाणाणहिं सम्मीमो बम्मो सारपि पमिहरइ ॥ ७ ॥

'जयसु दुरियदुरणहिं करेवइ पवहइ, जयसु समागमयमाममु सुमणाकर।
जयसु परिरिति परिवार पसतु पविसुवर, जयसु जयसु परिसणहिं पयसुभयर ॥ ८ ॥"

परिरम्मयस्सणं वायमं, ममति पम्मसमं। सम्मी समममसमी, समयविसेय एसमा ॥ ९ ॥ समपरपमसयोहिम- प्पय। रवं समपतयं परपाप स(उ)समियं होम ॥ ११ ॥ समसंदि पसपालं सार्थ संसारसारलं रपा।। पा सुमम सुमस मा हम सुमम सुपो म ॥ पममपो ॥ १२ ॥ सप परिसेसे सिमिदम वैरिमो पारियम सप समुता। सिमसुरपापरमसपेम सिम्पु पर संसोग पि ॥ १३ ॥ एसमपारं पा परिसम पपसमपम सोममु। सप मुणिम बम्मरमो सर्वकुमपाठे ममाममी ॥ १४ ॥

घेत्तु। एत्तियमित्तेणाऽहं कयकिच्चो तुज्झ दासो व्व ॥ १५ ॥

ब्रह्मदत्तः—वच्चेमि रज्जमेय, भोए भुंजेसि जइ तुम पिवासेइ ॥ १६ ॥

सुणयाओ को अन्नो नरवइ ! वंत

मुनि—मह वि न न आसि भोगा भवभीएण पर, परिच्चत्ता। किमत्थ ॥ १७ ॥

करपत्ते ते मुत्तुं पव्वज्जा किज्जउ

ब्रह्म०—इह पहु ! पव्वज्जाए, परलोए फलमभगुरा भोगा। व ॥ १८ ॥

नरसुरसुहाइ अणुसगियाइ इह किंसि पलाल

मुनिः—जिणधम्मो मोक्खफलो सासयसोक्खो जिणेहिं पन्नत्तो। ॥ १९ ॥

ता एसो च्चिय मोक्खो अन्नो मोक्खो पुण न वक्खो

ब्रह्म०—विसयासेवाहिं पहाणमेत्थ केवलमणगसोक्खं त। ता ससारो सारो इत्थीओ जत्थ भोगत्थ ॥ ५२० ॥

जइ सद्दरूवरसगधफासलेसोवि तत्थ नत्थि सुहो। एरिस मोक्खस्स फल इह जम्मे लहसि नरए य ॥ २१ ॥ मोहम-

मुनिः—मइ वंधवे वि पत्ते हत्थालवणपरायणे वि हहा। एसा सारगच्छी नरसारगाण गहणकए ॥ २२ ॥ तरुणीसु सरसवसमसरुहिं-

छावागुरिएण वागुरावि रइया भवारण्णे। चदअरविंदकुंदेहिं दिंति उवमाणमिह मूढा ॥ २३ ॥

रज्झारभरियखल्लासु। रज्ज पालिय पच्छा पव्वयसु अहंपि अणुचारी ॥ २४ ॥

ब्रह्म०—मह पढमपत्थणाए कयत्थणा सामि ! किज्जइ किमत्थ। पच्छावि दिक्खियव्वे न दिक्खचाय करेमिन्हि ॥ २५ ॥

मुनिः—तुह सजमे न पच्छा, विनिच्छओ निच्छओ मह एसो। सुमरतस्स वि त तुह किं पम्हुसियं विसयवसिणो ॥ २६ ॥ सुकुलागमाइसामग्गि-

चविऊण सग्गाओ, जं जाया दुक्खएण दासाई। विहियनियाणो नियमेण ,नायमूरीकरिस्सए

सगओ नरभवो इमो लद्धो। मा हारिज्जउ विसएहिं पायसोएण अमय व ॥ २७ ॥ परमपय सपत्तो

दिक्ख। इय चिंतिऊण चित्ते चित्तमुणि विहरए तत्तो ॥ २८ ॥ कयघाइघायसजायकेवलो विहरिऊण चिरकालं। सत्तवाससए

पक्खालियसयलकम्ममलो ॥ २९ ॥ ससारसारसोक्ख–सुलालसो बंभदत्तचक्की वि। तच्चित्तो तल्लेसो, अइवाहइ

॥ ५१० ॥ जत्थ वि सिणो एगो ममोह पच्चप्पियमो जिणइ। नियगस्स महाऽऽहारस्स देहि मे देव ! केणेपि ॥११॥ पणमइ
इमो महत्तं महसुकरमाइचिरेण जीरेइ। तुमए मएणं पसरंतवसिक्कमम्मइमुम्मायं ॥ १२ ॥ मन्निमं विएण कम्मक्कम्मीणो मोप-
वम्मवणे मि। व मम पाु पयत्थं माइम्ममकम्ममप्पेसि ॥ १३ ॥ सामरिसेण समयं निवेण मोयाविओ गओ सगिहं। एए-
वीए वीरमाणेण तेण वाओ मयुम्मायो ॥ १४ ॥ धगधिक्कम्मीवाय—वमोई वामि—सप्पुपस्सु रए। मम्मतरायसो विव वक्कि-
मतुय पगहो सो ॥ १५ ॥ वणुसमय वाए, विम्ने मम मपि पक्किमसारे। मिस्सियवरियं सिंधो मम्माहरवअरे वाओ
॥ १६ ॥ पुवरिपक्कंकरकेण किचममम्ममवं निवं वेसि। वंसेक्कमपारिओ गओ गिहाओ म पविसेइ ॥ १७ ॥ मइविम्मकोवमा-
मक्कराविम्मो वम्ममाणो नूणं। किंवइ ममाणयावं मम वकी मारियम्मो त्ति ॥ १८ ॥ एस वगिमिवस्सपु मयम सुसामिक्कमेण
मिस्साओ। रामम नेण मोक्कममक्कमममम्मो निहिओ ॥ १९ ॥ " पयपाणं कारिसाव सक्किआव मंकवारमाईहिं। म हु होइ
वप्पमिओ, वइ किर सम्मो व्वा विम्मो ॥ ५४ ॥ सुविरएसिवेरससपं पुण पुण पविवसमवियाऽऽहारं। वयो मम विहिवमक-
पुम्मवं मिस्सीहइ स दुं ॥ ४१ ॥ वक्किड्डु मणिहो सिहो लेभिमय व वमयाओ। पत्ते मयीए सिविपाहिं पूरम्मो सिंधो
॥ ४२ ॥ किवइ एस मविस्सइ निमम्मो मवेरसोमम्मो वाउ। मममरिमो पम्मम्मो तह वह वाओ कहिपकारी ॥ ४३ ॥ मम्मए
व एसवाईए वक्कड्डी पसूसो सिहो। मममकेण देमकोवे मम्मइ निसुस्सेण ॥ ४४ ॥ संवामेणं पगेण नेण सिविक्कम गोकि-
मम दुगं। मम्मवं निमस्स मिमसिक्कायं पंपोहयाइ व ॥ ४५ ॥ मह सम्मओ मिओसक्कएहिं दुविएहिं मंगरक्कोहिं। सिहो स
वम्मो हम्म मम्मओ मिम्ममप्पेइ ॥ ४६ ॥ मम्मम महारामो एवं चिंतेइ वि पुणाईमो। भेसंवि वम्म वम्मेण माम्मं नूणं
मेसंवि ॥ ४७ ॥ वो दिम्नेवि मम्मे मणइ सामि व सो वरं साम्मे। ममपामाहारेणं मोहम्मो वि मारेइ पुण विम्मो ॥४८॥ "
एव सहुडमो इमो मम दुमि मारविओ दिमो स वओ। सिरिरिमम्मवएम्म मसामडुमि मम मिमुविमो ॥ ४९ ॥ ममरे वि
पुरोहिमम्मइम्मसुए एमसिम सम्मे। दुंमाईयाममिराम्मरोसम्मंसेण सुवेण ॥ ५५ ॥ सचिवा मायमा वाइ मइ मरियमिसा-

लथालमप्पेह। दियलोयणाणि पाणीहिं जेण मद्देमि होमि सुही ॥ ५१ ॥ अइरुद्दज्झवसायं सविसाया जाणिऊण तममच्चा। गुंदय-फलाण थाल भरिऊणऽप्पिंति पाणिंमि ॥ ५२ ॥ मुहु मुहु परामुसंतो सतो सतोसमुव्वहइ अहिय। नयणदुगग्गाहीणं तक्कोडीहिं वि न तूसेइ ॥ ५३ ॥ न हु पुप्फवइफासेवि तारिसी तस्स आसि चित्तरई। थालफलाण फासेण जारिसी पावभावस्स ॥५४॥ त तस्स पुरो थाल ठावियमाभासए नरेसस्स। सत्तमपुढवीपत्थाण, मगले अक्खवत्त व ॥ ५५ ॥ इय रुद्दज्झाणझाइस्स, वासाइ सोलसगयाइ। तदहियसत्तसयाऊ, स धरित्ति सत्तमिं पत्तो ॥ ५५६ ॥ सिरिबभदत्तचक्कीकहा सम्मत्ता ॥

उदायिनृपमारकोदाहरणमधुनोच्यते—सुमणोहराहिं कलहसयालिसद्दालपयप[1]हाणाहि। सहइ सरसीहिं ज नाम वाहिमतो य तरुणीहिं ॥ १ ॥ कयअमरपुरिचमक्केसु तियचउक्के अदिट्ठपरचक्के। पाडलिपुत्ते तत्थासि पत्थिविंदो उदाइ त्ति ॥ २ ॥ सुविसु-द्धधम्मधारणधुरीणधिज्जो वि सज्जियगुणो वि। जो अप्पियलक्खो विहु, परम्मुहे मग्गणे खिवइ ॥ ३ ॥ अरिरमणीसु अरन्ने गुजाहलहारहारिहिययासु। पल्लविओ जस्स पयावपायवो दीसइ सयावि ॥ ४ ॥ कम्मि वि महावराहे महावराहेण तेण महिधरणे। धरणीसो कोइ कयाइ आसि सहरियरज्जसिरी ॥ ५ ॥ देसतरमि पत्तस्स तस्स पुत्तो तओ अवतीए। तीए य पहु लग्गो ओलग्गेउ अणुव्विग्गो ॥ ६ ॥ परि[2]वसइ सो उदाइ, भणइ य पीइं पिवेज्ज को तस्स। जो हारिऊणमेत्थतरमि विन्नत्तमेएण ॥ ७ ॥ जइ वहह महोदत, ता तुम्ह मणोरहे पसाहेमि। इय रन्नाऽणुन्नाओ, सो पत्तो पाडलिपुत्ते ॥ ८ ॥ हच्छ पिच्छेइ छलाइ, छन्नं उच्छिदिउ निवइ [3]जीय। किंतु न पावो पावइ, पच्छाव कत्थइ विहत्थो ॥ ९ ॥ अट्ठमीचउद्दसीसुं पोसहकज्जेण राइणो पासे। तेणायरिया नाया जंता तत्थेव य वसता ॥ १० ॥ वपुरे एस उवाओ निववेरिविणाससाहणसमत्थो। इय चिंतिऊण सूरी, ते निच्च पज्जुवासेइ ॥ ११ ॥ निसुणइ सम्मं धम्म तवइ तवं तिव्वमायरइ विणयं। अइउज्जमेण पव्वज्जमज्जिउ दसए सद्धं ॥१२॥

१ या C D। २ सवइ C D। ३ धी C।

नमिपम्मपमियोग मणोगाऽमावओ ननुमिमेहिं । मिमा मिरम सूरीहिं छम्मपम्मवित्तो तस्स ॥ १३ ॥ पव — नहि मामउन्ना-
मोगऽप्पवस्सेव कम्मपिमाहि । कम्मं माणावरणं माणावरणस्सभाव हि ॥१४॥ " पाहेहिं वेसाहिं, पम्मपम्मपमरणमेहिं को माम ।
गुरुकम्मवनावरहरिं वविअर म जण ॥ १५ ॥ " गणिममसेहत्तवस्सी कुम्मेयमवकिवनिवरओ । विमयरए त्ति संमयं
पावइ परिपवमोवर्म ॥ १६ ॥ सुसमेइवंमि कमे रम्मारंभेण सह जनो कमाइ । पव जह कसमंसेम वि परमेम पा सुरी
होइ ॥ १७ ॥ सवेसु गुरुसु निवमंमिरंमि पसु म पम नीसाम । निवि म हे तं पुण जं प पोअमप्प बाओ पावहि ॥१८॥
निवरपहएगमसीओ म कपिवं वरह कम्मोहसा । मिवमारेणं पा वाह, सुहिरंमिकिपा महीए पखे ॥ १९ ॥ मिवरकप्पविकवायं
रम्मरणं कमिव मिसरपमव । वरह दुगपि कुसीसो वहा समयं प गरके प ॥ २० ॥ वारसवासाणि वाहप्पिमपाणि सममि
पगुमो रपवहस्स । गुमममसरो म पामो मरवहुमप्पमाणामो ॥ २१ ॥ बाहराउमि वाए मइपरिवारे कमाह सप्वंमि ।
ठेपव रामं सूरी संपत्ता पम्मवंमि ॥ २२ ॥ " रामपोरणारणारिममपागईमिमा महामूम । मिररमिसमवि पमा ममोगमिसम
रमपि पहे ॥ २३ ॥ सूरिहिं कुमिमपमेसो वारसवरिसोवमरससहेहिं । हासी गीमोप्प आहिमममपोह वसंपि ॥ २४ ॥ पह
रिवमि पहमे, वसहीप मुम्मुरहिम मुगुरू । समयंमि ममापमकाह, मिवहं मुमिगुरुसमपस ॥ २५ ॥ परमगुरुपाममममसम-
पुम्मं पोसहं वेर । वकिपमिममं पुम्पह, पसिमे मिमुणइ पमारम्मे ॥२६॥ पासमपमरोमिपपामिसंपुरमो रैसमं समं सुपप । कम-
पुरमेमो मिरसामण्णं प समीर समपेइ ॥ २७ ॥ तम वि पमं सुमुमिमस पणविसमम्मं सवामिमुमो । मुहपोमिव पविमेहम-
पुम्मं संवरिमसंवारं ॥ २८ ॥ मपरिम समपमप जे मे मावंपि पमपारंमि । घरिमम पमसरणं कमिवपंमि मावेण ॥२९॥
मजुगमाइ संवारं महुपरमेण समपमेणं । कमपुहिपारमणारम मवढेव पममप मूमि ॥ ३० ॥ पवरिमणं रमाइ समपनिरेसु
गएसु सुरो सो । हमुणी समाइ ममो समेव म कम मावेण ॥ ३१ ॥ समिमं समिवं मूह मिवरह पुण निरममपमूमि ।
पम्मीहरेछ मह वेरमप्पिणं दुवरूममणीम ॥ ३२ ॥ मिमरूठे ते ठोप पहइ मसु मपममो पुणो केठ । मिवहं मि मुमिममपो

९

तत्तो पचत्तमणुपत्तो ॥ ३३ ॥ भयकपमाणपाणी, मोत्तूण कत्तिय तहिं चेव। स गओ जइ त्ति जामिल्ल-अगरक्खेहिं वि न रुद्धो ॥ ३४ ॥ उवचियनरनाहसरीर-सेलसिहराउ रुहिरनिज्झरण। पवहत सपत्तं गुरुसथारप्पएसमि ॥ ३५ ॥ रुहिरस्स फासगधेण जागरेऊण जाव जोयति। पिच्छति ताव सूरी नरवइणो मुंडरुडाइ ॥ ३६ ॥ हा हा अकज्जमेय, कह कय कूरकम्मुणा केण। तिगुणगरक्खपरिवेढवेढिओऽय ति चिंतति ॥३७॥ न नियति जा कुजाय कुजइ सथारयमि त गुरुणो। तो चिंतति जहेय वियभिय तस्स पावस्स ॥ ३८ ॥ अहह अधन्नोहं जस्स, एरिसो आगओ गुरुकलको। जिणपवयणआरामे मए दवग्गि इमो दिन्नो ॥ ३९ ॥ मुणिवेसेण विस्सासिऊणमेसो नरेसर हणिउ। इह कोइ घायगो आगओ त्ति भमिही अजसपडहो ॥ ४० ॥ छोल्लियछणमयल-छणछाए जिणसासणंमि मालिन्न। मा होउ मए विहियति पत्तकालो महऽप्पवहो ॥ ४१ ॥ इय निच्छिऊण पेच्छइ जा हच्छ कठच्छेयणे सत्थ। सो चेव ताव निवकठाविया कत्तिया दिट्ठा ॥ ४२ ॥ सोहियसमग्गसल्ला सिद्धाण पुरो महव्वए पच। उच्चारिय खामिय सघसूरिपामुक्खपाणिगणा ॥ ४३ ॥ कयभवचरिमसुनिच्चलचउव्विहाहारपच्चक्खाणा य। कठे ठवति 'परमेट्ठिपचग ककककत्ति च ॥ ४४ ॥ मरिऊण तिव्वसवेगसंगया दोवि देवलोगमि। जाया पभायसमये निएइ जा सेज्जवाली त ॥ ४५ ॥ ता पोकारइ महया सद्देण हा हयमि ही मुट्ठा। मिलिओ लोओ हाहारवेहिं वहिरियनह रुयइ ॥ ४६ ॥ जाओ एस पवाओ कोइ कुसीसो निव च सगुरु च। सह इह परलोएहिं, हतूण कत्थइ पलाणो ॥ ४७ ॥ तस्स अपुत्तस्स मयस्स, पचदिव्वेहिं मिलिय सव्वेहिं। पउरपमुहेहिं पट्टे पइट्ठिओ पढमनंदो त्ति ॥ ४८ ॥ तुरिय स नासिऊण, पावो पत्तो अवतिनिवपासे। जोहारिय सभारइ पुव्व सव्व सवुत्तत ॥ ४९ ॥ तं स महीसो सोउ चमक्किओ चिंतवेइ दुच्चरिय। हा हा अहो दुरप्पा रयणमिण निहणमुवणीयं ॥ ५० ॥ कपि अकज्ज एयस्स, नत्थि कुविओ कयाइ मारिज्जा। वरिससयाओ वि ममति झत्ति निव्वासिओ देसा ॥ ५१ ॥ उवएससहस्सेहि वि, न चित्तसाहुस्स धमदत्तो सो। जह पडिबुद्धो वारस-वरिसेहिं एवमेसो वि ॥ ५२ ॥ इति विनयरत्न(ति)-कथा समाप्ता ॥ कुत पुनर्ब्रह्मदत्तो राज्यलक्ष्मीमपरित्यजन् सप्तमपृथ्वीं प्राप्त इत्याह—

गयकन्नचंचलाए अपरिचत्ताए रायलच्छीए । जीवा सकम्मकलिमलभरियभरातो पडंति अहे ॥१२॥

गजकर्णचञ्चलया स्वल्पेन कालेन त्यक्तया तथापि मन्दभाग्यैरपरित्यक्तया राजलक्ष्म्या हेतुभूतया जीवाः स्वकर्मकलिमलेन भरित-भराक्रान्ता अधः पतन्ति — नरके यान्ति पतिता। अपरोऽपि मन्दभाग्योऽविवेकवान् भारभरितो भूमौ पतति तु। ये तु 'चोपडंति अहे' इत्येवमपि पाठं मन्यन्ते पठन्ति तेषामेकप्रकारमतीतेन गाथा व्याख्येया। एवमपि सम्य को- न पतन्तीति हेतो योज्यते। पतनप्रकारस्तु भिन्नार्थत्वेन स्यात्। ततो भावरोधोपायः प्रथमो मार्गः ॥१२॥ ११९ A । ११११ D ।

## ॥ इतिश्रीरत्नप्रभसूरिविरचितायामुपदेशमालाविशेषवृत्तौ प्रथमो विश्रामः ॥

## ॥ अथ द्वितीयो विश्रामः ॥

इमानि पापानि न केवल परत्र सोढु दुष्कराणि यावदिहभवे वक्तुमपि दुष्कराणीत्याह—

वुत्तूण वि जीवाणं, सुदुक्कराइंति पावचरियाइं । भयवं जा सा सा सा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३३ ॥

'वक्तुमपि जीवाना सुष्ठुदुष्कराणि' वर्त्तन्ते वक्तुमप्यशक्यानीत्यर्थः । कानीत्याह—इति अनेन वक्ष्यमाणेन 'जा सा सा से'ति दृष्टान्तोक्तप्रकारेण 'पापचरितानि'–दुष्टचरितानि । तदेवाह—भगवन् जा सा सा सेति चोरपुरुषेण पृष्टे भगवत 'प्रत्यादेश'–उत्तरमयमेव, जा सा सा सेत्येवरूपास्ते तव प्रश्नकारिन्निति समासार्थ ॥ ३३ ॥ व्यासार्थ कथागम्यः, सा चेयम्—

साकेयपुरे खेत्ताहिदेवया आसि ईसआसाए । सन्निहियपाडिहेरो, नामेण सुरप्पिओ जक्खो ॥ १ ॥ वरिसे वरिसे राया, त चित्ताविउ जत्तमारभइ । जो चित्तइ चित्तयरो, सुरप्पिओ सहरेइ तयं ॥ २ ॥ जइ चित्तिज्जइ नाऽय, नयरे मारिंतओ विउव्वेइ । तो चित्तयरा लग्गा, उव्विग्गा ते पलाएउ ॥ ३ ॥ तं नाउ नरनाहो, वज्जरइ गएसु तेसु वहुएसु । पउरा ! पडियारो को, कहेह मारीए भे होही ॥ ४ ॥ एकाए सकलाए, सकलिया ते कया तओ सव्वे । जेण न नासइ एगोवि ताण पाणे पुरो काउं ॥ ५ ॥ समए जत्ताए समागयमि सव्वेसिं तेसिं नामाणि । खिप्पंति लिहित्ता पत्तएसु कुंभस्स मज्झंमि ॥ ६ ॥ कड्ढेऊण कुमारी, पणामए जस्स नाम कुभाओ । तमि वरिसमि सो चेव, चित्तए जाइ पचत्त ॥ ७ ॥ अवयरिओ वि करिंतो, अवयार होइ नेव सप्पुरिसो । उवयरिओ जो मारेइ, तस्स को लेइ नामंपि ॥ ८ ॥ [1]उवयारु जु किज्जइ, दुज्जणह जाणुसु वाहिरि [2]एडियउ । सज्जणह तपि न वीसरइ, तणउ जु मत्था फेडियउ ॥ ९ ॥ "पयपाण सप्पाण, वग्घाणुग्घाडणा य नयणाणं । पिसुणाणुवयारो तिन्नि

1 उवयरिओ जो मारइ इहु किज्जइ दुज्जणह B । 2 एरियउ D ।

सम पमोक्खमीणि ॥ १० ॥ कोसंबीओ कएणाइ, कोइ समागओ निरुक्सित्तो । विण्णगरत्थाओ दूरोसासम्मविवासाए ॥११॥ समर केईए, गेहंमी संकसेत्माणओ । निमुणनिमित्तसेसेण गमएण मिच्छ घा णं ॥ १२ ॥ वरिसंमि दंपि दीए, पेईए सुणस्स णाणओ बालो । कम्मण पयाए, निपण्णकोण कथरास ॥ १३ ॥ कस्सरणं दसंती मेरी बागंतुगेण देवेसा । मणिया कम्मो । सि मम, मरणे पंडिसमस्स ॥ १४ ॥ कए सुकयो सुणो, दीए वस्सेण पुण्णमासस्स । मणिदं तेणं माए ! मा कंसु पिवाइस्स मरं ॥ १५ ॥ कमाइ इमा वो णं मजा कम्ह । कम्मयइ मसीमोएम्मो । इह यीवखे पीसेइ, केय न मओ मओपि सुणो ॥ १६ ॥ पुन पुन पणमिणयाए, एवं मज्झमिण इमा एमिय । न्हाणपाउणुक्तिमुसपरिवमुपिणे(मो)म्पविमणुत्तो ॥ १७ ॥ होऊण पमणी परिवत्तिसज्जोमकेसेहिं । इणियमपणीपाइएहि नमोहिं सम्मोहिं ॥ १८ ॥ कम्पुरक्कोसो पोमविण्णए सण्ह संगुणाए गुणी । कणमणवासी मए, पणमिण निम्मए कम्हुणि ॥ १९ ॥

"मासिम्म सुसनामिककमि विषमयोषसुम्मा रुण्मंकु मोक्ष मोक्षितमंकणपविपिनैआपमसुस्थाजिन् ।
स्वयारिरसक्तमेव मवतो मम्मे पु मिसर्गितं, तपिसस्पर्सं भाव मगवां जीवावने गाम्वे ॥२०॥"

कथा—सुणिलो निवइ पयसमयमापकिमठे कणिए । एयमेइ कम्मयमम्मोइमपिमुणो स विविता ॥ २१ ॥ निवं नरि, कमओ विसिमिमु मणिसमणओ । पमणेइ वरं वएसु नि, सुमा मणीए गुरोम्ं ॥ २२ ॥ इमिया सुडं निवे स णम पसासव होइ मम मठे । निवमरो पमढे सा न मारिवम्मो कर कोणि ॥ २३ ॥ मणिणमिमेमं सम्मोय सिवमेवे म सं समो मोर । कमुम्म मडुमा दोसेण तेम सुकोमीण पीमयो ॥ २४ ॥ करमपणं पमरं गा करेमु भावुम्मपुन्नपुणो सो । परि-मीमयणकमपइरिअरिरणं व मणोर ॥ २५ ॥ मणिमकम्मकोणि ग मिडु कमुणी परेइ पेसकेमि । जीवसस कजीवसम प क-स्पइ कइ संसकेमिमि ॥ २६ ॥ धा कम्मं सं पसाणं सम्पा णिम्मिदयामि । पणसुणणकम्मो णिमं गओ कमप मेरिं ॥२७॥

पयडियनियवुत्ततो, निवनायरलोयलद्धसम्माणो। कइवयदिणावसाणे, कोसंविपुरीए संपत्तो ॥ २८ ॥ तत्थ य पत्थिवपवरो, चित्तावइ नियसह सयाणीओ। मित्तिचित्तयराण, चित्तेउ अप्पिया कमसो ॥ २९ ॥ अत्थाण रायवाडी, अतेउरतुरयकुमिकेलीसु। करसइ किंपि समप्पिअमसरिसचित्त पवत्तेउ ॥ ३० ॥ अतेउरतरुणीकेलिकोउग कप्पए पएसमि। जमि महीसो त सो, चित्तयरो चित्तिउ लग्गो ॥ ३१ ॥ वरलद्धेण तेणं, ओलोयणजालए निविट्ठाए। देवी मियावईए, दिट्ठो अगुट्ठओ आसि ॥ ३२ ॥ अइ सुसरिस तओ तीए, चित्तियं रूवरेहअभिराम। वसणाभरणविभूसियमुम्मीलइ लोयणे जाव ॥ ३३ ॥ ता मसिबिंदू पडिओ उरुपएसमि कुच्चियग्गाओ। फुसिए पुणो वि पडिओ, पुण फुसिए तमि पुण पडिओ ॥ ३४ ॥ सुणियमिमेण एस ण, होयव्वमवस्समेत्थमेईसे। अच्छउ ता न फुसिस्स, चित्तसहा चित्तिया सव्वा ॥ ३५ ॥ त नरवई नियतो, देवीरूव निरुवए जाव। निद्धे विद्धे चित्तमि, चित्तेण ता रहिओ ॥ ३६ ॥ मसमिक्खिउण चिंतइ, पच्छन्ने लच्छण कहिमिमेण। नाय होही किं नाम, धरिसिया मह पियाऽणेण ॥ ३७ ॥ तो अरुणलोयणेणं, स राइणा मारणाय आणत्तो। अविमरिसियकारित्त, मत्ताण व होइ कुवियाण ॥३८॥ अविमरिसिय कारित्त, राईण धणी(णा)ण निट्ठुरकरत्त। गुणिमच्छरो गुणीण, खलविहिणो खलियतिगमेय ॥३९॥ सीलमहासइ सासइ भासइ देवि किंच, नियमज्जाय अभु(चु)क्किय जलनिहि वेल जिव। जाणइ जइवि सयाणिउ सव्वइ एउ मणि, मोहपिसायपरावसु जायउ तहवि खणि ॥ ४० ॥ तासु मियावइ देविहि सुद्धहिं गग जिव, इय फलकु अकलकहि आसकियई किव। एत्थु वत्थु परमत्थिउण नत्थि त किंपि भुवि, अइ सुद्धहवि न जासु आलु आलवइ कुवि ॥ ४१ ॥ परमपसायमवस्स, पाविस्स पत्थिवाउ पाणिंति। चित्तयरो चिंततो, पत्तो मरण व विहिवसउ ॥ ४२ ॥ हरिणाण हरिणनाहि व्व, गधसाराण सारगधो व्व। अहहस्स मूल(मा)नासाय, सोयमिद्धो गुणो सिद्धो ॥ ४३ ॥ चित्तयराण सेणी, उवट्ठिया विन्नवेइ नरनाह। देव ! किमेवमयंडे, मारिज्जइ एस चित्तयरो ॥ ४४ ॥ दंसेइ दोसलेस, अवगयतत्तेहिं तेहिं तो भणिय। चित्तयरभालतिलओ, वरलद्धो एस किं बद्धो ॥ ४५ ॥ सुरखुत्तते वुत्ते, मुहमित्तं खुज्जियाए दंसित्ता। निब्भिसपमयत्थ, लिहाविय तारिस रूवं ॥ ४६ ॥ तहवि अवंझो कोवो,

भूपाल होइ जो नरिंदो सो। तह चित्तम्मासम्म अप्पाहइ पाविसेयम्मि ॥ ४७॥ पुण सागेयपुरंमि गुरुप्पियरप्पणाय सो पत्तो। पडिओ पायवडणेण, पवय(वियओ) पुच्छेमि धरं ॥४८॥ अह बलरो सम्मओ भाइयमाइ पम्उ। मुक्कु भडेसु। सवसम्मेण य वामेण पणिया चिंतियम्मसमओ ॥ ४९॥ तह चेव चित्तओ चिंतइ सो पव इणामि निवसउ। अम्मेस सयणीयस्स सयणे अम्म-म्मोओ ॥ ५ ॥ परपरयरुमीयरिंसम्मसमेभेण चिंति य कुमइ। इय चिंतिउं मियाणइस्से चिंतेइ चित्तयरे ॥ ५१ ॥ सम्मेणीए पम्मेयरायम्मे अचिंतेइ गरूय। मणइ भियाणइस्मस्स एस वेसो मए चिंतिओ ॥ ५२॥ नयणाण दोहिं सरसेहिं, चिंतियई भविसरो य जीहाहिं। जइ तं से सो समय, सरसमि रूपो न चिंतेइ ॥ ५३॥ येवकेव चित्तकेस तस्स चित्तढिंवं कुण हिं। मुढिओ परसा कयुयसमरो हुसमय य ॥५४॥ साहीणं मुणिय वि य पडं वि मुणियाणं पुण पयडीय। दिव्वमे हरय रई सिय रमणी मम्मणियपयाण ॥ ५५॥ (ग)मज्जिमगा(गी) वि अणिंदी कमइ हेटी य कम्मंमी वि। गुरुयरस्स कयरो रमणी पुण मम्मयसमास ॥ ५६॥ मतिभ्रवसमोओ संति समीवेभ्गुरयचियामो। महइ तमरसचित्तं, पत्तं दूरे चिंती मूढे ॥ ५७॥ वेवेइ सयणीयस्स पुम्मेसो गओ य घोसीहिं। पसमिय रायाणं, विमलेइ रिमासम्मसीयो ॥ ५८॥ मणि चिंते चिंतियएय दे पेमिओ मि रेवेण। गुरुसमयुयरि पवरं, पोइ सामी सयम पीहं ॥ ५९॥ सम्मयम्मपए य तीए, पसमुमसमाय पायुमिया। भविसमं पेसिआय, सामिस्स चिंतवई देवी ॥ ६ ॥ हर वायपियाम्मेमेण वायय पभिय। सिय पीढं दे। पुरमि पसमे होइ, सर्व वस्स चोवंमि ॥ ६१॥ मणियं निवेण अस्सो मइ मती सयु सामिम्म पयुम। इस अमिसउं य सस्सो तं को अस्सो पम्मियसिे ॥ ६२॥ पम्मयिपेम्मोवं, साबु सयिम वस्स मइ महसीहं। सीयापेम्मोवं पसमस्स रामंमि कारिसिय ॥ ६३॥ सम्मायं सि इ पीढं, पयासविणा तय मणिमस्सो। देवीयुवमे घोवि पुण। जमवि य सम्मओ ॥ ६४॥

एय—देवि य वेसहस्ससि यइ या देवो परिस्सइ दोसे। एया—मयु जमलाणं भूराम को वि पमवे समे तेण ॥ ६५॥

एय—पहेण य दहेण य होइ पय पस्स चिंतरिमणस्स। मुणा य अमिाय या मिमिस्सप म मम्मु सामम्मी ॥ ६६॥

गना—बहुवाहिणिपरियागो, न कारण होइ विजय(व)चन्नाण। घणहरिणजूहजुत्तपि, कालसार हणेइ हरी ॥ ६७ ॥ पुण पच्चतो कोवेण, आलजालाई रायदूओ मो। पडिहणिओ पडिहारेण, धाडिओ धारिऊण गले ॥ ६८ ॥ गंतूण तेण तत्तो, उज्जेणीमनुगो ममीवमि। त सविसेसमसेसपि, साहिय तस्स तो कुविओ ॥ ६९ ॥ दावइ पयाणढक्क, समग्गसामग्गिसगओ स तओ। अनिरण नेय कोसविचिमियसयीए सपत्तो ॥ ७० ॥ इय सोऊण उन्नणहियियधसक्केण नाइचक्केण। मरण सयाणिओ सो, पत्तो पोट्टेण छुट्टेण ॥ ७१ ॥ अह सा सहसा सजाया, मोयवेया मियावई देवी। कयमयकिचा चितइ, चिंताचक्केणमक्कमिया ॥७२॥ मह जाउ व्यय लायन्नमसोहग्गचगिमा ईयं। जेणेस सिरे वसणासणिस्स जाओ मह निवाओ ॥ ७३ ॥ किमह करेमि सपइ, सील मज्झाण रवडिही पावो। हणिऊण अप्पाण, ता तमह कितु रक्खेमि ॥ ७४ ॥ रक्खिज्जइ मज्झाए, चइेउ जा'ण सीलमन्ना ता। जीवगाओ तोडइ, सडाओ को नाम केसरिणो ॥ ७५ ॥ अहवा—चेडयनरिंददुहिया भ(यि)इणी भुवणेक्कभाणुवीरस्स। अज्जवि अणुवन्निय, तदणुरूवकित्ती कह मरामि ॥ ७६ ॥ पुण जीवंती तत्तो, कालकरालाउ पालिउ सीलं। कह पारेमि हहा वग्घ दोत्तडी नायनज्झियाइ ॥ ७७ ॥ ता ताव पावपगइस्स, तस्स वयणाणि मन्निय करेमि। "कालविलब सो चेव, सव्ववसणाण पडियारो ॥ ७८ ॥" तत्तो चित्तोवन्नासपेसलं पेसए पहाणनर। सा पज्जोयमहीवइ, सम्मुहमाहे स त नमिउ ॥ ७९ ॥ विन्नवइ देव! देवी, तुह तिव्वपयावपावगेण सणा। मह भत्ता पचत्तं पत्तो रणकेलिकछुलो ॥ ८० ॥ ता सपयमवलाए, मज्झोवरि ते न जुज्जइ पयाण। जाइज्जउ उज्जेणीए, अज्ज वलिऊणमेत्तो त्ति ॥ ८१ ॥ जो आसि सयाणीओ, सो आणीओ जमेण नियगेहे। अन्ना का मज्झ गई, ता अहुणा मणसु भ(त)इणी स ॥ ८२ ॥

राजा—देवी दसणदुव्वारमारउम्माहएण एमि पुरिं। पुरुष—सयमेव देव! देवी उवेइ किमु वक्खएण तओ ॥ ८३ ॥

राजा—कइया समागमिस्सइ, पुरुष—जया पुरीए करेसि सुत्थत्तं। अन्नह सुन्निहियनिवेहिं, लहु सुओ चपियव्वो त्ति ॥८४॥

राया—को नाम परिसो मज्झ, गुरुसमरोण जस्स पडिमि। पुरु०—कोमलसप मरिहो, जस्सीसे सव्वाइ सप्पो ॥ ८५ ॥

राया—था कि विवाउ वयरस्सु, देइ देवी कसुत्तमाएसे। पुरु०—ऐवणसव्व किआउ, कोसंबी जरिवम्मसम्मा ॥ ८६ ॥ विजय व्वोमेदीवयविस्सुमिण्णसुहपकोसे। अइवक्मिपओ तओ इयंपि य तहा मह पुरीए ॥ ८७ ॥ निक्कपरिं गन्तूणं निय निवाई देव्वमरिसमपरिवारो। सो पईए ठमिया जाव जयंतीए कोसंबी ॥ ८८ ॥ पुरिसपर्वपरकरणयसंचरेण संपियाई वार्दि तओ। जविरेण वेम पंतो तुगो सो सरिसो कोट्टो ॥ ८९ ॥ इवारिया समाणी देवी पसमेइ मरस्सु पमनेहिं। बवसिवकंमूरुए—सम्प मर्हि य दंमि मम ॥ ९० ॥ पुण मसिरवललमरणमपवसुम स आयइए देमि। सा विंतेइ विम्मुणा जसुपरं उपरं देमि ॥९१॥ वेसवतुम्मास, सारिसकुम्मायमरणमसवार। जयसपुणो मइपीए, पत्तु वत्तु कुमइ इय अवमं ॥ ९२ ॥ सीलं कुलंमलणं नाम एममंगुरं मिच्चं व। नमिरदीवकम हासम होइ दीपहमयहरणं ॥९३॥ जयप्पाय मणं सीलं, जयसंपरणम भणि अकेमरो। वपहायमाण सहसो गुणपमिपम्मपि गुम्मरिमा ॥ ९४ ॥ पएमालेयं सीलं, महिहमणं पीविसमणमेएम। रहियम ताल मोगे मवमन व को गुणो होइ ॥ ९५ ॥ पीपाए रमणरसयसामो, तामो वि एमिक्समं सीलं। सुमपमो एयओ वि मह पु तमाइ न एमियस्से ॥ ९६ ॥ इय मुसिदुणिक्कमोपमाइपमसपमकगामम्म संती। पओयपिसंभावं, मवडं कोवेण कपमिमवी ॥ ९७ ॥ पेसिसपुरिसाम पुरो पसम्मइ नाइं पयोमि वाइ तुमे। अवइ अवम्मे सओ अविपक्कओ स पओओ ॥ ९८ ॥ मइसीलकीलस्सए म(ण)संभाममलेम महमुवविस्सो। सयं व मयंसिओ, सो कजोओ य पओयो ॥ ९९ ॥ इयं च पतम्मि सा—

कम्मारो परिपालव मसिनं मीएमपमोममालो, कलेमुरव कुमइम पणमपि लामने न वे किं सिपक।
किं मेमचलिय व वअमलमपमा—सम्पमुहा समसमी निर्मवेरमवालय लामिमि पम्पमामेकलीमिमाम् ॥१ ॥

एव देविविसंजय, गन्तूणं देवि सहिए सवि। पुण पओओ पओयओ मम पठिओ समसमपडिओ ॥ १ ॥ अविडेण कोसंबि

पत्तो बाहिं फरेइ दढवेढ। भयकपमाणमाणसमेसा एव विचिंतेइ ॥२॥ धन्ना ते गामागरपुरखेडमडबपट्टणपएसा। सो जेसु डमरवेराइवारओ विहरए वीरो ॥ ३ ॥ जइ जयजणनयणाणददाणदुव्वारदसणो देवो। इह एइ तो करेमि निएच्छिअ निच्छिय इच्छ ॥ ४ ॥ सुकयपरपरपा(मा)णीहिं, पेल्लिओ तीए तत्थ पत्तो सो। अमरेहिं समोसरणे, पवरे रइअमि आसीणो ॥ ५ ॥ अह पुरि दूरे सेणानिवेसमाधाय चडपज्जोओ। पहुणो वदणवडियाए, झत्ति पत्तो समोसरण ॥ ६ ॥ हरिसभरनिब्भरगी, मियावई वच्छवच्छरायजुआ। विवरियनयरदुवारा, उवागया पहुमुवासेउ ॥ ७ ॥ सनरामरासुराए, परिसाए सामिणा तओ तीए। पारद्धा धम्मकहा, गिराए गमीरधीराए ॥ ८ ॥ पत्ते खेत्तकुलाइनिम्मलगुणे माणुस्सजम्मूसवे। सजोगमि जुगप्पहाण गुरुणा सद्धिं च लद्धे धुव ॥९॥ मोत्तूण परमप्पमायमइरामोह कुम्रोहं तुहा। ससारतकरे करेह, न कह धम्मम्मि निव[1] उज्जम ॥ ११० ॥ धम्मो सचियपावपकपडलीपक्खालणे पच्चलो। धम्मो निम्मलमगलावलि कलानिप्पायणे निच्चलो ॥ ११ ॥ धम्मो कामदुहा निहाणमणह चिंतामणी पाणिण। धम्मो सग्गपवग्ग–सगमसुह साहेइ निस्ससय ॥ १२ ॥ सो एसो पढमो महव्वयमओ हिंसानिरासाइओ। साहूणं अवरो अणुव्वयमओ सड्ढाण नाणाविहो ॥ १३ ॥ पच्चक्खाणमणुक्खण पइदिणं दीणाइदाणुज्जमो। वक्खाणस्सवण गुरूण पुरओ झाणेक्कताणक्कमो ॥ १४ ॥ रागद्दोसविसायकोहविकहाकदप्पदप्पाइण। दूरे वज्जणमज्जण, पइदिण दक्खिन्न(त्त)दिक्खाइणं ॥ १५ ॥ पारभो परमेट्ठिपचगपरावत्ते सुतत्ते तहा। कारुन्न करुणारिहेसु, स इमो मग्गोऽपवग्गोचिओ ॥ १६ ॥ एत्थतरमि एगो, धणुद्धरो पामरो ठिओ दूरे। पुच्छइ मणेण भणिओ, जिणेण पुच्छेसु वायाए ॥ १७ ॥ पायडमपारयतो, पुच्छेउ लज्जमाणओ तो सो। भयव 'जा सा सा सा,' पुच्छइ च्छन्नक्खरगिराए ॥ १८ ॥ पच्छाएस तं चेव, तरस सामी वि वजरेइ तओ। पुच्छइ पणमेउ गोयमो वि परमत्थमेयस्स ॥ १९ ॥ भयव 'जा सा सा सा' खासा भासा कया इमे तु(नु)मए। परमत्थ [1]वित्थरओ, एत्थ समत्थेसु ताव मह ॥ १२० ॥ दिसइ पहू चपाए, सुवन्नगारो जुवासि थीलोलो। रमणीय कन्नं जं जमिक्खए

१ समत्थेसु पसिऊण कहसु D।

ते समीहेइ ॥ २१ ॥ तेण सुमणसयाइं तायम्मि पियम्मि चविऊण सुमइ । इय पेम्मसया महिलाण मेलिया तेण मिलणोहे ॥ २२ ॥ पत्तेयं पत्तेयं सम्माणेवि परियणम्मि पच्छेइ । तिरियाणलसमागमणभीयससमाहयं चिंतु ॥ २३ ॥ जलिरणसे जं मज्झे, सयमेव जाव [illegible] तेण दिन्ने । दुट्ठसयसुपामरणसुसाणं सो पेइ निम्मि सवे ॥ २४ ॥ ईसाए नेगाढीए, साहिओ मीमदेवेइ म गिराओ । सुहिसयणसयणमाणीयं पि मारेइ सयमिवं ॥ २५ ॥ पियमियपेम्मं काइयावि इस्सवे मोयणाय पमिओ सो । वडिमगुणए मीओ धम्मिपक्खमाणो पि पयागहिओ ॥ २६ ॥ निग्गंति तओ ताओ विम्हयमेयण जीवियव्वेण । संतावि पि मोयंसयवि, मुंजिओ जेण य उवासो ॥ २७ ॥ मणिरयणाणि(?) निहाणेण तेण पवरहुप्पण पि य विपि । पयमुंजिओ य समए, जं एयाससमयणयक्खयले ॥ २८ ॥ मिम्मविहमंमि वाए, वा वम पियाउ विम्हए कि मो । वसम-विलेवण-तंबोल-भूसणाईहिं सिंगारो ॥ २८ ॥ इय पवरभोगसभोगसंगिखिगएमिमंजीओ । ववओ विम्हयमाणीओ एममे जाव पिटुंपि ॥ ३१ ॥ ता यो पत्तो पेसरेइ, तस्स य तओ वारिसंगीओ । गहिऊमेवम्मं घोरेण जाव ताहि जाव मया ॥ ३१ ॥ मिपपम्मसहाणमाऽऽयकिपाहिं सम्माहि ताहिं सो विज । ज्जुवरि सम्मे वेगेण एम्मम्म देहिं सो वि मओ ॥ ३२ ॥ तं पिवित्तम्म तओ परपम्पुत्तमसयपिताओ । पगओ मिसिऊण, इय समेस्सिवि समकम्म ॥ ३३ ॥ बारह एयमममणसमागमे सुपुणिहुंमे पिवी । पहुमारियम्म को नाम, सुयरामि निवससए सययं ॥ ३४ ॥ [illegible] । मिरयणसमए होही पाससहायं हि पम्मसपि ॥ ३५ ॥ ता सालउमवि वालेइ, कोवि नेयरिसं मडयत्थं । परिसमिमिपणाणं परं पक्खिविपु ता मरिमो ॥ ३६ ॥ तह वेण ताए अवि एउ-पमवपियममाससमासामहिं । समजीवाहिं य वीहाहिं सा मूढा कीया ॥३७॥ मिरियरज्जसरिसमीए, एहीए पत्थमिस्सजणुवाया । सहूल पेम्मसया, ताय घोरउ महासेउ ॥ ३८ ॥ पम्ममवा सा जाया, हायेरएण सोसियसुवीम । अंतरिया परोगेण, तम्मुपम्म विरिमणरेए ॥ ३९ ॥ वाससस तस्स पेम्मसरिसंवे सो सुमणपये मि । विरियमतरिओ तंमि मिपसुवे [1]वेद्दिया जाव

1 [illegible] 2 [illegible]

॥ १४० ॥ तीए वालग्गाहो, सो दासो आसि सा उ रोयती। न हु विरमइ पुव्वभवि व्व कामदाहेण डज्झती ॥ ४१ ॥ अह अगुलीए चेडेण, चङ्गिया मयणमदिरदुवारे। सा थक्का रोयंती, त च्चिय कुव्वतओ दिट्ठो ॥ ४२ ॥ नियगेहाओ अइताडिऊण निग्घाडिओ दुजम्मेण। अइदुट्ठो सो (रु)तुट्ठो, तेणाण ताण जा मिलिओ ॥ ४३ ॥ सतमसमि समता, सपत्तो कोसिओ सुही होइ। लहइ पइट्ठमरिट्ठो, अरिट्ठकाणणगओ सतो ॥ ४४ ॥ अणजायजोव्वणा कन्नगावि सा वधइ धुर धरइ। परिहरिया पियरेहिं, भमिरी गाम गया एग ॥ ४५ ॥ पचहिं चोरसएहिं, सो गामो तेहि धाडिचडिएहिं। विहिओ लुसियसारो, तओ गया सा वि सह तेहिं ॥ ४६ ॥ सव्वेसिं तेसिमेगा, जाया जा वहेइ सा हरिस। परिभुञ्जती भुज्जो वि न जाइ पुण तत्ति ॥ ४७ ॥ जलही जलाण दारुण पावए दानपावओ तित्ति। अवरावराण पुरिसाण, नो पुणो एत्थ इत्थीओ ॥ ४८ ॥ दासेरएहिं सद्धिं, फिरति या दलइ अन्नमन्न सा। जह मेच्छाण घरट्टी, तरुणतरट्टी तहा सावि ॥ ४९ ॥ धाडीगएहिं तेणेहिं, तेहिं अन्नावि आणिया कावि। एगागिणीए भज्जाए, तीए साहिज्जकज्जकए ॥१५०॥ विसहइ सवक्कि सपक्ककक्कस तेसि सा न घरवास। मग्गइ छलाइ तीसे, मारी विव मारिउ महइ ॥ ५१ ॥ धाडि गएसु सव्वेसु तेसु पाणियहारिया दोवि। ताओ गयाओ दूरे, तदभिमुह भणियमेईए ॥५२॥ कि दीसइ कूवतले, हले ! निरिक्खसु अगओ होउ। इय जोयती पेल्लित्तु, पाडिया अधकूवे सा ॥ ५३ ॥ पुच्छंति आगया ते, गया कहिं कहसु तुह लहू भइणी। भणइ सकोवा कामे, तत्तत्ती किं न जोएह ॥ ५४ ॥ आगारिंगियकुसलेहिं, तेहिं नाय इमाए निहया सा। तो तेण चेडचोरेण, चिंतिय चित्तसुद्धेण ॥ ५५ ॥ कि मन्ने सा एसा, धूया विप्पस्स तस्स जाया वा। पज्जुन्नज्जरजज्जरकाया जा आसि वाला वि ॥ ५६ ॥ अहह हयासे ! हाहा, तुज्झ नवो कोवि वम्महुम्माहो। तित्ती एत्तियमेत्तेहिं, जं न जाया हयासावि(ए) ॥ ५७ ॥ अहवा एसा वेसा, अवरा किं नाम कावि पाविट्ठा। अलमलमिमीए पावाए सव्वहा किंतु गतूण ॥ ५८ ॥ कोसबीए पुरीए, पयडसमत्थत्थवित्थर वीर। पुच्छित्तु समोसरणे, मुणेमि परमत्थमेत्थाहं ॥ ५९ ॥ इय चिंतिऊणमेत्थाऽऽगएण जमणेण पुच्छिय छन्न। गोयम ! मए वि तुह चेव उत्तर दिन्नमेयस्स ॥ १६० ॥ पामर प्रति—सुंदर ! अ-

एरिसम्मि(मी) इह संसारे अरोरसंसारे । न कयावि रामो वासो परमो पुणो निव्वुइमिवासो ॥ ५९ ॥ पणीतिपमन्वीतिव-मप्प-
विमणं सुदं वहिं पेय । पइ दंसि तवस्सी वा रामो रामेसु मम्मओ ॥ ६० ॥ भावमामसासकम्मकरगुणो विम्मबोइ पवविसप ।
तो सो पलेयारपाणीरिविरओ परजाई जाओ ॥ ६३ ॥ चंगूण तेय लाणिवि तेवाय रायवि तीए पसीम । पहिरम्म दं पदं,
पोहिवणि पमाणिवाण तमा ॥ ६४ ॥ इवि आ या रा सा मया ॥ देवी मिथावई विम्मरोइ जइ वीरिम्म मीरविन । वइ
पंपि महारमु ! पम्मकम्मि पुरकम्मि पमोय ॥ ६५ ॥ तिहुयणपहुस्स पभविस्समुक्को ते मणोरहो मरे ! । ता मा कुणसु विवेयं
मेव एको इन पुणो पुक्को ॥ ६६ ॥ पढम वासे पसाइ राजु साहेमि पाडुमिवमई । भइ सुपुरिस ! मणुजाणसि जं तुह
नहूय नहीमाई ॥ ६७ ॥ स सुरासुरपरिसाए, अपारमतो निवारिउं पवे । हिरिहरिपमम्मरछी पमणइ कमोय ! किमजुत्त
॥ ६८ ॥ पहुपुरओ तेणवि विम्मयरमहुम्माहिएण रा मुणा । पवणि माही मेसनइ सुगपंपि पासे मरिसस्स ॥ ६९ ॥ वरमणुमई
वीर पओ मिरिणाविय तस्स कम्मओ । पडिकम्म पम्मावा तिहुयणपहुपमाहप्पेण ॥ १७० ॥ अयराओ वि यहु पणिहुमयवणा
माणिवओ देवीओ । तस्सेव महापपस्स वीए रह पेम पम्मइस ॥ ७१ ॥ 'जइ देवरम्मरोमे एमं पुणंपि याइ सम्मं रि' ।
तइ मस्स वि एयाई, निवारिउण पायव ॥ ७२ ॥ रोयंगाई भेगाई, वाओ एमाओ पडिवरगमाई । वाइविम्मतबोकम्मसस,
सम्मसम्मा(न)समम्मिवि ॥ ७३ ॥ विहरिसमम्मत्त मम्मइ आणाओ पुण पहु य पमेसवि । जविपाइ समोसरणे सरणे ममसीप-
मम्मजे ॥ ७४ ॥ परिसाए निममपए, समागम्म वंदिम्मपउ रोवि । मूसनिमाणेहि पहु, वणमिय तिहुणंपि पम्मत्तं ॥ ७५ ॥
दिपरकीय विसेसं अमसमाणी मिम महामन्ना । एमवारम्मि चिहुइ, विपि मम्मं पम्मओ वि ॥ ७६ ॥ अयराओ गेरुमई,
अम्माओ वागाार वाहीए । पडिकम्मि सम्पत्त-मम्मणीणाइ निवुंवि ॥ ७७ ॥ पतिनिम्मपरेसु निपमिपम्मे पवेसु तममरे
जाए । पमेज सा पवा पसाहीय पम्मम्मए ॥ ७८ ॥ सिरत्तविय कि तुमं तुह पारित्तायममाएआयाए । मह मरगु पम्म
सीहे इम समकाउपारिसं ॥ ७९ ॥ पवमिय सामेइ मिपावि मम्म मिम्मअमिपुमाई पारा । मपणइ अम्मेजओगो पाओ पुन

जाउ न कुणिस्स ॥ १८० ॥ मुहु मुहु गरहतीए, अप्पाण साहु सिम्खन्तीए। पयडियलोयालोओ, सजाओ केवलालोओ ॥८१॥
एतदेवाह—पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्म च पायवडियाए। तो किर मियावईए, उप्पन्न केवल नाण ॥ ८२ ॥ सथारगयाए
चदणाए तव्वेलमागया निद्दा। घणतिमिरकूरनिरतरालकालमि कोणमि ॥ ८३ ॥ सप्पोपसप्पमाणो, फालकरालो पलोइओ पुरओ।
केवलिणीए तीए, तओ करो चदणज्जाए ॥ ८४ ॥ सथारयमि ठविओ, मा एसो डसइ कुडली तो सा। जग्गिय जपइ वच्छे,
अच्छसि अज्जवि किमेत्थ तुम ॥ ८५ ॥ अहह पमाओ जाओ, विसज्जिया ज न तंसि खामिती। ओहीरमाणिया केण पाणिदे-
समि छिक्काह ॥ ८६ ॥ भणियमिमीए सप्पो, सप्पतो आसि एत्थ तेण मए। पाणी पलनमाणो, सेज्जाए ठाविओ तुम्ह ॥८७॥
पभणइ पवत्तिणी तो, तए तमघे अही कह नाओ। नाणेण केण किं खाइगेण खाओवसमिगेण ॥ ८८ ॥ खाइगनाणेण केवलेण-
मिय चदणा सुणेऊण। पभणइ ही अन्नाओ, महासय मरिसहि द्धी हयासाह ॥ ८९ ॥ अणजाणमाणिगाए, केवलिणीए कया
मए महई। आसायणाऽहुणा तो, मिच्छा मे दुक्कड होउ ॥ १९० ॥ इय निंदण–गरहण–भावणाहिं भाविज्जमाणियाहिं दढ।
अविलम्बमेव केवलमुप्पन्न चदणाए वि ॥ १९१ ॥ इति मृगावती कथा ॥ मृगावतिरेवमुपालभ्यमानाऽपि कषायान्निगृह्य केवल फल
यामास, यस्मान्योऽपि तान्निगृह्णीयात्तस्स गुणमाह—

किं सक्का वुत्तुं जे सरागधम्मम्मि कोइ अकसाओ। जो पुण धरिज्ज धणिअं, दुव्वयणुज्जालिए स मुणी ॥ ३५ ॥
कडुअकसायतरूणं, पुप्फं च फल च दोऽवि विरसाइं। पुप्फेण झाइ कुविओ, फलेण पावं समायरइ ॥ ३६ ॥
संतेऽवि कोऽवि उज्झइ, कोऽवि असंतऽवि अहिलसइ भोए। चयइ परपच्चएणऽवि, पभवो दट्ठूण जह जंबुं ॥ ३७ ॥

किं शक्यमेतद्वक्तु सरागसयमधर्मेऽस्मिन् सम्प्रति वर्त्तमान' कश्चिन्नि कषाय स्यात् ? न स्यादेव। तथापि यः पुनरेतान् दुर्व-
चनेन्धनोद्दीपितानपि पावकानिव धारयेदनुदितानपि वा विफलोदयान् कुर्यादित्यर्थ.। स मुनिरेव–मन्यते यथावस्थित मुक्तिमार्ग-

मिति सुमि, तत्पमितर्वे 'सचा' इति मातृत्वात्। 'जे' शब्दोऽपि " इमेरा पत्रपूरणे इति वचनात् ॥ २५ ॥ किमर्थं कथयन् निगूहते इत्याह—" कडुय " गाथा। कटुकम् ते गुप्यमानमरित्वात् कोपविकपायकरणम् तेषां पुष्पं च फलं च द्वे अपि विरुद्धत्वे दुष्पक्वमात्मत्वात् अपिसम्यो निम्बाविम्बो व्यतिरेकमाह—तेषां हि फलं पाककाले मधुरमपि स्वरूपे तु द्वे अपि विरसे एव। उपशमितो पुष्पकल्पो मनुष्ये कोपमपिरूप विरसं दर्शयति। कुपितः सन् पुष्पेण-देहना-दुष्टं व्यथयति फलेन पार्श्वाद्‌ममारणादिकं करोति, किंतु भवति—कषायकमाश्रयः पुष्पम् तत्पूर्तिश्च मरणादिः फलमिति ॥ २६ ॥ ततस्तेषां कोपस्तुनां च उपशान्तानां मोक्षतो जंबू-भगवतस्परिस्थापाः स्वर्गे इत्याह— सते वि गाथा। सुगमा। अत्रोत्तरार्धे जम्बूस्वामिप्रस्तावेन प्रभवस्य मोक्षपरिस्थितौ दृष्टान्तेनाभिधानमप्यप्रमहितीयपादपोरपि जम्बूप्रभवयोः क्रमात् दृष्टान्तौ दृष्टव्यौ। जम्बूस्वामिनस्तावत्पोम दृष्टान्तस्य च मानत्वात् ॥ २७ ॥ तथा—

॥ अह जम्बुसामिचरियं ॥

इह भरहे मगहाविसय-भूसणो गुणगुणोहगामो। वणिजनामो गामो सुग्गामो आसि सुपसिद्धो ॥ १ ॥ तत्थासि रट्ठकूडो अज्जव जस्सत्ति पुत्तमो। रेवइ देवी पियत्ति रेवई नाम से भज्जा ॥२॥ पढमो पुत्तो तीसे भवदत्तो भवभयप्पचकितो सो(जो)। अवरो उण भवदेवो त्ति नामओ देवसुंदरओ ॥ ३ ॥ सुमिणसूरिसमीवे देसणापंकयसरिससिपत्तम्। भवदत्तो पव्वइओ, कमसो गीयत्थओ जाओ त्ति ॥ ४ ॥ तत्थ य गच्छे एगो साहू सूरीण वयणं पडे। विन्नवइ जामि सव्वाणुग्गामं नियबंधुकम्मं ॥ ५ ॥ अत्थि धम्मिट्ठो बंधू-समुप्पन्नविप्पबंधुपुरे वणिओ। मह सिट्ठे सहायं, पव्वज्जिस्सइ स एसो त्ति ॥ ६ ॥ गंतूण निययिं साहू सूरीहिं अणुण्णायाए। स विसज्जिओ समाणो गंतूण पुणरागओ बाहू ॥ ७ ॥ पभणइ साहुणो विन्नवेइ वरिओ स तो य पव्वइओ। इसिऊण भवदत्तं सो स पज्जुवासओ ॥ ८ ॥ इह बंधुस्स पुणो पव्वइओ साहू साहू निप्फत्तिओ। वरिओ निव्वाहिओ

वा थिरनेहो कि न पव्वयइ ॥ ९ ॥ भणियमणेण सिणिद्धो, लहुभाया तुह वि अत्थि भवदेवो। पेक्खिस्सामो पत्ते, तुममि त पव्वइस्सत ॥ १० ॥ भणियं भवदत्तेण, जइ विहरिस्सति तत्थ भयवं तो। किंवहु वज्जरिएणं, तमिक्खसे दिक्खिय चेव ॥११॥ अह विहरतो सूरीहिं, सह गओ सो कयाइ मगहाए। सन्नायगाण वदावणत्थमणुजाणिओ गुरुणा ॥ १२ ॥ पत्तो सुगामगामे, भवदेवो सो तया य परिणीओ। नवपरिणीयाए नागिलाए मुहमडण कुणइ ॥१३॥ भवदत्त दट्ठूण, तुट्ठा माया पिया नाईओ। अइभूरिभत्तिभरनिब्भरा य पाए पणिवयति ॥ १४ ॥ मुणिणा वि धम्मलाभ, दाउ सव्वेसिं तेसिं आपुट्ठ। सीलव्वयाण णावाह साहूण धम्मनिव्वहण ॥ १५ ॥ आपुच्छिया य ते तेण, जामि वीवाहवाउला तुब्भे। पडिलाभयति तो कप्पणिज्जभोज्जेहिं भवदत्तं ॥ १६ ॥ नववहुमुहमडणवावडोवि पणमित्तुमेमि एसो त्ति। भणिऊणमेइ पणमेइ, मुणिवर झत्ति भवदेवो ॥ १७ ॥ पत्तं पाणिंमि समप्पिऊणमेयस्स सो मुणी चलिओ। नियए उवरसए सव्वनाइअणुगम्ममाणपहो ॥ १८ ॥ चलिओ महिलावग्गो, पढम कइ-वयपयाइ अणुलग्गो। पुरिससमूहो पच्छा, पणमिय पणमिय पडिनियत्तो ॥ १९ ॥ भवदेवो वि समीहेइ, भाउणा भासिओ नियत्तेउ। असमत्थियमुहमंडणसमत्थण(उ)त्थ नववहूए ॥ २० ॥ विविहपएसे दंसेइ, रमिय चिर वयमिओ नियत्तंता। जइ कहवि करेइ करे, पत्त तत्तो नियत्तामि ॥ २१ ॥ सुणमाणो वयणाइ, तस्स मुणी गुरुसगासमल्लीणो। भणिय मुणीहिं अणुओ, किमज्ज दिक्खिस्सए एसो ॥ २२ ॥ मडिय ढिक्किय सिंगारिय गओ ज तए सहाणीओ। भणिय भवदत्तेणं, किमन्नहा होइ मुणि-वाणी ॥ २३ ॥ सूरीहिं पुच्छिओ वच्छ ! अवितह इय किमाह तुह भाया। उवरोहेण तेणवि, भणिय ज भणइ भाया मे ॥२४॥ पडिवज्जिय पव्वज्जो, सज्जो जाओ जई सलज्जाए। धरइ नव पवज्ज, तणुणा हियएण पुण भज्ज ॥ २५ ॥ परियाय पारियायप्प-सूणमालाए सह वहतो त। धरइ वराओ एगत्थ, पचगव्व च मइर च ॥ २६ ॥ तणए चिरायमाणे, जणयाई जोइऊण जणनि-वहो। घरमागओ वियाणइ, भवदेवो दिक्खिओ नूण ॥ २७ ॥ चिरपालियपव्वज्जो, काले काऊणमणसणसमाहिं। भवदत्तो,

छुरियो सोहम्मे सुरवरो जाओ ॥ २८ ॥ जयरो वि महरिया सा जाईए तीसे सिचे वि पोसियो। स गओ सुगामम'थ
वेसमण्णो नीरपूरेण ॥ २९ ॥ मह पियसक्कारेण दीनरेहा इहा जयाई सा। मह जम्मझा कम्माइ-मण्डुणा मवे पेम्मे
॥ ३ ॥ इय सिक्खिो वेसमरस्स पिहुर सुमारसेसे पा। ता गामाउ पगा जवगाय इच्छिय कत्थ ॥ ३१ ॥ पूओवगरणपह
समपणोए वमणोए अणुसारिया। सामु वि वंदिओ पुच्छिओ य देवीइ वि सुरविमारं ॥ ३२ ॥ पुणिमामिमेण मे कसु,
धम्मिय [1] कम्मंवयवि एगुमो। पीणेइ रेवई जह वाय मा मागिम्म सा य ॥ ३३ ॥ सिरिविमेपाए कयाह, होम्म एसो स जेम
मम्मं। पुप्फमि ताव एवं कि देवि पयोवमं तुम्ह ॥ ३४ ॥ जणमाइ जई अम्माय-रेवाइ मंगुम्मणो मणु वणिठो। मयरेवो
धम्मेणं, परिणीया मागिया य मए ॥ ३५ ॥ पियनिमयणमणउवाघुम्मणेहओ मए विहिया। पडिपरिपाणि रिरुया समकम्मसु
हमेरणं मोत्तुं ॥ ३६ ॥ पवरचो संपयो संपइ सुरमोगम्महम्मिई वत्तो। सम्मुरम्मामम्मोवम्ममणसरिमओ समापाओ ॥ ३७ ॥
धम्मियमिमीए मयणं मायासिवरायण तुह मणुमणे। पीणइ जम्मामि सा मागिम्म य सहिय मई मेय ॥ ३८ ॥

मय—तो दीए तुमं सम्मं मुणसि सव्वं वि किंपि पुच्छामि। किम्मरम्ममणम-गणिय किंवय तह सा ॥ ३९ ॥
मणिय—वारिसियाओ हिरा यारिसिय सा न विम्मइ विसेसो। किं दीए अमम्मं जम्मो तुह पाइवरमस्स ॥ ४ ॥
मय—परिवेमवं वरपणमेव विमुम्म मए वराई सा। भणियम—सुमर्राहि दीए सुमा मणविससकी तओ मुमा ॥ ४१ ॥
मय—हुरसीमसमायाए, सा किं करेइ सामपसमाई। भणियम—पाकइ न वेमाउं जम्मम्म मु पाकमइ परेपि ॥ ४२ ॥
मय—अम्मारम्मेव सुमरामि दं बहा मं यहा मु कि सा पि। भणियम—सामु वि तुमं सुसको, सियममो ता वि किं तुम्ह ॥ ४३ ॥

1 जस्सकोहुमओ गीहुर स।

चेइयहरसम्मज्जण–धवलीकरणाइवावडा निच्च। सावयवयाइ भावइ, तवइ सुतिव्व तवोकम्म ॥ ४४ ॥

सुविहियसाहुसमीवे, उवएसरसायणं सया पियइ। वदणपडिकमणा पच्चखाणपमुहेसु उज्जमइ ॥ ४५ ॥

भव—पेच्छामि ताव अच्छीहिं, श्राविका—तीए किं पिच्छियाए असुईए। अहव मए दिट्ठाए, सा दिट्ठा चेव किं वहुणा ॥ ४६ ॥

जा इ सा सा जा सा साइ, दोण्हवि न भिन्नओ अप्पा। भव—ता पभणसु किं तुममेव, साविगे! नागिला होसि ॥ ४७ ॥

श्राविका—आम अह चिय सा नागिल त्ति पारूढपोढवंभवया। वसमसपुरीसाईणपूरिया उक्खल्ल व्व ॥ ४८ ॥

नियगुरुणीए कहिय, कहाणय तुह कहेमि किंपि अह। होऊण सावहाणो, अवहारसु साहु साहुखण ॥ ४९ ॥

किर कोइ जिइदिओ दिओ सज्जो मयभज्जो डहरग दारग गहाय तत्तओ नगरु(गभ)गओ निग्गओ घराओ। सो य मोक्खसोक्खमाकखमाणसो साहुसमीवे सम्म धम्म निसम्म स(म)म्मविऊ सजायसम्मइओ पव्वइओ, पालेइ चक्कवालसमायारिं, करेइ किरियाओ कक्खडाओ। सो पुण से दारगो सीयभोयणऽरसविरसपाणगाणुवाहण–कक्खडसेज्जा–सिणाणाईसु सीयमाणो, खत! न सक्केमि सीयभोयण भोत्तु, खत! न सक्केमि अरसविरसाणि पाणगाणि पाउ, इच्चाइ जंपमाणो खतेण कचि काल वट्टाविओ जयणाए। अन्नया भणाइ खत! विसमसरपसरजज्जरसरीरोऽहं न सक्केमि अविरइयाए विणा मणागंपि पाणे धारिउति। तओ परिचत्तो। अल मे असजयजीवपडिजग्गणेण। यत उक्तम्—" न वि किंचि अणुन्नाय, पडिसिद्ध वा वि जिणवरिंदेहिं। मोत्तु मेहुणभाव, न त विणा रागदोसेहिं ॥ ५० ॥" तओ गओ सो सहवासीण सुमरिऊण। एगस्स माहणस्स गेहे लग्गो कम्मगरवित्तीए, केणइ कालेण दिन्ना से दारिगा। विवाहकाले य पडियधाडीए निहणिय मिहुणगपि। सो भोगपिवासिओ अट्टज्झाणघट्टमाणो कालगओ महिसो जाओ। सो वि से पियासाहू पडियमरणेण मओ समाणो देवलोगे देवो जाओ। ओहिणा आभोएइ पुत्तं महिसरूवेण सजाय। देवमायाए कालविकरालथूलमहाकाएण सोगरिएणेगेण किणेऊण कओ सो अइभारारोविओ गि-

मस्सक्को [illegible] [illegible] निविडकम्मपरोप्परि गाएसीण तेण ववसायसुणाए वाहिप्पारद्धो। वाढे मिलाणिमुदीहो ववसायसुया पुणिय माए, अवे निम्मु सोट्टि ताडिऊणमुरुपोर जाव पहाणरुपीकम्म पम्मम्माणपाणो वि य जाओ ताव एवकत्थं बम्मम्म हेयो सिरे से बणायं। मम्ह दंड ! न समत्थेमि तं च तं च काउं ति। तं च पसमाणस्स तस्स [illegible] मए परिसं रूवं रिपु पुणावि सिव(वि)मंकस्स वयणरविम्मक्कमणदयोसमेण वायं वाईयणं, तओ निसयासाम दंड ! परिणाम्मु मम्मं मोक्खवेसु अमए पणो पणाओ पि वासेह। तेण मणियं रे रे सोमाणिम ! मा मा मे सुहं पीडेहि। तेण दुप-दुक्ख वम्ममेसो न सुणेह। वन समसरसु वन तेण वसेमो वसेमो य, धणिओ कओ मे पुरिस्सह। वसे अणिमोऽज्जेण पडिवज्जिस्सइ मणंपि वाढे धम्मसिएण सुवे अणुसासिओ य देवेण। विदुमओ वविओ देसविरई। सम्मत्तपरिणामो सोहम्मे कप्पे देवो जाओ। विम्माण णं। कणिम्मे य धीविय सुम्मे पमया [illegible] धम्ममासंसारं परिब्भमिहइ। ता पयाहे वि निप्पवेइ गच्छह सुस्सागमसं। अओ—“ पच्छावि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं। जेसिं पिओ तवो संजमो खंती य बंभचेरं च ॥ ५१ ॥ ’ (दशवैकालिके अ ४ गा० २८) पुण्णंतरे धीम माहप्पेण वारणो पावसं मुंचिउं वम्मगओ। जावं कुणो वि कारणओ गमणं। मणियं धम्मधीर धीरे ! निमेसुम्मणि। णवासी अणिसिद्दो वसिओ दुग्गुम्मिओ होयव ॥ ५२ ॥ जाव मणिम्मउसि पयमणं, तुमंपि किं नेव होसि पणं। धणियं धम्मधीर मए कमो धणसो एसो या सुमओ वि सुंमेसु, पाणु मिसुभेपसि ॥५३॥ मणियं मपरेवेण पम्म-चायसी। संपि मंसवसमेयवीम्मिर्व में समीहिओ। ॥ ५४ ॥ विरयाणिम्मममओ सुंतो तं न जाव पओसि। धम्मपत्तमम्मसओ पत्तेसि ॥ ५५ ॥ जइ घोर मिच्छत्तसुम्मणाइं दुक्खियओ वोमिविपयत्तो वि। पुण्णानसं पओइ, तइ म(इ)सं तवि पत्तेसि ॥ ५६ ॥ जइ सीरिपत्तपमूर-पोसमेयर जाइ संपवि। नमु निम्मएओ दुमिओ वि वइ तुमं चयसि मो वयणं ॥५७॥

मुणिणा तिक्खाइ वितिक्खियाइ दुक्खाइं गुत्तिगेण तए। जइ भावगुत्तिगो सहसि, ताइं ता जयसि अहुणा वि ॥ ५८ ॥
एत्तियदिणाणि दिक्खा, दव्वेणऽज्जवि कुणेसु भावेण। अणुचलियावि हु अइवेगगामिणो हुति किं न पुरो ॥ ५९ ॥ ता जाहि
सव्वहा उव्वहाहि भावेण चारुचारित्त। आलोइय दुचरिओ,[3] सिरिसुट्ठियसूरिपासमि ॥ ६० ॥ अहयपि साहुणीण, पासे पव्व-
ज्जमणुचरिस्सामि। इय तीए सिक्खिओ सो आउट्टो भणिउमाढत्तो ॥ ६१ ॥ अइ साविगे[1] सुमग्गो, उवइट्ठो सुट्ठु सुट्ठु तुट्ठो-
ऽहं। निरु निरयअधकूवे, निवडतो ताइओ तुमए ॥ ६२ ॥ त मह सहोयरी होसि, साविगे[1] गरुयरागभगाओ। निम्माए य
माया वा, निरयाइअवायरक्खणओ ॥ ६३ ॥ अहवा गुरुणी निस्सीमरम्मधम्मुज्जमप्पयाणाउ। ता ताव जामि एत्तो, तइ कहि-
यत्थ समत्थेमि ॥ ६४ ॥ इय भणिय वदिऊण, निप्पडिमाओ जिणाण पडिमाओ। भवभमणभूरिमीरू, भवदेवो सगुरुमल्लीणो
॥ ६५ ॥ आलोइय पडिक्कतो, सुतिव्वतवतावतावियसरीरो। पडियमरण आ(रो)राहिऊग सोहम्मसुरलोए ॥ ६६ ॥ सोहम्मकप्पप
हुणो, जाओ सामाणिओ समाणजुई। दिव्वाइ कामभोगाइ, भुजए जावजीवपि ॥ ६७ ॥ अह स भवदत्तदेवो, चविऊण पुक्ख-
लावईविजये। पुंडरिगिणिनयरीनाहवइरदत्तस्स चक्किस्स ॥ ६८ ॥ कुक्खीकुसेसयके, कलहसो थिव जसोहरपियाए। आयाओ जाओ
जलहिमज्जणे डोहलो समये ॥ ६९ ॥ सागरसरिसाए महानईए सीयाए सा महिड्ढीए। अवणीयडोहला चक्किणा, कया सह
सय गतु ॥ ७० ॥ पसवइ सुमुहुत्ते भूवलक्खअक्खूण लक्खण तणय। विहिय डोहलयाओ, सागरदत्तो त्ति से नाम ॥ ७१ ॥
उवचयमुवजाइ दिणे, दिणे य देहेणमविकलकलाहिं। परिणइ पसन्नलावन्नवन्नपुन्नाओ कन्नाओ ॥ ७२ ॥ अभिरमइ तारतारुन्नपु-
न्नदेहाहिं ताहिं सह निच्चं। पासायगओ पासइ, कयाइ सरयमि मेहमय ॥७३॥ कामकुसुमाणुगारी, होऊण कमेण पसरमाणो य।
सरयघणो सजाओ, कलियखमडलमहाभोगो ॥ ७४ ॥ असरिसपसरियपवमाण–पेल्लणुव्वेल्लमाणसव्वगो। पसरणकमेण होऊण,
खडखडाइओ नट्ठो ॥ ७५ ॥ इय जलहरोव्व अव्वो, अथिरो रज्जाइवित्थरो सव्वो। रणदि[4]ट्ठमिट्ठनट्ठ, धणजीवियजोव्वणाईय

१ तिं। २ जह सि B, जायसि D। ३ य B। ४ दिठ्ठनठ्ठधिठ्ठ B। दिठ्ठनठ्ठमिठ्ठ D।

|| ७६ || छ बालभावि कमर, मो वप देहकंठ तम । बहुमयमेव सुम्मर, मह पम्मथा पयमोहं || ७७ || इय सिविउम-
मक्कारसामिओ अमलतामरसमुहस्स । वयमूले मम्मईओ बहुपरिवज्जुवपरिवारो || ७८ || सुपसागरपारीओ, पमइ पमवरूवस्स
मोहियं । जिणवरथ चरमाओ चरणं परिवय सुसुरूव || ७९ || पविव मवोपवोपोवि वंमि मिज्झमि बीयसोगाए । पम्मर
दएमममाओविमसुम्मओ बाभो || ८० || कम सिवकुमारनामो अमिरओ बोम्मणुम्मम्मसुणेहिं । समवयसमाहि भुभुम्मवाहि
धह रमइ रमाहिं || ८१ || पुरनगरागरगामाभिरममहिमंडलंमि विहरंतो । सागरवत्तभगारो पसमाऽऽगारो तहिं पत्तो || ८२ ||
मनुवाव्यविय धम्मसमुमाकस्स मम्मनुम्माणे । समकधरिओ स परिसेइ, वेसमा अमयवायहिं || ८३ || मासकप्पखम वामम
परम्म देम सत्ववाहमिहे । निहिम दियवरेण कल्लाण पत्थिय य कमुवाय || ८४ || निमुणिय पाएणकम्मंबपंवमयरविम्माइं ।
धणरसुमासुमेवा-सुपवहिय पम्मेहं सिमो || ८५ || सिपयाहिण्णुम पारपंकय पणमिऊण पुरओ से । कमविसिओ घमम्मदेस
वे निरामो वमो नविरमाओ समममरमाभो । नविमसियकमासिकी पममेयं पुम्ममम्मसस || ८७ ||
मिओ नमिमेह मममं । गमपाहमो परिमो म वो स सोपह पयमेय || ८८ || ममयमंते एवस्स वह
मिमम्म तमो । समममसीहिमसमे संजमरमे समुममम || ८९ || विसय-कमाय-पमायपिसायममिसायमु
राग पीमममेसु, समममोमकम सोममाइं || ९० || सिविकपसिवरसमिकपा राजेण ममममिममिमयुममाइं ।
मसी व पुदो व || ९१ || तो सोवि पारमविमो, विमसिय वह मयम समसंबंधो । मह तर हिं कहेइ, मम्म
सुणिसीहो || ९२ || तओ तं गयमवे ममोवो पासि ममम मणुमाम । मंगुरिममामरावे, ममममपडिवमपडिमाओ || ९३ || मह
मममगुमिलोए, गहिमओ पाडिमम पमममं । वाओ सोहम्मसुरो, कहंपि ममवि पियडिपोहो || ९४ || मह
मर पुर सो संपवंपि पामसुमिओ । मह गमरामस्स पुमोपुममहपुरी न मम भेदो || ९५ || पुम्ममममासाओ
ममम रमाहे ममवे ममिममेव || ९६ ||

तओ समीहामि । इह वि भवे पव्वइऊण, पज्जुवासामि तुम्ह पए ॥ ९७ ॥ नवर अम्मापियरो, पुच्छामि सुसामि ! नियहियट्ठाए । भणिय मुणिणा मा धेहि, धीर ! पडिबधमेत्थ तुम ॥९८॥ सगिहे स गओ विन्नवेइ, अम्मापिऊ वयट्ठाए । पभणति ताणि त चेव, वच्छ ! एगो सुओ अम्ह ॥ ९९ ॥ सरण ताण दीवो, त चिय सग्गो य अहव अपवग्गो । तइ विरहियाणि अम्हे, पुत्तय ! अधाणि यहिराणि ॥१००॥ तुह आयत्ता पाणा, अम्हाण दिक्खिए तुममि तओ । घरघत्ति(लि)यससया विव, पुत्त ! पलायति ते झत्ति ॥ १ ॥ बहु भणियाणि वि जा ताणि, नेव मुचति सजमाय तओ । सावज्जजोगविरओ, जइ व्व जाओ घिइसहाओ ॥२॥ न रमइ न जिमइ जपेइ, नेव वेरग्गमग्गलग्गमणो। अतेउरेगदेसे वसेइ सुन्ने जहा रन्ने ॥ ३ ॥ विविहपयारेहिं पयपिओ वि पियरेहिं पउरपउरेहिं। जाव न मन्नइ सो किंपि, ताव रन्ना विसन्नेण ॥ ४ ॥ सद्दाविय सिट्ठिसुओ, दढधम्मो सावगो विवेग-निही । पयडियतत्त वुत्तो, कुमरो जह जिमइ तह कुणसु ॥ ५ ॥ इय कुणमाणेण तए, जीवियमम्हाणमप्पिय होइ । जहसत्तीए जइस्स ति, तस्स पासमि सो जाइ ॥ ६ ॥ पविसइ निसीहियाए, इरियावहिय पडिक्कमिऊण । वदइ दुवालसावत्तवदणेण जइजण व ॥ ७ ॥ अणुजाणावित्तु पमज्जिऊण पासे सिवस्स उवविसइ । चिंतइ सिवो जइस्स व, मइ विणओ णेण किं विहिओ ॥८॥ पुच्छामि ताव भो इब्भपुत्त ! सो वत्तिओ तए विणओ । जो सागरदत्तगुरूण, किज्जमाणो मए दिट्ठो ॥ ९ ॥ किमहमरिहामि तं ताण, पायपकयपरागपरमाणू । स भणेइ भग्ग मोणारभ दट्ठूण त तुट्ठो ॥ ११० ॥ जइ वि जईण स जुज्जइ, तहावि किज्जइ तुहावि कज्जेण । विणओ धम्मस्स धुव, भणिओ जिणसासणे मूल ॥ ११ ॥ यतः—"'मन्त्राः सतन्त्रास्त्रिजगत्पवित्रा, शुभप्र(दे) वेशाः स्थविरोपदेशाः । विशाऽनवद्या त्रिदशौघवन्द्या, श्रयन्ति सन्त सतत विनीतम् ॥ १२ ॥" जह जइजणस्स निस्समसजमस-जायसुहलेसस्स । तह वच्चिओ कायव्वो, विणओ सुसावयस्सावि ॥ १३ ॥ जं पुण दुवालसावत्तवदण दिज्जए जइजणस्स । तं तुज्झ मए दिन्न, भावजई जमसि सजाओ ॥ १४ ॥ न जिमसि न जपसे, केण हेउणा भणइ सिवकुमारो । तो दढकयवय-परिणामरसऽवस्सकायव्वमेय मे ॥ १५ ॥ जावऽज्जवि पवज्ज, पवज्जिउं दिंति नेव पियराणि । नणु ताव भावसाहू, होऊण गि-

देसि जिणधम्मि ॥ १६ ॥ जम्म य धारमानकरयोगसंयोगजणगुणमुत्तो । घर धारणं गुंजामि जम य जंपामि तेहिं समं ॥१७॥
भणियं रायणसेणं उत्तम चउम्मनिवमो ते सि । मसउमसस वि एसा भावारियाए जयपराय ॥ १८ ॥ पुण परिहरियऽऽहार
पत्ती । आहारपरिणामो जमस स धम्मियम न दसो ॥ १९ ॥ चिरपालियपणमसस तुमम पीयिपमम
जाऽऽआरो, तोमम गमेसु दिवसाए ॥ २१ ॥ जमपमणामिसेहुए, पिटु कोम परसम पहरिमेके । जमसाए इमं भद, जिमरहेत
साहेजमो जसस ॥ २२ ॥ धामजणजमार, जामद चे जजमपतपाणम । ता मे जम निम्मिओ वाम पमिओ चनं होइ ॥२३॥
रायम्मो जाद जदं, कुमार ! कुमाम साहुभूयम । सीसोम्म सममसेओ देवजमनं करिस्सामि ॥ २४ ॥ जम्माजम्मपवंचे जर
एमाई निरिहरिमम धमपंमि । जम्पामिस्सामि तिसुजमसतपजमावि ति भहुमम ॥ २५ ॥ कुमरेण होइ पवंसि जंपिजमम भणिमाओ
गणिओ । जामजोनं भुम, पारम संनिवेमं मे ॥ २६ ॥ एवं सुविमामजमममभारिमो पारसंविमपस । पारसमाधापि जद-
पिजमणि गिमपारिसिमो तसस ॥ २७ ॥ ममजोममणि मं भारजामसीव गिहीपि महरिसिमो । ते जममममसममजमुजम
देपि धम समो ॥ २८ ॥ जममपसारिसमो पंजिमसरणेम जेमसेमंसि । एससमारोणमाढ सामामिमसुपरवो पाओ ॥ २९ ॥
ममोस भिमुसमजी सुसमजी भमरजुंसपिसाजी । जिमसामिसमोसरणे सुरिसमजो सम सुमम ॥ ३० ॥ जममुंजिमम मोगे,
मिपे पणिं जिमाऽऽगमजाके । जर पमणिहे जामो हममुजो सो वदा करिमो ॥ ३१ ॥ पमणिहे मणरे जमसमरव हम्मो
जोएवि गुणागरमो । तस्सावि पिम सुरसीममारिणी भरिणी नाम ॥ ३२ ॥ जिजधम्मपुरमरण-भुंडीए दिवाजि पणि प(म्म)-
वज्ञि । निरमजणमि जाहेममोममेमुममसस जम ॥ ३३ ॥ भणियं पारिमीए को नाम जमाजमो सोहममजमकरे य के यदि ।
को ना सुरालिप, गामिपीम जाजि हुमो मलिम ॥ ३४ ॥ देमरजजरपजम-जमजमे जमजमेममोसहरवे । पंजमागमहारी हार-
हीपहारोमजासि वसो ॥ ३५ ॥ रामजतरमि रम तेणम, मजजगंपोममणं पासतो । जर जमरा जमरे धम्मसामी समोसरिओ

भडचडगरगुरुसामग्गिसगओ उसभदत्तवरइन्भो। सह धारिणीभज्जाए, वदणनडियाए नीहरिओ ॥ ३७ ॥ अंतरपहंमि
॥ ३६ ॥ भडचडगरगुरुसामग्गिसगओ उसभदत्तवरइन्भो। सह धारिणीभज्जाए, वदणनडियाए नीहरिओ ॥ ३७ ॥ अंतरपहंमि मिलिओ, से समणोवासगो निमित्तविऊ। भणिओ किंनु चिराओ, दीससि जसमित्त मित्त! तुम ॥ ३८ ॥ भणियमणेण सम-णाण, सव्वया पायपज्जुवासाए। अक्खणियमणस्स न कोइ, अवसरो अह कहसु एय ॥ ३९ ॥ उवचियचिंतासतावतत्तचित्त व्व भाउजाया मे। किमिमा सामेण मुहेण, दीसए साहसु महेयं ॥ १४० ॥ भणियमणेणं सयमेव किं न पुच्छेसि जेण वज्जरइ। तह चेव कए सा आह, साहु देवर! निमित्त ते ॥ ४१ ॥ जं पुच्छिय वियाणसि, इत्थ को नाम नहि निमित्तन्नू। मह चित्त चिंतेऊण, ता सय कहसु निद्देस ॥ ४२ ॥ जसमित्तो मतेऊण, तो खण आइसेइ हु नाय। उत्तमपुत्तमपुत्ता, विसन्नचित्ता समीहेसि ॥ ४३ ॥ सउणो सउणो लद्धो, सिद्धो च्चिय ते मणोरहो अहुणा। इह भरहे चरमो [1]केवली य तुह पुत्तओ होही ॥४४॥ तुह किंतु अतकेसरिकिसोरमुच्छंग-सगय निग्गय व चदाओ। त सुमिणमि समिक्खसि, अचिराओ पत्तओ एसो ॥ ४५ ॥ हरिसभरनिन्भरंगी, सह जस मित्तेण सा पयपती। सहसत्ति उसभदत्ताणुचारिणी काणणमि गया ॥ ४७ ॥ तिपयाहिणपुव्वं, पणमिऊण पाए सुहम्मकेवलिणो। दोन्निवि दूरियदुरियाइ, देसण ताइ निसुणति ॥ ४८ ॥ राओ, अच्छइ तुच्छो स केणइ सुरेण। आराहिएण रत्त, जाही जाणेमि त न सुर ॥ ४६ ॥

तथाहि—"नृभवादिसर्वसामग्र्यमग्र्यमासाद्य शाश्वतसुखाय। यतनीयमसात[2]शताऽऽश्रिता हि गतयश्चतस्रोऽपि ॥ ४९ ॥"

आकृष्टिर्घटिकादतिसङ्कटमुखाच्छित्त्वा च भित्त्वा च सा, पाक पावककन्दुकेषु क्र्न काकश्च कङ्कादिभि।
ज्वालाजालकरालसज्ज्वलदयःपुत्री दृढालिङ्गन, कामेका नरकाननीषु विषमामाचक्ष्महे वेदनाम् ॥ १५० ॥"

[1] केवलीण ते अत्तओ होही B C D। [2] शि O, सिता श्रिता D।

दुष्पापुण्यसरित्समीरशिशिरश्वासामिमानामिमिम्मीभिम्बबबबबम्बविनयस्वचोरमिक्तोम्ब्नै ।
प्रो निष्ठुरसूरिभारमरम्भऽऽरोपाविभिस्त्रातिरर्कोनो विचरन्ति बविक्षकथ संसारिभि सोभ्वनैः ॥५१॥"
रोषोन्मत्तविमुमसमुरनिचो गार्हस्थ्यमहोर्णा, ये पातिसम्पामिसुत्रिपुरो वस्वारिनिन्नन्नभ ।
संभमामसममविमहमिषा रोपूवमानास्ततो मस्पर्यनामपि चिन्तममामसुखिर्वं किंचिन् तेषां सुखम् ॥ ५० ॥"
"ए मम्मसुमपेमिमाति—रचिता कि मम मो मोमस्य स्याकर्म सहसाऽत्र गर्भमरपेऽपीत्यादिसस्पूर्वम् ।
तिममसपि मम्मशमिवममोर्ते तुरप्तव नव स्यान्तं सवकोरिकोटिमरगानिशहूर्तं परम्परा ॥ ५१ ॥
मावमार्वं दुष्पसमेतभिरिममसमयृतो भूरि बस्ममुच्चमीः घमे ममम्म(म्मो)ऽम्युपगोऽयुपपमिमितमो शिविसोभ्मोऽयुपाम्ने ।
सोऽभासे मम्मोऽत्र प्रयुम्परिचिता मसतरर्मीरितो दीक्षा शिक्षा च साम्वाभिमापदिमाम्निता वर्षवामामेमरके ॥ ५४ ॥
स्थिरेह नारिणी सम्मेष गामेह मार्ग वेममी मम्म । त किमर सरीरं, आरमसुमरेमि वं देवं ॥ ५५ ॥ पूर्वमिपि सामी,
मंगुरिमस मंगुरस्सेमि । विविविमिमासस्स कम्मरिमस्स मरुमम्पं मयर ॥ ५६ ॥ इह पवसमयणम्मस्स माति मम्म मय-
ऽमीवमिरा मसुमनममो वेसप सराप मिता । मममपा परमनमाति मुसस्योप महामतो रिय, मामा सेन मुरोमरममसमिता
संसारमसम्मा ॥ ५८ ॥" ¹मूरिमम—मेस—हिंमा—वेसम—मुसीमम ²भि न म ममणं । ममे सूर्वं मम मु, ममम्मेसिपि वं
सूर्वं ॥ ५९ ॥ समिष(य)न सह मिमार, मास वेम्पऽऽमरो समस्सेप । मरमामो ममुप्परेमं मामप मिम्मममामं ॥ ६०॥ मस
ममसतो संतो मतो एमेन माहमि सो मामि । मामा य ³ममपामीति, जेन मामम पमोमो मि ॥ ६१ ॥ महमि मिमामसमाते

¹ P ड । ² नि च मर्णो C । ³ जममारमी C P ।

तया दयाए समागओ उसभो। जह वच्छरेहिं जेट्ठो, स तओ तह ज गुणेहिं पि ॥ ६२ ॥ उक्त च—" उपकारिणि वीतमच्छरे वा, सदयत्व यदि तत्र कोऽतिरेक। अहिते सहसापराधलब्धे, सदय यस्य मन' सता स धुर्यः ॥ ६३ ॥ " चरणगमग्गसलग्गउत्तमगो समग्गअगेहिं। विवसो वारवार, खामइ दुव्विणयमुसभं सो ॥ ६४ ॥ ज तुज्झ [1]भाय! न सुहाइ, तिव्वसतावमुव्वहसि जेण। ज [1]वारसि आजम्म, मए कय त चिय खमेसु ॥ ६५ ॥ धीरविओ तेण तहा, कहपि जह तम्मओ इमो जाओ। पचनमोक्कारपभावओ य भवणाहिवो मरिउ ॥ ६६ ॥ जाओऽणाढियनामो, महिड्ढिओ तारतेयव तियसो। उव्वहइ पक्खवाय सया वि दत्ते सरलचित्ते ॥ ६७ ॥ इय देसणाऽवसाणे, पणमिय दत्तो निय गिह पत्तो। देवगुरुसघपूयापरायणो गमइ दियहाइ ॥ ६८ ॥ सयमट्ठोत्तरमायविलाण मन्नेइ [3]धारिणी धीरा। सिरिजबुदेवयाए, तह तन्नामेण सुयनाम ॥ ६९ ॥ अह चवि(य)उ बभलोगाउ, भुत्तभोगो स विज्जुमाली सुरो। समए धारिणीगब्भंमि, आगओ जह गुहाए हरी ॥ १७० ॥ अह मयरायकिसोर, सेय सुमिणमि पासिऊणेसा। पडिबुद्धा गतूण, त साहइ उसभदत्तस्स ॥ ७१ ॥ पभणइ पणयमेस, तीए जसमित्तमित्तवुत्तत। परमपमोयपसन्ना, धन्ना सा वहइ अह गब्भ ॥ ७२ ॥ जिणपडिमापूयासुं, जइजणपडिलाहणाविहाणेसु। दुत्थियदीणुद्धारेसु, तीए तो डोहलो जाओ ॥ ७३ ॥ अगणियदव्व दिंती, तह वरवत्थाइवत्थुवित्थार। माणियडोहलया सा, जाया जाया ससिच्छाया ॥ ७४ ॥ पडिपुन्नेसु दिणेसु, लग्गे लग्गे य सग्गुणसमग्गे। पसवइ पुत्तं सा कप्पपायय पिव सुमेरुमही ॥ ७५ ॥ चेइहरचारुपूयापयार[4]पारंतनिब्भरजणोह। तूरखाडवरमत्तचित्तनच्चतनारिगण ॥ ७६ ॥ कारागारविसोहणसोहणदीणाइदाणरमणीय। रिद्धं वद्धावणय, कारावियमुसभदत्तेण ॥ ७७ ॥ पत्ते दुवालसाहे, साहू पडिलाहिऊण सुद्धविहिणा। नीसेसनाइनायरसायरदिन्नतवरभोज्ज ॥ ७८ ॥ महया महूसवेण, से नाम निम्मिय सुहमुहुत्ते। दिन्नो जबूदेवेण, जबुणामो त्ति तो होउ ॥ ७९ ॥ नवकप्पपायवो पाउणेइ पइवासरपि जह वुड्ढि। तह पचधाइपरिवारपरिगओ जबुणामो वि ॥ १८० ॥ अयमविकलमकलक, कलाकालवं कलेइ

---

[1] साय B। [2] निवारासि। [3] मोयग द्रोण। जबूसुरस्स जाय तह D। [4] किज्जत a।

सव्वमवि । सह मिच्छंकडीए, सा भणइ अम्मयासु ॥ ८१ ॥ पुणरवि सुहम्मसामी समागओ रायगिहपुरदुवारे । जंबुकुमारो भविय वराणमो निग्गओ नमिउं ॥ ८२ ॥ आयणसमोसरिओ धम्ममिणं पहु पुरो भणिओ य । इरिसियहियओ निसुणेइ, देसणं भवभयखयकरो ॥ ८३ ॥ सव्वम माणुसत्त चोल्लगपमुहदुलहं लोए । मा मा पमायमइरामत्ता विहलेह भेय फलं ॥ ८४ ॥ जेण मसमपिसिलिमिकलमलकोट्ठागार जीवाण । जोव्वणसुम्मय मयणामिरामरामा कलत्तत्ते ॥ ८५ ॥ जरजज्जरमज्झो वि य भओ रोगाइसमागमिभओ । रमणीओ विमणीओ अप्पम य बाहुगेयणाओ ॥ ८६ ॥ अइसयसरस भज्जी पच्चपचसा जहा वयणामि । पियजणसंजोगो जोवि सो वि संपायविपरिओगो ॥ ८७ ॥ इय भवभावे परिभाविऊण सव्वेवि भंगुरसहावे । सास यसोक्खे मोक्खे मुणो मओ तत्थ भाई ॥ ८८ ॥ स पुणो पव्वज्जाए, अणायाए पवज्जियाए मरे । जीवस्स विस्स किं सा, करेइ सामी सुलेवेमि ॥ ८९ ॥ सा होइ समरस्स, मुणुस्स वहिरणय पुण सुरूप । सिवसुहमिहेव देसइ, संतोससमाहिसंपन्न ॥ ९० ॥ पव्वयमे पत्थीव, मिमोइ गम्भारिमं मुणी स रज्जो । इच्छामि सामि ! पासे तुह पव्वज्जं पवज्जेउं ॥ ९१ ॥ भणइ पहु पडिबंधे मा वीर ! बोहि पुण भणओ मुणओ । भणइ स अम्मापियरो अणुजाणावेमि ताव अहं ॥ ९२ ॥ आरओयाए ताव वैभवरे बसिमाणं देह । पव्वज्जापारंभे पव्वोऽवि होउ भाइ पहु ॥ ९३ ॥ इय निययमिय स भिमयो अइसयसंभमाए सपयगओ । स एवं विन्नं पवो पियरे विम्मयविसमायत्तो ॥ ९४ ॥ मिसुणा सुहम्मसामिस्स देसणा अज्ज ताय माय ! मए । रहिया मर्मंमि सासयकेनयेवेय जीवस्स ॥ ९५ ॥ आइसहु ताय ! माए ! जं कम्मेयंति तेहिं संलत्ते । स भणइ पव्वज्जाए, अणुजाणह ता मममि-धाणि ॥ ९६ ॥ इय मिसुणिऊण मुच्छामिमीलियलोयणाइ ताइं पिव्वडीय । निरंजिऊणयविसपुव्वलेसणाइ जंपंति दीणसरं ॥ ९७ ॥ तं कप्पपाओ पुत्त ! अम्हं गेहंमि तं सिया विनयं । कइया तुह अमिभयं व नोकुहइ वसंति ॥ ९८ ॥ अणुकंपेमिपाहिं पडिकंपेमिपाहिं, सिमरीहिं मुपसवेहिं । पवसियो पवणमाहिं, जाव मणइ न वरमबले ॥ ९९ ॥ पभणेवि ताव अम्मो कज्जपरिण

१ मुणी ० भणी B ।

यमगलस्स मुहकमल। तुह पिच्छिऊण छोमो वच्छ! कयत्थाइ सत्थाइ ॥ २०० ॥ जपेइ जंबुनामो, माए! मन्नामि सम्मयमिम ते। कयपरिणयस्स जइ नाम, सम्मयं मज्झवि कुणेह ॥ १ ॥ तो धारिणीसमुद्दप्पियपमुहाणट्ठसत्थवाहाण। पउमावइपमुहाणं, अट्ठण्ह सत्थवाहीण ॥ २ ॥ वरइ अर कन्नाओ, सुवन्नवन्नाउ अट्ठ धन्नाउ। समरूवजोव्वणाओ, उन्नणकद्दप्पदप्पाओ ॥ ३ ॥ सिंधुमई पउमसिरी य, पउमसेणाय कणयसेणा य। देवभवभारियाओ, इमाओ ता चेव चत्तारि ॥ ४ ॥ अन्नाउ नागसेणा, कणगसिरी कमलवइ जयसिरी य। तेहिं विवाहो तासिं, महरिहरिद्धीए पारद्धो ॥ ५ ॥ गुम(रु)गुमिरमद्दलुद्दामसद्दफुद्दतकामिणीसमूह। वित्तं पाणिग्गहण, जनूपहुणो कया पूया ॥ ६ ॥ कयकोउगमगलो, सव्वालकारभूसियसरीरो। सह ताहिं वासगेहे, गओ निसाए नव-वहूहिं ॥ ७ ॥ सिंहासणे निसण्णे, अट्ठहिं वरविट्ठरोवविट्ठाहिं। सहइ सए तत्थ ताहिं, पवयणमायाहिं धम्मो व्व ॥ ८ ॥

इओ य—जयपुरनरिदविंझस्स, आसि अगुब्भवो पभवनामो। पिउणा पहुस्स लहुणो, सुयस्स नियगप्पिय रज्ज ॥ ९ ॥ जयपुरपुरसेहरए, सजाए पत्थिवमि पहुनामे। पभवो समाणमाणाओ, निग्गओ जयपुराहिंतो ॥ २१० ॥ विंझगिरिपायमूले, कडग-निवेस कराविऊण ठिओ। सन्निहियसत्थगामाइलूडणाईहिं जीवेइ ॥ ११ ॥ जाणित्तु जबुनामस्स, परिणयेणऽत्थलच्छिविच्छड्डं। रायगिहे रयणीए, उब्भडभडचडगरेण गओ ॥ १२ ॥ ओसोयणिविज्जाए, सोयाविऊण जणमसेसपि। सो जाइ जबुनामस्स, मदिरे मेरुसिहरेव्व ॥ १३ ॥ तालुग्घाडणिविज्जाए, तालयाइ विहाडिऊण लहु। विवरियसव्वदुवारे, पविसइ नियमदिर व्व तहिं ॥ १४ ॥ घरहरघोरतजणाहिं, जाव तेणा विभूसणाईय। उल्लुटणाय लग्गा, समग्गभडारगाण पि ॥ १५ ॥ नीसकमाणसो तो, भणेइ सिंहासणे समासीणो। जबूनामो भो मा, छिवेह पाहुणयजणमेय ॥ १६ ॥ वयणेण तेण तेणा ते, सव्वे थभिया तओ भवणे। चित्तलिहियव्व जाया, अहवा पाहाणघडिय व्व ॥ १७ ॥ पभवेण तओ दिट्ठो, उवविट्ठो ताहि तारतरुणीहिं। सा(रय)-यरनिसायरो इव, गयणे ताराहिं परियरिओ ॥ १८ ॥ ते नियसुहडे अयमुब्भडे वि थभेव्व थभिए दट्ठु। घवइ चमक्कियचित्तो, सुपुरुस! त कोवि सुमहप्पा ॥ १९ ॥ जं अवसोयणिविज्जावज्जस्स व ते न किंपि पहवेइ। दट्ठूण लुटमाणे, न हु वहणट्ठाए

[illegible]सि ॥२२ ॥ [illegible] नमामि पमत्तो [illegible] [illegible]पुरेस[illegible]स्स । [illegible]सामो [illegible], [illegible] [illegible]ऽपमो ॥२१॥ [illegible]
[illegible] मे न [illegible] [illegible] तेन मिलमसि । [illegible] [illegible] मे [illegible] [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] च जं मनसि त च [illegible] । पमत्तेर [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] परमत्तं ॥ २३ ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] । मयिर[illegible]-[illegible]पि मे [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] पमाय [illegible], [illegible] सम्म [illegible] ।
[illegible] [illegible] करिस्सामि ॥ २५ ॥ [illegible] पमत्तो [illegible] माण-लोभ-परिमुक्को । [illegible] पमत्तेर,
[illegible] परमम्मिच ॥ २६ ॥ [illegible] मोए, इमाहिं रामाहिं सह [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥२७॥
[illegible] [illegible] [illegible] पसंसप [illegible] । [illegible] मह [illegible] [illegible], [illegible] ते [illegible] ॥२८॥ [illegible] [illegible]—

[illegible] पर्यटन् [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥ २९ ॥ [illegible], [illegible]-
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible]ऽपि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible], [illegible] महान् । [illegible] [illegible] [illegible]-
[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible], [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३३ ॥
[illegible] [illegible] तं मूढे [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible]ऽपि [illegible], [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] न
[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]ऽपि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] नमामि [illegible], [illegible] [illegible] ॥ ३८ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३९ ॥ [illegible] [illegible] स [illegible]
[illegible] [illegible] । [illegible] स [illegible], [illegible] स [illegible] ॥ ४० ॥ [illegible] स [illegible] [illegible] [illegible] स [illegible] ।

अप्रमत्तादजगरो य, सेय नरकदुर्गति· ॥ ४१ ॥ ये चत्वार· पुन· सर्पास्ते कषाया क्रुदादय । श्वेताऽश्वेतौ च यावाखू, तौ पक्षौ मासि तादृशौ ॥ ४२ ॥ तद्ब्रूमहे बन्धशैथिल्य, तदन्ते जरसा स्फुट। ये सञ्ज सरघाना तु, व्याधयश्चाधयश्च ते ॥ ४३ ॥ याऽऽश्लग्ना लता लम्बी, सा प्रिया प्रणयैकभू । मार्द्वीक यद्गतासक्त, सुख वैषयिक हि तत् ॥ ४४ ॥ य स्वर्गी व्यसनत्यागान्मुदे नयति नन्दनं। धर्माचार्य स ससारत्यागान्नयति निर्वृतिम् ॥ ४५ ॥ इति मधुबिन्दुदृष्टान्त ॥ नैवेच्छेद्व्यसनविनाशतः स सौन्दर्य मूर्खश्चेदमृतभुजा वितीर्यमाण। तद्ब्रूहि प्रभव ! भवक्षयेण मोक्षमाकाङ्क्षाम्यहमपि दर्शित मुनीन्द्रै ॥ ४६ ॥ सुसखे ! धर जीव एप नृणां पशुरथवा पृथुसाहसेऽप्यशङ्क । विषयसुखलवैकलम्पटात्मा, गुरुमपि गणयति यन्न दु खशैलम् ॥ ४७ ॥ प्रभव· प्राह भो भ्रात !, प्रत्यक्ष पितरौ तव। प्रेक्ष्यते त्वन्मयप्राणौ, प्राणितस्त्वा विना कथम् ॥ ४८ ॥ तवशापल्लवोल्लासा, कान्ता गता यथा लता·। नैव स्यु· कस्य हास्याय, त्वा विना निष्फलोदया ॥ ४९ ॥ जल्पित जम्बुनाम्नाऽथ, माता तात सुत· सुता। कान्ता नैकान्तिक किंचिद्भवेऽस्मिन् परिवर्त्तिनि ॥ २५० ॥ यथोक्तम्—अनाद्यनन्ते ससारे, केन केन न कस्य न। सम्बन्धो जन्तुना जन्तो, केय स्वपरकल्पना ॥ ५१ ॥ माता भूत्वा दुहिता, भगिनी भार्या च भवति ससारे। व्रजति सुतः पितृता, भ्रातृता पुन शत्रुता चैव ॥ ५२ ॥ परलोककथा यद्वा, दूरेस्त्वत्रैव वीक्ष्यते। मात्रादीना परावर्त्तः, प्राणिना क्लिष्टकर्मणाम् ॥ ५३ ॥ अथ एकस्मिन् भवे सम्बन्धविचित्रेण ज्ञातमेक तनूभाजा, महावैराग्यभागभाक् ॥२५४॥ मित्र ! अवधानमाधाय, क्षणमात्रमिद शृणु।

कुबेरदत्त–कुबेरदत्तायुगलकथानकम्—

यथा—मथुरानगर्यां कुबेरसेना नाम्नी सुतनुलेश्या वेश्याऽभूत्। तस्याश्च प्रथमगर्भेण निर्भरायामगाधाया बाधाया जाताया जल्पितमम्बया, वत्से ! किममुना गर्भभारेण। केनापि प्रकारेण पातयाम्येन किमस्माकमनेन व्यसनेन। असम्मते जाते तस्यास्त-स्मिन्नर्थे प्रस्तावे जात युगलक–पुत्र पुत्रिका च। भणितमम्बया त्यज्यतामेतत् कृतमनेन वेश्याधर्ममर्मच्छिदा। प्रोक्त कुबेरसेनया मात· ! उत्तालचित्ताऽसि यदि तवात्यन्तमेतत्कर्त्तव्य तदा दिनदशकादूर्ध्वं कुर्व्वीथा यथारुचितम्। तत कुबेरसेनया कुबेरदत्त· कुबेरद-

पति स्वनमाहूय । मुद्रिके निर्माय स्वपत्रं यावे आत्मपरस्परनामाङ्कितासुरिनामयं मंसूपायं निधिन्यं मुद्रिकायुग्मयुक्तं युगलम्। मनसिजा सा नायस्य जमिलर्थ मधुमतिम्नयाचं। प्रतिकमान्नवसेव प्रवहन्ती प्रसूते मन्मूल तोरिस्कुमानावबोधितयेन प्रोषाऽऽगमनहवे प्रापम प्रविष्य मीतल च। परम्प्रस प्रमेवर्तीमव हिमधेन। वासिश्रीरिपस्य स्वमेवस्माकमिति गृहीना कुबेरदत्त स्वेनाम्ना नाम्ना। यानौ च तौ क्रमेण वर्धितौ। तथा नवीनयौवनिन्दर्शनसमयमधीपमयौचितदत्तयान्यं तावयमि मप्रमर्द सुपरस्परसंस्त्रविशेषो विशेषमयावनास्मिन्निति ब्रजत्वयोर परिणयः। हितमिदिते स्वकिलयं कान्तमारम्भाय माणिक्योरथं सापितं कुबेरदत्तेन मदनक मानाहत मुद्रिम। कुबेरदत्तपार्श्वमागमेक्षत्वम् स्वमुद्रिकानिर्मोचनात्मयो संसारसुखपरमलोमाटयं च निपत्स्पा संशये विरम्य कथापितम सहायोऽस्य त्वम्। स दिने मति परिणयारम्भसंरम्भो मे मानवान्य म नायसपि मां मति। व्याविमर्थ विचिन्त्य विचलितेन कैनापत्र ॥ पारयति मम कर्मिन् कर्तुं न मनोऽभिकत्र जेमयम्। दत्तनपि यदपि दैवं शुभमशुभं वा निमन्त्रयम् ॥ २५५ ॥" तथो विपिश्चिय सयो गृहमीषं मुद्रिकायोः कुबेरदत्तस्ये दिनीये गत्व मम मातुरन्तिके। तस्य [illegible] इय सा यथा तयोरत्नाव देवतया वा कुदिनाद स्थानमिति। निवेदितो माता यथावृत्तो कुम्भवतसत्ये। स्वयरि प्रवेशितो विश्वमसमवत्ता सर्वः कुबेरदत्तः। ( १ ४.११४८ २.८.११ ) तनयपि मुद्रिकानपरयोर्नोसपत्रवस्त्राणि कंथ पचेलालसुखा समाता वयोवोपर्यमकारीन्। अनुचितमपरामिक्षेपनिर्संबन्ध(वा)मक्लतेवाय ममामरपिस्तयेव संमुखमानयन्— मनुचितमाचरितं युवाभ्यां कर्तव्यमिदमस्तपोवनमेवविवर्मा विधिना, यत् मायापि [illegible] सोऽपि योग्य मनुष्यमीविवि विमृश्यत्वमेव स्वसिमये। एतस्यास्तमसुख गत्वा नय तनेव मिरेन मरणेच्छ त्रियोः मध्वयीन्। मुद्रिकां च वी मोगामिनी स्वपार्श्वे पत्र न्यसयीन्। विधिमासि दीप्तपि वर्षासि पत्रमाभ्यास नस्य अवधिमानुसारि। पदाऽऽयोगेन मातपमी बसवि कुबेरदत्तं व्याहरनत्य मधुरपुरीमार्ग कुबेरसेनमाम्नय स्वमपासा सह संवास्ये। मधुरायामासे धानुजी देमोत्संगीत्यम्। तदमिमिलयनत्र महो ब्रजामनिभृतिमस्तम्। महो जनितविनिरक्षम। महो जनिवेणमधितेत। महो निमिमन्मानुम्

कस्य विपाकः। तत्तावदुत्तारयामि पापान्धकूपकोटरात् कथचिदेतमिति विचिन्त्य प्रवर्त्तिनीमनुज्ञाप्य प्राप्ता सा मथुरायाम्। तस्याव-ज्ञातचर्यया याचितकुवेरसेनार्पितस्वसद्मैकदेशे। कुवेरसेनाऽपि स्वबालकमार्थिकान्तिके निक्षिप्य स्वव्यापारपरायणा यावदास्ते तावत्त-स्यास्तत्पार्श्वे विशिष्टविष्टरोपविष्टकुवेरदत्तस्य च प्रतिबोधाऽऽधानधिया बालकमुपलालयन्ती जजल्पेपा। त्व बालक! [1]भ्राता [2]भ्रातृव्यो [3]देवर [4]पुत्र [5]पितृव्य [6]पौत्रश्चासि मे। यस्य च पुत्रस्त्वमसि सोऽपि [1]भ्राता [2]पिता [3]पुत्रो [4]भर्त्ता [5]श्वशुर [6]पितामहश्च मे। यस्याश्च गर्भात्प्रादुरभूद्भवान् साऽपि [1]माता [2]श्वश्रूः [3]सपत्नी [4]भ्रातृजाया [5]पितामही वधूश्च मे। कुवेरदत्तेनेदमाकर्ण्य साक्षेपमाचचक्षे, आर्ये! किमसमञ्जसमुल्लपसि परस्परव्याहतव्याहारो हि नार्हतदर्शने कस्यापि दृश्यते। आर्या व्याजहार–श्रावक! मा मामेवमाक्षिप। सर्वं तथ्य पश्य सूपपाद चास्मि वच्मि। नहि दृष्टेऽनुपपन्न नाम। अवधिज्ञानेन हि ज्ञातोऽयमर्थो मया तथाहि—१ भ्राताऽय मे बालक–एकमातृकत्वात्। २ भ्रातृव्यो–भ्रातृपुत्रकत्वात्। ३ देवरो–भर्त्तुरेकमातृजातलघुभ्रातृत्वात्। ४ पुत्रो–भर्त्तु पुत्रत्वात्। ५ पितृव्यो–मातृभर्त्तुर्भ्रातृत्वात्। ६ पौत्रश्च–सापत्नपुत्रस्य पुत्रत्वात्। १ बालकपिताऽपि मे भ्राता–एकमातृजातत्वात्। २ पिता–भ्रातुः पितृत्वात्, मातुर्भर्तृत्वात्। ३ पुत्र–सपत्न्या सजातत्वात्। ४ भर्ता–तेन परिणीतत्वात्। ५ श्वशुर–श्वश्रूभर्त्तृत्वात्। ६ पितामहश्च–पितामह्याः पतित्वात्। यस्याश्च गर्भादभूदय बालक सा मे—१ माता–जन्मनिमित्तत्वात्। २ श्वश्रू–भर्त्तुर्मातृत्वात्। ३ सपत्नी–भर्त्तुः कलत्रत्वात्। ४ भ्रातृजाया–भ्रातुर्भार्यात्वात्। ५ पितामही–जनकमातृत्वात्। ६ वधूश्च–सापत्नपुत्रस्य भार्यात्वात्। सम्बन्धाष्टादशकसूचिके गाथे यथा—[1]भाय [2]भत्तिज्ज [3]पित्तिव्वो, [4]महपोत्तो [5]देवरो [6]सुओ सि तुम। तुज्झ पिया य [1]पियामह, [2]पइ [3]भाय [4]सुओ [5]ससुर [6]जणओ ॥ २५६ ॥ माया य तुज्झ बालय! मह [1]जणणी [2]सासुया [3]सवक्की य। [4]वहु [5]भाउज्जाय [6]पियामही य एत्थेय जम्मम्मि ॥ ५७ ॥ कुवेरदत्तेन सजातससारवैराग्येण कुवेरसेना प्रतिबोधविधानाय प्रोक्तमार्ये! विशेषतो ऽप्साम्येनमर्थं ततो निबिडव्रीडाजाड्यवान् शुश्रूपते। आर्यिकाऽपि मुद्राद्वय सवादयन्ती कुवेरसेनाजठरयुगल-जन्मतः प्रभृति प्रत्यपीपदत्। कुवेरदत्तस्तदाकर्ण्य संजातसवेगवैराग्यवेगश्चिन्तयामास। धिगज्ञान मे येनेदृशमकार्यं कार्यं स्म। 'अज्ञान ...

एतु मम [illegible]पि सर्वपापेभ्यः । [illegible] दिवसमिदं वा न वेत्ति [illegible] ॥ ५८ ॥ [illegible]-
[illegible]संपर्कात् । सुपमपि [illegible] शक्नोमि न हन्मि [illegible] त्वम् ॥ ५९ ॥ [illegible] ! [illegible] साम्प्रतं [illegible]
[illegible] । [illegible] मम स्यात् पातको [illegible] ॥ ६० ॥ [illegible] ! [illegible] ! [illegible] ।
[illegible] पापहते [illegible] विपुलस्य ॥ ६१ ॥ [illegible]
[illegible]पि [illegible] जाता । [illegible] ।
महो मुनि [illegible] तस्मात् [illegible] । [illegible] भवति [illegible]पि यं मे [illegible]
[illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible] पुत्रको [illegible] पितॄणां [illegible] गतिर्नास्ति पुत्रिणी ।
गतिः स [illegible] न नाम सत्वं [illegible] । [illegible] भवति [illegible] (म) [illegible]पि ॥ ६३ ॥ [illegible]-
[illegible] पुंसां । [illegible] पितॄणां [illegible] ॥ ६४ ॥ [illegible] पिण्डं
[illegible] तु [illegible] स्यात् । [illegible] ॥ ६५ ॥ अथ महेश्वरदत्तकथानकम्—

एवं पुरेण पितॄणां परित्यज्य तत्र [illegible] । [illegible], स महेश्वरदत्त [illegible] ॥ ६६ ॥ तस्य [illegible]
माता [illegible] । [illegible] भवति न धर्मवार्तामपि [illegible] ॥६७॥ [illegible] पत्नी [illegible]ऽभूत् ।
[illegible], [illegible] गृही [illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible], [illegible] ।
[illegible] माता ॥ ६९ ॥ [illegible] रमयन्ती [illegible], [illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ७० ॥ [illegible] गत्वा [illegible]ऽभवत् । [illegible]
[illegible]योगे(गात्) । [illegible] महेश्वरदत्त[illegible] ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ [illegible] सौभाग्य

रिके पितु समुद्रस्य । क्रीत्वा हत्वा महिप' स संस्कृत स्वजनभुक्तिकृते ॥ ७३ ॥ उत्सगीकृतपुत्रो, महेश्वरो यावदत्ति तन्मास । क्षिपति पुरस्ताद्बहुलाशुनिकायै तस्य चास्थीनि ॥ ७४ ॥ तावन्मासक्षपणस्य पारणे साधुरागतस्तत्र । पश्यति त वृत्तान्त, ज्ञानविशेषेण लीनमना ॥ ७५ ॥ धूत्वा शिरो नरखच्छोटिका च दत्त्वा महामुनिर्न्यवृतत् । अगृहीतभिक्ष एव, क्षणेन येनाऽऽजगाम पथा ॥ ७६ ॥ चिन्तयति स्म महेश्वरदत्तो ज्ञातेङ्गितो यतेस्तस्य । अनुपदलग्नोऽपृच्छत् , प्रणम्य पादौ स्वगृहकुशलम् ॥ ७७ ॥ किं न गृहीता भिक्षा, भगवन् ? मुनिराह कल्पतेऽस्माक । न खलु पिशिताशिवेश्मनि, महेश्वर प्राह को हेतु ॥ ७८ ॥ मुनिराह महादोप, मासास्वादनमधर्मतरुमूल । स्थलचरखचरादीना, जीवाना येन वधहेतु' ॥ ७९ ॥ विक्रीणीते क्रीणाति, पोपयेन्मारणाय यो जीवान् । तत्पिशित संस्कुरुते, भक्षयति स घातक. सर्व ॥ ८० ॥ भवति यथा शाकिन्याश्चिसादिया मानुपाङ्गमालोक्य । पिशिताशिना तथा विश्वदेहिदेहान् विलोकयताम् ॥ ८१ ॥ य' परलोक कर्माणि, मन्यते कोऽपि तेन मननीया । हिंसाऽहिंसा विरतिश्च, पाप्मने श्रेयसे क्रमश' ॥ ८२ ॥ तेन न भिक्षे भिक्षा, मासाशिकुलेष्वहं जुगुप्सावान् । भवतो गृहे विशेषादित्युक्त्वा स स्थितस्तूष्णीम् ॥ ८३ ॥ मुहुरभ्युक्त पदपद्मयुगमपरिपर्युपास्तितात्पर्यात् । कथयितुमारेभे, तस्य मातृपित्रादिवृत्तान्तम् ॥ ८४ ॥ पितृमहिपमासमशित्वमस्य वत्सरदिने प्रभू शुनिका । पत्युरस्थीनि भक्षयति, पुत्रमङ्के वहसि शत्रुम् ॥ ८५ ॥ इत्याकर्ण्य महेश्वरदत्तः संवेगमागत परम.। तस्य मुने पादान्ते, दीक्षा शिक्षा च जग्राह ॥ ८६ ॥ ज्ञाता तदेवं प्रभव !, त्वयासौ पुत्रात्परित्रास्ति परत्र यादृक् । तत्किं सखे ! पुत्रविधित्सयैता, त्यजामि दीक्षामृतपानलीलाम् ॥ ८७ ॥ एत्थतरे पियवियोगदुक्खंतरियलज्जाए कडक्खसज्जाए जपियं जेट्ठभज्जाए सिंधुमईए । सामि ! को नाम तुम्हाणमेत्तिओ परलोयसोक्खाय निव्वाअक्खेवो, उवभुजेसु ताव इमे महाभोग भोगसुह, मा ते मयरदाढाए व्व उभयाऽभावाओ पच्छुत्तावो भविस्सइ । भणिय जवुणामेण—“ बाले ! लीलामुकुलितमसीमन्थरा दृष्टिपाता , किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यर्थ एप श्रमस्ते । सम्प्रत्यन्ये वयमुपरत बाल्यमास्था भवान्ते, क्षीणो मोहस्तृणमिव जगज्जनमालोचयाम ॥ ८८ ॥” यद्वा कथय कहानक तावत् । तओ अहोमुही कहिउमारद्धा, अह मयरदाढाकहाणय—

अवंतीए जणवए एत्थ वणवाओ तस्स सुभओ नाम विहिवसिओ तणओ। सो य सयलकलाकलावपारगामी आणिऊण पियरं वेसिओ तएण विहीए ववहारत्थमुज्जेणीए। तत्थ विविहे ववहारमाणो कमेण कामपडायाए नाम गणियाए वेसाए घरे पायाए। तीए य सद्धिं तेहिं पगारेहिं तहा विलसिओ जहा वरिसेसु हिं आओ तम्मओ। अन्नया गणियाए कयमग्गो य महामायाए सयल कयसाहण पणमइ पवेसदि अवायमाणो गणियामणाओ निमाओ गेहाओ। चिंतेइ य। मेरुनिहाए तीए मए तत्थ मुहाएँ मुहियपि मए मरिसई तहा जाव (हा) ही किं धम्मं कओ वि ॥ ९॥ नरेण य देहेण य रमेण य अत्थिएण गाहेण। तहावि य होइ एसा वेसा वेसवि मुग्गमिव ॥ १० ॥ मुण य मुण वज्जवि— अन्नु स्वाइ अन्नु गहि कमाइ अन्नु जंघु वेसमइ कमाइ। मुहि कामकोमलसव्वसरिह अभिरममसविलास(सि)हि वेसहि ॥ ११ ॥ भविसहि राया मंति हमइ जइ मासइ ता तस्सु। वेसु विसिट्ठय न करइ न कहुइ कायलु ॥ १२॥ न कहुइ करयलु करइ, रररेहतिरासंगइ। मे जि विसिट्ठय वेसाए करतिल वंचेइ ॥ १३ ॥ जउ आवइ सउ सव्वु मुइ वयणलु न भोयइ। हियय मुणुवहि हयाइ वेसाओ भविसहि होयइ ॥ १४ ॥ परिवारेण रयाविओ वि मज्झार अवंतीए आहे न पारेइवि। गामवासाइ भेयावि अणाविओ परियाओ पमायम्मा पासे ॥१५॥ अमेसो वि पुत्तो, पुत्तो पुत्तस्स अहुहिअ पमायाओ कम्मंसु। अन्नत्थ पूरे पुरुषा वि लेय, वेयावमणिमा परिवसिवे परि यरेण ॥ १६ ॥ अविनीयेणवि विहुयाए, ताओ मो लोयजीविएसु मुइ। कायारूपवइएसु मुणइ सुरभिभोगमवलि भीमए ॥१७॥ वच्चो विविहे देय—कम्मोयवगे सितेवि य एगमेह नयरापम्म मिलिवे यह कामोगमणेवि, मओपरम अमराऊरि वेसिमण कयकम्माओ मवरेबमया गोओ अप्पओ पासे पुत्तो। रयणपुरिमे मएण पडमयहत्यपणाविगमिओ पयाण कओ सिरि वेसमण पुत्तेवि वेसिओ अवंतीए। कत्तिओ सुभिमिरणओ नयहो पत्ते। सो य आगए तत्थ मिताएण सुभव भणिओ वासरमसेह। तम पत्तो नयरायणे आगयवरो सुमओ नयम निवेहओ नयरापवर सहस्सेहिं विविहसमिद्धविमलसिहि गयल

वेऊणमाणाविओ मंदिरे। जओ चेच वासराओ वत्तमकहता पत्ता तुब्भे तओ चेव वेणियथाद काऊण दुम्मणायमाणा पलायमाणे पाणे तुह पावणाऽऽसाए धारेमाणी, जावि याऽवत्था एत्तिय कालंति पत्तियावेऊण तीए भणिया कामपडाया। वच्छे! इयाणि युज्जतु ते मणोरहा। तओ पवत्ता पुव्व व विविहोपयार पयारेहिं रजिउमेसा। दविणं मग्गिय अक्काए मक्कड थडए पूईऊण मग्गिऊण य अप्पेइ एसो। तओ चमक्कियचित्ताए ताए कयाइ कामपडाया पुच्छाविया विन्नवेइ। अन्नो अउव्वो दव्वोवाओ कोवि एसो, ता पाणेस! पसायं काऊण कहेह एत्थ परमत्थ। भणियमणेण न पिए! पयासियव्वं करसइ, एय मक्कडकामदुहा एसा। सयसहस्सलक्खकोडिकोडाकोडीणपि पत्थिया न थक्केइ। तओ कयाइ अफावयणओ विविहोवयारपयारेहिं पल्हायमाणमाणस सुधण काऊण कामपडायाए जपिय। 'मह नेहो जाणिज्जइ तुह कज्जे जीवियंपि उज्झामि। तुह पिय! कहेसु को पुण, सिणेह-रेहाए कसवट्टो॥ ९८॥ सुधणो भणइ महच्चिय, पाणपिए! पेम्ममम्ममत्थि धुव। सिय-किण्हकारगो जेण, तुम्ह निच्चपि चिट्ठामि॥ ९९॥ भणियमिमीए न अत्थि एत्थ मज्झ सदेहो आउयाएवि एसो चेव पच्चओ। जेणेयाए जपियं वच्छे! एत्तियो तुहोवरि जामाउयस्स सिणेहो, जइ तुम मक्कडकामधेणुपि पत्थेसि ता तंपि ते न धरेइ। तओ—" येन प्राप्तेऽन्तरे शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु। नाऽपकृत नोपकृत न सत्कृत किं कृत तेन॥ ३००॥" इय चिंतिऊण भणिय सुधणेण रुते! किमेत्तिरनेत्त-गेण वि पोज्जमज्जुयाए हक्कारेहि, इह चेव जेण इयाणिमेव पूरेमि कोउग। तओ तक्खणमेव हरिसविसप्पलचल्लणगई विरइकडि-यडछोवा पत्ता मयरदाढा उवासणासीणा जोक्कारिया जामाउएण पभणिया य अम्मे! किमच्छेर एयं निच्छिऊण मए तहा मंतिय तुह पुरओ किं दुक्कर पेम्मपोढिमाए। किं तए पुच्छिओ(सुत्ति)ओ पाणेसो, को पत्थणाविहाणमग्गो एयाए। भणियं तेण अम्मो अइदुक्करो पत्थणापयारो, जइ अंगीकरेसि ता कहेमो, भणिय च एयाए कामदुहालाहे वि किं नाम किं पि दुक्करमत्थि। जइ एव ता चिरसचियसव्वदव्वसारं नीसारेसु सगिहाओ। देसु जस्स कस्सइ पडिहासइ, पुच्छियमधणस्स कणेयि विन्नमाणे न एमा फल-दायिणित्ति तेण भणिए, भणियमेयाए कस्स अन्नस्स घरसारमप्पिस्स। किमन्नोवि कोवि गोरव्वो? अंगीकरेसु सव्वमेयंति अप्पिय-

मयेसं मणि-रयण-कणय-धण-वत्थाइ पीइदाणसमं। जमेण्हवि पुप्फपत्तीकयाणि नाणावि भराडेरुण कयाणि ववत्तीए वट्टंत याणि। तओ पुत्तस्स पत्थिरस्स समाविरस्स ज(म्म)ण्णिवरं समाणिया मयरद्धस पाणिमि गाढिमण्णत्तीयरा मवरड्ढयमवेणं। मणि च जाव एवो सत्तमदिवे दिवेसावसरे परमपत्तस्स अवण्णादि मणिस्स य निमाओ गेहाओ। बाहप्पसुममाडओ पत्तो अवसीए। मयराणवि रविवारे माणाअणुकिज्जाडा होतस्स अस्स चायविरुस्स मवरदयमवेसु पुत्तस्स पत्थिरस्स य पंजागपत्तिलापस्स मणोह रणसयं, एस वि सुहओ समीरिरुसम्मोइ। बारसहिं दोहिं तीहिं अण्णिय पुप्फगिहिय सम्मवारे परङ्मसी य। वड्ढ-एसी जाव सम्मरिया। तओ मणिमत्ती वि न किंपि जप्पेइ। भा(वि)ऊणसती चिंतावरे वेव सुचिह। तओ सा पोट्टिय पोट्टे रसेमाण्णी पोक्करेइ। हा हा हय अवस्सं, वंचिय देव सुवेण। पारक्कमपवित्तुं वत्थं सम्मं पुप्फसंचिमंपि गढाय गयं। अमसुहस्स कोडेण, अविवाअं निवेविय स्रांवि जवरओविं गयं संवाय वेरमयरिवि। "पमत्ती वासेसु बदा अवंमि वाएसु अवरण ता वि। तह कि न करेसेवमि, मिलविया मिवविया एवं ॥ २ १ ॥" इति मयरद्धयवरडाम्सं॥ करिवेसं करिस्स मणिसं सिंधु-मईए—मयासुरवखो विमोतुमण्णे, चिरवाय छोमवे पमीएमाणो। हे नाह! कि मवरद्धयमवेसु-कुडाए अवस्स समो न होसि? ॥ १ ॥ मणिसं य—हसमेवतुमं दिस्स वे तपसामि दुरिया। स्वस्सा एसगदं मासं दे सिवम्वि माइसुरी ॥ ३ ॥

वंतुरस्स करोअरोनाह, जावा जावसि सुन्दरि!। मोह सिन्धुमरवयस्से तं मीरवायायेसहोसए ॥ ४ ॥ पुरउम्मूसरमायायों, मूर्वेवीमयसेवउ। सविरोसे सविमासो अविस्या विधिकयमिव ॥ ५ ॥ मुस्त्ता तस्स मविमामं मठिमणपयकवं। विमं वायस स मामे वरुणायजमारिसि ॥ ६ ॥ मायिदेवविमि सासंसविरस्य कोहसोदवे। पुण्णं परिसुवाए हुआ तप्ने धवसविसेवय ॥ ७ ॥ मठिम मोरधि सा मे सम्मूलं सिरवेसरो। समयम्मुव वयओ भीविहम्मविषमवा ॥ ८ ॥ वायिवसरूवेमसम्पवं, सामा-ममठिममसि। विमा अयविरयवा वयाउण्णसस अस्सवितु ॥ ९ ॥ समीरव वावर हारे, मठिमपमगारुपुं। सिवमगद मठी येवं, विमा मे मोसविसंवा ॥ ११ ॥ सिंम्मो सुनमसि वोयेव विगुलं मयपुमवव। सिम्ममभिम्मवप तं पममे ममममाइव

( सत्वरम् ) ॥ ११ ॥ मया देयाऽचिरादग्र, सत्रो मोदकभक्षिका । मामो निमन्त्रयागारे, तत शिष्येण मर्षितः ॥ १२ ॥ मद्गुरु कमोदकैरग्र, भोजयिष्यति सज्जनान् । सुप्रसन्नेन मन्त्रेण, तैर्मठी निर्भरं भृता ॥ १३ ॥ समस्तेऽपि जने प्राप्ते, मौला पट्टस्था निवेशिते । मार्गमालोकमाने च, मोदकानामुपागताम् ॥ १४ ॥ तालमुद्घाटयामास, गुरुर्यावत्प्रमोदवान् । रिक्ता कुर्वन्ती नाय्, मठीमालोकते कुधी ॥ १५ ॥ मामो हस्तभगोत्तस्थौ, दत्ताल परस्पर । आह स्म भगवान्पृष्टो, भगनेऽत्र प्रतीक्षताम् ॥ १६ ॥ युष्मदागमहर्षेण, विस्मृत स्थानमस्ति मे । सुप्त्या प्रागिव नागतानानीय भोजयाम्यहम् ॥ १७ ॥ पादौ प्रसार्य सुप्तोऽसौ, यथा स्वस्नोपलब्धये । शिष्योऽपि वारयामास, लोककोलाहलं गुरुः ॥ १८ ॥ मूर्खः शिष्यो महामूर्खो, गुरुश्चागमेतयोः । मयोगः सदृशः सोऽयमन्यस्य यथिर सुत ॥ १९ ॥ गुरु चोगते—भैनाम्बरेषु सध्यानमशानं भसमेरमम् । माक्षेोज्ञसना कृष्टि-नर्पाभिर्निष्पद-त्रते ॥ ३२० ॥ न लक्षयेते ( तौ द्वौ च ) लोकेन, हस्यमानावपि स्फुट । कृत्वाऽऽहताम नागान, नगानारं गतोऽगिन ॥२१॥ ततः शुभे ! परिभावय—मौनाचार्यशिरोमणिर्जगदिह जाउगेन निपुर्णया, स्वप्नाऽऽमाऽन्निमोदकैः पुरजनानागन्त्य श्रान्तोऽभवत् । मोगैः स्वप्नसमैस्तया कतिपयैरेते अगाधमिभिर्भूरो लोभगमानिका मम गन किं छग्यने त नहि ॥२२॥ इति मौनाचार्यकथा ॥ अह पउममिरी पभणइ, मोत्तूणाऽम्हे पय पणमस्स । पिय ! ते पच्चुमाणो, होही नानरगरस्सेव ॥२३॥ तथा नागरमिथुनकथानक—

एगाए अडवीए, वाणरमिहुणं अहेमि सुसिणेहं । परिअडमाण पइदिण, तं सुग्गरिनिरिनशुपत्तं ॥ २४ ॥ वंजुलसाले कीलेइ, तत्थ मंयरविमालमाहाले । कयवसो पाल्याउ, सुयाओ मरओ पडिओ ॥ २५ ॥ नरतरत्ति[illegible] पहारतीरार पाविओ संतो । देवकुमारायारो, सो जाओ माणुसजुयाणो ॥ २६ ॥ तो वानरी विचिंतेइ, तित्थमाहप्पमरस्स[illegible] । अमुइ इणा मा नरगिर, अहंपि पावेमि अप्पाण ॥ २७ ॥ विरुओकुओहियाइ, करेमि गगागिनी किंगिइ रमे । होऊण माणुसी नणु, उमस्स अंकमि कीलामि ॥ २८ ॥ तह पडिया सा जुवई, नाया जाया जहा अणगरम्र । हरिनमरानिमराजं, कीड़ेइ रोगि रुमाइ ॥ २९ ॥ कुमर अंमर पुरिमो, जाओ हं वानरो वि तार नरो । पइ पुण पडेमि ता होमि, सुणसु मूत्रं गुरुमुमागे ॥ ३३० ॥ भनिकमिमोह मा

मम सामि ! जइ स्नेहवसो होसु । अमरमिहुणगुणारूवमय किं तुज्झ मणो ॥ ११ ॥ पुन वडियन्वं जगेह, कोपु मा होज्ज मूलनासोवि । पुन मन्निन्वं मा ईपसु, मइवामि विम्हयावि य ॥ १२ ॥ वारंवारं वारिज्जमाणमाणमरियपत्तम्मो वि । पडिओ पुप्फे वि वाओ, बावरयवेन वेवेय ॥१३॥ बहरीहमयो बहुवावयविसंयो पुरगनयमाय । पुरओ पत्तो मूरेइ, वारिये ते मए न कयं ॥१४॥ सा बमाएण केणावि पम्हुमरेण विवुर नीय । विहिय वाय गाय य मायन्वं मूरिमोगाय ॥१५॥ स पवगो गंगाए, कम्मुंगरोगवम्मिसंगाए । गोरीगिरिसंभरियमणपक्खो गओ निहणं ॥१६॥ इव माइ ! कहि मई अन्नमाय, परिमविउं वाणए वाओ । जइयाइ न विन्नाउ धरिंमि वसि जिव पडियइ मेयारिसि अवत्थि ॥१७॥ इति अमरमिहुणकहा ॥ अथ जम्पूर्वमारे— सुन्दरि ! मृच्छ ममापि मार्न । कौतिकवारि म(चित्र)चित्त चतुरोऽपि लोभे मन्ये ! करोमि तार्द मिमु मास्य कार्ये । लोभे विना न यस्तु कोऽपि कुतोऽपि कस्यचनसमाप्तवति मानु कनूमयोऽपि ॥ ११८ ॥ ” न चैत शीघ्रमेवो ममोचित्यवितिमम करी तस्या मेवासिद्धिनिमग्नवसाम् । यदा न करोम्येव लोभमन्यत्पयम । म च म माविवीसादिमाशायाममस्य प्रारणुम्यमा वत्सरवंसर्वमविरत्नम् । मात्यसोमयमयतो हि मूकन् कोऽप्यर्वोऽप्याप्यमानोऽपि सिद्धारवयेव सद्यः संपतते । तस्माने स्वशिलेमसंसे येऽपि धीरसेनस्येव विज्ञीयते तथाहि—चन्द्राभावे नागर्यामामग्रपुरी नामतोऽर्थतश्च क्षेत्रैश्वर्याऽऽमीतस्याम मन्दिरोदरे पृथक्कायोऽपि सपत्रमुपेत्य ततस्ततकपूर्णसरोसदैन्येन रात्रति । तत्समापा स्वरीपयोमुष्पितानां रत्नानां बावरयमाणस्य तत्र्मावनाम मसारिवं सनतोषसमन्निवर्तं भवत्यामास्वपरं, तेन च निर्मेयेन निजपुरेन बाह्यजानुरेन निमूर्ते निवासम् । तद्यः कमनुष्मिण- निमसूलऽऽस्थमेयमन्मरिपमीति कमासित्वविधैर बैरी प्रापर्दयो पोरवोऽभू । ततो विभिन्नगुणानुगता कोऽन्येव पौराणमिस्ता कलैः किम्यागेभ्यापि कान्तिकपूजागमयेषु धनम संनूतोवि बल्लान्यायसमवायतं यावज्जीवितं जनेभीतचेतोभिः । पुत्री यदर्धमुखा- लम्बिमेनपुत्रमयमयनने करोति तैन—मस्मभावे समर्थः परं प्रथमं तावदिमामतानं पूजागमरीणयस्य मतके गुर्वीन्नं मयोजन- सिद्धो बहुमिस्मामः समुद्रयोन्तिता कोऽपि कर्म बनो मन्त्रकमनाधीर्मन्त्रपयामास । पूरणारमाम्नियोऽवं रूपसम्पत्तिसमानसमा-

नालोक्य वुभुक्षुर्विमक्षयिपति पूजाव्याजेन पर किं क्रियते व्यसनार्त्तचेतोभि । "नैमित्तिकाना भिपजा द्विजाना, ज्योतिर्विदा मन्त्र-कृता च पुण्ये । लक्ष्मीवता वेश्मसु देहपीडाभूतमहादिव्यसन समेति ॥ ३३९ ॥" इत्यर्पित दीनारशत तस्य हस्ते । रात्रौ भट्टा-रिकामन्दिरान्त प्रविश्य प्रदत्तद्वारकपाटसपुटः प्राह स्म । किमिति कृत्ये प्रकृत्या न भवसि ? । कृतपूतने ! मण्डित विज्ञान किंचिन्न करोपि मदुक्त युक्तम् । तदस्तु वक्रवेधस्य वका कीलिकेति यावज्जिह्वाया विष्टायै सरभते तावन्न किंचिदेतस्य पापीयसोऽकर्त्त-व्यमस्तीति, जाता यथावस्थितमूर्त्तिरेषा । जातमुपप्लवप्रशमात् पत्तने सौख्यम् । अन्यदा द्यूतहारितमस्तकपण. प्राप्तोऽसौ भट्टारि-काया. पुर प्रोवाच ।

देवि ! देहि पणितहारितमस्तकस्य मे तन्मोचनमूल्य दीनारपचशतीम् । भट्टा०—किं त्वया त्वत्पित्रा वा मत्पार्श्वे निक्षिप्तमासीत् । द्यूत०—मातर्न निक्षेपक कोऽपि, किन्तु मस्तकच्छेदान्ते व्यसने स्मृता त्रायस्व माम् । भट्टा०—किं न त्रायिष्ये त्वद्भक्तेस्ता-दृशा यत्क्रियते तदत्यल्पम् । दुरात्मन्निदानीमेव नाम दीनता दर्शयसि तदानीं तदकार्षी ॥ ३४० ॥ न चैतच्चिन्तितमेतया नैव मृत्युदशादीना याचमानं विमानयेत् । स (न) खल्वाकुलिते प्राणे परप्राणान् क्षणात् क्षिपेत् ।

द्यूत०—यदि न भक्त्या प्रसीदसि तदा यथा प्रसीदसि तथा करोमीति तद्भङ्गकारिपापाणाय बहिर्निस्ससार । भट्टारिका क्षिप्र-मेव द्वार पिदधे । द्यूतकारो महतीं शिलामुत्पाद्य प्राप्तः पिहितकपाट द्वार प्रेक्ष्य, विलक्ष शिलया कपाटे आस्फोटयामास । तथापि तयोरनुद्घटितयोर्मन्दिरप्रदीपनाय प्रावृतत् । सर्वं सम्भाव्यते स्वर्माणुस्वभावेऽस्मिन्निति मीतया तया सत्वर द्वारमुद्घाट्य पूत्कृतम्—रे रे नष्टदुष्टचेष्ट ! मा मन्मन्दिर दिदीप । निष्कृपतया कृताऽह त्वया किंकरीव किं करोमीदानीं, याहि पुस्तिकामेतामादाय दीनारप-ञ्चशत्या ददीथा (या)। द्यूत०—यदि नैतावन्मूल्य लप्स्ये तदा ते(न)दरास्ते च मेढका, क्व यास्यसि, मयाऽऽरब्धेत्युक्त्वा पुस्तिका च गृहीत्वा प्राप्तोऽय विपणिपङ्क्तौ । पुस्तिका च प्रदर्श्य मूल्यमतुल्य जल्पन्नुपहस्यमान' प्राप्तः पुरन्दरपुत्रस्य सिद्धदत्तस्य हट्टे । तेनापि पुस्तिका

मेव मूल्यमुक्तवैवासीत। सिद्धयेन किम्पाकके-किमिदं मर्त्यस्य जगद्गुरमूल्यम्। तदुपचितव्यं हेतुना केनापि। तस्य स्वकरात्रेकममीति विमृश्य श्रीसुवे प्रथमं रत्नम्—"प्रयत्नमर्थं लभते मनुष्यः" इति। चले! पत्रमालेरेव गमावे जाता। स्मरे मम हरप्रसंचार। इत्येव परमार्थव्यवस्था। इति दीनतरप्रभवी महाव्यसनापि पुस्तिका। मध्यमेव पाते परम्परम् कम मर्व मोक्षा वेदवत्त्वपीप्रविशा स्वाति विद्यार्थिव्यापारमाप्ते पत्मानं कथं मन्यमान जाते तावत्यादिवैरिमसमविस्मृत्रेसात्मोचा भावात्मसुतो सतत्त्वाचापूर्वकमनन्येन वर्तित गृहवार्तेसुपस्थिति प्रकाशितोऽसमर्थः पुरस्तस्य सपोपोऽभ्युपागतस्तत्र दिव्यव व्यवसितमेकमात। पुस्तिकाकं दीनतरप्रभवीव्यवं विशोधय मोक्ष विना कुत्रापि व्ययोऽभमित्यान्। के वर्ष विद्वांसा पुस्तकसंग्रह- मत्यविधे यदि परं यथानेव विहान्। विद्धीयमानमाऽव्ययस्य न कोऽपि पर्नीत्यमपि यावदपि। वस्तुत स्वत्र मद्गृहमेवापत्ता वि येनोपातव्यत्र मनेहम्यम्। तव स्वावलम्बि सहचरैर्बिधिर्भयाऽसम्पन्नमिति विविक्त विमृश्य तोऽयं मतोरे। स्विदा परमम्यर्थितिनि देव दुखे स्वादि कथमेवमात। उत्पातकत्वं पर्यालोचयन्निखिलानां गृहे गुप्तात।

इत्थम् तस्यामेव पुर्यां पयामास्मसुरोपपुस्तिकायां धनिमत्री–रत्नमत्री–गुणमत्रीत्थं सहयोगसंजातनिस्सीमरागमनां त्रिप योमनीवासमेव्या संख्या समजनि। मित्र मासप्रत्यपालेयमन्य कार्ये तदर्थमुपाधोपायमम्यमूम संप्रति पुनरधिकमहे वैरिणा यौवमेव। न वासीमो विविधव्यवसाय यथापि मधेप्यपमहे, ततो राजपुत्रस्य वयस्य–मध्ये गम गुप्ताम्पद्गोम्यं स्नेहगुप्तम- पि पावयापि कथंचित् यथापि कथापि न विवीर्यमहे तावत् वयामः प्रयात्वेतस्य त्वमेव सर्वदा येन पालनात्पुरिषुप्त यथो मते। प्रतिपन्नमेतद्वेपमि। ततो राजपुत्रस्य दूरदेशगतो महाकुलीनः कोऽपि पृथ्वीपतिपुत्रः पितुसेवाभ्ये धीरदेवनामा सम्प- मर्त्ये भवत्वं मोक्ष महार्यं। तेनापि तत्कनिमोऽप्यमेवमितुपायमेव प्रतिपन्नमेतत्। पुरीतरिघपमुपागमत्कप्रभ्ये तत्स्थगुरु धावनसमोऽच त्वम तृतीयदिने निर्वीचिम्न्यं स्वादर्श्य केन परिवीय पक्षममहे इति स्वराज्येवस्य वस्यागतं हरिम। तत्र च त- स्मासाद्येन वचनवैरिणोरेकमाऽऽसमोऽयं वीप्सम्। सानन्दकोऽसमयपयेन परिभूतो गमा स्वदेशम्। राजपुत्रात्मपि जाताम्वं वसना-

त्राया त्रियामाया परिणयोपकरणवस्तुविहस्तहस्तदासीसहिता प्राप्ता सकेतमण्डपान्त', ददृशे मुग्धप्रसुप्तस्तत्र सिद्धदत्तः। पूर्वपरिचयोपजाता सधया चोक्तमेतया। अहो ईदृशप्रयोजनारम्भसरम्भेऽपि निश्चिन्तैः प्रसुप्यते, ततः प्र(बोध्य)चोद्य स प्राह्रितः स्वपाणि पाणिना। निर्वर्तितगन्धर्वविवाहया कृत' कङ्कणबन्ध। स त्व गृहीतसंकेतः किमप्यनुत्पन्न् किमिदमिन्द्रजालं जायत इति विस्मयमानमानस "प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्य" इति परामृशन्नुक्तस्तया कृता कृतार्थाहमन्ये अपि गच्छस्ये चिदपीथा। कुत्र पुन पलायनवाहनानि सन्निहितानि विहितानि। तेनोक्तम्—किमेवमाकुलाऽसि निद्रालवो वय शयिष्यामहे तावदिति स्थितः सुप्ताऽपदेशेन, तया तु त तथा निराधि-निराकुलमालोक्य, मा नाम न,भवेद्वीरसेनोऽयमिति पूर्वानीतज्योति' सरावसपुटमुद्घाट्य यावद्दृष्ट लोकि तावज्ज्ञातमज्ञात कोऽप्येष धूर्त' प्राप्त स्यात्। अस्तु यः कश्चित् ,सुकुमाराकारेणानेन कन्दर्परूपदर्पापहारी पुण्योपनीत परिणीत एव किंचिदनुचित ततो वीक्षिता मरतकान्तन्यस्ता पुस्तिका। गृहीत्वा विमृत्यादितो वाचयति। "प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्य" इति। पादमात्रमप्येतत्कर्पूरपूरपरिमलवद् व्यापक लोकानाम्। अहो ममयान्यक्षराणीव एतदक्षराणि परमार्थप्रथाप्रथीयांसि। कथमन्यथेत्थमर्थोऽयमभूत्। आगमिष्यन्त्योरपि सख्यो प्रत्ययाय करतलपोलितकज्जलेन "किं कारण देवमलङ्घनीयमिति" द्वितियपाद लिखित्वा द्वितीययामान्ते जगाम रतिमञ्जरी स्वगृहान्। तृतीयप्रहरे प्राप्ता रत्नमञ्जरी। सापि कङ्कणबन्धलिपिसयाग्नै रतिमञ्जर्याः पर्यालोच्य तेनात्मानं पर्यणाययत्। पादद्वयान्ते तथैव—"तस्मान्न शोको न च विस्मयो मे" इति तृतीयपादमालिख्य स्वस्थानमासीसदत्। एव गुणमञ्जर्याऽपि तुरीययामे समागत्याऽऽत्मान तेन परिणाय्य—"यदस्मदीय न हि तत्परेषाम्" इति तुरीय पादं तत्पुरो निवेश्य स्वगृहमगात्। ततो मा वयमीदृगपराधाऽऽधानधामानि भूमेति न्यवेदितं सुताचेष्टितं चेटिकाभिस्तन्मातृणा, ताभिरपि स्वस्वभर्तृणाम्। ततोऽभाणि भूभुजा-देवि! दुहिता दुष्कापलत्(चू)ला शीलिता चेन शून्याऽभर्त्र्यसमासुप्त' कोऽपि कार्पटिक पादचारी परिणीत स्यात्, किं क्रियते। देवी—देव! नापर प्रकार कोऽपि सम्प्रति "सकृत्कन्या प्रदीयन्ते।" एतदेव तत्र प्राप्त—'प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्य'। किंच त्वत्पुत्रिकया स्वीकृत. कार्पटिकोऽपि पृथ्वीपतिरेव। यतः—"आराम्भोधिभुवः कलङ्कि-

तवनोऽग्निहोमैरम्योऽसिवो गुरुस्ता तत्पुत्रिरोऽभिवासमथवा च मूमिश्च के गुण्याः। मध्यरिक्तु न्यन्ति कोऽपि गुणिनो राजप्रसा-
देमित्य च स्वामिदथो न(च)प्ति पवसस्तव सर्वे गुण्याः ॥ १४१ ॥ तथास्वभावापि स्वापि प्रयाति वावभ्रजनपुरुषन्
मेष प्रवेशयं स्वनेरमास्या पयमानया। ततः पार्थिवेन मेदिनीः प्रधानपुरुषैरपार्थेतूर्णमभ्यरेण प्रणोदितः सिवारता कतुप्र-
प्रयाणाभ्येन रक्षितपाथिवा पुरितमभ्यात्म वानपति–प्रासम्यमिस्वापि। धवे ! वावोऽयं मोक्षमनुपाप्तः। वरमपमयापोऽप्युपम्। इप-
म्यापेऽपि प्रयाणे विम्बेनसाक्ष्यण्णुरुकविषेमें वाक्यतुर्गुणो समः। यथा—" स्पबसार्थं बवास्मम्या फलमन्येन भुज्यते। पर्याप्तं
व्यवसायेन प्रमार्थं विधिरेव च ॥ १४२ " ततो पम्प्रसारयमारोप्य प्रापिता मध्यमेव पृथ्वीपतिविमाससात्मेषाः। स्वपारम्पमो मम
मसासपाप्तस्य पुरुषोमेिपिनः पुत्रोऽयमिति प्रसमिभावा पृथ्वीभुजा। धमात्पपुत्रेऽपि धनमपि मिनिवपुत्रान्वो मासो स्वसमुचितम्
वात्वं यदे व्यतिकरपदम्। सर्वेऽपि पुरुषरपुत्रवामात्यास्य पुत्रिमवास्यस्येविदेव पुत्राः परिमयोस्सवाय मोस्सहन्ते स्म। पृथ्वी-
पतिना रविमञ्जरी एवमञ्जरी–गुणमञ्जरीनं विशुद्धमपि मारेभे धनिवीतमं प्रतिपादितवर्णमिव सदर्पम्।— वपिवासे विधिपया
पासेह दूरेण जो कहिं वसइ। जं वस्स होइ जोग्गं त तस्स विरावेइ ॥ १४३ ॥" मरणं पार्थिवेन वासात्रे मासपाठ
स्थी, वासो महान् सामन्या। पुरुषरपालपर्वुपासितपादाम्बुजः पावयमास स्वपति। "पुण्यप्रकर्षमिनिकपी वस्तु सिवारता, पुत्रोऽप्य-
नुममिममपिमान्मापन्। मतीवमानवानुरयविकोकमवे, वसन् मनिष्यवि ममापि मतार्वसिद्धिः ॥४४॥ तवो पसमसेप्पाए, वेपिवे पिय !
विमाए। पसमवायमसो मिहु, मपुरावे न भुमए ॥ ४५ ॥ विराव होइ जं कप्पी जया सुरसेतुणो। मपुगाव पुत्ते वाह,
पुंगीमि च विट्ठणो ॥ ४६ ॥ नमे गुरुसके वासि सिहूरो मासेप पुंसरो। पुंसपी पवय वीए, वाभो पुत्तो पुरसरो ॥ ४७ ॥
समागुजम्पसीलस्स गोड़ सो परिवसिओ। गगमकासंमि सम्मावि सुरेमपडिवि वालिय ॥ ४८ ॥ पुरे वधि वर्ष (मिसि) मव्वे सव्वं
वर्व वपरेरे। (सामि) वासिवमार मिस्मोसके, गामवासो सवो पुरो ॥ ४९ ॥ मव्व सुत्तापुरस्स च, पगा सिकलिपव पिया।
पुत्तो पुसवरो वमि समो गम्मो मि सो पुरे ॥५० ॥ वत्थे वम्मपव— पढम गामी बम्मर बयुणकी पढम सम्माइ मम्मर ह(मु)की।

वल्लह माणुसु विणइ पयट्टइ सक्करसत्थरि घेवरु लोट्टइ ॥ ५१ ॥" कयाइ तस्स गेहस्स, अगणग्गखडक्किया । वासासु पडिया जायं
फोक्कवारमहो(ओ)गिहं ॥ ५२ ॥ सुदरीए तओ सेट्ठी, वुत्तो किं न खडक्किया । काराविज्जइ अज्जेव, नाहं सक्केमि रक्खिउ ॥ ५३ ॥
वित्तिं न देसि कस्सावि घारपाहरियस्स वि । पसारिय (मु)मुहं दार, वचिओ जो न चोरए ॥ ५४ ॥ तेणुत्त अत्थि वग्घि व्व,
दुवारे कुक्कुरी कया । भसती वारए सव्वमपुव्व पविसतय ॥ ५५ ॥ कालेण कित्तिएणावि, सावि केणावि मारिया । उग्घाड
सव्वहा सुन्नं, दुवारमभविंसु तो ॥ ५६ ॥ सुदरीए तओ वुत्त, कावि किज्जउ कुक्कुरी । दुवारे सुन्नए कोवि, जाही मुसियमंदिर
॥ ५७ ॥ सेट्ठिणा भणियं लच्छी, थिराण होइ सुदरि ! । होइ वा जाइ वा एव, आह सा को णु जाणए ॥ ५८ ॥ अन्नया पुत्त-
पत्तोवि, मया तो तीए भासिय । जुवाण परिणावेसि, किं न पुत्त पुणो वि त ॥ ५९ ॥ एक्काऽहं केत्तियं काउ, कम्म सक्केमि
ते गिहे । पुत्तो वि तरुणो दव्वं, वाहिं फेडिस्सए फुड ॥ ३६० ॥ सुदरेण पुणो तीए, दिन्न त चेव उत्तर । तीए वुत्त नवो
कोइ, लग्गो तुज्झ असग्गहो ॥ ६१ ॥ लच्छी गच्छिस्सए वस्समेवमेगग्गहस्स ते । मज्झ वुज्झेसु कज्जस्स, कस्सावि कुरु जंपियं
॥ ६२ ॥ गामस्स तस्स मग्गेणमेगया भामहो गओ । जतस्स तस्स रत्तीए, तट्ठा वेगसरी वरा ॥ ६३ ॥ सेट्ठिगेहगणे पत्ता,
वीस दीणारवासणे । पाडित्तु पुट्ठिदेसाओ, सत्थमज्झे पुणो गया ॥ ६४ ॥ दट्ठुं सेट्ठी तमधारे, हक्कारेऊण सुदरिं । तुट्ठो भीओ
य कट्टेइ, निक्खिवेइ घरोदरे ॥ ६५ ॥ दीणाण कित्तियाणते, नाउं जीरवियं धण । एगते मतए तो सो, तोसोऽऽवेसेण सुंदरि !
॥ ६६ ॥ लच्छी थिराण जा आसि, वुत्ता तुज्झ पुरो मए । सा एसा आगया कज्जे, तम्हा कुरु थिरत्तण ॥ ६७ ॥ खडक्कियाए
दिन्नाए, विसे वेगसिरी कह । भसमाणी सुणी लच्छि, त वासेज्ज सयवर ॥ ६८ ॥ पेईहराण गंतूण, कहेज्ज वहुया धुव ।
सव्व निविग्घमो जाय, कज्जयेज्जे कए मए ॥ ६९ ॥ तुगा खडक्किया एत्थ, दारे दोवारिओ वरो । कायव्वो पुत्तवीवाहो, दव्वेण
बहुणाऽहुणा ॥ ३७० ॥ सुदरो णूसुगो एवं, सजाओ कज्जसाहगो । ता पाणनाह ! त देसु, थिरत्ते चित्तमुत्तम ॥ ७१ ॥ सिद्ध
कज्ज विणासिस्सा, उत्तालो अणुतप्पई । जहा विट्टरू सुणेय पि, पाणनाहकहाणय ॥ ७२ ॥ कोडुंविएण केणावि, विट्ठुणाऽऽरा-

दुहमेवं पवेसए ॥ ७३ ॥ होंते हेममओ मोरो सविरो पाइमारं । [illegible]
→ [illegible] हेमपिच्छए । [illegible] आओ, [illegible] ॥ ७५ ॥
[illegible] ॥ ७६ ॥ [illegible]
[illegible] न [illegible] ।

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] पुनः प्रभुः । [illegible] तेनाप्युरुपोरगस्फारि ॥८॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ १६ ॥ [illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ २० ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible]

१ [illegible] । २ [illegible]

अथ वसुमतीनगर्यामाचार्याऽनार्यकार्यवर्जयिता । विजहार श्रीवसुदत्तनामधेयो सता ध्येय ॥ २४ ॥ परिसरवसुन्धरायां तेषां सद्ध-
र्मदेशनासुधया । निर्वापयता भवतापतप्तचित्ताननेकजनान् ॥ २५ ॥ शुभचर्या सोदर्याश्चत्वारस्तेऽप्युपेत्य सत्यगिर । प्रणिपत्य धर्म-
मर्माणि, कर्मनाशाय शृण्वन्ति ॥ २६ ॥ वचनसुधाधारांम्भ, पायं पायं श्रवाञ्जलिपुटेन । चत्वारोऽपि बभूवुर्भावितमनसो विशे-
षेण ॥ २७ ॥ प्रणिपत्य गृहानीयुर्विजयोऽजल्पद्व्रतं ग्रहीष्यामि । वदति स्म जयन्तोऽहमपि वान्धव ! प्रव्रजिष्यामि ॥ २८ ॥ किं
त्वद्यापि न पुत्र', पर्याप्तो वेश्मभारमुद्वोढुम् । कतिपयमासानन्तरमुभावपि प्रव्रजिष्याव ॥ २९ ॥ क्वचिदवसरे व्यलोकयदागच्छन्ती
पितुर्गृहात्सायम् । स्मरमिव भुजङ्गमेकं, युवतिर्जाया जयन्तस्य ॥ ४३० ॥ सजिगमिषा प्रकर्षात्तस्य तया मनसिजज्वरार्दितया । अति-
तनुपीडाव्याजोऽज्ञाप्यत भर्त्रे जयन्ताय ॥ ३१ ॥ आगच्छत्सु चिकित्सावित्सु चिकित्सासु कार्यमाणासु । न खलु मनागपि तस्या',
सा व्याजरुजा शममयासीत् ॥ ३२ ॥ व्याजप्राणाचार्यैः स भुजङ्ग प्रापितो जयन्तेन । निजजायाया पार्श्व, चिकित्सितुं तनु-
रुजासुषमम् ॥ ३३ ॥ उपपतिरिति विज्ञात, कालात्कियतोऽपि तेन स त्वदृशा । परजनमुखेन तत्रागच्छन्न्य निवारयाञ्चक्रे ॥ ३४ ॥
यावत्तथापि न त्यजति, ता ततो मारणार्थमादिष्टा' । निजपत्तयश्छलते, मृगयन्ते तस्य तात्पर्यात् ॥ ३५ ॥ बहुलनिशीथे तै', क्वापि
तस्य सदनाद्विनिस्सरन्निहत । अहह भुजङ्गभ्रान्त्या, नन्तुर्विजयो जयन्तस्य ॥ ३६ ॥ असममम्ममजमं जातमेतदाकर्ण्य कर्णकाकोलम् ।
बन्धुवियोगव्यथयाऽतिदुस्थितोऽजायत जयन्त' ॥ ३७ ॥ पूर्वविरक्तस्तस्मादतिवैराग्याद्दिदीक्षिषु सुजय' । विजयो यथा द्विमासीं तेनैव
विलम्बयामास ॥ ३८ ॥ कतिपयदिनावसाने, विविक्षव केचनापि लुण्टाका । अविदित सुजातेन, स्वपिति न भीतस्ततो रात्रौ
॥ ३९ ॥ सुजयोऽपि तत्र रात्रावेति स्वापाय नित्यमप्यभय । लुण्टाकलोकरक्षानिबद्धकक्ष प्रदोषेऽपि ॥४४०॥ व्यमतयाऽस्य कदा-
चिन्निशीथसमये स आपतन् ददृशे । सदनोपरि सचारेण, सत्वर स्वानुजभ्राता ॥ ४१ ॥ उपनृत्य गण्डशाममहारत: पञ्चता
ततो गमित । प्रविशच्चोरभ्रान्त्या, ज्ञात्वा च शुशोच सुचिरमसौ ॥ ४२ ॥ व्यतिकरमेव ज्ञात्वाऽनुतापपावकनिकामतप्ततनु ।
सुपद्मसुजातोऽशोचीद्विदितोदन्तो जयन्तोऽपि ॥ ४३ ॥ भयचकितकुरङ्गीलोचने पद्मसेने !, विदितमिदमशेषं मत्कथाया रहस्यम् ।

—अर्पि नरपालो निमग्न सीसंभाओ निजमगुत्तमम्भोहैमक्षिपाऽभिमसम ॥ ४४ ॥

भद् मनइ मम्मसोम्म तुर्म रामो होरि ताहि । मेरीम् । इम विउम्मामम्मभे नि ओ म गोवोगमुम्मादपि ॥ ४५ ॥ एग गिम राजिवेगो बारि हो गजिमपा मेरीम । ममेगा आरमेद गिवरपगाहरं पवरो ॥ ४६ ॥ मम्पुरिम मेरिर गमभिरमम विरोह गमिमण ऐर । मराम भुममुम्मोजिम पुण्ड्र पवरारि ॥४७॥ मगर गुणे स मरामो वरगु मर गाऽम्म हेगु रीमार । मर रिपगमेरिम पुम्भवि ममोयमा ममम ॥ ४८ ॥ ममम तम तारपाम—पाम्मेमरम्मनिक्कामभय । तुमर अतिहीम पूर्व रागाए मम रामम्मरम्मिमर ॥ ४९ ॥ भद् मम्मरसमम्पुरिम्मामरमा गुणम्म पप मेठी । इ मेरि । ममगु पम्म, तुर मत्तो पवियम विही ॥ ५० ॥ मणिमं म(मे)हिय मारं, मर म पविसो मिममम महमीम । रम्मिरिमम पुम्भ, मर कहिमं मोगरम्मे ॥ ५१ ॥ तमो मणिमं दीम म्मोदि मम म्महमर्व एवं । मम्मम पुरिसम कहिमाणु, तमो त कहिम्मामम ॥ ५२ ॥

मोगराम्मयमाओ ठम्भुणे पत्तो मम्ममासिपरिमारिओ पत्तो पहुमसेर्ण, परिगाराऽम्ममम्पुमयम गामहरगमम्ममयम अभिहो सियमिते । पुरमम्मामी मिमम्मो पममगजी पत्तो पुरिसी । मम्मेरिमम मंगोम्मामपुम्मं पुत्तो य ठाकुरेण । भिम्ममपेममेर्व ममरे ? ।
पुरम—ममिमहारम्मममपमो पममाममा मराम्मपेम विश्रमामममाम्मरं ममेर्म पहुमे । मोम —मिरलोऽमाऽऽमाममपार ? ।
पुरम—ममममरे मेरिसो आयारो होइ । महवि पुमेहि—

मूमरम्मरपरिम—विम्मोठिममेरगरमहरपाम । भायम एम मिमराइ मम पुरे ठगपममम्मरे ॥ ५३ ॥

मोग—अहो मामरमागुम्मिपुरममयारमम्मीमर्क ममरं ममममरणाम् । म पुमरत्र मजिम्मारायरम मगामम्मामे पाभिता ? ।
पुरम—अमिमही भमा ।
मोग —पुमम्मे ममममरममिम्मपमिरमम् । ममोमुरिम्मर्व वि ममममिरेम मोम्मो ममनि ॥ ५४ ॥ मि पुमम्माम पुमार ।

पुरुप०—नहु रक्खेइ देसु पुरु पट्टणु, कर करेइ नवनवा अभिक्खणु। मडइ फूडुपजाइ जउप्परि, कोसु तहावि होइ रित्त उपरि ॥५५॥
कुसलि खेमि सजाइ विहाणइ, अज्जु जाउ नायरजणु जाणइ। दिवसु जाइ वरिसेण समाणउ, सो करेइ इयराणि वराणउ ॥५६॥

योग०—साध्वी राजलीला। काकोऽपि पार्थिवो राजहंसपरिवार' श्लाघ्यते तत्कथय क पुनरमात्य ?।
पुरु०—अन्नाओ अमच्चो। जस्स पुरे पत्ताण, रावा हत्थाण होइ परिताण। उप्पिट्टणय पच्चारो, जारिसउ मालपडियाण ॥ ५७ ॥
योग०—उचितमुचितेन योजयति विधि। अविचारस्य खल्वन्याय एव सगच्छते। युक्त चोच्यते—जूयारियस्य धूया, परिणीया
गठिछोडपुत्तेण। जुडिय वेवाहित्त, मिलियं रयणस्स उ रयण ॥ ५८ ॥ योग०—क' प्रतीहार ?। पुरु०—पिसुणपयारो पडिहारो।
पडिओ सुकालह पासि, एत्थु अत्थि मनभतिकरि। जो पडिहारह पासि, घणकणलुद्धउ जाइ जणु ॥५९॥ योग०—क पुनर्नगरारक्ष ?।

पुरुप—सव्वलूडि[1]नामो। चोरचरडवदियह न [2]भुफइ, [3]भासिउ भागु लेइ नहु सकइ। रक्खवालु खयकालु सुरज्जह,
सव्वलूडि भुल्लइ न सकज्जह ॥ ४६० ॥ योग०—अहो माणिक्यानामेकावली। श्रेष्ठी कतम ?।

पुरुप—लइवुडित्ति सेट्ठी। विहिमाणिहिं ववहरइ निच्चुसेईं तुलकरिसिहिं। घयमहुगुग्गुलगुलीगुलिहिं, इयरेहिं विगिस्सिहिं ॥६१॥
पचवीस बोल्लेइ वोल्लि पावियइ न एफहिं। तहवि धम्मतुल एत्थु नयरि मन्नियइ सुलोक्केहिं ॥ ६२ ॥ पर पुत्तेण [4]गुणग्गलेण,
मूलनासेण लहुणावि। विमिस्री[5]भूएण सपइ, पच्छे पाडिउव्व सो जाओ ॥६३॥ जओ—उग्घाडइ फुफाए तालय[6]मच्छीणमजणं
हरइ। खणइ कुहणीहिं खत्तं, गठिं छोडेइ पाएहिं ॥ ६४ ॥ योग०—अहो एकैकमेकार्गलम्। अस्ति मुनिरत्र कश्चिद्विपश्चित्।

पुरुप—अत्थि छलकावणसीसमित्तपरिवारो महातवस्सी सावगिल्ली।

[7]छारभरूकुंडियगो वियडजडाजूडमडियसिरग्गो। वगझाणं झायतो, गसिउमणो सव्वपुरदव्व ॥ ६५ ॥

---

१ छ। D २ जु B D। ३ ना D। ४ गुणलग्गेण B। ५ सू। ६ द। ७ छार B।

•—यदि तत्स्थानुरूपमार्गे वा विमस्य ममचराह(म्)शम्याम्। का पुनर्वेश्य गमनममयोगयित्वा ?।

पुरुष—ममारमराय युविय मनुमया।

भेरिगहि मगि निरियराइ एसई वेर मगु, कमि इम्म मोस्मवाइ मम्मई वेर रगु।
सिरि सिविमरिस मगरि येवि दुपरि मग्गु, रमवि जसमपउ मेव मुख विपि केवि पगु ॥ ११ ॥

चेन•—अहो एसस्स पेसिये मागस्सी। अमूदति पसमपाये पीएसी यस्सम्मसला। पुरुष—पई म कटिस्सं।

पसु पहमि सेगु सद्धं पच्चाइ हरि पुन जेम तेम वं दंति [1]भिम्मइ परि पीरइ वरियइ पीर कावि मगु वि [2]म विम्मइ।
मियमचई परयर्ह अमर म मत विहेइ, आमइ रेयइ परमगु [3]मगिदि पेम पुरेइ ॥ १७ ॥ अविप—जो जेम सिहिमो सो
तेम सिहिमो यो जेम दिमुमो सो जेम मुदुमो। जो जेम पाविजो सो तेम [4]पाविमो जो जेम वारिमो सो तेम वारिमो ॥१८॥

विप—कोइ विवसमवि वा पउ, इर वेविमु विवि विर वमु विगु मिवागमि दिमइ, ते कामिपुर्व गइमि वं सुराइ ते
वेद निम्मइ। रोहि पसमहिर मंतियइ वंमगु सेसइं पाउ, लेमिगुराडि सो पर मसवि पाइ विद्मइ जाइ ॥ ४१९ ॥

चेन•—अहो परमासिविमितोसिये अममये मविस्स मियामहे गयात्। एसुराम पुरुषे विराहम ममम मेविइहे, पगुपुदि मेठी
हम्मा—पई अगए व दिया वोगरउमो इवि लोहम्म योदाये। आमिमिगमम व अपेसेइ अमारामे। समसपयु पयोत्ममविअ-
माणेसु पत्तो अअसयस्य वेयइ अमोइ। मसत पत्तो अंवयसउ पुरुष पअसमामो अमो ममाइुहे सवरगेहमेगमारिउ। ते रायगिमि-
गुरुहि गवेसम पेसिमो ई भएमाम। तमो विवसमोवि जसमपविओ वे जसिमो। दवे करेइ पसंपि अपिवअम गओ सो निवतुरि।

[1] निम्म। [2] वसि। [3] भवि B, D। [4] पमिओ D।

योग०—(स्वगतं-) कथमकृणहिंसकः कोपि महातपस्वी स भविष्यति, भविष्यति च मभिज्ञितोऽभिधानमर्थोऽस्मेत्युत्थाय गृहे गत्वा भुक्त्वा च जगाम तत्पार्श्वे। नासिकाग्रलग्नलोचनमभगालाक्ष्याप्युग्रपाणिं सांगलिप्तमुकुमभितांशाशादीन्। भगवन्नस्मि मे दीनारसहस्रमेतत्। क्वापि स्थाने कारयन्तम्। सोमेश्वरयात्राप्रसङ्गाः प्रयाताः। भणितमनेन—न यते अङ्गममयाचितानि प्र- दीनारसहस्रमेतत्। क्वापि स्थाने कारयन्तम्। शामरसायमनस्यकार्योऽयमर्थस्तदा मठिकान्तः क्वापि कोणे मुद्रस्तेन गुप्तस्य स्थलेन च गृहीथा, इत्यर्थं गता कृत्वा गता च निष्क्रान्तः। तिचवरमासेहि तिलगतस्त काऊण दिसोदिसं गम्म सन्तोमु पविसिउ, कन्दर्पिगेणेगं छलपवेसाणुगनिग्गमणो पचो सो रत्तीए अणायारपट्टणदुमारदेसे। घोडयं श्राद्धजाए पविकण पश्चपंथिग पकुए गोतम आमगुण गमिऊण पवुत्तो। शदृनगमत्तो जगिऊण पाहरिओ पाहरिको। जागर्षि रे कन्दर्पिग। त्रिपथुगेनागामजल्पीत्। जग्गेमि जग्गेमि किं नु निल्लं निल्लोमि- घोरेहिं चोरिग चोरिग ण(प)यम्मि पसाणं नण वा मण वा पुट्ठेण गहितम्मं। योग०—सुरसेमर ! मन्त्रगिरस्तो गायाणं किं घण्टेन कार्यम्।

प्राहरिक'—तुरीयप्रहरेऽल्पसो तथा गाढितः प्रोक्तवान्-गिरा गिलोमि-मर रेखगाने प्राहर कोडुंबिओ उपदाए पदसो पमः।
तस्स जाया निद्रा नाम तरुणी। उ(उ)शुषणण परिणीगा। तीए जाया टिप्पा नाम चेट्टिगा। तत्वरतिमार याज्नोमि।

योग०—भिग्गूरं। ठिप्पापाअदको पर सुल्लभ गा, किमत्र निलाम। त्वं च जाए पभाए पत्ता ते सोनि छिद्दिगुरिसंहिं उद्दालिओ वाहणतुरगो मुंकमगाऊण किविओ तए पसोसि। फरमतगपल्लाणो कन्दर्पिगेन भारिवनागओ जोगयओ जाव पुरतो पविसेइ, ताव चोल्लाविओ ठक्कुर सद्दाहिगइणा मत्थण पल्लाणं पल्लाणोवरि ठाति, को एस विसरिसो संजोगो। ता थेह मे ठाण अहवा पल्लाणति। न तस्स ताता कोइ ठाति अप्पिय पल्लाणा, नड नं मुंग पारीणामो पत्तांपि पारिस्सामोत्ति। तओ अन्नु रसीए तुरंगो पाणाण च तद्दियंति, रायाकूयो पत्तो म मावन्नथिताहारपुरओ। विकओ तुपत्तो तस्स राचो। अप्

नन्न पुरदुवारे मवस पेम्मु गहिदो पाणहिआओ पाणहिअओ गमणाहिमुह गमणाहिमुह। चोरिओ चोरिओ। गहिदं सावत्तणं पअन्नीति। मणिसमेन-महात्मन्! किमुत दुर्वोत्स्यम् प्रयोजने साधयितव्यमस्मेव। किन्तु रिपवस्सामवे रिपेव प्रयोजनसिद्धिः।

योग०—अहो नाराग! सत्यमस्येवस्ति। किं पुनर्न सम्यक् किमपि मे पार्थेनपि सिद्धप्रयोजना प्रयोजनौचित्येन पूर्णा करिष्ये।

सर्वार्थ०—तथा सत्त् कौत्सुकीर्त तेन गारुड(वस्तु)मूलभक्तिमतो वैरपिपेषमसीः। योगपमेनैवमन्ये महात्मन्ययासतोसि मित्रस समर्पितामि धनस्य तस्मै मोचं तेन—भगवते सिद्धप्रयोजनं त्वं करिष्यसीति।

योग —भगवतोपत्यमप्यसारस्यापि प्रत्यवस्थानं पत्नेन मविमुक्तसरीकरणं। भवतु किं क्रियते। आत्मापि समाविष्टे बन्धपति। अपरयोरपि प्राप्ते परेषुपत्न्यकम्। पुनः परेषु पुरः परेषुपित्यमसमोऽयं गमनसमेवातिक्रमभवति न पुनः किंचित्कुतूहलम्, किंचं प्रियप्रसमपुरेषेन मां निमारुक्षिपति। तत्रापि भीमरुपमिति गत्वा कल्पयमिस्यास पूरस्थलपर्वं पताकासनिवेशपत्। उचित प्रतिपाम्—करोतिम दे मत्ती सायम्। भावस्करणमेवमयं सर्मनेव समर्पयिष्यामीति स प्रत्याख्यान करता करणोपगद्वार मस्य मोचनमारुप्यानपुरुषेण मवदमात्यान प्रभु वीनारहसं सोगतीव यमेधमपेडर्गेष्वीर्य येन प्रयोजनसिद्धिर्भवति।

योग०—हरिष्यम्योचितं सविताप प्रयोजनसिद्धौ पराम्तरे मिश्रितौ पारिमार्द्विकपुरुषो। तम्पामपि चोपारितके ददसौ मठीसुरपदुमसीमसि सविसपोसमावीनपि वत्समानोक्केनोपरेण मेरयन् प्रसो परमभूमिषम्। सभिमोऽप्येरको प्रयुक्तमपरिचमास्मेरम माहुरिकमपाद्दीतपरपमेयम्। दृश्रेन देन निर्गित्वा निरस्वे स्म। रममोम्मनो अपुनिधमपाठ्यमीय गोमयपीचनेन पपस्स गेरे एवं पर्व च। विनमपारिवेसितपमेपाल गेरेसु पीसमिओ तस्स पूसो। पपस्स अहबीए तम्मुरास सम्मुदं भुकरिपं। पपस्स णिबुदारे गब्बेवस्स रसमो अमगा धीमण्मा जानपि रामअपहिमो समत्तसमगरेण देहिअमा पपदि।

योग —अहो अम्पापमिद्धा। अहो अपुधिमापिष। अमनापिरुपमिसेमानी पमिया चर्मिद्धं सामूरा वा, पीनारमपममात्ये

मार्गति। पारिमहिकादयोऽपि यथारुचित याचन्ते। तुरङ्गस्तु मे पञ्चाशतमेव लभते, प्रहारपार्श्वादवलम्बको भारिक। ततो यदि जीवन्नितो निसरामि तदा लब्धमेव मया सर्वमिति।

"काले कलौ राजनि चार्थलुब्धे, धनानि किं रक्षत जिवितानि। स एव लाभो ननु शौनिकेन, मुच्येत मेषो गतकर्णको यत् ॥४७०॥" इति निराशीभूय निर्गतोऽसौ कृताऽन्यतो मुखद्वारा शावगिलिगुरोर्मठिका गवेपयमाणोऽपि यावन्न प्राप्नोति तावन्निराशोऽभ्यासीत्। सोऽय क्षते क्षारावसेकः। मन्ये दीनारसहस्रस्याप्यश्वगतिरेवाभूत्। कदाचिद्विचरता चतुरेणोपलक्षितो भिक्षुवेपेण क्षुल्लक स। तत्पृष्ठलग्नो जगाम सावगिलिगुरुमठिकाम्। प्रणम्योपविष्टस्तत्पुरस्तात्प्रोवाच–भगवन्नर्प्यता तद्दीनारसहस्रं न्यासीकृतम्।

सावगिलि—कस्त्वम्? क्व कदा दीनारसहस्रमाप्पत, धूर्तः कश्चिदस्मद्व्यसनाय प्राप्नोसि।

योग०—स्वामिन्? किमेवमुच्यते। तदा त्वद्वचनान्मठिकान्तर्मुक्त मया तत्।

साव०—तत्किं परस्वमङ्गुल्यग्रमात्रेणाप्यस्पृशन्तो वय लुण्टाका' कल्पितास्त्वया पर्याप्त त्वदुपास्त्या। याहि यथागतमित्युत्थाय चिन्ताचक्रचटितो भ्रमन् गृहीतपुष्पचतुस्सर प्राप्तो मकरदंष्ट्राया पार्श्वे, पृष्टस्तया प्रयोजनमवोचत्। तयापि जल्पितम्–अहं ते पओयण पसाहेमि जइ लद्धस्स अद्ध देसि।

योग०—'सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः' इति मनस्याधाय प्रतिपन्नवानेतत्, कथित च तस्य तया। मइ तत्थ गयाए तए एवमेव च कायव्वति। तओ पत्थरभरियपेडाभारियमत्थयाहिं दसहिं दासीहिं अवरेण वि पउरेण पाइक्कचक्काइ परिवारेण सद्धिं सुहासणासीणा धारिज्जमाणमाऊरायवत्ता पत्ता सा सावगिलिगुरुसमीवे पणमिऊण भणिउमाढत्ता—

कलिराज्यकथा—मह धूयाए वहुमायाए चंपाए गयाए वहूणि दिणाणि जायाणि, ता मए तदाणयणाय तत्थ गंतव्व। तओ

एवओ मणिमरणप्पमोक्खिमाणिक्कंचणमुत्ताहलरिद्धिमो सपेडाओ अबे ठविऊण, आवासमागमामि। अत्रान्तरे भणो कोन-एओऽवसपु-स्वामिनर्भर्त मे स्वसीकृत्य रोमाञ्चरकम्।

सम०—तमेव जाणासि। तत्र आइरेण स्वसमर्थित तव एकत्तरीया। आदेस इति मठिमस्स कोणम् गृहीत्वा निप्फन्नो बोमरुक्ता। ताडीओ पत्त वाओ पेडाओ मज्झे मोत्तुमुत्तपाओ पच्चन्तूण पच्चाविय मपराहम्म सज्जए ठवीए। छामिमि समागमा गविय सिग्घमणुगच्छन्त। तओ आहेवागय गया सा महिलेबा। तए(ता)ट्ठिक्कीभिक्खियम्हो सावगिकी ठिओ पसारियभुओ। समप्पियावि पव रीमहरसवावि मपराहम्म बोमएयस सेसवत्थस्स सव्वं परिरक्ख अप्पियावि अणारिसयावि मूलगयससेट्ठिणो एवन्नाव मिलणेवणो सयं च महुमोक्खाईण कारविदीए संयरियाय ठवीए अप्पिवं। अणुवे तंमि काल मयम्मोक्खयाइयरणेव रीमहरसवसेवो मूलगयससेमु मग्गेइ। तव सो छामिएणोवमसिस्सु। को तंसि किं वं रीमहरसवे? एवं पुच्छो सो भाडीओ वस्स परओ कंदन्ते समागओ दस्स ताओ अणुकिलेडी, भणिओ य हेमेसो वच्च। वं अत्थए पवस्स छमप्पेमु। अमहा म छुट्टेसि। मइसा गहियत्तं करम गमेमु रिवणाइ। अहमेवं मिलारहसं। वीरण्णियावि चत्तारि वि सप्पणि अत्थेव विसमिस्सामो। वीपस्सिमे वि बोमएयस भणिओवो मुक्कप्पो गहियवगेण 'कागमाव' त्ति करेइ। सब्बो परजणो य जो कोवि किंपि भणेइ तस्सवि सव्वस्स सम्मुहं अप्पणावत्ति करेइ। तओ भणिओ बोमरुक्को अणुविसेइऊण सव्वेण अवसव्वेण वा तए पारओ पुत्तो परिभय एत्तो तओ परज्जणाओ एवओ वर्द किं पिडेसि। ता तुमिहणे चिट्ठसु, अमुक्कस्स उव्वार एवओ गच्छेमु। तओ वेव भणिय एज्जु पाउ, मई एयम्मु चिय भुणिएवरे। जइ पुणु किंकम्मं जाइ वेतुिव कम्म विवंचिपए। इय चिंतिऊण मगणिम्मि जाएवि अगणिस्सणसामे भणिओ मुक्काओ जणए, अण्णेसु रोविं रीमहरसवकरं पुम्मपडिवज्जामि। तओ कसमपि वेदुइ मणिमोक्ख- 'कागमाव' त्ति। पुच्छेविं भणिय पुर्णं वेव तओ पुणिएण वयएण भणिओ मुक्कासो। जाइ मए वि धणिं वावा

वाव'त्ति करेसि। तओ भणिय तेण, तएवि तुह पिउणावि पियामहेणावि सद्धिं 'आवावावत्ति'। तओ उट्ठिऊण गओ सो नियगेहे, हक्कारिऊण भणिओ जोगराओ। वालेमि ते चत्तारि दीनारसयाणि जइ मे दोन्नि देसि, पडिवन्न तेण, कहिओ कन्ने कज्जविसेसो। तओ गओ जोगराओ मूलनासस्स पासे जोहारिऊण भणिओ तेणेसो, नाह किंपि मग्गेमि जए अणुजाणसि ता तुह पत्तित्तणेण जीवामित्ति। अणुन्नाओ सो तह्य आराहिउ लग्गो, जाओ वीसासठाण। कयाइ पओयणेण पट्ठावियाए सेट्ठिणीए दिन्नो सो चेव सहाओ। मुक्का य तेण नेऊण सेट्ठिणी कत्थइ पच्छन्नघरे। दिन्न दुवारे तालय। आगओ मूलनासस्स पासे, कहिं सिट्ठिणित्ति पुच्छिओ। न जच्छइ (जपिज्जइ) उत्तर। निव्वधेण य पुच्छिज्जतो जपेइ, का सेट्ठिणी, को तसि ?, भुज्जो भुज्जो चड्डिज्जतो भणिइ 'आवावावत्ति,' सामभेयाइणा भणिज्जमाणो वि लोएण त चेव वागरेइ। तओ भणिओ सो लयवुडिसेट्ठिणा। जइ एयस्स सतिय सव्वसमप्पेसि ता लहेसि सेट्ठिणिं, अन्नहा गया चेव म(तु)हवहुया। तहा कए तेणऽपिया तस्स पिया। दिन्नाणि दोन्नि दीनारसयाणि लयवुडिसेट्ठिणो किंपि वसणभोयणकज्जेण धारिऊग सेस निक्खय खड्डाए जहा सकरिया न याणेइ। वसणभोयणाइदव्वव्वए विसेस पिच्छतीए तीए पुच्छिओ एसो, कओ ते एत्तिया वित्तसपत्ती। कहिओ तेण सब्भावो, न उण दव्वगोवणट्ठाणं। तओ घरव्वयजोग्ग मग्गिय किंपि दव्व। अह रत्तीए तीए सुत्तविद्ध(द्ध)एण ठियाए उट्ठिऊण तेण तओ ठाणाओ कड्ढिय किंपि। अणुमग्गलग्गाए जाणिय सकरियाए ठाण। वीयदिणे वाहिरगयस्स तस्स उक्खणिऊण गया सा। आगओ जोगराओ जाव न सकरिय पेच्छइ ताव सकिओ गओ निहाणठाणे, तयपि सुन्न पिच्छतो जाओ सव्वसुन्नो। भोयणमेत्तपि अपावमाणो निग्गतूण नयराओ गओ सट्ठाण। चिन्तयति च—

> यैरौदार्यमहोदयान्न विहिता वन्द्यार्थिना प्रार्थना, यै कारुण्यपरिग्रहान्न गणित स्वार्थ. परार्थं प्रति।
> ये नित्य परदु खदुखिताधियस्ते साधवोऽस्तगताम्क्षु. सवृणु वाष्पवेगमधुना कस्याग्रतो रुद्यते ॥ ४७१ ॥

यथा—अस्मामिस्सुरम्पुराविरसनाविच्छेदिमी मेमिनी भ्रमन्ति। स न कोऽपि निरुपगुणो यः मुखो वा स्यपित्।
अस्यामे विरसंसृजानि इत्ये दुग्धानि सौख्यानि च (वा) अस्मस्कन्न मनमेकमर्थमनता सौभाग्ये निर्वृति ॥७२॥

ईर्ष्यांकुलविरसो यथासम्—यथो च—अतिरक्तमना कमिय इव वेरि! तए पसाविया धाऽसि। अनुराय परेमि मह मग्ग, संपय पुष्पिमपऽसि तए ॥ ७३ ॥ किंतु मह बोभाएण सफलीय पयासिय तवे। निद्दिओ वेवसयरो, रस्सोयम्मो तह कुमय ॥ ७४ ॥ बकलेण पसरन्ते, मह मिता मज्जिय इमा कम्मी। तो सामि सुरं व वेय निरुम्मरपंडिय कम्मा ॥ ७५ ॥ कुसुमं मेऽसियाए, मयार सा सुरो वि सो देइ। तीए सोऽसी सामि पुप्फिकय मूलमेसि ॥ ७६ ॥ कहिए पाहुडिए सा पुप्फोवि ममोह मच्छरेण सुरं। अहव मोहगन्तयन्तं, सव्वचि तुह पहु पसाएण ॥७७॥ पियइ कि मयमयं, वेरी एयल पासत्वेण। मह मह असईए, तीय सिरे पसर पुस सयं ॥ ७८ ॥ सव्वे वामि सवेइ, सा पुन्नो किंपि सयमेईए। पाशमेमेयऽमिमूय सव्वयमयवेन पूयइ ॥ ७९ ॥ ममोह पुप्फवेरी किमवत्ता दुगुमेव स्मयइव। पंयोइमि च उद्दामि तोषि वो तीर बप्पडीमि ॥ ४८ ॥ सा इ इमाय हे बच्छ! किरएसुप्पीमि कि एय सिंप। पत्र मे बम्मो बाली या बच्चसं इव पसाय वे ॥ ८१ ॥ इय बालेहे मग्गी, मनिय बच्चेव सा निरुमवेव। हे पंचि सुहि देवे!, कि कुणसि मणिए मिले ॥ ८२ ॥ पावे! उप्पसु मियमच्छउपस पत्ता बविबक्केमसस। कि पुत्त न पुर्णत, दीमवरगुणेव पहसियं ॥ ८३ ॥ जसइ पुट्टिवि कमा भागमच्छीदी मिहिमि सरूय। मनिय सा वेरिए, तया वार्न विसेवे वि ॥ ८४ ॥ ममिवमिमीमि मह विम्मपिम्मरोसहुप्पय सो वच्चो। स हि रसपसो व्व वायो विरंपम्म(ब्ध) निम्मिमेय कमा ॥ ८५ ॥ पमन्द सा दिम्मस्स च बच्चस्स च यीस देवि दे रोसं। अप्पमसुपायमेसु, मूरिक्षेमेव अमिभूयं ॥ ८६ ॥ इय बहियं अविइमव मणिम्मोदीए सम(अ)वमवसवपुरवसुन्मवन, पवियवपाई बहु(व) बम्मि महसिम्मयर। सबरि पमरि या सामि! सोमिय मा कोसु(ई)करि, मिय य होइ ममेयक पीयक वेरी परि ॥ ८७ ॥

जम्बूस्वाम्यवादीत्—'शृणु सुन्दरि ! कनकसेने ! भवतीभि पर्वमैत्र्यभाग्भिरलम्। जोत्कारमित्रमात्रैकसौहृदो येन वर्त्तेऽह्
॥ ८८ ॥ क्षितितिलकपुरे जितशत्रुभूपतिस्तस्य सोमदत्तोऽभूत्। कुशल स्वकाधिकारे सुधी सुधीरश्च सचिववरः ॥ ८९ ॥
मित्रत्रितयी तेनार्जि, तत्र सहपानभोजन प्रथमः। अपर पर्वणि दृष्टापृष्टो जोत्कार्यमाणोऽन्य ॥ ५९० ॥ प्रथमस्य सदा
भक्तिं करोति पर्वसु पुनर्द्वितीयस्य। तार्त्तीयीकस्य कदापि मार्गदृष्टस्य नतिमात्रम् ॥ ९१ ॥ प्राणान्तिके कदाचित्प्राप्ते व्यसने ततो-
ऽपि भूभर्त्तु। प्रथमसुहृद स मन्दिरमन्वसरच्चकितचकितमना ॥ ९२ ॥ विनिवेदितवृत्तान्तो, नितान्तभीतेन तेन सोऽभिदधे। तरसा
निस्सर गेहात्, कुलक्षयो मेऽन्यथा भविता ॥ ९३ ॥ अधिगततत्त्वस्तस्मात्तरसा निरगात् प्राङ्गृहोदयत्सचिव। निजसद्मद्वार याव-
दनुययौ स तमतिक्रतघ्न ॥ ९४ ॥ प्राप्तोऽथ पर्वमित्रस्य, सद्म सप्रश्रय परमकार्पीत्। कार्यमवधार्य वक्ति स्म, यत्र यातासि
तद्ब्रूहि ॥ ९५ ॥ अविचिन्तदथामात्यो, भृशमेषोऽप्याकुल स्थितेऽत्र मयि। निर्यामि ततस्त सोऽप्यन्वपतत्त्वर यावत ॥ ९६ ॥
तत्राऽमात्यो दध्यौ, धिग्धिग्मित्रत्वमेतयोरुभयोः। खादाऽऽचामायामेव, मित्रता यद्गतावेतौ ॥ ९७ ॥ "मित्राणि व्यसनाप्तौ दारि-
द्र्योपद्रवागतौ दारा। सुधिया परीक्षणीया, भृत्या कृतार्थविनियोगे ॥ ९८ ॥" गच्छाम्यूर्ध्वमुखस्तद्वा जोत्कारमित्रमपि वच्मि।
मा नाम कदापि भवेदस्मादपि कार्यपर्याप्ति ॥ ९९ ॥ चरणेषु नखा शीर्षे, केसरिणा केसराणि धार्यन्ते। करिकुम्भदलनकेलावस्य
नखा एव सध्यञ्च ॥ ५०० ॥ इति सुचिर सञ्चिन्त्य, प्राप्तो जोत्कारमित्रवेश्मान्तः। तेन सदतिथिप्रतिपत्तिगौरवेणादराद्दृशे ॥१॥
सविदिततत्त्वोऽवादीन्मा भैषीर्निर्भयो निषीद त्वम्। स्वीकर्त्तुमलंकर्म्माणविक्रम कोऽप्यतो न त्वाम् ॥ २ ॥ विषयमिमं तित्यक्षुर्यि-
यासुरङ्गान् प्रजल्पितो तेन। उत्पीडिततूणीर स पुरोऽभूत्तस्य निस्सरत. ॥ ३ ॥ निर्भयपुरीं परापत्, गृहीन् गृहीत्वा नवग्रहमवा-
त्सीत्। सम्पाद्यमाननि शेषवस्तुरमुनान्तिकस्थेन ॥ ४ ॥ अत्रार्थोपनयः सोऽय, यथा मित्रत्रयी तथा। क्रमेण काय-ज्ञातेय-धर्मास्त्व-
द्गुणयोगिनः ॥ ५ ॥ खर्ज्जूरखीरखण्डाद्यै, कस्तूरीकुङ्कुमादिभिः। माणिक्यभूषणैर्नित्य, कायोऽयमुपचर्यते ॥ ६ ॥ प्रेताधिराजवैधुर्ये,
सम्प्राप्ते जीवमन्त्रिण। दूरेऽस्तूपक्रिया कापि, पदमप्यनुयाति नो ॥ ७ ॥ पुत्रमित्रकलत्राणि, मातापितृसहोदरा। स्वा शेषा अपि

विवेक प्रभुत्वमुपक्रिय ॥ ८ ॥ सन्तो मेरुसमं मान्ये कर्मिस्था कंचन समम्। स्वयमनस्वरूपी पावात् गत्वा पाति पुन-
र्धुवम् ॥ ९ ॥ धर्मोऽयं क्रियते लोके, गोचरत्वा करायन। मुक्तस्य निवारणप्रयोजनपराप्तये ॥ ५१ ॥ मेरुमार्गे स पवेक्ष
समीपीमस्तमनुते। धार्मनर्मी सदाऽप्यपि, पूरयत्वमिच्छामिकम् ॥ ११ ॥ इति मित्रमयो कथा ॥ तत्र समीमस्पुणो न च का
सुबस्ती, परोऽप्रमादिमस्तुपर्तिती सत्यरत्नात्। बोत्मरमित्रसद्वी तु छप ममोत्पापायवामि जिनधर्मपुष्पं समर्पयेम् ॥ १२ ॥
पुरुस्य मुमषि। कर्तिरासपमापि सेवा मोगस्तु मविष्यति मम प्रपन्नात्। मूलमसंपमपुरे परिसूत्रपाणां पयोगराजगविरेव
मनेतव्यम् ॥ १३ ॥ अथ प्रभवः समानुयानमाह—

मन्यास्व एव धराममपयोधनानां सन्धर्मंधर्मधनसीमपयोधराणाम्।
मनोदरमुरितनमिपत्नीधराणां धन्नाऽऽऽहर्ति विहतिमेति मनो न येषाम् ॥१४॥"

धम्मतामणपविसिभा न पत्नन्ति यस्स, चित्त न निरहति धममलगोऽणुपणा।
धर्मेन्ति भूरिविपयाम न मोस(धोम)पाम्मे धोभामे नपति स्वमिदं स धीरः ॥ १५ ॥

पुण्णमसमारिस्वदि, कमीणाइं समाणवाई पपाई। कवारि पजीर इमिदं, इणत एत विच वरीदिति ॥ १६ ॥ पमणोह मागसेण्ण
संपूयामि सहुपिहुपींदि। समासिदी कमलाइं कपासिसिदि पुरघरिष ॥१७॥ विवस्थो पाविमाय, पुत्त सुवंरि कम्मासेम्मस।
किं हुसय निम्मीसिकमकसीदि सुपीदि ॥ १८ ॥ अणुसरह धम्ममर्मं, सम्मं सम्मामसामरेसु मिते। गिरवासे वि हिओ वं
सम्मं मिक्खेसु विषरेसु ॥ १९ ॥ वसुहिवपुरिवणं, हिय पासिवि चेमि गिरवासे। के सूरा इणरा पुत्त, विविणा परसंहिओ
इति ॥ २२ ॥ भणितं च—" पुरातमसमो धर्मो न भूतो न भविष्यति। पाप्यन्ति तथा पुण्यम्, कतीपस पत्रणसमासिवा
॥ २१ ॥" एमयाले ममत्त सम्माघरे न कम्मखले वि पाओस!। न सुवाय होइ अभिसमो कोहो कोहगमयारम ॥ २२ ॥

अमरसेण-प्रवरसेन-भ्रात्रो कथा—कचणपुरंमि कचणसेहररायस्स आसि दोन्नि सुया। नामेण अमरसेणो, पढमो वीओ पवरसेणो
॥ २३ ॥ ताण पसायपरेण, पिउणा जयकुजरो कयाइ पुरा। दिन्नो आसि सया वि य, चडिया ते तत्थ कीलति ॥ २४ ॥ जह
उद्य तस्स नराहिवस्स कस्सइ जसो पयावो य। दोय सुकुलुग्गयस्स अहवा, ववसाओ सुकयजोगो य ॥ २५ ॥ तह कुसुमसरस-
माणे, ते रममाणे सुदतिणा तेण। पेच्छंती मच्छरमुव्वहेइ सावक्किया माया ॥ २६ ॥ वार वार रत्तिं, दिया य कन्ने खणेइ
नरवइणो। सामिय! सुयस्स मज्झ, दिज्जउ जयकुजरो एसो ॥ २७॥ किं किज्ज(इ)उ तुह वल्लह, देह पसाएण अहव चाएण।
एत्तियमेत्तंपि न होइ अम्ह ता फूडनेहोऽसि ॥ २८ ॥ वियसतरोसधूमंधयारधूसरमिम मिसिमिसत। दट्ठूण भणइ राया, एव
कह होइ कयाइ ॥ २९ ॥ भत्ता सत्ता जुत्ता, पुत्ता ते किं न अप्पणा दिन्नो। कह मग्गिज्जइ स गओ, त देमि जमन्नमाए-
ससि ॥ ५३० ॥ कुग्गहग्गहिल महिल, नाऊण नाराहिवो मयणमूढो। भणइ कुमरे करिंद, अप्पह मह देमि दस करिणो ॥३१॥
नाऊण चुल्लमायाए, चेट्ठिय सुट्ठु निट्ठुर एय। चिंतति ते वि एव, धीदुच्चरियं महेलाण ॥ ३२ ॥ नियमाइनिव्विसेसेण, गउर-
वेण वय निएमो त। नियसुयवच्छलयाए, सा णे जाणेइ रिउणो व्व ॥ ३३ ॥ करिणो सिणीहिं वग्गाहिं, वाइणो गोणया वि
नत्थाहिं। कीरति वसे पुरिसा, मराल्लीलाहिं महिलाहिं ॥ ३४ ॥ ता माणी ता जाणी, वियक्खणो ताव सज्जणो ताव। जाव
घरट्टोव्व नरो, न भामिओ दुट्ठमहिलाहिं ॥ ३५ ॥ "तिहुयणु सयलु जि पेक्खहिं अंखिहिं, लक्खहिं गयणि मग्गु जे पक्खिहिं।
जलपरिमाणु जि सायरि बुज्झहिं, तरुणिचरित्ति ते वि नि रु मुज्झहिं ॥ ३६ ॥" अहवा सव्वं सोहेइ, सुंदरीणं असुंदरीहाण।
ताओ वि नाम एव, करेइ अव्वो महच्छरिय ॥ ३७ ॥ दस देइ मत्तदंती, जइ नाम तहावि तेहिं किं कज्ज। माणपणासे पुरि-
साण, होइ कोडी वि तिणतुल्ला ॥ ३८ ॥ माणि पणट्ठइ जइ न तणु, तो देसडा चएज्ज। मा दुज्जणकरपल्लविहिं, दंसिज्जतु
भमेज्ज ॥ ३९ ॥ तथा—"पुण्येऽरण्ये पुरे वा सितघ[1]नच्छन्नपाली कपालीमादाय [2]ण्यायसज्जद्विजहुतहुतभुग्धूमधुम्रोपकण्ठम्।

[1] वनवसनच्छन्न B C. घनवसच्छन्न D। [2] न्या D।

हरं हारं हरिओ वरमुत्तरीयमुल्लम मयूरो मानी 'धीमान् समाओ न पुनरनुदिनं दुस्सहसु पीणा ॥ ५४० ॥" एएणेव कमेणं, गयउमो एण्डमेव ता पत्तो। न कमय वये पुहई रमंगुणी देवीय वसिय ॥ ४१ ॥ "मियंकुमर वरिस्सा विमलयरनयं जम्मन मक्कारे। भवमावेसविसेसाऽणमणो व न होइ निव्वेरे ॥ ४२ ॥" इय चिंतिऊण रवीए, तो वि ते मिणाया निग्गयिमण। इय मुणंत वसाणि अमरता मिवजम्मसताणि ॥ ४३ ॥ वाउरियवरपयाउ जणतोहयमणपहिं ते पत्ता। अइसाठयम पसाए, मीम कयाए वहरीए ॥ ४४ ॥ वायेइ न वहुया मुणमं वा सामुपम्म पुरुमप्प। वरजम्ममाणसोहाए सहुणा विलुमि(मु)त्तिम ॥४५॥ दीसंति वियसीह भवमिहुम्मकविय महसिरिया। मरंगमाणुमपमुरिसस्स हरिमम्म ॥ ४६ ॥ वलेगस्स महावलस्सो मयमय धीसमेवस्स। पुमरस्स अमरसेणस्स आगम्म सवि सुहनिरा ॥ ४७ ॥ वरसेणो धम्मेणं पाव सेवाहए पुव्वभिसण्णो। जाग एमाणस्स मणं च, भीमसत्तारि मसु होइ ॥ ४८ ॥ अह वडयासीकलम्मे मिरिकरम करास्साई मुयम। चिवइ किळेलो होइ बहुगुण्णे मत्त करयाते ॥ ४९ ॥ जयाये किजइ धम्मम सम्मत्त मस्थि सीहो। चिंतेयम्मं पर्य हु, किंनु मलेस विस्सय ॥ ५० ॥ 'वाडिमुहसिप्पिमुरेसु, अप्पेइ पयोहरो पयं सुगयं। एएस्स मिसं असमत्त, मोत्तियं तं पुम्मे होइ ॥ ५१ ॥" वर तेम्मे वि हु मा पडिबंधिओ होइ पुव्वपुरिसोवि। परिमयविसम्म जस्सो, पवरजो मम्मइ वरसेणं ॥ ५२ ॥ अखिद्दीय दूरेसा गयणं मुप्पम्म किंचि वविसमाई। इम्मणमि अमीव तस्स अम्मए होमि एसमवि ॥ ५३ ॥ पीणा वाम एखं, सिम्मइ अभेय इरिवय कम्मी। वम्मं कम्मेमम्मं सयंभुणो मुणम सेवमे ॥ ५४ ॥ पुहु जनसमावधाराई सयवार वविसाई। पनमिमु परियपअवस्स होइ सिरी न सीहो ॥ ५५ ॥ एवम पडिप्पिऊण ते पूरवाजिवसिरेण पंजलिम्म। वरसेणेणं सेणमस्स पडीए पट्ठा य ॥ ५६ ॥ भमरडिओ मुणे तो, गयंतरे मीभो अमरसेणो। सिरिं वासरेहिं वो सा, महाजं कंपिय तेहिं ॥ ५७ ॥ धम्मकिमुणे मवा, सम्मरिमरसरवरस्स वासीए। विहियंमापावसोप्प, भूमवे धीसमंति मुणे ॥ ५८ ॥ वम्मेसे सेव कम्मीवसेण

---

१ कम्म।

विन्नत्तममरसेणस्स । पियवधव ! लिज्जउ रज्ज-लाभसज्ज रयणमेय ॥ ५९ ॥ कहिओ विहि जहत्थो, सवित्थरो थिरमणेण कायव्वो ।
फलसिद्धीए एयस्स, लाभवुत्ततमक्खिस्स ॥ ५६० ॥ अह एगते साहारवीहियाए गओ स हरिसेण । पुज्जिय पणमिय पत्थेइ,
पत्थिवत्त सुथिरचित्तो ॥ ६१ ॥ विहियपहाणविहाणो, कयाऽवहाणो सयपि वरसेणो । नियरयणाओ मग्गइ, सामग्गि भोयणाईण
॥ ६२ ॥ पयडीहूया तो अच्छराओ तत्थऽट्ठ लट्ठरूवाओ, निम्मियनिम्मलसुविसालचउसालसोहाओ । अब्भगअगमद्दणउव्वट्टणण्हा-
णभूसणाईहिं, सम्माणिऊण निव सावयति देवगवत्थाइ ॥ ६३ ॥ अइसरसपाणभोयणतवोलपसूणपमिइ दाऊण । कत्थइ सव्वपि
खणेण, त गय इदयाल व ॥ ६४ ॥ भुत्तुत्तर पसुत्तो, जावऽच्छइ ताव वच्छछायाए । जेट्ठकुमारो ता तत्थ, पंच पत्ताइ दिव्वाइ
॥ ६५ ॥ पाडलिपुत्ते पत्ते, पचत्त पत्थिवे अपुत्तमि । गयहय-चामर-दुदुहि-छत्ताइ पउरजुत्ताइ ॥ ६६ ॥ अहिसिंचिऊण कल-
सेण, गुलगुलेउण मयगलो खधे । आरोवेइ कुमार, हओ विहि णिहिणइ हरिसेण ॥ ६७ ॥ विमलाओ चामराओ, ढलति वज्जेइ
दूदुही पुरओ । वित्थरियमत्थयत्थ, सजाय सेयछत्तपि ॥ ६८ ॥ भडचडगरेण महया, पविसेइ पुरस्स मज्झयारमि । पणमिज्जतो
सामतमतिमडलियलोएण ॥ ६९ ॥ नीहरिओ वरसेणो, तत्थावसरे गओ पुरस्सतो । नियकज्जेसु पज्जाउलस्स किं मज्झ सोक्खति
॥ ५७० ॥ अइचिरमेस गवेसाविओ वि सव्वत्थ जाव नो दिट्ठो । ता पत्तो पासाए, सो सज्जइ रज्जकज्जाइ ॥ ७१ ॥ अति-
लोभे लोहग्गलागणिकाकथा—इयरो मागहियाए गणियाए गओ गिहमि सयणोव्व । सयमेव ताव तीए, गंतूणब्भुवगओऽभिमुह ॥७२॥
विहियविविहोवयारा, मागहिया अवहरिंसु से हियय । लोहग्गलाए अक्काए, मग्गिय पूरइ इमो वि ॥ ७३ ॥ भणिया धूया
लोहग्गलाए धणमस्स एत्तिय कत्तो । न हु देइ कोइ न कयाइ, कुणइ सेवाइववसाय ॥ ७४ ॥ ता जामाइयमापुच्छिऊण वच्छे !
सुनिच्छिय कुणसु । भणइ इमा ते कज्ज, दव्वेण किमेय चिंताए ॥ ७५ ॥ लोहग्गलाए अइअग्गलाऽऽगहाउ इमाए सो पुट्ठो ।
पभणइ रयणाउ पिये ! मे चिंतियरिद्धिससिद्धो ॥ ७६ ॥ लोहग्गलाए कहिए, तीए जोएइ जु(त्त)न्नमंजारी । त रयण सा घेत्तुं,
सुत्तपमत्ताइ तस्स छल ॥ ७७ ॥ अह मज्जणोवविट्ठस्स, तस्स चेलचलस्स गठीओ । छन्न छोडिय घेत्तूण, तीए त गोविय रयणं

॥ ७८ ॥ तं गंठिमुट्ठिओ जाव पेक्खए ताव पत्तय न तर्थं। तुमो निरिक्खयमाणो कोमविचओ इमो भणिओ ॥ ७९ ॥ भणाए
कि निरिक्खसि किं पडियं किंपि तेयसु णयणं। मममेव सयणओ सोइऊण कीव समप्पेमि ॥ ८० ॥ एसो एमयम पयर-
णेण विवक्खय परिवयासि। क्वाइम कोमसोइम-पुम्म सा भाइ नत्थिथि ॥ ८१ ॥ दासीमा पुव्वको भणिमो सो पुहणीए
दो होउ। मा मज्झ परीभवं कयेमाणम दूसेसु ॥ ८२ ॥ सब्बो वि पेवरिकमो दासीओ जाव जीविया पुम्मे। रायकयण्ण-
एणे वि वोयमयमपासि जं मे ॥ ८३ ॥ इय सोऊण कुमारो चिंतइ भावुविकयममुयणीए। एममकज्जे पयाय, एवम(ण)वि
मयमाणमि ॥ ८४ ॥ कुणइ एवं तोर्विति विमियं कोइमाणस्स य माणुस्स। विमेव जा पवेसवि पारभय न ठाइ गुणं ॥८५॥
किं कि न कुणइ वा जणे वा सयमेव स्वाइ। जिन्ने हि मए पयाए, वाहवि किर किंपि णो छिन्नं ॥ ८६ ॥ अथवा—आइ
सप्पुरीसयाणो कोइमयणो दोवि एगओ। अहमेव जओ अपुहे जं कुम्मओ न पुणामि ॥ ८७ ॥ उक्तं च—" अपि
मन्दयसेनात् चद्रमनत् शीलसम्पदः। नाशोऽमनगोऽकुसिम्पमनिष गच्छता बन्धयोविता ॥ ८८ ॥" "मनसकम्पसम्पदाम्,
मिलयमम्येव हि। वासां साधाम्पसोर्थ तत्र सर्व मुपहेतना ॥ ८९ ॥" "कुपितोऽपि मरणमात्, परस्वाँ धनमाश्वयः।
कन्नी कुसिमस्वेवं, निम्बेषां गविणं स्वजेत् ॥ ९० ॥ ता माताऽमनि गरुममामाणमोमियं न मिलेइ। ता पीयरिं कुणं,
मियपरिवेसं न वारेई ॥ ९१ ॥ इय स नइसे जसाइ, अमइंदो दूरेसमकीओ। विमकंउअमाइ घोयय उहनि मय(ए)सुन्न-
मिमियं ॥ ९२ ॥ मागाविएम पमागयममय जाव पाणिग्गी वि गया। ता मय्ये तीए गओ चोरियरयणो समागयम ॥ ९३ ॥
ऐवसीम गविरगियमए कहियं इमाय अभाए। सा भाइ गविक्खारो विषोसाई जाओ भाविरिव ॥ ९४ ॥ होइ एहमि भणाइ,
एममाइ तओ घारसयमयाई। एककमपि जमांती मम्मुपायेय पोयइ ॥ ९५ ॥ मागपियम माइ—भीय! न एसो केसे, कमिमी
एवमिपि यो विदिविहूर्त। माइमेइमरसद्दा न भारवायम पायामि ॥ ९६ ॥ परसेयो संपयो मसासमो निषीइसयमयमि।
मूयकसिमि जनाइ, केन चोरं मणमसे ॥ ९७ ॥ गमो वणी यायस कुमयरेवीए रेयसे मय। मिरिकाणि छडिम, वीर।

जाहि तो होउ फलसिद्धी ॥ ९८ ॥ पेच्छइ अकालिअनुबन्धकलमो नगेण तत्थ गओ । दुग्गादेवीए पुरो, निविट्ठमेग महा-
जोगि ॥ ९९ ॥ रत्तदणमंडलपासदिन्नमाणुसपमा पईवोह । मउल्लपुरओ पुरिस च रत्तकणवीरमालाए ॥ ६०० ॥ पच्छण्णो चाह,
सुदधनद्धे करितु पल्लिवस । उग्गीरिऊण खग्ग, जाव ते जाए जोगी ॥ १ ॥ तुह देवि ! मए दिन्नो, अज्जवन्नो एस होउ गर-
नली । कुमरेणुत्तो तो सो, रे रे कापुरिस ! किं कुणसि ॥ २ ॥ किं निरवराह सामिय, अणुराग निद्दीण ! हणसि धुव ।
बंधणरज्जु छिंदेसु, अन्नहा नत्थि ते जीय ॥ ३ ॥ इय भणिओ सो पवसेणसम्मुहो पलइ मगगमकरो । सोवि उद्ध दिक्कोसी,
काऊण करालकरवाल ॥ ४ ॥ अइगरुयलग्गसंजुगरगेण तेण पिल्लिऊण दढ । चलपाणे गहुरिओ, सो जोगी पायपडिदण्डो ॥ ५ ॥
खग्गेण खंडिऊणं, कुमरो सज्जणगरज्जुमुवसिसिय । पुरिसस्स पुरो पुच्छइ, को तुम्हो कुमरामण्णे ॥ ६ ॥ भणिरमणेण तम्हो,
नामेण मघोरघंटजोगिन्दो । इाउ दुग्गाए बलि, सिद्धिरए अहमिहाणीओ ॥ ७ ॥ एतोहिं पाउणाडिं, चडिओ किडेइ निक्कुरग सरूवं ।
पुरिस वि सञ्जिय कुणइ, पाउगा सो सपाणसु ॥ ८ ॥ गुपारिऊण पाउल्लिपुत्ते पत्तो तओ खगेण सो । ईसवगाओ दत्त, आरुहई-
पाउयारूढो ॥ ९ ॥ चिंतेइ कहवि केणइ, मिमेण पउणाण कुणि दूरे । नेउ मिल्लेमि गहं, पियमि निम्मच्चिय ताद ॥ ६१० ॥
स कयाइ चगसव्वगमणि सिंगारसुंदरो होउं । तेण पहेण परममाणो तीए मग दिट्ठो ॥ ११ ॥ निसिरमेगाए पुणो वि, सव्व-
मेण्णुरञ्जियमणव । ता पच्छेगागेउ, मागहियाए गलपेनि ॥ १२ ॥ सव्वीहिं जाय हरारिओवि नोमेउ गुहिणी नाए । त
गतूण आणइ, कहवि याहाए घेत्तूण ॥ १३ ॥ इय तुज्झ पुत्त ! पुत्त, तुत्त अप्पलओ गओ जगिओ । नहिरमाओ जाव, मागग-
हिया अहह मागहिया ॥ १४ ॥ भणियमणेण माए ! मा कुप्पसु हज्जगणवाण गओ । अहुणा पुणो वि पत्तो, आएस देसु किं
कुणिमो ॥ १५ ॥ देइ पुणो सो तुज्झ, समग्गल मणिगणाओ लिप्पि । तो सा रमणिगा गिरोइ कत्तो मलमणाए ॥ १६ ॥
तो भणिया मागहिया, वच्छे ! पुच्छेसु अज्जगोवायं । भणइ सा माए ! तुज्झ, लग्गिगा किं पुण अन्नत्री ॥ १७ ॥ जइ पारिया
न अन्नसि, पुच्छसु सयमेव ता तुम अम्मो । नियमेवं त सणोमि लोहमाला नाम ॥ १८ ॥ जइवि रहस्सरज्जचा, परा

पुयम[1] पुरिमि वहिवि माई। न भविस्सं किंपि जओ कामेसि तुमं सयं उचियं ॥ १९ ॥ मह वर पत्थ व तं जासि मम्मिाउ रम्ममाणिए सहसु। गहूण तेण सह तेण पमइमागेमि सह तेण ॥ २० ॥ पुर विरहे मागरिप पयमप लेवूण जाइ रसम-एसं। तह मम्म च पुमओ दूरे पत्तेमसिपत्तो ॥ २१ ॥ रयणमयपाइरीवे गेगु निवमिम्मपाजपयको। मामप्पं तो पप्प तेमि वं किंपि इच्छेसि ॥ २२ ॥ पिवइ अस्स तेमइ मिसेय मेहम जाइ दीमंवो। मेविणुमेयमालेमि पाउपमो स (रम)यं पहिरं ॥ २३ ॥ भणिओ पमाइ एसो जयागमो भणसिणे विमोचूण। तं वयप्पय इणिउपमोपाइयमेरिसं हि मए ॥ २४ ॥ गरुपइमपसरीवे ऐयमकी पमापमिस्सामि। पुसिपेपमइ गहूण, पर गमाइमो मग्ग ॥ २५ ॥ निवसमिप्पापपमाइमेसिमो तेण भणिपमंव! मर्मु। यदिमार मेमि वहिं, किं भजावि किमाइ मिपरो ॥ २६ ॥ दुणमरिउम तो पाउपओ तं पाविम्म गहे पम। मपमयपमसंवो संपत्तो तवि वरसेणो ॥ २७ ॥ मंगिरदुवारदेसे भम मुपगु पसु पविउम। पत्ता पाउविपुरे निय-पेपपणपरिवुडा ॥ २८ ॥ पुमओ पपमपुष पा पोपइ वा न पेमरए रोहि। मीसरिप पसेपइ, पाउपमो पओपि मो भिपइ ॥ २९ ॥ परीवेइ पावे! पापमेरिसं ववरेसि पुपरयं। तं विविपमासि मए, तं रमसु पहिरं महायोर ॥ ३० ॥ पामो कोपपमामो, एसो स(मो)गु भवसमेवाहे। जो जं विवेइ परस्स तस्स तं भायइ परस्स ॥ ३१ ॥ विमपुंपिपपिपस्स, वस्स पमागमो पमीमेगो। पस्सरो पुग्गइ मम तं सगामो कि सचिवो वा ॥ ३२ ॥ पुपे पुपमे तेम पो स मंपूरम पर-पं। घमइ सुइपमइपमेपमोपमसोरमि मिजे ॥ ३३ ॥ परसपेणुपरसमपेम सामइपपमेव सिम्मइ। विउमप मिजाइर-गुपामओ पस्स वरिसु ॥ ३४ ॥ गुरिपपार पुमि पाप पमाइरम पपेइ [2]पिपमाउ। भमाव घाइमं मागुसस्स अम्मइ तह पेम ॥ ३५ ॥ पम्मसार परिदेस घाइओ होसि तं महावीर!। बंभवारमपमपि इमाणि हार भविसिस्स हे पूप ॥ ३६ ॥ कमाहिउम पुपमे पापमिपुरे स तेण पापरेम। विगइ पुमो मि स विमपसमेपरएप गहिप वहिं ॥ ३७ ॥ कोमममपर दासीए, साहियं जाम्प मए

१ पिमपप a, b पिपमपो B।

दिट्ठो। जामाउओ इयाणिं, तुह सो सव्वगसिंगारो ॥ ३८ ॥ तो सा हियय कुट्टेइ, कुट्टिणी हा इहागओ कह णु। विग्गोविऊण म पाउयाओ लेही नियाओ सो ॥ ३९ ॥ काऊण किंपि कूड, अगे पविसामि ताव जइ कहवि। छुट्टिऊण वचित्तु नव्व दव्वपि गिण्हामि ॥ ६४० ॥ सव्वगनद्धनिप्पट्टपट्टिया लोट्टिऊण खट्टाए। मागहिय पेसइ तस्स, आणणत्थ सुसिक्खिविउ ॥ ४१ ॥ गतूणमाह एसा किं, जुत्त तुम्ह नियगिह मोत्तु। म च नियदसणायत्तपाणमन्नत्थ उत्तरिउ ॥ ४२ ॥ अवधारिज्जउ पाओ, होउ पसाओ उवेह नियगेहे। मरमाणीए मायाए, देहि समासमतिमग ॥ ४३ ॥ सयमेवागच्छति, मयन्च्छिय[1] अहमाउयाए भेट्टाए। हृक्कारणाय पत्तासिऽज्ज सयं सो महासउणो ॥ ४४ ॥ इय भणिय तीए सद्धि पत्तो लोहग्गलासमीव सो। पुच्छइ तरवारि महा-पहारपीडाइमावत्तो ॥ ४५ ॥ नीससिऊण सुदीह, सा आह अगाहवाहिविहुरि व्व। [1]पाणति पणवियवसण-वेससा किं भणामि लहु ॥ ४६ ॥ जाणेसि ताव दोन्नि वि पत्ताइ अणगदेउलदुवारे। मोत्तूण पाउआओ, तत्थ गओ तसि गब्भहरे ॥४७॥ ताणम्हि रक्खवाली, जाव ठिया ताव खेयरो एगो। आगम्म पाउयाओ, लेउं लग्गो महपुरो नि ॥ ४८ ॥ पाग्सु पाउयाओ, काऊणमह तओ पलायती। पत्ता गत्तियभूमिं, अणुमग्गेण स खयरोवि ॥ ४९ ॥ सगामो सलग्गो, तेण सम तो महापहारेहिं। म पाडिऊण पावेण, पाउया ताओ नीयाओ ॥ ६५० ॥ चिंतइ सो पावा, पाउयासु पासठियासु कत्रडवसा। पलवेइ आलजालं, समए सव्वपि जाणिस्स ॥ ५१ ॥ पभणइ माए! जइ नाम, पाउयाउ गयाउ गच्छंतु। आदाय दुक्खमग्गस्स, तुज्झ जीवेसु तं सुचिर ॥ ५२ ॥ सोऊणमेयमेयाए, जीविय तणुकुडिं अणुपविट्ठा। तुट्ठा पभणइ पुत्तय!, तत्तो पत्तोसि कहमेत्थ ॥ ५३ ॥ भणियमणेण [2]भयगो, पच्चक्खो मग्गिओ मए माए। त देसु जेण थेरत्तणे वि तारुन्नसुन्नमइ ॥ ५४ ॥ गुडिय दाउ दव्व च, तेण-मिहमाणिऊण सुफोह। छोडेसु पट्टए ताव, जेण जोएमि असिघाए ॥ ५५ ॥ सरोहणीए रोहेमि, तक्खणा तीए वुत्तमलमत्थु। छुट्टएसु जा पट्टएसु पीडा तयं न सहे ॥ ५६ ॥ जइ पुण पट्टेसु तह ठिएसु, तुह हवइ कावि [3]सुचिकिन्छा। ता कुणसु

१ पाणति न पावियवसणवेससा किं भणामि मह ॥ B C D। २ मणगो B D। ३ सुनिगि०।

जम्म ! पत्तो कुमुइओ न सोहेमि ॥ ५७ ॥ भणइ १स कयमणोमयमरीद गुडियाए २रयणविज्जुण । सह जाइ जराए महा
पसरकेसो वि तरुणीए ॥ ५८ ॥ मणिवमिमीए तव तं करेसु जइ तरुणि मणसधम्मि । मइ पेच्छ करेहा जोइआइ मायर
जणेण ॥ ५९ ॥ गुडियाए तीए विज्जो तओ कओ कुडिलोमियकमि । कुमरेण वररूवेण, मूढा सा रायसी जाया
॥ ६० ॥ अविपवहि सम्मं कुमरि कहिऊण तीए गुडीए । पइक्को १सहुमं, स आगओ रायमग्गंमि ॥ ६१ ॥ मिलिऊण
तओ ग(वग)—जय सव्वाइ तरुवि पवाइ । संमागयंपि आ वहिए केवइ मुकोज ॥ ६२ ॥ बाबा पत्तिय विहिय सहुँवि
नियकुमारस्स चलिओ । कमसुमेइ नयरो किंचिवदिवसो मुक्को सो ॥ ६३ ॥ केरिसरूवो केवियवरिसो य कस्स कइय
ममाहिय । पहु ! तुमइ रज्जसमो ममेक्कसमो य समग्गाई ॥ ६४ ॥ कइसम्मुसरिसरूवो तुम्हाणं केणियल वि कणिट्ठो ।
सो एम्व विम्हओ महागुणो सो महागुणो ॥ ६५ ॥ मिवाई भणेइ सव्वमेव सिस्साविसं अमुत्तिरियं तमाई । जमकुमरयवि-
रूवो ॥ ६६ ॥ रिद्धो स कोमलरूवेवि, कोमलरूवेवि सम्मविंतो । कइपुव्वकुसुमगए, रायहीए समा
॥ ६७ ॥ गेहुं जाये पुण्णइ, पिण्डीसो ते तओ कयपण्णसो । अविन्नम महापुरुसस सामाए गयसिणेहस्स ॥ ६८ ॥ पुर
पइसे य सोहइ, रायसी कमइकेमिस्सोकस । जा एहि कुंजरे एत्य अंगमयंमि अंगेण ॥ ६९ ॥ संजमिय रायसभो तं कुट्ठिणि
एसहिं महापावं । पइदिणे पइविसमाणिनं घरकोएस्स ॥ ७० ॥ पच्चासरे कंपओ सह मरलाईय कुंभरूसओ । भकमिसु
पुच्छिसओ सम्ममेव रज्जाइपुत्तं ॥ ७१ ॥ अमोमुं पुण पावस्सेवि पुरस्सिओ स विम्हओ । वाहरयाइ रयसया चोरी सा रायसी
एत्थ ॥ ७२ ॥ वररायसाम्माई, हरिअमु तीए सह कमिसुस । मुयिव मुद्ध सा अंगनिवाहो जो वि तं न कओ ॥ ७३ ॥
सा संपयपि मोससस अप्पणा तारिसस्स सम्मस्स । जइ कोइ देइ सदं ता पावइ पुण्णरूवं सा ॥ ७४ ॥ तह विविह विजवं
वीयकोडिमयाए करेइ धरसेणो । साहुविसस्समया आया लोगमग्ग तओ ॥ ७५ ॥ तत्थय आलोइयं भवणा— असिकोमो य

१ य भवण ०. D । २ तत्त । ३ सो इ ।

कर्त्तव्यो, लोभ नैव परित्यजेत् । अतिलोभामिभूता सा, कुट्टन्यजनि रासभी ॥ ७६ ॥ ” वररयणपाउयाहि, रयणालकारचीणवस-
णेहिं । भूसियसरीरमप्पइ, मागहिय सा कुमारस्स ॥ ७७ ॥ सो जाओ जुवराओ, सह मागहियाए विसयसोक्खाइ । उवसुजइ
अन्नाहिं वि, निवइ सुयाहिं नवोढाहिं ॥७८॥ इय पियकहिउ कहाणउ लोहग्गलतणउ, तुहवि पुरउ अइधिट्ठिमअवलविवि घणउ ।
ता जगि लोभु सुकिज्जइ जुज्जइ जो अवसु, लोहग्गल जिंव लोभु करतह जाइ जसु ॥ ७९ ॥

अथ जम्बूस्वाम्यब्रवीत्—नागसेने ! कनकश्री , प्रिये कमलवत्यपि । आकर्ण्यता जयश्रीश्च, सर्वसारमिद ब्रुवे ॥६८०॥ दोपाणा च
गुणाना च, निधनानि यथाक्रमम् । यूय च गुरवश्चोक्ता, धर्म्मशास्त्रेपु तद्यथा ॥८१॥ वक्रकत्व नृशसत्व, चञ्चलत्व कुशीलता । इति
नैसर्गिका दोषा , यासा तासु रमेत कः ॥८२॥ प्राप्तु पारमपारस्य, पारावारस्य पार्यते । स्त्रीणा प्रकृतिवक्राणा, दुश्चरित्रस्य नो पुनः
॥८३॥ नितम्बिन्य· पतिं पुत्र, पितर भ्रातर क्षणात् । आरोपयन्त्यकार्येऽपि, दुर्वृत्ता प्राणसशये ॥८४॥ भवस्य बीज नरकद्वारमार्गस्य
दीपिका । शुचा कन्द कलेर्मूल, दुःखाना खानिरङ्गना ॥ ८५ ॥ स्त्रीसभोगेन यः कामज्वर प्रतिचिकीर्पति । स हुताश घृताहुत्या,
विध्यापयितुमिच्छति ॥ ८६ ॥ वर ज्वलदयस्तम्भपरिरम्भो विधीयते । न पुनर्नरकद्वार–रामाजघनसेवनम् ॥ ८७ ॥ सतामपि हि
वामभ्रूर्ददाना हृदये पदम् । अभिरामगुणग्राम, निर्वासयति निश्चितम् ॥ ८८ ॥ यूय तदैव दोपाढ्या धर्मशास्त्रेपु दर्शिता. । धर्मा-
चार्या पुन प्रौढगुणग्रामभृतो यथा ॥८९॥ गुरुर्गृहीतशास्त्रार्थ , परा निस्सगता गत । मार्त्तण्डमण्डलसमो, भव्याम्भोजविकाशने ॥६९०॥

पवित्रश्चारित्राप्रवचनरह पारपटुधी , सुधीर शान्तात्मा मधुरिमधुराधारवचन ।
कृपावान्निर्लोभो भवजलधिपोतप्रतिकृतिस्तनूभाजामीदृक् भवति गुरुराप्तः शुभशतैः ॥ ९१ ॥

गुरुर्मोहान्धाना भवति हि नृणा चक्षुरमल, गुरुर्दु खार्त्तानामपहरति दु खान्यवहितः ।
सुखाना सन्धाता गुरुरमरमोक्षक्षितिभुवा, शुभ तत्कि लोके यदिह गुणिना स्यान्न गुरुत ॥९२॥

ततो दोषवतीस्पष्टता मध्ये गुरुगुरून् गुरून्। स्वस्थाऽभवत् सता मित्र–अमृत्सुखी दि प्रयाकर ॥ ६३ ॥

मेदिनीपतिमस्मे थियो दिव्यकरत्नपुर। अमृतमयकरो पूर्णतरो मूर्तिकरोदारः ॥ ६४ ॥ गायत्रीमात्रकेऽप्यर्थं सं मुमुक्षोः भगवन। आत्मार्पितस्त् पिता स्नेहस्नेहमत्वापरामिम् ॥ ६५ ॥ मुनिशोभायातयः पुरुषव विशेषिता। निर्विकल्पाधिको मूर्ते, सत्कर्म्मा सामुसंगमः ॥ ६६ ॥ तत्रे परमुखं प्राप्ते निःश्रीकृतममृतम्। प्रसमा ग्रामपुरेऽपि नगरानिरामकृता ॥ ६७ ॥ एष्वो पिता पुत्रा सर्वे, संगमे समसुत्तमे। तत्रजीवं परीक्षित्य करिष्ये वरमे च तम् ॥ ६८ ॥ अवस्थानुरिति स्वस्ता माता श्री-विपुरे पुरम्। तुल्याभ्यामिवाने च मीनं तमनुस्यामिता ॥ ६९ ॥ शोभमानेनदी तस्य वेदी गोमटिकामिव। ततो मया सिद्धं च मातृसुतेन सूचिता ॥ ७० ॥ एकाकीस्य स्वरतीविधायकोत्कटाक्षयम्। प्राप्तिर्विपुलाशोधीनिपुरकोतुकम् ॥ १ ॥ अनुरेखानिस्सकेन स्मापति श्रीर्विशेषाणम्। जनमध्यस्य शिलोऽप्यत्र मत्वा भवति स्म सा ॥ २ ॥ तत्र मध्ये मुनीन्द्रस्मासीने स्मापुराणरे। सत्वं समानदीवेषु, स्थापिति मस्तुत्य स्था ॥ ३ ॥ कर्मनिरामस्तवतपोनापि हितसज्जय। स्नेहोऽपि पठिता स्वह धर्म्मकर्म्मासुर्व तदा ॥ ४ ॥

"एव मते संगमनुजवस्मि, गालस्य मोमिसुरगाल्तरोगः। मूर्ताय मूर्तिः सुविधा सुधीमि, समानधीमध्यसमेपु सवयम् ॥५॥"

इत्यसम्यं महीमण्डले च विपत्तिवम्। ततो स्मरणमरुत नय(र)म्मोक्षीमनोहरम् ॥ ६ ॥ स्तुपमितानिश्चितो विभवेन विकल्पता। [1]द्विजो घसमिव स्वस्थाऽमुर्धीविशेषेण वासिता ॥ ७ ॥ सिद्ध श्रीगिरसेनार्द, भवता मो प्रभाकर !। तस्मात्स्वसातरा नेन गृहस्य मयमयवकम् ॥ ८ ॥ प्रमोदौनिस्समारोप्य, श्रीमतो मूषक स्मा। परस्मै मयुर्व च पीयूषस्य स्तुतस्य ॥ ९ ॥ [3]मस्त्र यदि दैवस्व, वेतम्येकमम्म मनोः। इत्यस्य प्रसादेन, दैविसुधे प्रभाकर ॥ ७१ ॥ पृथ्वीसपि कोटमुत्ततवि तुषालवा

[1] विनोऽमृत् B। [2] द्विजेव सर्वेण स्वस्थमुर्धिविशेष B. C. D। [3] मन्यसि C D।

श्रियः। प्रभाकरप्रभावेण, सश्वता पद्मवद्गत ॥ ११ ॥ महीमहेन्द्रानुमतो, परिवारपुरस्कृतो। प्रसादमण्डलमलचक्राते तावुभावपि
॥ १२ ॥ अथान्यदा मदास्वादविह्वलः सस्पृशन् प्रियाम्। वध्य कुद्धेन मातगष्ठक्कुरेण निरोपित ॥१३॥ वारुणीरसनिर्वाणचैतन्यो
नैप दोपवान्। त्वय्याशा निःप्रकाशैव, किं चैव मादृशामपि ॥ १४ ॥ क्षमस्व मुञ्च मन्मित्रमित्युदाहृत्य ठक्कुरम्। निपादं सविपा-
दस्त, मोचयामास स द्विज ॥ १५ ॥ इतश्च—ठक्कुरस्य शिखी प्रेयानस्ति तन्मासमत्ति यः। स श्रियः स्यात्पद भिक्षुरित्यूचे
कोऽपि चेटिकाम् ॥ १६ ॥ प्रभाकर प्रत्यपादि, तन्मासस्पृहया तया। दुर्निमहल्लीमहतस्तेनापि प्रत्यपद्यत ॥ १७ ॥ दत्तमन्यामिष
तस्यै, रक्षित्वा त शिखाचलम्। नीतान्येतान्यनेनेत्थमुपकारसुपासिकाम् ॥ १८ ॥ भोजनावसरे सूनुनिर्विशेपं शिखण्डिनम्। अप-
श्यन् ठक्कुरस्तत्र, सर्वत्रापि व्यशोधयत् ॥ १९ ॥ अदृष्टे चात्र दीनारसहस्रार्प्पणपूर्नकम्। एवमुद्घोपयामास, पटहं ठक्कुर पुरे
॥ ७२० ॥ दीनाराभयलोभेन, भो कलापी स कथ्यताम्। पश्चाज्जाते पुनर्देहदण्डश्चण्डो भविष्यति ॥ २१ ॥ श्रुत्वेति चिन्तित
चेट्या, भावी भर्त्ता ममाऽपर। उपस्थित धन तावत्, करोमि स्वकरे द्रुतम् ॥ २२ ॥ नीचैर्वृत्तिमता नित्यं, कुरङ्गविपर्यैपिणाम्।
बुद्धिं हृतकलुव्धाना, धिक्पापप्रतिवेशिनीम् ॥ २३ ॥ स्पृष्ट्वाऽथ पटहं चेटी, गत्वा दुष्टाशयान्तिकम्। प्रकटीकृतभिक्षुक्ति, पाप्मि-
नीति व्यजिज्ञपत् ॥ २४ ॥ मया निवारितेनापि, वार वार द्विजन्मना। धनायता पर तेन, स्वामिन् वर्ही निवर्हित ॥ २५ ॥
अकृतज्ञेन तेनैव, तद्गिरा ज्वलितक्रुधा। वध्यस्तन्मित्रमातगस्योपनिन्ये प्रभाकर॰ ॥ २६ ॥ अगृह्यमाणा सत्कृत्यैर्भपन्त सस्तुतेष्वपि।
त्यादन्तो निजवर्ग्यांश्च, ते खला मण्डलाधिकाः ॥ २७ ॥ तेनोक्तं भद्र[1] मा मुञ्च, दूर देशान्तर श्रये। पुराकृतोपकारस्य, त्वमा-
नृण्यसुपेहि मे ॥ २८ ॥ अथाभ्यधत्त चण्डाल, पापभृन्मण्डलाग्रणी.। युक्तमुक्त त्वया वन्यो[1] ऽपराद्ध परम पर(द)म् ॥२९॥ द्विधा
दुष्टाशय स्वामी, मुञ्चामि त्वा कथं यतः। रजकस्येत्र मे मृत्यु, स्वरमृत्यो भवेद् ध्रुवम् ॥ ७३० ॥ तत स चिन्तयामास, सानु-
ताप॰ प्रभाकर ।। दृष्ट माहात्म्यमेतेपा, हा नीचप्रकृतिं जनम् ॥ ३१ ॥ “ नीचः कृतोपकारोऽपि, विमानयति निश्चितम्। जातवेदा

१ व्यगाययत् B।

तदस्त्वेव वर्णितोऽपि हि सर्पिता ॥ ३२ ॥" तथाहि—मर्मैर्दरोवसंभस्पधारणीविपुण्य धन्यात्। तमारपक्षनुगमम्, समग्रम्भ कृतु-
पीकृता ॥ ३३ ॥ किंपाके सत्पुरुषाके, पटमम्भसमा। प्रसीदनमुपारोप्य, च नीचप्रहतो वने ॥ ३४ ॥ मीचाभिवस्य
सुचिरं, मीरं संत्यज्य वाक्ये। कस्मस्य गुणोदग्रपुण्डरीकसमागमः ॥ ३५ ॥ अवदातपिण्डोर्मीपसोमदुत्तलता। वरिवस्यां
विभास्यामि सोमर्द महत्समरम् ॥ ३६ ॥ इति प्यात्वा सत्याऽस्ति तमुपस्थामि मपस्य माम्। मयूरमेरुर्पविप्यामीसूते पाणमर्प
पुना ॥ ३७ ॥ तेन किंचित् प्रपार्येन, तद्वा प्रविपय तत्। समाच शिविना निन्ये सनाथस्य पुरस्थितिम् ॥ ३८ ॥ ऊर्वे च
कल्पोपाम्नेरिव तस्मै समुत्सुकम्। तत्संमुखार्थं मुहुर्मे सस्नेहमम्पमसंगिनः ॥ ३९ ॥ गुहाण वर्जितं स्वामिकस्तु त्वस्ति विराप
ते। समन्वय सद्विलपय मनस्तरिकराय च ॥ ४० ॥ वाचाच्य पाविपुत्र च चेदितेकमतत्पवाह्। अनाथारः पराधीनो
विमलेन ममाकरः ॥४१॥ नैवामिम्संमस्त्वेतवितिथि नैव विमर्षितम्। पुरो नाहं मया मक्तिविमर्ष्टिमें विमाविता ॥४२॥ एतद्वा सर्व-
कर्मनिमग्नो ते सुखवता। मुञ्चे पुरुषकेनैव तस्थामासन्नम् यथास्थितम् ॥ ४३ ॥ तेनैव धम्यमानोऽपि पार्यमानोऽपि वाम्बिते।
यत्ते सविक्रममाणोऽपि निर्पथो भारत् यदि ॥ ४४ ॥ समस्तर्पकम्पमानाम मम्ये रत्नपुरं पुरम्। बाम्पकलतापुरी घृतेः, लघु
विस्पक्मोपमम् ॥ ४५ ॥ पद्मसमायासाप्त-विक्रमधमविपार्थितः। तत्राभवत्ति भूपाल पुरं रत्नरथाभिपः ॥ ४६ ॥ तस्यास्ति
सुता कनकश्री तत्त्वपान्थवी। वसुन्धरतो कामो मन्वते बहुनंगताम् ॥ ४७ ॥ गुणा समाविता येन गुणैर्यथ समाविता।
मिता कीर्ति परा कस्तु मनोलंक्य वरायिता ॥ ४८ ॥ समात्मानमुवि स्वस्तु प्रत्येमाव निवेशिता। चिरं प्रविश्य सोऽप्यारी-
त्विष्कीर्णमनुपूर्वकम् ॥ ४९ ॥ नाहं हितमपत्ते च तत्समुत्गुणोपकारि। तद्दर्शमि तदस्मानं, कर्तुं तत्परिपर्धितम् ॥ ५० ॥
पुरोहितयोऽनेम, पुरः त्वत्समे प्रयोजनम्। तेनैमममसालक्ष्या रात्रसंमानसम्पदा ॥ ५१ ॥ त्वयाहार विभिस्तैर्वं, कुमारसमुत्पु-
रुषी। मनपविव मिस्कर्त, तस्य मोपमुखमानुषा ॥ ५२ ॥ सुनिश्चर्त्वं मया मित्रमित्रोऽत्र्यये प्रभावर!। क्वापि विनाग्रपरकार्ये
त्वस्तं मा स्म वृथा कृथाः ॥ ५३ ॥ तदा समुदितस्तितंस्तत्र पदपविरतरम्। परिभ्रमेति पुरं, मित्रं पाते मनोपमम् ॥५४॥

ख्याता रतिविलासेति, सद्गुणैकविलासभू ॥ ५५ ॥ इत्थमेभिस्त्रिभि सार्द्धं, वर्धिष्णु
कलत्र सूत्रिता तेन, पिण्डवासविलासिनी । हेडावित्तकचोडेन, विदेशागन्तुनाऽन्यदा । तुरगयुग्मं सर्वाङ्ग-रम्यं
प्रणयोज्वलः । प्रभाकर स्मरन्नस्ति, मन्त्रवत्पैतृक वच ॥ ५६ ॥ प्रारेभाते स सरम्भं, वाह्वाहनकौतुकम् ॥ ५८ ॥
राज्ञेऽवतीर्यत ॥ ५७ ॥ कुमारविप्रावारुह्य, वाह्यालीभूमिमण्डले । कुमारे च द्विजातौ च,
व(वल्गा)लातुरङ्गयुग्मेन, जग्मे वाह्यतोस्तयो । कर्षतोरपि सोत्कर्षमरण्यानी मरुस्थली ॥ ५९ ॥ क्लान्तस्तृषा भृशम् । वाजि-
श्लथवल्गाग्रहे श्रमात् । तस्थतुस्तत्क्षणादश्वौ, वैपरीत्येन शिक्षितौ ॥ ७६० ॥ कुमार सुकुमारत्वात्तत त्वरस्वेति, त्यक्त्वाऽश्व
पर्यात्समुत्तीर्य, निपसाद स्थलीभुवि ॥ ६१ ॥ लोला. प्राणा प्रयाणाय, पानीयमुपनीयताम् । त्व वयस्य । स्वीचक्रे नीर-
सोऽवदद् द्विज ॥ ६२ ॥ अथ धीरो भवेत्युक्त्वा, दिवाकरतनूद्भव । अर्णस्तूर्णं महारण्ये, तत्रान्वेष्टु प्रचक्रमे ॥६३॥ चेतसा ।
मप्राप्य, तृष्णाहारि गुरोस्तरोः । ज्ञानदर्शनचारित्रतुल्यमामलकत्रयम् ॥ ६४ ॥ विप्र क्षिप्र समागत्य, चिन्ता चान्तेन श्ल्योतद्राप्य-
मूर्च्छाविकाराकुलित, कुमार समुदैक्षत ॥ ६५ ॥ पय स्वयमनासाद्य, वैलक्ष्यक्षु(क्ष)तमानस । चक्षुपी वहु मन्वानः, उन्मीलिताऽ-
जलोर्मिणी ॥ ६६ ॥ मूर्च्छान्धकारसहारकारण मधुरारुणम् । आस्ये तस्यैप वालार्क-मुग्धमामलक न्यधात् ॥ ६७ ॥ धूलिधूसरित नभ ।
मृतकला, स्फारिते चक्षुपी मनाक् । विप्रः पुन कुमाराय, ददावामलकद्वयम् ॥ ६८ ॥ लब्धसज्ञ. कुमारोऽथ, सादर क्षिपति
वीक्षते तत्क्षणत्रस्यन्मूर्च्छयेवोन्नताननः ॥ ६९ ॥ अन्तरिक्षदरीकुक्षौ, रज सारमिवात्मन । कस्मादकस्माद्(मी)हीतेव, ततः कृताह्निका-
क्षितिः ॥ ७७० ॥ कुमारविप्रावाऽऽसाते, यावदुन्मानसावितिं । तावद्भोज्यपयःपूर्णं, तूर्णं तत्सैन्यमागमत् ॥७१॥ त राजाऽङ्गजम-
चार, कुमार स प्रभाकरः । क्रमेण स्वामलचक्रे, परिवारान्वित पुरीम् ॥ ७२ ॥ प्राज्ये राज्ये निज कृत्वा, श्रेष्ठ-
न्यदा । तापसो वनवासेऽभूद्, भूपो रत्नरथाभिधः ॥ ७३ ॥ सौवस्तिकपदे दध्रे, नव्यभूप. प्रभाकरम् । मनोरथमपि श्रीमान्, ॥७५॥
श्रेष्ठिपदे न्यधात् ॥ ७४ ॥ ते राज्य बिभ्रते प्राज्य, न्यायन्यासनिरङ्कुशा । पवित्रमैत्र्यपात्राणां, तेपा यान्ति च वासरा स्फु-
" यथा माधुर्यमिक्षूणां, शङ्खाना श्वेतिमा यथा । सज्जनाना तथा मैत्रीहेवाको जीवितावधिः ॥ ७६ ॥ तस्या रतिविलासायाः,

रागमोंद्युमानया । एतादृक्षा समुत्पेदे, सद्युचितव दोहदः ॥ ७७ ॥ विजीर्द भीष्मो रणकुमारस्य गृह्णुपे । वेपस्वल्कडममामि क्या बीबामि नाम्नय ॥ ७८ ॥ बन्धमेयममार्वर्तं पा(पा)र्थमामिश्वान्तया । दौर्बल्यं निष्कल्पं च पोषितो मूकमात्रम ॥ ७९ ॥ इवरि देवोऽनुस्मिनकानने वस्तुमप्यसौ । स्थिरमानमना मत्तद, सपत्नी सुरापमभूत् ॥ ७८ ॥ एतायेवारसी दृष्ट्वा, सत्यमा स प्रमातरः । महामतेण पमण समस्मारर्थस्य मात्म्म् ॥८१॥ मन्त्रायेण पालत्वाम्वा साऽऽयमन्दे स्वपोदरम् । सोऽपि माह प्रिये ! दुष्पदुर्मिर्थं मा वृथा कृथाः ॥ ८२ ॥ पूरयिष्यामि देव्मास्वमिमं दोहदमातरम् । मिश्वमाशमिदं सर्वमार्थे [1] मम निर्भिर्वका ॥ ८३ ॥ एवैकान्ते कुमारं तं दत्तो स परमादरम् । स्वमध्यमांसमेवस्मै, सामर्थमारसंहत्यम् ॥ ८४ ॥ सम्पवित्रीविमस्वच्ययापावेनापि सम्यक्त्वम् । तं तमीं विमययमास पृथु संपत्समतां ॥ ८५ ॥ पक्के सापं कुमारस्य मूर्च्छया मोचनमगे । सर्वत्र वीक्षिता: स्त्रिमं मेदितो न पुनः क्वचित् ॥ ८६ ॥ न पुस्तके पति योर्वितः स्म मार्गेन व्याहितः । सम्मीमूलस्य सम्परस्मात्स्वात् मे तनूरु-हम् ॥ ८७ ॥ मासमेवक विसार्थ, पुत्रं रविनिसमयवत् । विराप चिन्तयमास मोक्षमक्षकमिवा पत्तिः ॥ ८८ ॥ हा एवस्मि हत विप्यो विमीषकमयवत्स्वम् । ममार्थीन [1] निरैवास्तु, वीर्मित्तेस्तु वीनवातु ॥ ८९ ॥ यथा मे वलमो गर्भे, तामेतस्य मूपवेश्यका । मम्ममोमयपीतुपार्थी चाय वित्रेषः ॥ ९० ॥ राक्षिनीव कुमारं तं भक्षयिता सकम्पनम् । किं मेवास्मि मरिष्यामि, भावी गर्भो अस्य सम्पदः ॥ ९१ ॥ वधीर्मं च नूपो विमानु, सम्पावन सर्वेवन । अन्यायिर्वं तथा मकुं वये नाम विनिवारयेत् ॥ ९२ ॥ बलमं माश्वेज्याणि प्रियस्यान्यमनोरथं । मन्त्रयित्वा सूत्रमामि किञ्चिदौषधियिर्व शिवे ॥ ९३ ॥ तयोऽप्सौ सत्वरं गत्वा मनोरथ-विवेचने । तं पवारुचद्यागमेवमस्वे वसुरोन्मतम् ॥ ९४ ॥ स पूर्वे स्म हता भद्रे ! तत्र पक्वे विमीदराम् । मात्मानः समाकरस्थितो, सर्वं गुरुतयीकृत्वा ॥ ९५ ॥ तथापि वैर्यमायव, सौरं गच्छ गृहाभिवात् । अस्मि प्रतिकरिष्यामि सर्वमेवमम तथा ॥ ९६ ॥ गत्वा पविविपयत्तथ समनिर्गमचिन्तयत् । वामरमरिष्यमारत्मनमात्मयत मूपको पुरः ॥९७॥ पवार्थ मत्यिये यायेत, तदा स्वतत्त्व-

1 मिरे च ० D. मिरि ग ॥ ।

पञ्चता । एतच्चातिविरूपं स्यादमन्तोर्मृत्युरस्ति यत ॥९८॥ प्यात्वैप शावकयापि, यात्यय नोपपार्थिवम् । तावद्वारवाभूपं, सा प्रविश्य
ऽयजिक्षपत् ॥९९॥ अपकार कुमारस्य, कृत केन कथ छलात् । इति चिन्ताचितान्त, चित्त मा त्व प्रभो ! कृथाः ॥८००॥ पापी-
यस्या मयाऽवश्यं, कुमारवधपातकम् । चक्रे केनापि कामेन, तत्प्राणाभिगृह्णाण मे ॥ १ ॥ करा कुरु कथ नेति, गायनलपति भूपति ।
तावन्मनोरथोऽप्येत्य, विज्ञप्तिं भूभृतेऽकरोत् ॥ २ ॥ देव मन्मन्दिरे क्रीडन्, कुमार सदनोपरि । प्रेर्य पुत्रेण मे भूमौ, पाति-
तश्च मृतश्च सः ॥ ३ ॥ भीत्या तदैव नाख्यायि, त्वद्रु याद्रच्मि साम्प्रतम् । प्राणप्रहाणदण्ड मे, मा शङ्क्षिष्ठा कुरुष्व तत् ॥४॥
प्राप्तः प्रभाकरोऽप्याशु, स्वागः सगृणतोस्तयो । नृप विज्ञपयामास, मारितस्तो मया सुत ॥ ५ ॥ अभूद्गर्भानुभावेन, कुमारपिशि-
ताशने । प्रियाया दोहद सोऽपि, मया पापेन पूरित ॥ ६ ॥ अनेन कर्मणा किं स्या, यत्त्वत्सो द्विजोऽगमा । निघ्ना मे भूरिवं
विप्रा, रे किष्ठा मा क्षणु क्षणात् (न्) ॥ ७ ॥ श्रेष्ठी श्रेष्ठ निक्षेप. स्यात्स्वजालं जनन्य ग । पातमन्वरोपयन्सत्वं, भोगकृत्ये मया
कृतम् ॥ ८ ॥ पश्यन्नस्ति नृपो यावत् त्रय निर्णीयवाग्मना । तावत्, प्रभाकरेणोक्तमल सन्दिरोल्लग ॥ ९ ॥ भोगकृत्यस्य मे कृत्या,
प्रायश्चित्त न शुद्धिकृत । राजन् यद्यप्यदो भाति(चि), तथाप्यन्यादिमन्द्रिये ॥ ८१० ॥ आगत्यानक्मेणाय, पुत्र स्वस्थो मया कृत ।
अत्रार्थे पार्थिवस्तेन, शपथे सुस्थिरीकृत ॥ ११ ॥ अथोवाच महीचन्द्रो, यद्यप्येव तथापि ते । नापराध सन्दे । यस्मान्मया भ्रान्त्य-
मिदं ध्रुवम् ॥ १२ ॥ "स्वामिमित्रकलत्राणां, बुद्धिरन्धुगतात्मनाम् । आपन्निकरपाषाणे, नरो जानाति सारताम् ॥१३॥" राजानं
स एवैक, काममिन्दुर्निषेवताम् । कलङ्ककल्पसम्पोणमार्पित न जहाति ग. ॥ १३ ॥ पुनर्भूप पाह—गतशमलक कृतं, त्वया मे
निर्जने वने । मृतस्येव कृपा मित्र !, तन्मे न खलु विस्मृतम् ॥ १५ ॥ त्वा सदा मेऽमृताम्भूर्णं, कृताश्रितन्मनेत्याह । तदा
भुञ्जीत राज्य कस्तत्त्वेद ममाखिलम् ॥ १६ ॥ प्रोक्त प्रभाकरेणाथ, यथेच्छ देव ! तत्तत । सदा मत्सूने भोक्तु, प्रसार क्रियतामिति
॥ १७ ॥ पार्थिवेन तथेत्युक्ते, प्रातस्तेन पुरोधसा । आनायि भवने भूप, सपौर सपरिच्छद ॥ १८ ॥ भोजितो भोगमन्धे-
धामे, सुस्वादुस्वादसुन्दरै । रत्नसिंहासनासीन, सरत्नभन्दनादिभि ॥ १९ ॥ साराम्बरस्वाशे, परिकृत्य दमादरः । साभि-

एकेन्दौ रूपं च कुमारसमर्पितम् ॥८२ ॥ अथ कदा रसैव सुपरमोत्संगसंगतम् । मलिनस्मर्गौरवितमपि च [illegible] ॥२३॥
[illegible], [illegible] विविधोऽभवत् । पौरीस्मानि किं पूर्वं हर्षस्थानेऽपि ते प्रभो¹ ॥ २२ ॥ अथ प्रोमध्य भूपाल,
[illegible] कुर्वेति माम् । [illegible] वसिम [illegible] याचितुम् ॥ २३ ॥ मूर्धं पुत्रं न [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] प्रमन्नि[illegible] ॥ २४ ॥ कुमारभूपस्तो मीतं [illegible] सस्तुप । पीयूषस्तयपाव [illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥ अपेक्षन्ते न च लोके न पार्थे न [illegible] । सा [illegible] सत्य [illegible] [illegible] ॥ २६ ॥"
हे मधुमे मिथ्य च सर्वेषां [illegible] । एवं [illegible], साधु साधु प्रभाकर¹ ॥ २७ ॥ [illegible] विमेवं चेस्तुते
श्रौ भूपपतिस्मि । [illegible] समस्तं [illegible] ॥ २८ ॥ यथा [illegible] माह, [illegible] । यथा [illegible]
[illegible] ॥ २९ ॥ यदे दैवे परत्वेन [illegible] मनसिस्माम् । [illegible] सा सांप्रमिसर्वे सुमिरपस्वनाम्
॥ ८३ ॥ एवं [illegible] मालिना, सुर्वोपम गुणम [illegible] । [illegible] मधुरस्य यावती
[illegible] विपुल । [illegible], [illegible] सप्तगुणम् ॥ ३१ ॥ हे [illegible] [illegible] मोक्षस्व प्रभवापि मोह ।
[illegible] यदि [illegible] किं [illegible] [illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible] । सौहित्यं सत्यमपापि किं न
[illegible] ॥ ३३ ॥ तथा—[illegible], पूरितो [illegible] । [illegible] भव ॥३४॥ [illegible]
च [illegible] सुखमिमय । [illegible] सुमन ॥ ३५ ॥ यदि च—सा [illegible] प्रभवे प्रपञ्च [illegible]
वसिम् [illegible] भविष्यन्तु ते [illegible] [illegible] । के सर्वे [illegible] माध्वेदपि माध्वे भूपे
अस्मन [illegible] ॥ ३६ ॥ इति [illegible] त्वमिव सुधे च [illegible] वात्सल्यम् । यदि सुपसमवि-
[illegible] स्व मौ [illegible] मम सहेष्वताम् ॥ ३७ ॥ तथो—[illegible]-[illegible] [illegible] । [illegible] सुधे

¹ [illegible] ब ।

मुत्त, वयपि सह पव्वइस्सामो ॥ ३८ ॥ उवसताओ कताओ, ताउ जंपति अपिय जमिह । विरहदुहाओ पेम्माउ, अणुचिय अम्ह त खमह ॥३९॥ पभवो अणुन्नवित्ता, पत्तो पल्लीए इय भणेऊण । लहु सवहिउ अहमेमि, लेमि सह अज्ज पव्वज्ज ॥८४०॥ सुमुहुत्ते सपत्ते, उदग्गसव्वगचगसिंगारो । सिवियारूढो अम्मा-पिऊहिं सह पट्ठिओ जंबू ॥ ४१ ॥ कताउ अट्ठ ताउ, नियनिय-पेईहराउ नीहरिउ । परमाए रिद्धोए, सिवियारूढाउ पत्ताउ ॥ ४२ ॥ पभवो पभूयपहाण-पुरिसपरिवारपरिवुडो पत्तो । नरनाहा-णुन्नाओ, सिवियाए सहेव सचलिओ ॥ ४३ ॥ जवूसामी सव्वाहिं, ताहिं सव्वाहिं अणुगमिज्जतो । सयमागंतूणमणाढिग्गणमाढ-त्तसव्विड्ढी ॥ ४४ ॥ धरियधवलायपत्तो, ढलतसियचारुचामरुप्पीलो । नमिरनिरतरनम्मिर-नारीगिज्जतजसपसरो ॥ ४५ ॥ सलहि-ज्जतो मागहजणेण खयरेहिं कयकुसुमवुट्ठी । तूररवाङनरमरियनहयलो काणणमि गओ ॥ ४६ ॥ पचमगणहारिसुहम्मसामिणा दिन्नपुन्नपव्वज्जो । जाओ सपरीवारो, महाजई उज्जयविहारो ॥ ४७ ॥ अहिगयसमत्थसुत्तत्थवित्थरो वित्थरतवरकित्ती । छत्तोसगु-णागार, गुरुणा ठविओ नियपयमि ॥ ४८ ॥ पसरियलोयालोयाऽऽगासपयासासमाणनाणधरो । निव्वाणगए सोहम्मसामिए सघधुर-धवलो ॥ ४९ ॥ पभव नियपट्टे ठाविऊणमुक्कठिओ व्व मुत्तीए । (ग्र ४०००) पत्तो ओसप्पिणीचरमकेवली जवूसामी गुरू ॥८५०॥ चरमकेवलिता वाऽस्या गाथातोऽवसेया ॥ मण परमोहि-पूलाए, आहारगखवगउवसमे कप्पे । सजमतिय केवलि-सिज्झणा य जबुमि वोच्छिन्ना ॥ ५१ ॥ सते वि सतविसए अवहाय सव्वे, जाय महाजइमह पणमामि जंबु । दट्ठूण त विरइरज्जमुवागओ जो, लुटंतओ वि तमहं पभवपि वदे ॥ ८५२ ॥

## ॥ इइ सिरिजंबूसामिचरियम् ॥

ननु यथा सुष्टुस्य प्रतिबोधोऽपि भवता कथमतिपुत्र इत्याशङ्कयम्? नाशङ्कयम् यतोऽल्पकालमुक्तधर्मोऽपि चिलातीपुत्रवत् प्रतिबुद्धा दृश्यन्ते यथा—

दीसंति परमघोरावि पवरधम्मप्पभावपडिबुद्धा । जह सो चिलाइपुत्तो पडिबुद्धो सुंसुमाणाए ॥ ३८ ॥

व्याख्या सुगमा, भावार्थस्तु कथा—पढुंगविसाएण साहेम समंतओ वि परियरियं । आसि सिरि खिइपइट्ठियनयरे मय-रंकियज्झओ ॥ १ ॥ रोसायरो ससंको सवक्खओ सक्खओ ससी जत्थ । 'पुरुसुसिओ परमु'सिओ य जेत्थ [३]खिइविणिविट्ठनि-वहो ॥ २ ॥ तम्मि जियसेणु विप्पो पयडो नामेण जमदेवोत्ति । पुव्वगामज्झमज्झत्तो विक्कमागयपडिक्कमणासत्तो ॥ ३ ॥ सो तेण नाओ चिण्णउ, सीसो सो तस्सऽऽयरसमेव भवे । इय विविहगाहओ निज्जिओ स पावंमि गुरुणो ॥ ४ ॥ पव्वाविओ य ताओ गुरुणगुणगण परिणओ धम्मो । मनरं मणे मणागं, न मेल्लइ विप्पजाइमयं ॥ ५ ॥ भज्जा पुण पुव्वगय-गाढपेमाणुबंधरोसेण । कयपाडवं समीहइ, तं पमयाणपरिभावं ॥ ६ ॥ सो तीए पावाए, पमयरमाणसमाणमोहेण । दिण्णो कम्मणजोगो कालगयं मिक्खल मरणंमि ॥ ७ ॥ गोक्कयपरिणाए समणाण्णस्स साहुस्स तस्स गेहंमि । सो हम्मगुरु जाओ तेण धम्मपाइए सो मरिउं ॥ ८ ॥ साविय पुणि मेपरयं, गुरुस्स कयिमस निसवणुत्तं । पत्ताओ चवणे दिन्नी मायाए संजाया ॥ ९ ॥ पत्तिंस सो समाजो जाओ दासीए पुत्तो चिलाइपुत्तो ॥ १० ॥ विहिवि य कयेयं घे चिलाइपुत्तोवि गोम्ममसिरहं । इयरी वि तओ चवित्तु, तस्सेव मयस्स मज्झए ॥ ११ ॥ पंचण्ह सुयाणुवरिं, भमेजं सुंसुमा सुया जाया । सो य चिलाइपुत्तो बाल-ग्गाहो कओ तीसे ॥ १२ ॥ अइलोलयाणुयारपरिवि दुम्मियपीडम्मि सत्तकाहेण । निद्धाडिओ धणेण विम्मोहाओ महाविग्गहओ ॥ १३ ॥ जाओ पल्लीवइणो पुत्तो पल्लीवइमि य मयंमि । सो तेण य तस्स पए, चोरेहिं निवेसिओ तेहिं ॥ १४ ॥ एगंमि अवसरंमि

१ पुरु । २ दुसिओ D । ३ खिइविणिविट्ठो D विणिविट्ठविणिसो D ।

तेण चोराण पयमुवइट्ठं। रायगिहम्मि नयरे, सत्थाहो अत्थि धणनामो ॥ २५ ॥ तस्स य भूया नामेण, सुसमा मा य मज्झ
तुम्ह धण। ता एह तत्थ जामो, अवहरिउ न च त्तोत्ति ॥ २६ ॥ पडिवन्न चोरेहिं, रयणीए तओ गया य रायगिहे। ओसो-
यणि च दाउं, झत्ति पविट्ठा गिहे तस्स ॥ २७ ॥ तत्तो य चोरराउणा, चिलाइपुत्तेण दूमिओ सेट्ठी। भणमि न कहियं एमो,
मुसामि पुरिसेण होयव्व ॥ २८ ॥ तत्तो य रित्थजायं, गुणरयणनिहिं च सुसम घेत्तु। मग्गेण पेच्छन्तस्स वि, चिलाइपुत्तो वि-
णिस्सतो ॥ २९ ॥ पाविय समीहियत्थो, सट्ठाण पट्ठियो स दुट्ठमणो। अह उग्गयम्मि सूरे, पच्छा वि सुगहिं परिकिन्नो ॥३०॥
दढदेहवद्धकवओ, नरवइनहुसुहडपरिवुडो सिग्घ। तम्मग्गेण लग्गो, भूयानेहेण धणइन्भो ॥ ३१ ॥ भणिया य रायसुहडा, धणेण
धूय मम नियत्तेह। दव्व दिन्न तुम्हाणि य, भणिय भाविया सुहडा ॥ ३२ ॥ इन्ते य ते पलोइय, नट्ठा चोरा धण विमोत्तूण।
घेत्तण य त सुहडा, जहागय पडिगया सव्वे ॥ ३३ ॥ सुयपंथेण लग्गो, पट्ठीए धणो पलोइय चोरो। निज्जाइउमचयंतो, त
कन्न सो चिलाइसुओ ॥ ३४ ॥ मूढो सीस छेत्तु, तीए सुय पत्थिओ पलोयगो। जे ति हु निच्चलचित्ता, विमणा पन्थिया भणा-
ईया ॥ ३५ ॥ अणुरागेण कम्मणमणाए दारुण मारिओ एसो। पुन्नमि भंते निरत्थिनेत्थ न सम्मागत्थिय ॥ ३६ ॥ ता उर
जालसरिस, ते सव्वे दिव्वविलसियसरूव। चिंतति चित्तचिंताकरे चडिया य नडिया य ॥ ३७ ॥ मित्तममित्त दुक्खिया-
महुरिसय सोणिनाहमठ रोर। समवत्तो वत्तह तत्त(त्थ) गहिरो मज्झमेय मग ॥ ३८ ॥ पवड्डियगाया मायावि, होइ ताओ वि
पावियाराओ। भायावि पाणघाया य, दिव्वपडिकूलभायाओ ॥ ३९ ॥ कालकराला वि हु घरपरिमलकमलनालिया होइ। तिक्खे
अणुकूलत्ते मित्तममित्तो वि करोति ॥ ४० ॥ ता दिव्वविनडियाण, मरणावत्थाए एत्थ दुत्थाए। पत्ताणत्थाण छुहाइयाण हा
किंतु(नु) कायव्व ॥ ४१ ॥ वसुन्धेओ मा होउ, जज्जरगोऽहमिय भणतेण। जणएणुत्ता पुत्तो, भोत्तु मं नवइ वसणानिन ॥ ४२ ॥
इय सेसेहिं वि भणिय, कमेण नो मन्निय इम जाव। ता सुसुमाए देह, अरत्तदुट्ठेहिं तं भुत्त ॥ ४३ ॥ " इय उत्तमाए अहंग,
आहारो वन्निओ जिणिंदेहिं।" नित्थरिउं तं वसण, पुणरवि नुहभायणं जाता ॥ ४४ ॥ अह अडवीए मज्झे, चिलाइपुत्तेन परि-

समतोयं । मउलून सामुमेण, जसगाठियं महासत्त ॥ ३५ ॥ अंपिज्जहो महामुणि ¹ संवेवेमं मोत्तु मइ धम्मं । इह य पुत्त वि सीसं पत्ते य जसिज्ज मुणिसामि ॥ ३६ ॥ जाव सम विवेग-संवर-पयहिं पयहिं ठिहिं तेण अग्गिरामो धम्मो । जा सो तहेव गच्छइ, दा चिलिमेयमारुद्धो ॥ ३७ ॥ एसो महाणुभावो, धम्मझाणट्ठिओ मए दिट्ठो । धम्मं पुट्ठो धम्मं दा धम्मपयाण परे जाओ ॥ ३८ ॥ जलोवसमो कोहस्स विणाहो सो धम्मं तु पुत्तस्स । मह संवाद्दरं समइ मुणी सम्मो मए कोवो ॥ ३९ ॥ सीयं तु विवेगपयं, दसस्सो अत्त-नाह जाओ सो । तो स परिमाविओ स महप्पा मुणए एगा सिरे ॥ ४० ॥ जाव पएसेसु देसु, एस विसो ताव संवरो भणिओ । सो संवरपमुहो अकलसमो ठिओ भवइ ॥ ४१ ॥ परिमावेइ पुत्तरूवमेव पयावि विवि वि पयावि । नाणझाणविहिपमिहुी मुणिवसहो कंचणगिरिव्व ॥ ४२ ॥ जाव सविरोओमहसणि, कुमिवसविमजणागुंडवंसाई । मूंसमलिपयहि जइं, एत्थतो मोक्खमारुद्धो ॥ ४३ ॥ जम्मते य—अपाअसीसं सव्वं पि देह, मूइगलिपयहि विमग्गिउमारद्धे । विमि ¹स्सियं जाकवियं समत्थ, कहणि अणगारो न कंपिओ सो ॥ ४४ ॥ पएसेसु मासे विपीलियपयहिं, पदे सरीरम्मि मुणिस्स तास । किराइ देहंपि समसपायविसायायरविव यीइयावि ॥४५॥ अङ्कमासपयहिं विभएहिं धीमं सम्मं समारहिय अप्पमट्ठं । सुरलोगं सो गइ सासयं, तत्तो सुभयरियअप्पो महप्पा ॥ ४६ ॥ इह सुंसुमा—चिलातीपुत्तकहा ॥१८॥ समयितामिजहिमहासाहसिकस्स चिलातीपुत्रस्य मल्लबालस्यापि उपादितं उपसिणमाह—

पुप्फियफलिए तह पिउघरम्मि तण्हाछुहासमणुपडा । ढेढेण तहा विसोढा, विसढा जह सफलया जाया ॥१९॥

'पुप्फिते' सकलभोगसाधस्य 'फलिते' च सन्ततभव्यादिभोगसम्पन्नत्वा पितुर्गृहे-तस्य 'गृहे' सत्यपि तत्परित्यज्य तृष्णा क्षुधा च समनुपतिता—निरन्तरं ढण्ढणकुमारेण तथा अयमभरीषहविहितमकारेण 'विसढा'—निष्कम्पं 'विसोढा'—विविक्तिता । 'यथा सफलता जाता' केवलोत्पत्तेः । " ढिंढेति " ढण्ढणकुमारोऽमेवास्य स्मारकस्यात्मुखम् । कथा चेव इति ढेढणस्य । तत्कथा पुनरियम्—

सुरवइ आएसेण, वेसमणेण विणिम्मिया महई। वारवई आसि पुरी, मणिकचणचारुपासाया ॥ १ ॥ सुरसेणाणदिमहंतामरसा-यत्तजयसिरि जीसे। सरवरनिवरुव पिहु, सुरवइविजयप्पयाण व ॥ २ ॥ कयनेमिजिणुत्त, सो सरसनिरतरमहीरुहावासो। परि-सरवसुधराए, केलिगिरि जीए उज्जितो ॥ ३ ॥ तीए दसारसीहो, अहेसि भरहद्धभूसणो राया। कण्होत्ति आसि तस्स य, तणु-ब्भवो ढंढणकुमारो ॥ ४ ॥ रूवविणिज्जियमारो, कलाकलावस्स पत्तपरपारो। नवलवणिमाए सारो, विहियवरोदारसिंगारो ॥ ५ ॥ उव्वाहिऊण निव्वणउव्वण-जोव्वणगुणाओ तरुणीओ। विसयसुहमणुहवतो, ताहिं समं गमइ सो कालं ॥ ६ ॥ अह अन्नया कयाई, समिय असेसगिवग्गउम्मग्गो। देहप्पहाहिं दिसि दिसि, कुवलयपयर व विकिरतो ॥ ७ ॥ अट्ठारससहस्सेहिं, सीलंगाणं व पवरसाहूण। सहिओ सहिओ व्व सुधम्मधारिजूयारवारस्स ॥ ८ ॥ भयव अरिट्ठनेमि, गामाईसुं कमेण विहरतो। सपत्तो वारवइ, समोसढो रेवयउज्जाणे ॥ ९ ॥ अवगयजिणिंदआगमण-वइयरे सहरिसे समागतु। कण्हप्पमिइमहीवइविंदे नमिऊणमुव-विट्ठे ॥ १० ॥ जयपहुणा पारद्धा, धम्मकहा अमयसारणीसारा। सम्मत्तमूलनिम्मलमूलुत्तरगुणगणगमीरा ॥ ११ ॥

जहा—"जाव न जरकडपूयणि सव्वगिउ गसइ, जाव न रोगभुयगु उग्गु निदउ डसइ।
तावं धम्मि मणु दिज्जउ किज्जउ अप्पहिउ, अज्जु कि कल्लि पयाणउ जिओ निच्चु प्पहिउ ॥ १२ ॥"

धम्मु रम्मु सचराचर जीवह दय सहिउ, अरु गुरु नियघरघरणि सुरय सगमरहिउ।
उज्झिय विसयकसाउ देउ जो मुक्खमलु, एहु लेहु रयणत्तउ चिंतियदिन्नफलु ॥ १३ ॥

दय किज्जइ जपिज्जइ सच्चउ पियवयणु, न हरिज्जइ निहणिज्जइ दुज्जउ जगि मयणु।
न परिग्गहिगहु किज्जइ सज्जिज्जइ करणु, सिवसुहु तो पाविज्जइ निज्जियजरमरणु ॥ १४ ॥

इय जयपहुणो सद्धम्मदेसणासारमायरेण सो, सुणिऊण पव्वईओ, गुणसारो ढंढणकुमारो ॥ १५ ॥ वारस वि भावणाओ,

भणिओ सह सुयं [illegible]ओ। [illegible]तो विविहत्थं विरए [illegible] सहि ॥ १६ ॥ विहरंतस्स य निप्पुण्णकम्मविणयविअ [illegible]। समुहिमसंदरउस्समत्तं [illegible]मारस्स ॥ १७ ॥ तो तरोसेणं तेण साहुणा सह पमोइ सो भिक्खो। तस्स वि [illegible] [illegible] [illegible] मीमाई [illegible] ॥ १८ ॥ पावंमि [illegible]मि सुणि[illegible] परममगापरे सिद्धे। सूयर विय सिट्ठो तप्पुत्तओ विणि-[illegible] ॥ १९ ॥ अह—भागहविसयामझे [illegible] पुण [illegible]गामे। [illegible] परपसरणओ [illegible]ओ विप्पसुण्णनामो ॥ २० ॥ नर [illegible] नयाहिवत्तीओ [illegible] [illegible] पत्ते। [illegible]समयंमि [illegible] [illegible] [illegible] सुहिय ॥ २१ ॥ [illegible]समाए [illegible]-मेके[illegible]ण तेण पविप्प सेवे। [illegible] मिहु [illegible]मिओगासरोअं ॥ २२ ॥ तम्मवाय य [illegible], निप्पविणप्पंवपदत्तं [illegible]। मरिऊण य [illegible]ओ भेरवंओ निरयपुव्वीए ॥ २३ ॥ तत्तो [illegible] भिविवमेप्पसु [illegible]सु। [illegible]सु मणूसेसु य, संवरियं दुक्खमणधा ॥ २४ ॥ सोरहविसमूस[illegible]रवई सामिसुद्धेसस। पुप्पेसुनरमो, पत्तो [illegible]मारोवि ॥ २५ ॥ [illegible] सोर्ह सो [illegible] अमिनवं गिम्हए विमसाहसे। पत्तो परमवीर, [illegible] न [illegible] ॥ २६ ॥ एवं सुहसेण [illegible]रिय [illegible]परिभूओ सो। [illegible] [illegible]समपिओ, विवोम्म [illegible] [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]ओ [illegible]सारिप्प मयणमेवि। [illegible] [illegible] मसे दुक्खवीरवि [illegible] ॥ २८ ॥ तो भणिरं [illegible] मज्झ दुक्ख[illegible] इसे सव्वे। [illegible] दुक्खमवी, एवा मि [illegible]मओ ॥ २९ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] एयस्स [illegible]। दुक्खभगाए(?)सहमीयपर्सवस्स [illegible] ॥ ३० ॥

यथा—मणिवरि [illegible]! [illegible]-सुमीमस। मविविन्नमाहे पापविष्भमा सुये म [illegible]।

इति मनु [illegible] सुमयमपेक्खिए गुरुमुपपत्तो [illegible] गिरा [illegible]म् ॥ ३१ ॥

सो [illegible] [illegible] [illegible] हय सपे [illegible]। एवं परिमार्गिवो, [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३२ ॥ परिवत्तिऊणं तेण य पुरिस [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] ममयालो [illegible]सु महप्प ॥ ३३ ॥ तो एएण विय [illegible] [illegible] पर

त महुमहेण वदिज्जमाणमवलोइऊण इब्भेण। गेहट्ठिएण एमेण, मभत्तीए। धरावीढलुठतसिरेण, वदिओ सो सिरिहरेण ॥ ३४ ॥ चिंतिय विम्हियमणेण ॥ ३५ ॥ धन्नो एस महप्पा, जो एव माहवेण भत्तीए। वदिज्जइ सविसेस, देवाणवि वदणिज्जेण ॥३६॥ अह वदिउ नियत्ते, हरिम्मि भिक्ख कमेण भममाणो। इब्भस्स तस्स भवणे, सपत्तो ढढणकुमारो ॥ ३७ ॥ तो तेण सिंहकेसर-मोयगथालेण परमभत्तीए। पडिलाभिओ महप्पा, गओ य सव्वन्नुपयमूले ॥ ३८ ॥ नमिऊण भणइ भयव ! किमंतराय ममाऽहुणा खीण। जयगुरुणा वागरिय, विज्जइ अज्जवि य तस्सेस ॥ ३९ ॥ एसा उ कण्हलद्धी, परमत्थेण जओ नमत त। आलोइऊण-मिन्भेण, वियरिया मोयगा एए ॥ ४० ॥ एव जिणेण मणिय एस महप्पा तो परस्स लद्धि त्ति। गतूण थडिलम्मि, सय परि-ट्ठविउमारद्धो ॥ ४१ ॥ परिठवमाणस्स य, कम्मकडुविवाग विचिंतयतस्स। सुद्धज्झाणवसेण, से जाय केवल नाण ॥ ४२ ॥ तो केवलिपज्जाय, परिवालिय बोहिऊण भव्वजण। जरसट्ठा पव्वइओ, त मोक्खपय पवन्नोत्ति ॥ ४३ ॥ इति ढढणमुनिकथा ॥३९॥

किमित्याहारोऽनपेक्षोऽय हरिकुमारोऽप्येव विहृतवान् उच्यते—

आहरेसु सुहेसु अ, रम्मावसहेसु काणणेसु च। साहूण नाहिगारो, अहिगारो धम्मकज्जेसु ॥४०॥

साहू कांतारमहाभएसु अवि जणवएवि मुइअम्मि। अवि ते सरीरपीडं, सहंति न लहंति य विरुद्धं ॥४१॥

जतेहि पीलिया विहु, खदगसीसा न चेव परिकुविया। विइयपरमत्थसारा, खमंति जे पडिया हुंति ॥४२॥

यस्मादाहारेपु शुभेष्वपि सरसस्निग्धादिपु उपलक्षणत्वाद्वस्त्रपात्रादिपु तथा रम्यावसथेपु काननेपु च साधूना नाधिकारस्तदासक्तिसेवारूप, किन्त्वधिकारो धर्मकार्येपु, अरसविरसान्तप्रान्ताभिग्रहयुक्तशुद्धोंच्छादिपु ततो हरिकुमारस्तथा विजयहारेति ॥ ४० ॥ तथा—" साहू गाहा " साधवः कान्तारमहाभयेष्वपि अटवी–राजभयादिष्वपि मुदिते ऋद्धिस्तिमिते जनपद इव क्षुदादिपीडामपि

सहन्ते न पुव्वंमि-गुहम्मि मिच्छमनेचमीसमिममसमामरीति ॥४१॥ कथानकं च्चमंता दशन्तेयोपनिबध्नि— 'आसि पुरा' अवतर्क साहो । भावणी ध्यानमात्मस्त्वचेतम्—

सावत्थीए पुरीए, जियसत्तू आसि नरवई तत्थ । धारिणीपियाए जाओ, मणसारो खंदगकुमारो ॥ १ ॥ भणिगव्वीवाजी-णाए-वलुनिवारविरमओ सुधई । जिणवयणपयट्टो सम्मत्तगुणस्सकयगु ॥ २ ॥ तस्स कणिट्ठा धूया आसि पुरंदरजसा सया सा य । कुंभकारकडियनरवइस्स दिण्णा भरिया ॥ ३ ॥ तेण कयाई जियसत्तु-भवणे समागोवि पहुणिओ । केणवि पओगेणं, मारि कयाई दिया दुट्टो ॥ ४ ॥ जिणसत्तुमरणलिवयणतरणे णागओ सम सहाय । बलिणा पयत्तविपक्खे, सुमसओ समुओ तत्थ ॥५॥ परमेयगुणसम्पण्णी वसिद्दल्म नाम परिसाय । गव्वदोसेण को पुव्ववेरणावरणं सो ॥ ६ ॥ नपारमुणिविप्पुणिपुमण्णरणुमिणमेव । मिच्छिट्ठवज्जिलगारमत्मणिमो देसीय कमो ॥ ७ ॥ कह कामोभो पओयणस्स पारेह नो पुरो पुरिसे । तह माहिकाई सोवि तस्स खंदगकुमारस ॥ ८ ॥ वेपरिणिवोधसुमार-कमसमो हरिसओ जाग होइ । तह सो सुओ सुओ सुणिदेसहोसुरो य ठिओ ॥ ९ ॥ आह सयुं परियाए, सासणं जिणवरण पयाहि । कोसलमिओ गओ सो, गामागामो धरसंमि ॥ १ ॥ सेसा रयणाओ मिच्छुणिमओ य खंदगकुमारो । विसए विसं च सट्ठं, नियं पवे पवत्तेह ॥ ११ ॥

यथा—" रे जैवा करवे निमील सिवचनमो निवेसि मुई, मिमस्तवनमानवेः समणिन धूमा विमलगोयको ।
चके हि वणमहार्रे परिणओ निसमाणमर्त सुरे एसेण मनिगोसमणिः अर्हिनं निशिसोभस परम ॥१५॥"

तओ—सिरि सुणिसुव्वयसामि पुरिसाण सएहिं पंचहिं समेओ । पडिवत्तिजियसत्ताओ स गई नाणो ससमयपओ ॥ १३ ॥ समयवयेण मुरिसपंचोपि पओ पविपक्खसमिरी । विओ से परिवारो पहुण तो भेस पंचसय ॥ १४ ॥ पहुमेगाय य पुण्णट्ट कुंभरकड़े पुरे विहारण । पडियोहणाय तीए, सुमचणिपुरंदरजसाए ॥ १५ ॥ अह पहुण्य भणिओ सो अणसमो मारणंतिओ

तत्थ। तुह सपरिवारस्स वि, पुन्छेइ जिण पुणो पणओ ॥ १६ ॥ आराहगा व सामिय !, विराहगा अइव किं भविस्सामो। दिसइ पहू त मोत्तु, अन्ने आराहगा साहू ॥ १७ ॥ नत्थि भवियव्वनासोत्ति, चिंतियं तेण मइ सहायमि। जइ सिद्धि साहु साह्यति ता किं न पज्जत्तं ॥ १८ ॥ इय सह सएहि पचहिं, पत्तो कुभारकडपुरे सूरी। मग्गे आगच्छंतो, पालगपावेण विन्नाओ ॥ १९ ॥ परिभवसभरणुब्भूयभूरिकोवेणऽणागय चेव। निक्खणिऊणुज्जाणे, तेण विमुक्काणि सत्थाणि ॥ २० ॥ पवरुज्जाणे ते तम्मि चेव, सूरी समोसरिंसु सुह। तेसिं वदणवडियाए, निग्गओ दंडइनरिंदो ॥ २१ ॥ पणमिय पुरो निसन्नस्स तस्स तीसे सहाए सूरिहिं। पारद्धा धम्मकहा, सुहापवाहाणुहारेण ॥ २२ ॥ पडिबुद्धा बुद्धिधणा बहवो पाणी पयावई वि तओ। गुरुगुणगुरु-आणंदियचित्तो पत्तो पुरस्सतो ॥ २३ ॥ अह एगंते वुत्तो, पालगपावेण पत्थिवो एव। तुह पहु ! हियचिंताए, किंपि पयपेमि पर मत्थ ॥ २४ ॥ एसोऽनस्स सूरी, भग्गुविग्गो वयाउ आयाओ। पासंडिगकुक्कुडिओ, तुह पहु ! रज्जाऽवहाराय ॥ २५ ॥ कयक-वडसाहुवेसो, जोहा सव्वेवि ते सया पंच। तं तत्थ गयं सत्थेहिं, मारयिस्सति नीसका ॥ २६ ॥ जइ तुह सदेहो देव !, कोइ ओसारिऊण ते तत्तो। खिइनिक्खए निरिक्खह, सत्थे सयमेव दसेमि ॥ २७ ॥ विहिए तहेव पुहईपहुस्स पयडाणि ताणि जायाणि। चित्ते चमक्किओ अघडमाणघडणाए तीए सो ॥ २८ ॥ "बुड्ड जलंमि पत्त, तरइ सिला हुयवहो वि पज्जलइ। त नत्थि सविहाण, संसारे ज न सभवइ ॥ २९ ॥" अपरिच्छियपरमत्थो, परिहीणप्पायपुव्वपुन्नो य। तस्सेव देस देइ, दंडई दहणे ताण ॥ ३० ॥ इय सो पाविय पाविट्ठदुट्ठचिट्ठो निवस्स तस्साण। परमपओसो तोस, सपत्तो कालदूओ व्व ॥ ३१ ॥ नगरस्स तस्स दूरे, मंडावेऊण घाणएऽणेगे। मुणिमेगेग परिखिवइ, तत्थ नरए य अप्पाण ॥ ३२ ॥ खदगसूरिसमीवे, सोहिय सव्वेवि सव्वसल्लाइं। गुरु धम्मदेसणाए, इय अप्पाण च भाविंति ॥ ३३ ॥ " सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अभिदुदुयमि ससारे। सुलह-मिण जीवाण, ज किल दुक्खेहिं सजोगो ॥ ३४ ॥" कहमन्नहा सुकोसल-महामुणी काउस्सग्गथिरकाओ। वग्घीए सिग्घमवणीए, पाडिउं भक्खिओ अभओ ॥ ३५ ॥ कह वा उस्सग्गगयस्स, चत्तदंडस्स दंडसाहुस्स। सीस छिन्नं एमेव, जउण रन्ना सुणेउण

॥ ३६ ॥ ता एत्थ भवसमुद्दे मुब्बराउ वेव आरया हु । भवसमुद्दनिम्मइओ सुम्हो पुण मरिस मिपमम्मो ॥ ३७ ॥"
मा पुण एर दह वि मा विमहवत्थ य धम्मपगुण्ण । कप्पद्दुमाम्म पत्तो, मुमकम्मा वि सुकम्मसा ॥ ३८ ॥ इय एसो चिय
मएरा सम धम्मपरमभारवाहिणा । भवरम्मुगममा जम्मोऽमाइम्मि ससारे ॥ ३९ ॥ चिमइमेवमिमे चिय, चिर्त परिव
वड समहमवग्म । चित्तस्स धम्मवयम भावसाव वाणिम ॥ ४० ॥ एत्तो चिय हे ममिमो जे सुविमोऽणुवर गया मोक्खं ।
उग्गा त जीवाम न भरत धम्मवयस्स ॥ ४१ ॥ माणम्मि म वण्णाण, एप सोम्मि धम्मपरत्तं । जिम्मवयम्माहिरमइ, सुक्ख-
मनुर्ति निवहेन ॥ ४२ ॥ इय भावणा मयेमाओ पापूर्णवसमखमु । ते भगाम वामा पीढिमंवा महासत्ता ॥ ४३ ॥ सुह-
ममेग सुम्मारवत्तर मनरवरत्माव । एम्मुहियमवराह, समत्तं नेरगमुनिते ॥४४॥ पचिववमारिति सुमपीव्मण मणागमुवसामो ।
अह सामो ताव भावमा सुत्त मग विवि जेसेमि ॥ ४५ ॥ मुखम्मा रमरेसु, जइव मे पहमभेव वीथेसु । पवि तए कुम्मं
गन्न सव्वे वर्ग मर्त ॥ ४६ ॥ इय साऊम मोम्मि-पूयमम्मिय पयवरिव । रमभेवेमं सेम, इदा सो पहिमो सुहो
॥ ४७ ॥ अथ धर्माभिषिक्तनिमित्तमभ्योति—

जन्मपम इठो पुरो म विहितो भो कर्मपूनिकापूमरतनसोणमं न निहितो मस्य मनी पमुना ।
दर्भे वन दले दले पुमाये कलीपूहो दस-तैदिव्यपवरमममनइरमो जमपति भो ना जना ॥ ४८ ॥

मुरम्मवमार माओ धंमगढे वेवमी तओ मोनि । इय वेमतो मंतो सूरी सुरामनुयमोर ॥ ४९ ॥ एमइ मिपार्न वह
मव मम मरमंजमम पमावि । पय माविमरमि भविममम निरामम य वराव ॥ ५० ॥ जहमहुरस्स वि सुविमरमाक-
वनाह वि य रोइ, जइर माएमओ एत्तो ॥ ५१ ॥ निम्मुणं हि मम पम्ममावित्म वि य होइ ॥ ५१ ॥ आमीयमाणो वेरमकुमाओ मिरहदेहिं विलाई ।
गाइ वि य पोह, भइर मारणओ पत्तो ॥ ५२ ॥ गिनं नेरणपएहि वि तेम भेत्म पीढिमो सन्नो । अभितुमारो मामो

रुहिरोहपकटंकिय–रयहरण खदगगुरुस्स जाणेइ नियाणमोहीए ॥ ५३ ॥ इतश्च—निवदिन्नरयणकंबल–कप्पियनिम्मलनिसेज्जसजुत्त । करयलपल्हत्थिय ॥ ५४ ॥ सरुहिरकरसकाए, उप्पाडेऊणमाणिय कहवि । गिद्धमुहाओ गिद्धेण, पाडिय अवरग्गाओ ॥ ५५ ॥ आणणाए अतेउरोववि‌ट्ठाए । खुद्धमणाए पुरदरजसा ससाए पुरो देसे ॥ ५६ ॥ दट्ठूण पच्चभिज्जाणिऊण त सा धसक्किया हियए । पुच्छतीए नाय, पालगपावस्स दुच्चरिय ॥ ५७ ॥ पोक्कारती पत्ता, तत्तो दडइनिवस्स पासमि । हा हा हयास निग्घिण ! किं कारविय तए एय ॥ ५८ ॥ एत्थतरमि पत्तो, खदगदेवो भरेइ सावत्थि । सवट्टगवाउविउव्वणाए तणदारुभाराण ॥ ५९ ॥ सिरिमुणिसुव्वयपासे, उप्पाडेऊण नेइ नियभइणिं । सा पावइ पव्वज्ज, जयपहुणो पउमहत्थेण ॥ ६० ॥ सावत्थी वि समत्था, दड्ढा तेणाऽमरेण सहसत्ति । तेणेव अग्गिणा ताणि, मुणिकरकाणि दड्ढाणि ॥ ६१ ॥ दड्ढाए तेण तीए, बारसजोयणपमाणभूमीए । जाय रन्न अज्जवि, ज गिज्जइ दडगारन्न ॥ ६२ ॥ उक्त च—" स्याद्देवदेवास्पदतद्धनाना, यदा विनाश' कुनृपापचारात् । मारो मुनीना च तदातितूर्णं, भङ्गो भवेत्तत्पुरदेशराज्ञाम् ॥ ६३ ॥" तथा—" त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभि पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः । अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ॥ ६४ ॥" ॥ ४२ ॥ न त्वाश्चर्यमेतत् यदेते साधवो दुर्वृत्तस्य द्विजातेस्तयोपसर्गं तितिक्षाचक्रु । न किंचिदाश्चर्यमित्याह—

जिणवयणसुइसकण्णा, अवगयससारघोरपेयाला । बालाण खमंति जई जइत्ति कं इत्थ अच्छेरं ॥ ४३ ॥

न कुलं इत्थ पहाणं, हरिएसबलस्स किं कुलं आसी । आकंपिया तवेणं सुरावि जं पज्जुवासंति ॥ ४४ ॥

जिनवचनश्रुत्या सकर्णा अवगतघोरससारविचाराश्च अज्ञानाना सम्बन्धि वधबन्धादिभिर्यतयो यदि क्षमन्ते, तदाऽत्र किमाश्चर्यं ? न किंचिदिति पेयालो विचार । प्राकृतत्वात् घोरविशेषणस्य विशेष्यात्परनिपात' ॥४३॥ क्षमादिगुणाधारत्वे सत्त्वमेवामीषा निमित्त, कुल तु मायिकमित्याह—" न कुलं " गाहा—स्पष्टा । नवर हरिकेशा–मातङ्गविशेषाः । आकम्पिता–आवर्जिता । तत्कथा पुनरियम्—

मयुराए नयरीए, संघो नामेण मरगई आसि। गहियसव्वो गीअत्थो एगागी गब्भं स गओ ॥ १ ॥ गिमे(म्हे) गोयम-
रिय गम्य दंसेणाय नयरमज्झे। [illegible]पारंमि पुच्छिओ सोमदेवरिसी ॥ २ ॥ किमिमाए रच्छाए, वच्चामि स आह वच
वच मा। गइच्चाए पेच्छमि [illegible]पयंति ॥ ३ ॥ इरियासमिइसमेयं, तं सपिव संपत्तमिच्छंतो। चिंतइ स साम
[illegible] पिम्मिय न [illegible] ॥ ४ ॥ निम्मंदियपव [illegible] संपत्ता तं सो। [illegible]चिंतं पि पासेइ
विमसीव ॥ ५ ॥ मुणइ मुणिस्सा[illegible] मा[illegible]समेयस्स। [illegible] जायइ मुणिं तं ॥ ६ ॥ मुणिण्य
पि [illegible] से असारस्सवो भवस्स रयस्स। [illegible], [illegible] विरागो य ॥ ७ ॥ [illegible] पुरं, सायर
मायरियपाय[illegible]। [illegible] सिक्खिउं ॥ ८ ॥ [illegible]—[illegible] संघो। स मुणिस्स तस्स
पासे पविसियओ निस्संगमेत्तण ॥ ९ ॥ चिरपाविण्यसमत्थो, विपरीसमयं [illegible] चवि। मरिऊणं सुपकोए, संजाओ सुयए
भोव ॥ १ ॥ भमर[illegible]तीरे, [illegible]मंमि सो [illegible]। [illegible]मारियाए, गोपीए [illegible] उयरे ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] माकंगुले [illegible] जाओ। सो[illegible] निच्चमूलंपि [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]नामो [illegible], [illegible]माणि-
[illegible]। [illegible] से [illegible], [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] [illegible] पंडिओ। [illegible]
[illegible] सो ॥ १४ ॥ [1][illegible] [illegible] मुरुएहिंमो। [illegible] सप्प [2][illegible]
॥ १५ ॥ [illegible] पत्तो [illegible] सप्पो [illegible]। [illegible] न तस्स सम्मा [illegible] मिम्मिसो [illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
[illegible]मेरिसं विसियं [illegible]। [illegible] पत्तो [illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] पिव म [illegible]
[illegible]। तस्स [illegible] जाओ [illegible] रिसोव्व जाइ ॥ १८ ॥ पसमागु(माग)मुणाए, परम[illegible] महामित।
[illegible] सो [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]

१ [illegible] Q. D. । २ [illegible] Q. D. । ३ [illegible] B. D. ।

कोहो सच्चरियविच्छोहो ॥ २० ॥ गुणगामदाहगेण, फलहुतडप्पारफुरमवूदेण । कोहपलीवणाण, अलगाहुणा निणयमेव फरे ॥२१॥

तथा च—"दासोऽप्यत्र विलोक्यते विनयवान् स्वामीभवन् नेत्मनि, यद्रिङ्गादतिचिद्रुतोऽप्यधिपतिस्त्यागोन्यन्याया श्रिय ।
दौर्भाग्यकगतिपद्मवानपि नर सौभाग्यभागी भुश, किं किं तद्विनयेन सिद्धयति न यत्साध्य मन समतम् ॥ २२ ॥"

एवं भावेमाणो धम्म सोऊण साहुमूलम्मि । मरारमुनिनिव्विन्नो, मारंगमहारिसी जाओ ॥ २३ ॥ दसम-दुवालस-मास-दु-मास-दोमासिया य खवणेहिं । सोमियसव्वसरीरो, विहरइ गामागरपुरेसु ॥२४॥ विहरतो सपत्तो, सिरिपासजिणिदजम्मरम्माए । वाणारसीनयरीए, यहिं ठिओ तिंदुगुज्जाणे ॥ २५ ॥ गडी तिंदुगजक्खो, महरिसिमाराहए मना तगन्ह । अइगुरुगुणगाढनिबद्ध-माणसो जाइ न कहिंपि ॥ २६ ॥ अतिही तस्स कयाई, अवरो जक्खो समागओ भणइ । किं पगरइ मित्त ! न, सचरेसि मुचिराउ ज दिट्ठो ॥ २७ ॥ पभणइ एसो निस्सीमअसमपसमाइगुणमहानिहिणो । एयस्स महामुणिणो, अणवणिरमणो म्हि सेवाए ॥ २८ ॥ दट्ठूण मुणिं त सोवि, तोसओ तिंदुगं पयपेइ । तुममेव मित्त ! धन्नो, जस्स घणे एम धम्मारिसी ॥ २९ ॥ मह काणणे वि निवसति, साहुणो तानहपि गंतूण । सह दोवि वदिमो ते वि, मत्तिं ते गया तत्थ ॥ ३० ॥ अतरहिएहिं तेहिं, तवरसिणो ते निरिक्खिजया ताव । कहवि पमायणमणेगरवविगहा कहेमाणा ॥ ३१ ॥ गाढतरागते नमि चेव, तत्तोऽणुरत्तचित्तेण । भत्तिं कुणति पयपउम-पज्जुवासा तिसा मुसिया ॥ ३२ ॥ भावेण वदमाणस्स, तस्स त साहुमेगजक्खस्स । पयइ सुहेण काओ, गओ परो पुण सठाणम्मि ॥ ३३ ॥ अह अन्नया कयाई, कोसलियनरेसरऽगया भद्दा । जक्खाराहणकज्जेणमागया जक्खमन्दिरेड ॥ ३४ ॥ जा तस्स पयाहिणमायरेइ सा तं तवस्सिमिक्खेइ । रुहिरवसमंसनिम्मुक्कएकतीरुव्वनिकायमा ॥ ३५ ॥ [1]चक्कलकडारलोयणमइन्नि[2]विडयुवूलपोरपोणाल । टप्परकन्नतिकोगुत्तमगमगेगमइकाल ॥ ३६ ॥ गलदुग्गंध त पेच्छिऊण थुक्केइ सा दुगछाए ।

[1] चक्कुल । [2] विड C D ।

मयीए तेण वसन्तेण[illegible] [illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible] पओसमाणी विसाय [illegible]। भणमे निवसइ नीया वरिसपुरिसेहिं सा कहवि ॥ ३८ ॥ सिरिवम्मो नरनाह, विनाओ [illegible]। [illegible] निसुणेसो वि तीए कओ वि संजाओ ॥ ३९ ॥ एप सम्मे वा वाप्प दुठ्ठ [illegible] तओ वच्चो। [illegible] पत्तम्मि ठिओ [illegible] मिलिओ साहू ॥ ४० ॥ ता भइ एवं वसेण देह मुंचमि तो वसरेह। रमावि [illegible], [illegible] [illegible] वे ॥ ४१ ॥ तो सा [illegible] सम्मा[illegible]भूसियसरीरा। पिम्मा परि[illegible], मुणिवा [illegible] ॥ ४२ ॥ तं पाडिवमाणसु, [illegible]पुरिसेहिं सो मुणी [illegible]। [illegible] मेणसु, [illegible] करेम कं ॥ ४३ ॥ मणिओ मुणिणा तो परमपुरिसा। विमेरिसं [illegible]। [illegible] पसू वि एवं [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] सर्व [illegible] जं न [illegible] [illegible]। [illegible] ठे [illegible] रमणीण कं परिहरसि ॥ ४५ ॥ सिरि[illegible] [illegible] [illegible] सुवंसु। रमवि महामुणिणो [illegible] ॥ ४६ ॥ किं म [illegible]— [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] नारिं, [illegible] [illegible] ॥ ४७ ॥" तो [illegible] [illegible] [illegible] रिसिसमं। महरिसिणो [illegible] सकोव परिणीव ॥४८॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सेव सा [illegible]। [illegible] [illegible] विभ्रमसमुही ॥४९॥ परिणयपासे पत्ता रोसंती [illegible]। तो [illegible] पुरोहिओ [illegible] ॥५०॥ पत्ता पत्ती वा महरिसीहिं, सा होइ [illegible] पुव्वं। मह [illegible] रिसाव, सा देव। [illegible] [illegible] ॥५१॥ [illegible] [illegible] सव्वेपि सम्माह ॥ ५२ ॥ [illegible] तेण दिणा दिवसस वसेण। तो [illegible] [illegible] संवो[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तरुणी। [illegible] पुरोहियस्स स [illegible] परिणाहिय ॥ ५४ ॥ सह तीए महामोए, [illegible] वस्स [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible] रमयेण ॥ ५५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] पत्ता [illegible] [illegible] ॥५६॥ [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

जपति पुरो ते तस्स, फीस पत्तोऽसि रे ! पिसल्लतुल्ल
उद्धाईऊणमारद्धो । मलमलिणतणुवासो, पहसेउ पावविप्पेहिं ॥ ५८ ॥
अइमलिणकुचेलअचेलदुक्कउम्मुफलज्जमज्जाय !। पत्तो पवित्तपत्ताणमम्ह-
तुम । नणु तुरिय एयाओ, थामाओऽवक्कम कुगसु ॥५९॥ भिक्खत्थमागओ ह, ता दिज्जउ मज्झ भो !
मपवित्त ! किं पासे ॥ ६० ॥ एत्थंतरंमि जक्खो, रिसिणो देहंमि पविसिउ भणइ ।
भिक्खा ॥ ६१ ॥ विप्रा —जो जाइकुलविसुद्धा, वेयविहिन्नू सकम्मसतुट्ठा । ताण दियाण दाणाय, सिद्धमन्न तुह निसिद्ध ॥६२॥
साधु —सइ विरओ हिंसमुसा-अदिन्नमेहुण परिग्गहाओ अहं । समसत्तु-मित्त-कक्कर-कणओ परिमुक्कह्कारो ॥ ६३ ॥ परिचत्त
गिहावासो, उग्गमउप्पायणेसणासुद्ध । भिक्खेमि भिक्खमित्त, गिहे गिहे तेण पत्तोम्हि ॥ ६४ ॥ एसो य कओ पाओ, पाय
तुम्हेहिं नियगिहनिमित्तं । ता एयाओ मज्झवि, धम्मट्ठा देह भो ! भिक्ख ॥ ६५ ॥ विप्रा —जाव दिग्गहि न भुत्तो, पढम जल-
णमि जाव न छुढो । ताव न दिज्जइ एसो, सुद्दाण वच्च ता समण ! ॥ ६६ ॥ पवरे फलंति खेत्ते, जह विहिणा वावियाणि
वीयाणि । फलइ तहा पि(व)उ वभण !, जलणम्मि निवेसिय दाण ॥ ६७ ॥ अह मुणिणा ते भणिया, जाईमेत्तेण हुंति नो विप्पा ।
तुम्हारिसा हि पावा, हिंसमुसामेहुणासत्ता ॥ ६८ ॥ जलणो वि पावहेऊ, कह तमि निवेसिय सुह कुणइ । पिउणो वि परभव-
गया, इह दिन्न कह णु गिन्हंति ॥ ६९ ॥ इय पडिकूलालीयप्पलावसीलेण हीलिया अम्हे । एएण त्ति मुणिं ते, पहाविया पहरिउ
सव्वे ॥ ७० ॥ दड-कस-सह-लेट्ठुहिं, ताण थाणुव्व थभिया केवि । दूरे धरिया जक्खेण, मुणितणू विहियरक्खेण ॥ ७१ ॥
छिन्नतरुणो व्व धरणीए, पाडिया ताडिऊण पुण एगे । अवरे पहारपहया, मुहेण मोयाविया रुहिर ॥ ७२ ॥ दट्ठूण भट्टचट्टे,
महियमरट्टे(ट्टे) तहाविहे तो ते । भयवेवमाणहियया, भद्दा रुद्देण सह भणइ ॥ ७३ ॥ एसो सो जेण तया, सयंवरा आगया अह
सुया । सिद्धि (नववहु) निबध्धुक्कठो, नेच्छइ सुरसुदरीओ वि ॥ ७४ ॥ अइतिव्वतवपरक्कम्मवसीकयाऽसेसमाणसुरोहो । तिहुय-
णपणयपयग्गो, नाणाविह लद्धिसुसमिद्धो ॥ ७५ ॥ जियकोहमाणमाया-लोहपरीसहरिऊ महासत्तो । निद्धवियपावपसरो, पसरत-
अणतजसजोन्हो ॥ ७६ ॥ जलणोव्व दहइ भुयण, रुट्ठो रक्खेइ पुण तय तुट्ठो । ता एय ताडिंता, तुब्भे निन्भतमेव मया ॥७७॥

पास्सु परेकम्मं, तत्तो तोसेइ महरिसिं एवं । जइ जीविमत्व करं एव भराम ते भणिया ॥ ७८ ॥ पमय भणति वं भे अब पर्व तं दसाइ ये भवय । एगरागसकलमपवित्त इवति सेगमि मुणिसीहा ॥ ७९ ॥ अइ ते मुणिन्द मणिया संगारनिमे पमस्स येसस्स । को अववस पिवरइ विसेसओ मुणिवरिमसका ॥ ८० ॥ मम मतिपरेभेय, महा जमसेय सिसिरया एवं । ता तं विय खमसेइ, मम पसाइ सो तुम्भे ॥ ८१ ॥ पउरपयरोहिं घराविरहिं यो पव सामं साहु । पुमरुवं भिमसो, सो जमसेय कय पाव्वा ॥ ८२ ॥ मराम मयीम तत्तो वडिवयमिमो तवस्सी सो । वद मह गुरुंवि तेय वि पडिमपडिपमेसमीये ॥ ८३ ॥ गयकंतमि दिव्वं पाउम्भूयाइ पव दिव्वाइं । वारिसमगजोर पेरिपमय मिसम्पयज्जोगे ॥ ८४ ॥ मुणिसिहरेस मय, पत्रं सुहासारधारवीपरय । परिमुक्का गाथा सवभूमिवेयाभिहत्य ते ॥८५॥ इति हरिकेशमुनि कथा ॥४४॥ वामस मुळे मयसं विभु गुणा । पव वरम्—जइ नत्थि गुणा ता कि कुलेन गुणिणो कुलेन किं कज्जं । कुलमकलंकं गुणवज्जियाण गरुओ चिय कलंको ॥ ८६ ॥

यथा— पङ्कजमसयं प्रसवइ पयोधिकीरं गोमयम्, अपरसिरघो दवाग्नि मणिर्मोलिकस्तो रोचनम् ।
प्रोत्तेये कृमिता सुवर्णमुपलकतत्पूलोऽपि गोलोमका मामस्तं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना ॥८७॥"

किमारमात्मा महरसरतपरम्पे पनप्पदे तदा वा गुणमिमात्मात्मकम् समाह—

देवो नेरइओ त्थि, कीडपयंगोवि माणुसो वेसो । रूवस्सी य विरूवो, सुहभागी दुक्खभागी य ॥८९॥
रायवि य दमगोवि य एस सपागो वि एस वेयविऊ । सामी दासो पुज्जो खलो निघणो धणवइ त्ति ॥८६॥
नवि इत्थ कोवि(य) नियमो, सकम्मविणिविट्ठसरिसकयचिट्ठो । अन्नोन्नरूववेसो नडोव्व परियत्तए जीवो ॥८७॥
कोडी सएहिं धणसंचयस्स गुणसुभरियाए कन्नाए । नवि लुद्धो वयररिसी, अलोभया एस साहूणं ॥८८॥

इत्यादि गाथास्तिस्रः सुगमाः नवरं कीटरूपो पतङ्गो न त्वादित्यः । एतच्च तिर्यगुपलक्षणम् । मानुष इति गतिचतुष्टयोक्तिः । इत एतास्वेव विशेषाना(मा)ह—" रूपस्वीति " रूपमेव स्वं लोभनीयत्वात्तद्विद्यते यस्य स रूपस्वी । गाथाद्वये उतिशब्दा उपप्रदर्शनार्थाः । चशब्दाः समुच्चयार्थाः । असकृदेव शब्दमक्षण पर्यायनिवृत्तावपि जीवद्रव्यस्यानुवृत्तिज्ञापनार्थम् । एष एवैको जीव नाना रूपेष्वेव परावर्त्तते, न सर्वथाऽन्यो भवतीत्यर्थः । स्वकर्मविनिविष्टमत्यगकृतचेष्टः । स्वकर्मणा यो विनिवेशः प्रकृतिस्थित्यादिप्रकारेण रचना तदनुरूपा कृता चेष्टा-देवादिपर्यायाध्यासरूपो व्यापारो येन स तथारूप परावर्त्तते । जीव -यथाऽन्याऽन्यस्वरूपनेपथ्यो नटः इत्युपमानम् ॥ ४५-४६-४७ ॥ अथ निर्लभितोपदेश दृष्टान्तेनाह—" कोडीसएहिं " गाथा स्पष्टा । नवरं दीनारादिधनसंचयस्य कोटीशते सहिताया सुगुणधन्याया कन्याया नैव लब्धो राज्यपिरिति योगः ॥ ४८ ॥ भावार्थ कथानकं, सा चेयम्—

हिमवततुंगवरपिट्ठि-चपनयरीए आसि सालनिवो । पुत्तो पसन्नचंदस्स, राइणो तस्स लहुभाया ॥ १ ॥ नामेण महासालो, जुवराओ जसमई ससा तेसिं । कपिल्लपुरे पिढरेण, पुहइनाहेण परिणीया ॥ २ ॥ गुणगरुओ अगरुदो, गागलिनामो इमीए उप्पन्नो । अह चंपपुरिं पत्तो, कयाइ परमेसरो वीरो ॥ ३ ॥ विहिय तत्थोसरणे, सरणं सत्ताण दुक्खतत्ताणं । अमरेसरेहिं नीसेसजयसिरीकेलिचउसाल ॥ ४ ॥ भगवतागमणविऊ, गूरतुन्नाणपालयणाउ । सालो नराहिवो, नागराण सोहं जणेमाणो ॥ ५ ॥ जयगुरुवंदणवडियाए, निग्गओ गरुयगयवरारूढो । सपरिवारो परमुल्लसंतपुलयकुरियकाओ ॥ ६ ॥ पत्तो भयवंतसमीव भूमिभागंमि दिट्ठछत्ततिगो । पडिवन्नपायचारो, पयविक्खामिगममागरु ॥ ७ ॥ गोउरदारेण उत्तरेण, पविसिय पयाहिणेऊण । पण-मिय पहुणो पुरओ, ईसाणदिसाए आसीणो ॥ ८ ॥ पारद्धा धम्मकहा, जोयणनीहारिणीए वाणीए । सव्वसभासापरिणामिणीए परिसाए जयपहुणा ॥ ९ ॥ जहा—जालाकरालजलणोवरुद्धगेहंमि जह य्मो वासो । नो बुद्धिधणस्स जणस्स, तह भवे दुक्ख-भरभरिए ॥ १० ॥ तह कागतालसजोग-नायउ दुल्लहं मणुस्सत्तं । लद्ध सद्धम्ममहा-निहाणसपत्तिजोगमिण ॥ ११ ॥ जह पागि णीए लद्धो, कोई हारेइ कोडिमवि मणुओ । तह विसयलोलमणा, विवेयविगला इमं जम्म ॥ १२ ॥ सग्गापवग्गमग्गस्स, सा

इहे अभिमा इमोऽमरो। मज्झो धम्मस्स गुरू नेगुणिओ न तुम्हाण ॥ १३ ॥ मिच्छत्तपयत्तओ जो ते तविसंयमरए
मावो। अभिमाणमिच्छ्वरविहिओ विसमत्तासो ॥ १४ ॥ दुसहसंताववसओ वि बच्चइ जीवियं तुज्झ मणुषा। सहम्मक-
म्मजलये भवतरू जइ समइ इमो ॥ १ ॥ सव्वापरेण तह कम्मइ एव इहावि जर्ममि। भसारिसमुहागुसमो परम मि-
च्छत्तयं च भव ॥ १६ ॥ नई निसमयम्मा मम्म माबम्भमिमिछिमरकम्माओ। पयमिच्छ मम्मइ जिणे ताव महासार्ममिह रोग
॥ १७ ॥ अहिमिच्छामि तमीपे ता तुम्भाणं करेमि पच्चक्ख। गंभूरं मिणम्मवण तेणाहुंयो महासाओ ॥ १८ ॥ मिम्हसु रम पम्म
समय पाई तओ मणइ माया। जइ रसमसारं भणिऊण तुम्ह परिम्मवह ॥ १९ ॥ तइ भइमवि पमाय, संजमि विरा
मागाय होहि। संविस्सओ गागम्मिमाणीय रम मिवेसति ॥ २ ॥ जो विय देसि निम्माणम्मम्माइमयम्मय करेइ। जो मर
सहस्स वह्नोविवार भइवत्तविसिया ॥ २१ ॥ सीहासणोवविट्ठो ते ताओ गुराइ निमम्मेमाणो। विविहजकनवत्ता, सुरवड
वहितसरसंगा ॥ २२ ॥ कणगिरिसेहरम्मव तुवियो रविसमिय मोडेवि। निक्कमवकंतिसमारपूरिया सेससिसियकम्म ॥ २३ ॥
कानिम्मरवहवसाम—नूरखपूरिभवणम्नु। तिजयपहुपामूले, जम्मिव विपवावियम्ह पुण्णं ॥ २४ ॥ पणइय विहिया सावि जस-
मई सामिय वय जाय। इममहासाम वि य परिसु मयरसेणाई ॥ २५ ॥ कव जलण पम्मई, पवणोइ विहरिउम पमाए।
जणो गेंनु सामी मयणअसरंमि मणहि ॥ २६ ॥ विमवमिमं कम्म, सिट्ठोमपापुरीम कम्मो वि। संसारियम्म देसि मा कोइ
करेज सम्मई ॥ २७ ॥ सम्मसे वा पारेम कोइ आमेइ जपप्ह होही। बोही देसि तो जमागामियो गोयमो विमो ॥२८॥
मज्झे संपाय गओ, गोयमसामी वि सिद्धिमपाए। भविओ सिन्दपोओ पम्मो मिमुओ य सो होहि ॥ २९ ॥ णाणविन्नाणेण
मए दिहेण ताय तस्स विरहेण। तह जसमहजम्मीए, मणावेरम्मओहि ॥ ३ ॥ विमिवि संवेगसुवाई, सव्वं गमावियस्स
रवंधि। हरिकमुमलम्मयवि सम्पावियई पवमामि ॥ ३१ ॥ ताव य गोयमसामी पेसुं संथमि जाव ता वाई। सामा मया
समर्व, हरिमुवरिसा इमो जाओ ॥ ३२ ॥ संसारम्मव जम्मारियाँ सुरोम्मिमेय भावेय। जायं केवलनाणं सिल इवरेरि इय

जाया ॥ ३३ ॥ रज्जमि पढममम्हे, ठवियाणेएहिं सपइ वएसु । नो अन्नो उवयारी, एयाहिंतो वि अम्हाण ॥ ३४ ॥ इय सुद्धज्झाणाओ, अवसाण पाविएसु पावेसु । कम्मेसु निक्कलकं, केवलनाण समुप्पन्न ॥ ३५ ॥ उप्पन्नपुन्ननाणाणि, ताणि पत्ताणि भगवओ पासे । चपापुरीउ गुरुमग्गमणुसर(रिं)ताणि पचावि ॥ ३६ ॥ काऊण तिपयाहिणमभिवदिय तित्थमहपयट्टाणि । गतु केवलिपरिस, भयव पिव गोयमो जाव ॥ ३७ ॥ तिपयक्खिणिऊण जिण, पडिओ पाएसु उट्ठिओ भणइ । वच्चह कत्थइ एह, सामि पयपणमण कुणह ॥ ३८ ॥ वागरिओ जयपहुणा मा गोयम ! केवलीणिमाण तुम । कुण आसायणमाउझमाणसो ते खमावेइ ॥३९॥ अह सवेगमुवगओ, चिंतेइ नाम भविस्सए सिद्धी । अइतिव्वतवच्चरणो वि केवल जेण न लहामि ॥ ४० ॥ एत्तो य सामिणा पुव्वमेव वागरियमासि परिसाए । मणुयसुरासुरसहियाए, जो सएणं पभावेण ॥ ४१ ॥ अट्ठावयमारोहइ, वंदेइ य चेइयाणि कोवि नरो । तेणेव भवग्गहणेण, सिज्झई सो न सदेहो ॥ ४२ ॥ तव्वयणसवणहरिसाऽऽऊरियहियया परोप्पर देवा । साहिंति एवमेय, सव्वत्थ इमा कहा जाया ॥ ४३ ॥ अट्ठावयमि नट्ठावयमि जइ कहवि होज्ज मे गमण । इय जा चिंतइ भयव, गोयमसामी सुगइगामी ॥ ४४ ॥ तो तम्मणतोसकए, तावसपडिवोहकारणेणावि । भणिओ गुरुणा अट्ठावयमि त वच्च जिणबिंबे ॥ ४५ ॥ वदेहि तत्थ सुपसत्थलक्खणे विणयनमिरसव्वगो । ताहे सो मुणिसीहो, हट्ठो तुट्ठो जिण नमिउ ॥ ४६ ॥ पत्तो अट्ठावयपायमूलमायन्निऊण जिणभणिय । अह तिन्नि तावसाण, सामी आसन्नसिवगामी ॥ ४७ ॥ दिन्नो कोडिन्नो तह, सेवालि पच पचसयसहिया । चलिया गिरिमारुहिउ, चउत्थभत्तावसाणमि ॥ ४८ ॥ पढमो कदे मूले, पत्ते भक्खेइ सरससच्चित्ते । छट्ठतवते पत्ते बीओ भुजेइ परिसडिए ॥ ४९ ॥ तइओ पुण सेवाल, सुक्क सयमेव अट्ठमतवते । ते मेहलासु पढमाइयासु लग्गा तिसु कमेण ॥ ५० ॥ दिट्ठो य तेहिं गोयमसामी सोमालसुदरसरीरो । चिंतिति तो कहमेस, मासलो लग्गिही इह हि ॥ ५१ ॥ भयव जघाचारणलद्धीलद्धयागुणस्स निस्साए । पेच्छताण ताण, खणमेत्तेणेव उप्पइओ ॥ ५२ ॥ अयमेइ एस जाइत्ति, जाव जोयति फुल्लनयणिल्ला । ताव विलोयणविसयाउ, अइगओ अवरमणिव्व ॥ ५३ ॥ उल्लसियकोउहल्ला, तिन्नि वि ते तप्पससणे लग्गा ।

मिहुंमि एगमुत्तंठिय य तरसस्स पुत्तो ॥ ५४ ॥ सिरीम्मि य बाले हसंमि एवस्स सीसयावेच । रोमम्मो सामी पुन पत्तो
बहुपवसिरीसि ॥ ५५ ॥ पेच्छइ ते सिजमवणं, बुद्धम्मुसमुट्टमाणं मज्झे । मवहम सुरिमजीस, नविन्ड मारिवे पढम ॥५६॥
नसेरागम्मोलमणिंद कोसे समूसियं तिमि । गयम्सुगविच्छिणं, गयस्समाविकमाययमणं ॥ ५७ ॥ नवविहरयणनिम्मकसंकणयमवि-
वणिम्मुरयाणं । सवमगपत्तामसंगयगमारं वम्नुवारं ॥ ५८ ॥ हरिसविसप्पियमेयमुक्को मणिमीढिय पाणियमिच । भवर
भिन्नपडिमाए, सरागमगो स गणहरो ॥ ५९ ॥ भिन्नवंसमणसाले रसेव य वेसस्स पेरंते । ज्झरपुरस्थिमाए, दिसाए पुढवी-
सिहवहें ॥ ६० ॥ देवा असोग्यसमपडाअसकणगयगमो मिसरसे । पत्तो मावस्स दिसायवसे मग्गेण वेसमणो ॥ ६१ ॥ वेरक-
वेरुमोरे, रयणामो नमि सेसमसिहरंमि । वरेकम्मं वारं, सामि सरह पुष्फ पंर ॥ ६२ ॥

"एगयरसमेव मग्गमयं मोसमोसरणं मरास्य अन्वत्थं तु अवसमयमीजमहुणमुत्तुमपति ।
भिच पुरुपपरगवरं म(मि)यतुवे पावा(मने)मसमरमयं, पुरुपतं नवजनि तु मसुमरे मार्गं मवतीर्थ मम्म् ॥६३॥"

सम्मं नामद्दमाम्नो य पुम्मिगुवे गणहरो परिमविर । मजे जहा इमे एकु, संकप्पेकासिओ मुणि ॥ ६४ ॥ परिविवद वेस
मणो साहुगुणे परिसे सव मबर । मपर्न इमामो संपस्स वंगिमा पा य कम्मरस ॥ ६५ ॥ इय तस्स मर्म मुणिमम मुणि
वर पुंडरीयमरसाणं । पयपकमसरासु, जहा तहा पममेव पुर्व ॥ ६६ ॥ पक्खिमयमवतिलं य गपणं ताहु पाहुमयास । वं
पुंडरीयसाहु, मक्खिओ वि सुरगवं पत्तो ॥ ६७ ॥ सम्मसुरसेसमागो संदरिओ बहुववितिमरयणवसिओ । दोस्समसरयाणो पावगस्से
गओ निरयं ॥ ६८ ॥ वेसमणो तं निसुणिय, सुहमणो पुणर जाणिय मणा । समसणाओ वेसिसमिमस्स मार्ग जाएपाणं ॥६९॥
पंरियमगमणंय, स गओ सह तस्स संमगो एगो । सामाणियदेवो तस्स वेस वेसमणमसरस्स ॥ ७० ॥ से पुंडरीयमस्सवे
सम्मविय संपामरयमाणं । जयमारेइ सारं य, सुबं सम्मयवरराय ॥ ७१ ॥ सेरमणो रासंगो मपर्न सिरिगोयमो पमाहेमि ।

सुतरुणतरणिपयासो, पलोइओ वियसियमुहेहिं ॥ ७२ ॥ कमलेहिं व पुव्वोइय, दिन्नाइं वायसेहिं भणिय च । तुम्हे अम्हाण गुरू, तह ¹नयसीसा वय सीसा ॥ ७३ ॥ तुम्हऽम्हाण य जगजीव-बंधवो भव्वकमलवणभाणू । मुणहियनामधेयो, वीरोत्ति गुरु भणइ भयवं ॥ ७४ ॥ किं तुम्हाण वि अन्नो, कोवि गुरू अत्थि तेहिं भणियमि । तग्गुणगहण गुरुणा, परिओसेण गुणइ तसो ॥ ७५ ॥ पव्वावियाण तेसिं, तक्खणमुवणेइ देवया लिंगं । उत्तरिऊण गिरि-मेहलाहिं लग्गा पहे गंतुं ॥ ७६ ॥ पत्ता भिक्खावेला भगवं च सव्वलद्धी, भिक्खायरियाए पग-आणिज्जउ पारणिज्जमज्ज मए । किं तुम्हमुचियमेयं, वुत्ता ते पायसं पिंति ॥ ७७ ॥ ताण समीवे भयवं, अक्खीणमहाणसीए लद्धीए । पत्तेणं पिहु महुसणाह । पडिगाहिऊण पडिग्गहमि पायसवर पत्तो ॥ ७८ ॥ अप्पणा उ, जिमिओ तओ पडिग्गहगो । भणिओ जाओ तत्तो, तइया पत्तेण, पढम²मुद्धट्ठिया चिट्ठिया ॥ ७९ ॥ ते सव्वे पच्छा अप्पणा उ, जिमिओ तओ पडिग्गहगो । भणिओ जाओ तत्तो, तइया चिंतति जेमता ॥ ८० ॥ सुकयसुकयाण अम्हाणमेस जाओ गुरुगुणगरिट्ठो । पयमगुरीरीउ सयं, पारावइ णो त्ति तो तेसिं ॥ ८१ ॥ खीणावरणाणमपत्तपुव्वसुप्पन्नमुत्तम नाण । सेवालिप्पमुहाण, महातवस्सीण ताव ल्हं ॥ ८२ ॥ उवसुजिराण गोरिं, उ जाव तेसिं केवल तमइ । मन्ने केवलकवलाणमप्पभेउत्ति सइ गिलिय ॥ ८३ ॥ मुनिसिद्धलद्धमत्तंतपारणे पणपत्तमक्किस्स । कोडिन्नस्स मुणो तावसाण सह पचहिं सएहिं ॥ ८४ ॥ जगपहुणो छत्ताइ-छत्ताइसिरिं निरिक्खमाणस्स । दिन्नस्स उ देवाहियदेवाऽऽसय निरन्तरस ॥ ८५ ॥ अह गोयमो पयाहिणमाणदियमाणसो जिणिंदस्स । पुणइ अणुकट्ठिलग्गा, ते वि तओ केवलिमभाए ॥ ८६ ॥ गएण समासीणा, तित्थस्स नमो त्ति झत्ति वोत्तूण । पच्छा पलोयणपरो, स भणइ उवेह नमह पहुं ॥ ८७ ॥ आह पहू सो गोयम !, मा आसाएहि केवली एए । अणुतावाउ तओ सो मिच्छादुक्कडपरो जाओ ॥ ८८ ॥ पकरेइ परे अधिइ, नाहं जम्मे इमंमि सिज्झिस्सं । मइ दिक्खिया वि एए, सज्जो ज केवलं पत्ता ॥ ८९ ॥ भणइ भयव नुराण, गोयम ! पयमं जिणाग आ सम । स भणइ जिणाण तो किं, अधिइ काउ समारद्धो ॥ ९० ॥ तिहुयणताइं वामे, चत्तारि कडे पसयाए एगं । मुंडाडो लिइल्फर्डे,

1=नतशिर्षा २ मुद्धट्ठिया-मुम्मट्टिया C. D।

[illegible] गोयम ! [illegible] मह

[illegible] य ॥ ११ ॥ एवं सिस्सस्स गुरुंमि नेहवसे धम्मिओ होइ । तुमं पुण गोयम ! चिरपुव [illegible] चिरसंथुओ य चिरपरिचिओ य चिरजुसिओ । चिरमणुगओ सि गोयम ! चिरपुव सिणेहो ॥ १२ ॥ अवि य — चिरसंसिट्ठो चिरसंथुओ य चिरपरिचिओ य चिरजुसिओ । [illegible] मा कुणसु धीरगंभीर !, ता तुमं सोगसंताणं ॥ १४ ॥ विमोहोऽसि ॥ १३ ॥ [illegible] तुमं मए तुम्ह [illegible] भविस्सामो । मा कुणसु धीरगंभीर !, ता तुमं सोगसंताणं ॥ १४ ॥ [illegible] पयासेइ जिणो ॥ १५ ॥ [illegible] तह गोयमनिस्साए, अन्नेसि मुणीण बोहणनिमित्तं । दुमपत्तयं [illegible] पयासेइ जिणो ॥ १५ ॥ [illegible] मए निसेवन्तो । मज्झिमपुरिं वत्तो विहरंतो भयवया सद्धिं ॥ १६ ॥ [illegible] तत्थ दोण्हवि जोडिए संते । [illegible] गोयम ! इमंसि नामे संबोहसु [illegible] मोहवोच्छेयणनिमित्तं ॥ १७ ॥ [illegible] समीवगामंमि पेसिओ गोयम । [illegible] सो [illegible] तुमं । जा मज्झरि पेच्छइ, सुरे [illegible] य [illegible] ॥ १८ ॥ तत्थ गयस्स [illegible] [illegible] निसिं [illegible] । जा [illegible] पेच्छइ, सुरे [illegible] य

[illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] सिद्धिं गओ जाव [illegible] । तंप पुण [illegible] न कयाइ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible], मज्झ सिद्धिं गओ जाव [illegible] । [illegible] विरहिओ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] तो तरसमं विचिंतेइ । भयवमहो जिणेहो [illegible] हरिसा हुंति ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible] संसारे । [illegible], कयाई गोयमपहुस्स ॥ २ ॥ जओ य —

" [illegible] सूरमहो विस्सं, [illegible] परम [illegible]ऽसि ।
[illegible] एत्थ धम्मोऽसि [illegible] भवति ममो मोह[illegible] ॥ ३ ॥"

[illegible] गामो तहा विहरंते य । जह मायवो तहा [illegible] विरत्तिओ त्ति ॥ ४ ॥ [illegible] सुरम्मंमि निरियविसा गमे ममो सिद्धिं । तत्तो इमस्स [illegible] समुप्पन्नं ॥ ५ ॥ [illegible] रि विहरिय । [illegible] सिद्धिम्मि संपत्तो ॥ ६ ॥ [illegible], तुम्हाणा [illegible] । [illegible] [illegible] पावं वि पणसिसु ॥ ७ ॥ [illegible] गच्छुं [illegible] । [illegible] य [illegible]

जत्थ य जस्स य जीए य, जायउ दिक्खसिक्खअक्खलिओ। जह दसपुव्वी तित्थप्पभावगोऽहेसि तह विमाणाओ ॥ ८ ॥ जत्थ य जस्स य जीए य, जायउ दिक्खसिक्खअक्खलिओ। इब्भसुओ आसि नियगचगिमाविजियसुररूवो ॥ ११० ॥ सो भणिमो ॥ ९ ॥ तुववणसन्निवेसे, अवतिविसयमि धणगिरि नाम। इब्भसुओ आसि नियगचगिमाविजियसुररूवो ॥ ११० ॥ सो सुयजिणिंदधम्मो, वालत्ताओ वि सावगो जाओ। भवमीरुपव्वइओ, वछइ विच्छिन्नविसयतिसो ॥ ११ ॥ सपत्तजोव्वणभरस्स, तस्स कन्न भणति ज पियरो। त त सो पडिसेहइ, अई जहा पव्वइउकामो ॥ १२ ॥

वक्ति च—“ यस्या नृत्यति निर्भरं प्रमुदिता माया महाराक्षसी, यस्या मोह इतस्ततश्छलयति प्रेताधम प्राणिन·।
यस्या प्रज्वलति स्मराग्निरनिश ता कोविदः कामिनीं, कल्याणी क इह स्मशानविषमामाऽऽसेवते कर्हिचित् ॥१३॥”

जेणाह तं वसे नेमि ॥ १४ ॥ गुरुणो य धणपालसेट्ठिधूया, भणइ सुनदत्ति तमि चेव पुरे। देह मम धणगिरिणो, जेणाह तं वसे नेमि ॥ १४ ॥ गुरुणो य सीहगिरिणो, नियथिरया विजयमेरुणो पासे। भायाऽऽसि तीए समिओ त्ति, गहियदिक्खो विहियसिक्खो ॥ १५ ॥ सा धणगिरिणा भणिया, भद्दे ! नालीयमेयमम्हि मुणी। होहामि निव्विलब्ब, ज रोयइ त तुमं कुणसु ॥ १६ ॥ पारद्धो विवाहो, धणविच्छड्डेण गरुयकोड्डेण। उवरोहेण पियराण, पाणिगहण कय तेण ॥ १७ ॥ पेच्छह महाणुभावा, दूरविरत्ता वि विसयसगेसु। अणुरत्ता विव उवरोहवसगया हुति कज्जकरा ॥ १८ ॥ तक्खणवत्तविवाहो, भणइ सुनदं समागयाणद। सुदरि ! सपइ म मुंच, पुव्ववुत्त विचिंतिता ॥ १९ ॥ सा तमि पोढपणया स, तीए सुविरत्तचित्तवित्तीओ। वहवो रत्तविरत्ताण, ताण जाया समुल्लावा ॥ १२० ॥ ता जाव तीए भणिय, पिउगेहपरम्मुहीए मे ठाण। त वा तुह जाओ वा, न कोई अन्नोत्ति चिंतेसु ॥ २१ ॥ “ जेण कुमारीण पिया, जोव्वणभरमारियाण भत्तारो। थेरत्ते पुत्तो पुण, नारीण रक्खओ होइ ॥ २२ ॥ ” इय निसुणिय तव्वयणो, बधवलोएण तह य इयरेण। तह उवरुद्धो सो जह, नदणलाभुम्मुहो जाओ ॥ २३ ॥ घोलीणेसु दीणेसु, केवइसु पहाणसुविणेण। सो सुरजीवो तीसे, गब्भमि सुओ समुप्पन्नो ॥ २४ ॥ निच्छियपसत्थसुयलाभमंगल धणगिरी सुनदमिण। भणइ सहा-

णो होही, तुह एस सरूवओ पुत्तो ॥ २५ ॥ पुनरह— अहह महं कह णु दुक्खी ? अम्मा संसारसागरे खित्ता । एण्हि ण इमसे पोत हेतेण निमज्जदि निरुत्तम् ॥ २६ ॥ अहवि सिसुओ तीए, अबोहिय सव्वजीवजणविरई । महया विप्पडिबंधे [illegible] ॥ २७ ॥ सिहगिरिओ समसे [illegible] । सुपसत्थेसु महासिद्धि–बहुमाणेण [illegible]
॥ २८ ॥ [illegible] तह सुवेसओ । बोहिज्जव पुरंदरविसिम रयणिंगायं [illegible] ॥२९॥ [illegible] तीए एसे परोप्परं भणइ । अह न पिया [illegible], पुत्तो पुत्तो [illegible] ॥ ३० ॥ ता [illegible] सव्वी [illegible] गयो सुणइ । महिलाण [illegible] वाईसरणो [illegible] जाओ ॥ ३१ ॥ चिंतेइ य पच्चक्खं, [illegible] एसा । [illegible] हवेमि तो इसे ॥ ३२ ॥ [illegible] रोवेइ [illegible] कह य एसा । सुणइ [illegible] ॥ ३३ ॥ एवं [illegible] सिहगिरिगुरु [illegible] । [illegible] ठिया, विहरिय [illegible] ॥ ३४ ॥ एते [illegible], वयगिरि–समिया [illegible] सिहगिरि । भयवं ! [illegible] गिहे जामो ॥३५॥ [illegible] ते [illegible] । ता ता [illegible], किंचि [illegible] ॥ ३६ ॥ गुरुराह मज्झ [illegible] । ते [illegible] मई जाओ ॥ ३७ ॥ दो [illegible], गिहे गया ता वि [illegible] । [illegible] न पयोइ ॥ ३९ ॥ इय [illegible] य [illegible], [illegible] वर [illegible] । [illegible] पुण [illegible], जणो इमो [illegible] ॥ ४० ॥ [illegible] किंचि [illegible], इय [illegible] तीए [illegible] । [illegible] सो बाले [illegible] हिओ ॥ ४१ ॥ [illegible] न रोवइ, बालाइ बालो [illegible] । [illegible] गुरुपयमूले, [illegible] सो गहओ ॥ ४२ ॥ [illegible] भूमिमइ सूरी । भरियं [illegible] परिमाणियम एवं पयारेइ ॥ ४३ ॥ सो वि य भूमिगओ वा बालो [illegible] । [illegible] वइरमिमं, तं [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] मइरित्तो

भणइ। सारक्खह सुयमेय, ज पवयणपालगो होही ॥ ४५ ॥ वइरुत्तिय से नाम, विहिय समणीण सो वसे विहिओ। ताहे सेज्जायरमदिरमि निहिओ स तहिं सिसू ॥ ४६ ॥ जइया गिहवालाण, न्हाण थणपाणमडणाईय। कीरइ तया इमस्सावि फासु- एण विहाणेण ॥ ४७ ॥ एवं सो सवट्टइ, सव्वेसिमईव चित्तसतोसी। सूरीं बाहिं विहरइ, त जणणि मग्गिउ लग्गा ॥ ४८ ॥ निक्खेवगो इमो णे न, समप्पेमो दिणे दिणे सा उ। थणपाण कारेई एय, जाओ तिवरिसो सो ॥ ४९ ॥ तत्थागयम्मि सूरिम्मि, अन्नया सा वि वायमारूढा। ताए तमणप्पिते, ववहारो राउले जाओ ॥ १५० ॥ पुट्ठो य धणगिरी पत्थिवेण स भणइ मे सह- त्थेण। दिन्नो इमीए नवर, पुर सुनदाए पक्खमि ॥ ५१ ॥ रन्ना भणिय तणय, मज्झ पुरो ठाविऊणमुल्लवह। जं सरइ तस्स एसो, पडिवन्नमिमेणमेयति ॥ ५२ ॥ बालजणस्सुचियाइ, खेल्लावणयाइ णेगरूवाइ। गिन्हइ जणणी सिसुलोयलोयणाणदाईणि ॥ ५३ ॥ पत्ते पसत्थ दिवसे, दोन्नि वि वग्गा उवट्ठिया निवई। राया पुव्वाभिमुहो, दाहिणओ सठिओ सघो ॥ ५४ ॥ वामेण सुनदापरियणेण सव्वेण अणुगया ठाइ। भणइ निवो मह मेरा, तुम्हाणमिमाणति ॥ ५५ ॥ जाए दिसाए बालो, निमंतिओ जाइ तेसिमेवेसो। धम्मो ज पुरिसवरो, जणओ वाहरओ ता पुव्वि ॥ ५६ ॥ इय भणिए नरवइणा, नागरगजणो भणेइ कयनेहो एसो पढम चिय, एसु भणउ ता अम्मया पुव्व (पढम) ॥ ५७ ॥ तह माया दुक्करकारणित्ति अइमुच्छसत्तजुत्ता य। ता सा आसे यसहे, करि करहे रयणमणिरचिए ॥ ५८ ॥ दसित्तु सुकोमलनेहलेहिं करुणेहिं जंपियव्वेहिं। अइदीणमुही त वइर !, एहि इत्तो इम भणइ ॥ ५९ ॥ तो त पलोयमाणो, अच्छइ जाणइ य जइ इम सघ। अवमन्नामि सुदीह, तो ससार परिभमामि ॥१६०॥ एसा वि य पव्वज्ज, मइ पव्वइयमि नियमओ काही। इय चिंततो तीए, तिक्खुत्तो सद्दिओ नेइ ॥ ६१ ॥ भणिओ जणएण तओ, रयहरण नियकरे करेऊण। कमलदलदीहलोयणजुयलो ससिमडलमुहो य ॥ ६२ ॥ जहा—जइ सुकयव्ववसाओ, धम्मज्झ- यमूसिय इम वयर !। गिन्ह लहु रयहरण, कम्मरयपमज्जण धीर ! ॥ ६३ ॥ तुरियमणेण गतु, गहिय लोगेण जयइ धम्मोत्ति। उक्किट्ठिसीहनाओ, कओ तओ चिंतए जणणी ॥ ६४ ॥ मह भाया अह भत्ता, सपइ पुत्तोवि पत्तपव्वज्जो। कस्स कए गिहवासे,

वसमि तो सावि पव्वाइय ॥ ६५ ॥ परिवज्जियपावपावो एमेव वि संजओ स संजाओ। साहुमिसासे परिओ जाइवि म विहारजोगोत्ति ॥ ६६ ॥ निमसंतो सो वासि समीवेसे मुणइ भेगाई। एक्कारसवि कमेवीव ताय तेगोवम्माणि ॥ ६७ ॥ गणपधाओ पयसधमणुसरइ मई वयासिद्दा तस्स। वाओ य अणुवरिओ ठविओ गुरुणा मिवसमीवे ॥ ६८ ॥ विहरेता तेअविह गया ठिय वाहिरंमि उज्जाणे। कइयावि विम्मघारं सुहुज्झिारं पवइ वासे ॥ ६९ ॥ मिक्खायरियाए पत्तो-पत्ताइ म कंपि सामुणो धम्मं। तस्स सम्माइंवा वडरस्स बयसय पुण्णि ॥ १०० ॥ ताय कंईवि तरेसपरिओ पेच्छिऊण सो तेहि। परिपाविओज्झुकेमा मओ वि य ठंमि संजाया ॥ ७१ ॥ तप्परिणामपरिकम्मइरे ताहे भविषु गामिगमा। तत्थ महस्से तमेवा(अ) भूमियाले विमालेवि ॥ ७२ ॥ संसिद्धमवपाल्प, ताहे ठ महग्गुमुत्ती पवाया। आमवति पम्मो सो पमो गुरुवपमुओ ॥ ७३ ॥ मंमं मंमं वासं पवइत्ति निवत्तए गमो ठमि। ताव ठिवं सत्ववि ताव विविध्ववाय हूरं ॥ ७४ ॥ वइये वि गमो ताहे वहेउ कुमार विम्मसुयमोग। एमागोवर तत्थ एमया पुरस्समसमेवे ॥ ७५ ॥ केवं पुण पओगी कमसे पहुसे य पामसो एसो। मापेय परविरयपडिवय-मक्वसेयेपव्वेयपवि ॥ ७६ ॥ जयंतविरवोसम ताहे मायं ताय इमे वैया। सो ममे वेयानं कयपमोवो इमो वोइ ॥ ७७ ॥ मो पडिवजं ठ तेय, ताय मयाइ सो भगे पुण्णो। इय ते मग्गंमि ठ एरकुमागाय पओमोवज्मे ॥ ७८ ॥ वेयमिवमविजे तिंति तस्स वे समयाउ समपवि। निम्माणि मायुसावि य विजंतवि जणेगमवाणि ॥ ७९ ॥ पुणावि य मेहुमासे, समामुमि गमं विपंतवि। अणुमेहिं वे विय वेया पुव्वं च वयमोगे ॥ १८ ॥ विहिय सप्पावे भगवंमि पविसेइपेमि विसेसे। विजं विपंतवि महालंबि गमनवमगयं ॥ ८१ ॥ वीय विजा विज्जाए, पविओ जा माणुसुत्तरं वेउ। न एविज्जइ पमुपविवा वि वेयणवसमूहेण ॥ ८२ ॥ एवं स पाडलमे वि ठयमयसमुप्पाय भेगाण। विहरइ पुव्वहिं सहिओ, पुरनगरगामेसु ॥८३॥ " पाडलपरि एको पवा पयनुसरि मूढवमम्। ठेमस्स सह तावन्तो, पवा कुलोपमुम्मे ॥ ८४ ॥ " समणीमवसंमि ठिएण, तेण गहियमवि वामि वंपवि। पगसमाओ पपमममणुसरममतस्स वामि पुण्णो ॥ ८५ ॥ साहुसमीवे वावारं कुसपयं पोइ पुण्ण

अज्झावगेण
गय। जो कोइ तपि गहिय, कन्नाहेडेण तेण लहुं ॥ ८६ ॥ अप्पपयासेण चिय, पाएण वहुस्सुओ स तो जाओ। अच्छइ अन्नंमि दढ, कओव-
अमुणिय, तब्भावेण जया भणिओ ॥ ८७ ॥ पढसु इम सुयमेसो, त चेवाऽऽलावग वि कुट्टितो। वाहिं वियारभूमिं, साहूसु य भिक्खणट्ठाए
ओगो पढिज्जते ॥ ८८ ॥ अह अवसरमि कमि वि, दिणद्धसमयमि सूरिसु गएसु। नियबालकालचापल-कुऊहलेणं निहित्ताओ ॥ १९० ॥ साहूण
॥ ८९ ॥ वइरो वसहीए रक्ख-गोत्ति सठाविओ तओ तेण। मज्झे ठाउ सयमेव, वायण दाउमारद्धो ॥ ९१ ॥ अगाण पुव्वगयस्स, जलहिसरोहग-
विंटियाओ, मडलिपरिवाडिमणुसरतेण। चिंतति लहु मुणिणो, समागया अन्नया कहेस रवो। चिट्ठति
हिरसद्देण। एत्थतरमि गुरुणो, पत्ता निसुणति निग्घोस ॥ ९२ ॥ एसो वइरस्स किंचि ओसरिय। तस्सखोह भएणं, निसि-
जाव निहुया, वहि ठिया उवगय ताव ॥ ९३ ॥ नूणं न साहुसद्दो, सव्वाओ विंटियाओ, गहिओ गुरुहत्थओ
हिया गुरुसरेण कया ॥ ९४ ॥ अइदक्खत्तगुणाओ, त सह सुणिय ठाविया ठाणे। एसो ता मा परिभवंतु ॥ ९६ ॥ एयं
दढो ॥ ९५ ॥ विहिय पायपमज्जणमह सीहगिरी वि चिंतए एव। अइसयसुयरयणनिही, रयणीकाले मिलियाण, सजयाणं
एए साहू, इय जाणावेमि एय गुणगरिस। जेणं एय गुणोच्चियमेग विणय पउजति ॥ ९७ ॥ अच्छीहामो तो जोगवाहिणो भणतेव। अम्हाण
गुरुहिं कहियमिण। जइ अम्हे वच्चामो, गामे दिवसाणि दो तिन्नि ॥ ९८ ॥ गुरुजणाऽऽसासा। ते तं वयण गुरुणो,
वायणाए, को होज्ज गुरु भणइ वइरो ॥ ९९ ॥ पयइए विणयलच्छीकुलगेह विहिय वइरो किर दाही वाय-
तहत्ति मन्नति मुणिसीहा ॥ २०० ॥ अन्नेव भणिप्यते च—"सीहगिरिसुसीसाण, भद्द गुरुवयणसद्दहताण। विणय वइरस्स पकरिंति ॥२॥
णति नय कोविय वयण ॥ १ ॥" पत्ते पभायसमए, कयवसहिपमज्जणाइ कायव्वा। कालनिवेयणमाई— "पाऊण पाणिय सर-
सिरिसीहसूरिअणुजेट्ठ–समुचिया सव्वसाहुकप्पेहिं। तस्स निसेज्जा रइया, स तीए सुमिल्लिट्ठुमुवविट्ठो ॥३॥
धराण पिट्ठिं न दिंति सिहिडिंभा। होही जाण कलावो, पयइ च्चिय साहए ताण ॥ ४ ॥" ते वि जहा गुरुणो, वइणाइविणय
तहा पउंजंति। सो वि कयदढपयत्तो, सव्वेसिं वायण देइ ॥ ५ ॥ जे तत्थ मंदमइणो, ते वि य तस्साणुभावओ खिप्प।

समय छउमत्थकालम्मि मज्झे वि समसंसे वि ॥ ६ ॥ जिणवरिंदस्स जाया ते साहू पुव्वमहिगय वि तओ। जिणसमत्थमाणम्मि पओगे य पुव्वम्मि ॥ ७ ॥ जइ पुव्वं सो अम्हाण मासखमणाइ [illegible] अणुकारिओ। तो ते सत्तोसविया सव्वंवि जइ कय वय दिणाणि ॥ ८ ॥ अहेव गुरू निद्धुवि य साहू एस अम्ह सुयकेवी। पावेण समवि वै विरेण अम्मइ गुरुवयणसे ॥९॥ पढमाए पोरिसीए, सुत्तो सारेइ ते तओ तेसिं। सो [illegible] जिणकप्पाइओ जाओ ॥ २१ ॥ पच्छा दुवि सम्मपाई, निम्ममस्सामाइ जिम्मसगुणेहिं। पुव्वमहियपाइं जइ, सव्वेहिं मणिविप्पमाणाइं ॥ ११ ॥ वइरगुणे वाल्ववियए समागया सूरिणोऽणु पेसं। [illegible] पओ वि, परिणमिज्जमाणसविवज्ज ॥ १२ ॥ पुव्वंवि पावमविए, साहू सूरिओ सुद्देण सवसमए। सुमाय ठेवि पय सव्वंवि सुयसमग्गुणमयस्स ॥ १३ ॥ पओ विय य वीरए, वायणायरिओ तओ गुरू भणइ। पओ होही निययमा मणोरहपूरओ तुम्हं ॥ १४ ॥ तुम्माहिंतो मा भवह, परिमर्व [illegible] पओ। इय वायणमक्खेवं, एयस्स वयं गया गम्मं ॥ १५ ॥ [illegible] तरुकेऽपि नरस्सिरत्थविं कमठे। निरवसमत्थीकम्मि, [illegible] पढिउं [illegible] ॥ १६ ॥ "

एपरइ य एस जोगो बहूइ सुत्ताणस्स पणमस्स। अम्हा [illegible] गहियं सुयसमेण ॥ १७ ॥ असारकम्मजोगो ता ते करेमि सो य इमो। पढमाए पोरिसीए, वाय इयमहियाई तए ॥ १८ ॥ अम्बंव मेहावी, तमइयं सिक्खइ य दिणमझे। एत्थ निरिज्जइ वइ पेय सूरिस्स भणमाणं ॥ १९ ॥ बीयाए पोरिसीए, अहेइ अत्थं च तेण दोण्हं पि। कम्माण समुत्थिओ कम्मेणमेसि दिणा वेंति ॥ २२ ॥ " चत्तारि हुंति सीसा अइयाल-सुयाय-दिलियाइ त्ति। तिण्णि कमेणं ईसिं तव्वमिरिहिओ कुविगम्मे ॥ २१ ॥ गुरुओ गुणेहिं बाहिओ, पढमो बीओ सम्मयमओ देव। तइओ य किंचिवूणे अत्थसमसरिसो चउत्थो य ॥२२॥ "

एवं फग्गुमित्ताणं पुणा वि मवंति तत्थ वइरगुणी। माइयाओ सीहगिरिं, पइव जेणं पवपमत्ता ॥ २३ ॥ जे केवि संकिय आसि, तस्स ते वायणसियस्स तेय। मज्जिमो मिहिलाओ, बावइओ आसि निययगुरुस्स ॥ २४ ॥ दुरियाइं अवहरेउ गणमागरत्ना एसइमेसुं ते। मिहरेण संपत्त, मारं सिरिसिसई मम ॥ २५ ॥ तइय अज्जोगीए, आयरिय मरगुणयमाओ। दुरवणयसेण

ठिया, पाढिंति दसावि पुव्वाणि ॥ २६ ॥ तेसिं सयासे वइरो, गुरूहिं सघाडगेण पट्ठविओ । सो सुमिण रयणीए, पासइ जह खीरपडिपुन्नो ॥ २७ ॥ पीओ केण वि आगतुएण सिग्घं पडिग्गहो मज्झ । पत्ते पभायकाले, कहिओ साहूण सो गुरुणा ॥ २८ ॥ ते वि अलद्धे लक्खमि, अन्नमन्न कहेउमारद्धा । सुविणफल तो गुरुणा, भणिय तुब्भे न याणेह ॥ २९ ॥ सुमहामेहो नहीं, पडिच्छओ कोवि अज्ज सो मज्झ । सव्व पुव्वगगसुयं, गिण्हिस्सइ सुमिणफलमेयं ॥ २३० ॥ सयमवि नउरसामी, निमाए तीए पुरीए वाहिंमि । वुच्छो उक्कठियमाणसो ण तेसिं गओ वसहिं ॥ ३१ ॥ कुसुमपणेण व पगे, सेहोव्व निहुडिमडलेण तओ । सतुट्ठेण स दिट्ठो, सुयपुव्वो सूरिपवरेण ॥ ३२ ॥ नाओ जंस वइरो, महिमडलमंडणु भवजमोहो । गुरुनुयपसायपुन्न, सव्वगालिंगिओ विहिओ ॥ ३३ ॥ पाढुन्नगविणयविक्खाणपुव्वग सो गुणीहिं पढिगन्नो । पढियाणि कमेण इमाति, तेण पुव्वाणि सव्वाणि ॥ ३४ ॥ जत्थुद्देसोऽणुन्नावि, तत्थ किज्जइ कमो इमो अत्थि । दिट्ठीवायमहागमसुत्त गण नओ पत्ता ॥ ३५ ॥ सीहगिरी वइरो विय सिरि-दसपुरनयरगह समाढत्ता । आयरियपयपइट्ठा, सिरिसीहगुरूहिं वइरस्स ॥ ३६ ॥ ते पुन्नसगया नम्म, उभगा अवसरे सुरा पत्ता । विहिओ महामहो तेहिं, पवरसुरपुण्फगधेहिं ॥ ३७ ॥ उवल्झायरियपओ, सामन्तरणागमोव्व अहियय । कुरियपयावो जाओ, भवियभोरुह पनोहयरो ॥ ३८ ॥ जओ—सामावन्नसिक्खी, जइवि हु नवि कत्थए गुणे नियए । अकुव्वतो वि मुणिज्जइ, पगई एसा गुणगणाण ॥ ३९ ॥ भमरेहिं महुयरीहिं य, सूइज्जइ अप्पणो य गधेण । पाउमकाउकरानो, जइवि निगूढो वणनिकुंजे ॥ २४० ॥ "कत्थ व न जलइ अग्गी, कत्थ व चंदो पयासए न जए । कत्थ वरलक्खणधरा, न पायडा हुति सप्पुरिसा ॥ ४१ ॥" सीहगिरी दिन्नगणो वइरस्स समागयमि सगमि । गयमत्तपरिणाओ जाओ देवो महिड्ढीओ ॥ ४२ ॥ भयवपि वइरसामी, सएहिं पचहिं मुणिहिं परियरिओ । कुणइ विहार सो जत्थ तत्थुच्छलति मया ॥ ४३ ॥ तिहुअणगुणिजणगुणकित्तणाणि सजणिय तिव्वतोसाणि । नह अणन्नसुयगुणरयणभायण सयइ इमोत्ति ॥ ४४ ॥ अह अत्थि कुसुमनयरे, धणसिट्ठो सुद्धउ पावियपइट्ठो । तस्स मणुन्ना भज्जा, लज्जासोहग्गगुणगेह ॥ ४५ ॥ ताण य सुया नियदेहरूवलच्छीए उज्झियमाहप्पा । सयर-

दुस्सुंतपीन, पि कमणं कोम्मले पत्ता ॥ ४६ ॥ तस्स वयणामयसायर, सम्मुणीओ ठिमा पडिवस्स । वइरस्स गुणे सपासुमिम्मछे सम्मुवंति बाह ॥ ४७ ॥ एस कसीरिव्वसीसो बहुस्सुमो एस एस पसमदूठो । एसो य गुणनिहाणं, एम सरिसो परो नत्थि ॥ ४८ ॥ इय गुणगुणे सुणंती, सा रम्मगुणागपणा बाय । पइंमि वइरसमाणसंमि सिपरं मणइ एम ॥ ४९ ॥ जइ मज्झ वरो वइरो होही वर्ष विवाहसीहेमि । वासमवाम्मपासे जस्मो मे जलाय सरणे ॥ ५० ॥ ववमइवसंभूयाओ मिति वरगम म सा समीहेइ । सारीसि सम्मुणीओ वरा न वइरो विवाहेइ ॥ ५१ ॥ सा भणइ जइ न वइरो म परिणिसाइ तया वाईपि बुर्ग । पव्वज्जं पविसस्सं इय मइ मणभिप्पकमपाओ ॥ ५२ ॥ मयवं पि वइरसामी, पाडलिपुत्त कमेण संपत्तो । गुणिगुणगण-पमस-पसर-सवपसविपमयो राय ॥ ५३ ॥ मिपपरिवारसंजुत्तो समागओ सम्मुहो समिकतेइ । बहुगजगयरहेम सम्मुणो नयरमिपसिओ ॥ ५४ ॥ तम्मोपारसपीरे, वइरे पविसय मुणी मणुवसमो । पुणइ त्रिमेस मयणं इमो य दे तिवि जाणो सो ॥ ५५ ॥ एवं बहुजमसिलोसमेण रामा पुरस्स कोमम । दूरमुणिंसियसंतो पत्तो मुणिसमणुगओ ॥ ५६ ॥ बहु बहुमायसहलं महिमंडल-मिलिय मयणिम रहा । अभिवंदिओ य अभिवंदिओ य सम्मयमाणमोहि ॥ ५७ ॥ नमयज्जाणमि ठिओ दरिसवपरिस्स तओ देण । पारद्धा धम्मकहा वयरस्स संमोहमिमाणी ॥ ५८ ॥ " सम्परिसमइपिहरे सम्मपरिसपंस पिविसमुदुहरे । सम्मसंजोग विजोगे नत्थि सुहं किंपि संसारे ॥५९॥ " अओ— परसमवमस्स पोइसिरमाणसमिहुसंभवं जीवं । मोहमरुमीरसमवडियव पयाए पेम्मपरिम्मिमा ॥ ६० ॥ नयवपयरसिहरपवडि-विसमसिरपसिवेह संबंध पच्ची । पडिकमयमस्सरास मरणं मरमोम-मारेमा ॥ ६१ ॥ बविमारमिबमससप सुहासुहा कम्मपरिणई जेब । ता मिपकम्मे मोत्तुं सरणं महु किंपि संसारे ॥ ६२ ॥

" कम्मु बन्धड बन्ध पाणि एसह कम्मेण य कम्मु करु बन्मि निएतपु कम्माइ । बहुमिम्मसह कम्मु परि कुणइ तित्यय दुम्माइ निसंमह, मिम्मरसूरिपि मोगमुहकरि वगड़ देवाई मोक्खसोक्ख के साहीपहिं कम्मु सुपह ईणाई(?) ॥ ६३ ॥ "

अच्चत हयहियओ, जाओ राया समं पुरजणेण । नियमदिरमणुपत्तो, वइरसरूव पयासेइ ॥ ६४ ॥ अतेउरीओ ताहे, विम्ह
इयमणा निध भणतेव । अम्हे वि तस्स रूव, दट्ठुमीहामहे नाह ! ॥ ६५ ॥ अइतिव्वभत्तिपरवसमणेण रन्नाऽणुमन्निया सव्वा ।
अतेउररमणीओ, पत्ताओ वइरसामिपुरो ॥ ६६ ॥ सेट्ठिसुया अइसुसिलिट्ठदसणा निसुयवइरवुत्तता । उम्माहिया सुदूर, कइ पेच्छा-
मित्ति चिंतती ॥ ६७ ॥ विन्नवइ ताय ! नियमा, सुभगाण सिरोमणिस्स वइरस्स । देहि मम अहवा, जीवियस्स नीरजलिं मज्झ
॥ ६८ ॥ सव्वालकारविभूसिया, कया अच्छरव्व सा सकव । गहिया य अणेगाओ, धणकोडीओ तओ तेण ॥ ६९ ॥ पत्तो
वइरसमीवे, कहिओ धम्मो सवित्थरो गुरुणा । भणइ जणो सरसोहग्गमग्गल न उण रूवपि ॥ २७० ॥ जइ नामरूवलच्छी,
हुति एयस्स तो न तिजए वि । असुरो सुरो व विज्जाहरो व इमिणा समो हुतो ॥ ७१ ॥ भयव नाऊण सभाए, माणस
तक्खणा विउव्वेइ । पउम सहस्सपत्त, कचणमयसुज्जलुज्जोय ॥ ७२ ॥ तस्सोवरिं निविट्ठो य, विज्जुपुजोव्व भासुर रूव । निम्मेइ
मयणमयहारिलायन्नपुन्ननिहिं ॥ ७३ ॥ अह भणइ जणो सुमणोरूव सहाविय इमस्स इम । इत्थिजणपत्थणिज्जो, मा होमि न
दंसिय पढम ॥ ७४ ॥ भणिय भूवइणा वि य, अहो इमस्सेरिसो अइसओत्ति । ताहे अणगारगुणे, इमेरिसे तस्स पन्नवइ ॥७५॥
तवगुणओ अणगारा, जवुद्दीवाईए असखेज्जे । भरिए करिंति वेउव्वियाणमसमाण रूवाण ॥ ७६ ॥ ता तुम्हाणमेत्तियमेत्तेण वि को
चमक्किओ चित्ते । एत्थावसरे वदिय, धणसेट्ठी विन्नवेइ पहु ॥ ७७ ॥ त जियवम्महरूवो, एसा वि य सुदरीण सव्वाण । मह
धूया धुणइ धुव, सोहग्गमडप्फरमणप्प ॥ ७८ ॥ ता कुण पाणिग्गहणं, जमुच्चियकमवत्तिणो महामइणो । तो सो सामी विसए,
विसोवमे कहिउमाढत्तो ॥ ७९ ॥ कलुणा नराणमेए, भोगा भुयगव्व भीसणाभोगा । महुलग्गअग्गधारा, करालकरवाललिहणसमा
॥ २८० ॥ किंपागाण व पागा, कडुयविवागा इमे मुहे महुरा । भोगा मसाणभूमि व्व, सव्वओ भूरिभयहेऊ ॥ ८१ ॥ किं
वहुणा भणिएण, चउगइदुक्खाण कारण भोगा । ता किर को कल्लाणी, सल्लेसु व तेसु रज्जेज्जा ॥ ८२ ॥ एईए जइ पओयण
मत्थि मइ लेउ तो वय तत्तो । महया विच्छड्डेण, पव्वज्जा तीए पडिवन्ना ॥ ८३ ॥ भयव-पयाणुसारी, अज्झयणाओ महापरि-

नामो। मयरो कोप्पिओ गयकंतमसिमिलि विज ॥ ८४ ॥ तीए मारुप्पाओ, दह वंसगोरवतिमविरामओ। एग्गअसेणारवठे सं
वासो सो मयपगो ॥ ८५ ॥ पुष्पामो रेसाओ मनजण दहपमई मयणं। विहरंतो संपत्तो, पुम्मिसज्जे तस्स संजायं ॥८६॥
निहरिवं सवित्त, न तमो म कति वं वस मदवि। पज्जसमागपपत्तो मार्ण मयइ तो संचो ॥ ८७ ॥ किल्पाहिरे पुर्णमि
वि मम संघो वरगुलाय संचमो। मयूमघहोममाओ पवेउ मणं य पुव्वम्मि ॥ ८८ ॥ ताहे पत्तविस्सए, पडे पयपेइ जाव
सो संवं। गोम्मपिगाओ नत्तो ता सेमापरिसो तत्थ ॥ ८९ ॥ पासेइ ते मोइए, सिर कविसेय विहिरं मनइ। मयणं धाई
वि पुव्वं, वार्ण साहम्मिओ वामो ॥ ९० ॥ मम्मणारपरेम सामिवा सो वि ववअुमाओ। सम्मसागजीवहिंथं, दसं पुप-
मउसरीरेन ॥ ९१ ॥ साहम्मिपवगम्मसंमि मत्तप ममपा य एगसाए। परमवहणेमु न रता, तिल्पस्स पमापमा पय ॥ ९२ ॥
जह पारसामिसूरी पवमणभूसमपी गुणेकमिही। इय रम्मसे संपमि पुणइ ता सारमिम्मेव ॥ ९३ ॥ समयम्पुसिरोमविम्पा,
हरिवसहिय वरमिया विहिया। मयूमसम्मपुग्ग पवि पपइ गीवमय पय ॥ ९४ ॥ केइ य कमसमत्थ होंति समत्थ वि
न मम गीयत्था। सुसमत्थं गीयत्थं च तं नमंसामि मुणिसीहं ॥ ९५ ॥ सपुरिपुरीए पत्तो दप्पियपरसावयसमूयाए। कसवि
पुम्मिवयं समागय च पुप्पमपसमिद्ध ॥ ९६ ॥ दमम्मिव सद्दवनं मिप्पसहस्सनं च पासिसिप्पोव। पाइ मयरसवं निप निप
सेवयामि ॥ ९७ ॥ सव्वरयमिमहुमामे सहप दयरेहिं परिमसिवासि। पवा मिस्सगुमपो, मयरअया ससम पम्मे ॥ ९८ ॥
संपपरिसंमि सिवो मिपारयमरमगो मसो दवि। पुण्णम पुरे समसे, मिनजोइरममसोममण ॥ ९९ ॥ मण्णंतविपविसो,
वामो सम्मोवि सामगो लोओ। ताहे ससमगुरुओ समद्गिओ सरयसमिपुरे ॥ १ ॥ पुम्मेहिं सामि। किस्माहिरेहिं वार पप
पर्व मम होइ। प को मणो पसुमईए संपामसमसो ॥ १ ॥ एवं पहुपमारे, ममिमो सासममेव पमइओ। मासरीपुरीए
पविरहसंमि रेवाप ॥२॥ मायमपमसमसे पत्तो ससम पुप्पसपमिति। पवरमंगिरिपरमति मपमइपरमपरिमिमि ॥३॥ वामो
मरपमसिप-पुषे पुप्पसपरिसमासमम। मापसरीर पुमो निप्पमइ तम पुप्पनं ॥४॥ मपुणेम ससिहिर सम्म सिप भासगस

जहसख। एस जहण्णो मज्झो, पगिट्ठओ मासिओ कुभो ॥ ५ ॥ तडिओ मालागारो, पिउमित्त पिक्खिऊण सभतो। अब्भुट्ठि-
ऊण पभणइ, केणइ तुम्हाणमट्ठोत्ति ॥ ६ ॥ भणइ इमेहिं कज्ज, कुसुमेहिं अणुग्गहो मएतो मे। तडिण्ण भणित्ता पणयसारसुयढो-
इयाणित्ति ॥ ७ ॥ तुब्भे जहापवत्त, गुफेह हुयासधूमसंगेण। कामुयपायाणि हवतु, ताव घेत्तु पडिनियत्तो ॥ ८ ॥ चुल्लहिमवत-
पउमद्दहमि पत्तो सिरीए पासमि। तस्समय देवगणनिमित्तमेईए सिरपउम ॥ ९ ॥ छिन्न सहस्सपत्त, गधुद्धुरमागय तय दट्ठु।
वन्दित्ता तीए निमतिओ, इमो तेण पउमेण ॥ ३१० ॥ नेत्तु त जलणघर, समागओ तत्थ दिव्वसठाण। ऊसियझयचिधसहस्ससकुल
किंकणीरम्म ॥ ११ ॥ विहिय विमाणमतो, निक्खित्तसुयधिकुसुमसभार। जभगसुरपरियरिओ, दिव्वेण गेयसद्देण ॥ १२ ॥
पूरितो गयणयल, सिरउवरि विसारीउद्धमुहकमलो। सपट्ठिओ स भयव, खणेण पत्तो पुरीदेसे ॥ १३ ॥ तो कोऊहलमालोइऊण
त लोयणाण सुहजणय। सजायसभमा भिक्खुगाण सड्ढा भणतेव ॥ १४ ॥ अम्हाण पाडिहेर, सुरेहिं सपाडियत्ति सव्वेनि। तूर-
रववहिरियदिसा, अग्घ घेत्तु पुराहिंतो ॥ १५ ॥ जा निग्गया पडिच्छति, ताव तेसिं विहारमइगतु। अरहतघर पत्तो, देवेहिं कओ
महो तत्थ ॥ १६ ॥ तहसणाओ जाओ, वहु यहुमाणो जणो पवयणमि। राया वि समाणवियचित्तो सुस्सावगो जाओ ॥ १७ ॥
पवयणनिमित्तविज्जा-धम्मकहावायमतपमुहेहिं। इय सासण पभावइ, को अन्नो अजवइराओ ॥ १८ ॥ एगण चेव सुपसत्य-वत्थु-
पत्थावपुन्नजोगेण। परमोवगारगुरुणो नियगुरुणो तेन्नि सुमरेमि ॥ १९ ॥

"आशावास समयसमिधा सचयैक्षीयमाने, स्त्रीनिर्वाणोचितशुचिवचभातुरीचित्रभानो।
प्राजापत्य प्रययति तथा सिद्धराजे जयश्रीर्यस्योद्वाहं व्यथित स सदा नन्दताद् देवसूरि ॥३२०॥"

अह विहरतो दाहिणदिसाए सामी समागओ वइरो। जिणसासणस्स देसेसु, जगमो जससमूहो व्व ॥ २१ ॥ मिमाहियमि
जाए, जईहिं सुठी समप्पिया पहुणो। तेणवि भुत्तुत्तरभक्खणाय ठविया सवणदेसे ॥ २२ ॥ पम्हुसिया सा पाउसियस्स आवस्स-

वस्स करेमि। गुरुपच्चिय पडिलेहणेण पडिया पुरो हंसि ॥ २३ ॥ उवओगो तो जाओ अहो पमाओ अणप्पपुण्णो मे। को
एवमो पमाए, ताऽसरण गुरुय भव ॥ २४ ॥ चिरमप्पच्चिमवय-सवसत्तरिमेत्तमस्स मिरे। आउहप्पहराय ...
कुअय वस ॥ २५ ॥ अह नारसवारिसिवं कुम्मिकरे मावि आमिव पढुमि। दूरंवमप्पु सीसो पढुविओ वइरसेणोत्ति ॥२६॥
भणिओ वच्छ ! त वत्त कमाई पहरि करलमोसखेण। सिद्ध सीरिं मिवम्प, तदिअमो मुभिक्खत्ति ॥ २७ ॥ अह कुम्मि
क्खे वाए, गम्मागमनगारपुरवयरीसु। अन्नमहाय गयाए, अन्नवहा वेरिसी होइ ॥ २८ ॥ गुरुसुविए गुरुसुमिओ कुर्ण वे पर्व
गले अवो जाओ। अकरपम्म प निवाआणं य अम्मो दुहा सम्मो ॥२९॥ मिस्सायवरेहि मिस्सागतमंपि दीरए १दरेण। २पुर
एवायसहस्स रेवमरेकेहिं आयओ ॥ ३१ ॥ परिहरइ अम्मया सिमुसुवम्भि मंपि वे सुमो तवम्मो। सुम्मइ ममागु करोहि-
कोविक्सपरकस्सपरो ॥ ३१ ॥ पिसिवासी सजाय कोवा कोयऽऽमिसाऽऽसिवो के वि। तं सायवायसायं, सुमिक्खसममपिसु
वसेवि ॥ ३२ ॥ इव मके गुरुएके मवम विजमवेणमाणेरे। आइवसिं पइवा-मरंपि अप्पेइ साहुण ॥ ३३ ॥ भणइ य वार
सवारिसाई, धरिसं अणसण मोवम्मं। ब अभिस्सइ मिगया मवगुणसहस्सन मि सुमेसु ॥ ३४ ॥ जइ अम्मइ पमत्त संजम
वाणाहिं सुंजइ तवो वं। अह संजमवावेसया वा पवरसेइ मवयम्मं ॥ ३५ ॥ ताहे मवंमि सव्वे, मवेमेपम सामि! अह्मत्थु।
अवसमविहियऽऽमसत्तं साहिस्सामो महापम्मं ॥ ३६ ॥ आयमेमि संजमसयमसमरियरेण परिवरिओ। सिरिवइरसामिसीहो
वो वबो समयं गंमं ॥ ३७ ॥ अणुमग्गमवेरणं, पम्मकरेतस्स वस्स आदिट्ठेमि। देवगुरुवरएमुसरणपरायणो पयसरविमो ॥३८॥
मवमं विमुयसमणमवेसया देवमोक्खमरेण। सतपिसम साहु-महासमाहिं अदिट्ठिगु ॥ ३९ ॥ विहिपयसला साहु आयमेकनतम-
गुम्मा सव्वे। मेयम्म निप्पकंपा सुभिवासमसिक्खमु आसीण्म ॥ ४० ॥ वइरेण वारिओ पुण्णमेव एगो अहेसि साहुसिसु।
बाल वि तं वप्पकम्मु ! अणयसु पक्षेव वार पुरे ॥ ४१ ॥ वहमि अपविस्सरमाणो गममसगरस्स मज्झयारंमि। वेमविहम्म म

१ दरेण २ पुरस्स ५जम्ब एवं सिद्धि अन्नमो D।

सगेउ लग्गा, पडिणीया देवया तओ तत्थ। साहुअदिट्ठोऽणसणे, गिरिहेट्ठे चेव
मुक्को, थेरेहिं सय गया सेल ॥ ४२ ॥ अणुमग्गेणं लग्गो, समागओ सो वि खुड्डगो तत्थ। साहुअदिट्ठोऽणसणे, गिरिहेट्ठे चेव
उवविट्ठो ॥ ४३ ॥ अणगाराणमिमाण, म पेच्छताणमणसणासीण। न मणसमाही होही, इय दरिसाव न सो देइ ॥ ४४ ॥
मज्झन्हगिम्हउम्हाए, तावियाए सिलाए विउलाए। आसीणो स विलीणो, खणेण नवणीयपिंडोव्व ॥४५॥ पत्तमि तमि देवालयमि देवा
उवागया तत्थ। महिम कुणति तुट्ठा, तूररवाडवरसणाहा ॥ ४६ ॥ सोऊणमिण मुणिणो, चमकिया चिंतयति किं एय। जाणंति
जहा खुड्डेण, साहिओ उत्तमट्ठोत्ति ॥ ४७ ॥ दुगुणा गयसवेगा, सद्धासवधवधुरा धणिय। तो ते दढज्झाण-पहाणमाणसा चिंतय-
तेव ॥ ४८ ॥ जइ ताव खुडगेणावि, साहिओ साहुधम्मपरमत्थो। चिरपालियपव्वज्जा, किं न वय साहइस्सामो ॥ ४९ ॥ उव-
सग्गेउ लग्गा, पडिणीया देवया तओ तत्थ। काऊण सावियाए, रूव पुरओ ठिआ भणइ ॥ ३५० ॥ पसिउण पहू तुब्भे, अव्वो
सव्वेवि पारण कुणह। खाएह खडमडाइ, खज्जभोज्जाइ एयाइ ॥ ५१ ॥ तो त सामी सेल, अचियत्तावग्गहोत्ति मोत्तूण। आस-
न्नमन्नपव्वय-मारुढो सह मुणिसएहिं ॥ ५२ ॥ विहिओ काउस्सग्गो, सव्वेहिं खेत्तदेवयाए कए। पच्चक्खीहोऊण सा साहू नमइ
सव्वेवि ॥ ५३ ॥ भणइ अविग्घ सिग्घ, साहु ! साहह उत्तमट्ठमिह। परमेसरेहिं परमो, मह विहिओऽणुग्गहपसाओ ॥ ५४ ॥
सुविसालसिलावट्टेसु, तत्थ साहू ठिया जहा जोग। सिरिवइरसामिमुणि-कुंजरो वि पाओववेसेण ॥ ५५ ॥ इंदेण रहारूढो, चेव
सव्वे पयाहिणेऊण। पणया अइबहुवहुमाणसालिणा नाणझाणनिही ॥५६॥ तरुवरसिहराणि रहेण, जाणि कुज्जीकयाणि तेण तया।
अज्जवि तहेव चिट्ठति, ताणि खोणीहरे तमि ॥ ५७ ॥ लोएण रहावत्तोत्ति, तस्स नाम पणामिय गुणओ। सिरिवइरसामिआरा-
हणाए पावियपएसस्स ॥ ५८ ॥ अह सह गुरूहिं सव्वे, महासमाहीए तत्थ कालगया। उत्तमसत्ता पत्ता, ते देवत्तं विमाणेसु
॥ ५९ ॥ अत्थमिए तमि जिणे, स सासणुज्जोयणेक्कभाणुमि। वोच्छिन्ना दसपुव्वा, सघयण अद्धनाराय ॥ ३६० ॥ सो वइरसेण
साहू, साहुमई महियलंमि विहरतो। सोपारयमि पत्तो, नागलयापूगपडिहत्थे ॥६१॥ अहिगयजीवाजीवाइवत्थुवित्थारसुत्थिरा तत्थ।
नामेण मीसरी अत्थि, साविया भाविया धम्मे ॥ ६२ ॥ सा चिंतइ दिंताणं, णे काला एत्तिओ अइक्कतो। सपइ इममि पत्ते,

गमा ॥ " निग्गहरीहिं  गाहा ॥ निग्राहीमन्त्रिणोऽस्य गुणम् ? असमत्वादिग्राहिकत्वात्र न लिखितमिति । तथापि पदसमासो हरि गुणस्य विपुलस्य सुचरितेन सच्छ्रुतानेन हेतुभूतेन निग्रहो बसुदेवन्यमा आसीत् तस्मात्पदेन गुणप्रति प्रधानमिति गम्यते ॥५३॥
सहमहुतीरिं ति—सहमहमिसमानाप्यमिति । सहमेव भार्या मरेवमिति परस्परस्पर्धा दुर्गम्यमपि दम्पती करते वपद ॥५४॥
स्मारकं पुनरेवम्—

मगहाहम्मीमिहेअमीक्खमसरुसि सामिगम्मिमि । गोयमगुत्तो विप्पो आसि अभंगोत्थ गहसीणो ॥ १ ॥ तप्पमिईणीए गम्माग-धंमि पुरंमि छट्ठमासंमि । पंचत्व संपत्तो पवओ जम्मंमि जणणी वि ॥२॥ " वसहस्स माइमरणं धम्ममरणं च ओम्मकसस्स । वेरस्स पुत्तमरणं तिन्निवि गरुयाइं दुक्खाइं ॥ ३ ॥ " निवसयहसयपरिवज्जिओ वि जीवइ जमेस नाविसमो । जणांतरमज्झ-विद्दिय विद्दिओ सयाय ॥ ४ ॥ बहुमोरेण सवि, विद्धि सो ताइ सम्मजणवेसो । नरिंपगमे बहुममोण निकाया गिहसमिद्धी वि ॥ ५ ॥ जाओ य बहुसरिसो वंमपुष्फसरिसविसमपम्हुओ । निम्मसरिसनासिउट्ठो सुष्फट्ठिमभइमोहपेहो य ॥६॥ विम्मंसपयहमिम्म—वण्णमओ-विसमकयमासे । बंभवविसमसूो, बहुविविरयोमसेलाओ ॥ ७ ॥ विपिसकेकपरिहो दुप्परगमो-सिंघमुहाओ । मच्छीहिं मिणिहिंतो मिमरं पमाय महीमीडे ॥ ८ ॥ अह ममद्धो मगहापुरंमि माममगासरमहीमे । जम्मे करेइ मिवं निव्विसो मामओ पाओ ॥ ९ ॥ बहुसुविवाल सरम्मकपण पवरंम दुक्खेण सो । वेममिओ मारजणेण 'गयरम्मं दुक्खेण ॥ १ ॥ वयणसरंपयदुक्खगवमोरमेवसिरहार । बहुमो वेइ रसो पवमर गहरम्माए ॥ ११ ॥ ममु पाय जणिय पुर विसि सज्जाहा अइवराय । किं मरसि । वम्मसरो पिहु विसि कहेइ न दुट्ठ वेरि पुर जाणि ॥ १२ ॥ एव भणिओ सो विमओ

१ मिरो C D । २ मारुय C । कमारो D ।

जाणियवुत्ततेण, वुत्त तो माउलेणमिण ॥ १३ ॥ मा सुण जणभणियाइ, धूयाओ तिन्नि मह
न कुणइ पुव्व व कम्मगइरम्म । जाणियवुत्ततेण, वुत्त तो माउलेणमिण ॥ १४ ॥ तव्वयणाओ सुमणो, होउमिमो कुणइ सुट्ठु घरकम्म । पत्तो
सुरूवाओ । एयाओ सति तासिं, जेट्ठमह तुज्झ दाहामि ॥ १५ ॥ वच्छ ! इच्छसु एयं, भत्त भत्तारमइसुहसहाव । सा भणइ ताय ! न इमं,
विवाहसमओ, तो भणिया माउलेण सुया ॥ १५ ॥ वच्छ ! इच्छसु एयं, भत्त भत्तारमइसुहसहाव । सा भणइ ताय ! न इमं,
नियमा मरणे वि परिणेमि ॥ १६ ॥ पुणरवि विसन्नचित्तो, वुत्तो दाहामि वच्छ ! बीयसुय । पत्ते विवाहसमये, सा वि न त महइ
थुणेइ ॥ १७ ॥ उवचरइ पायपक्खालणाइणा तइयधूयमयमणिस । परिणयणकाए भणिया, अक्कोसइ सा वि थुणेइ ॥ १८ ॥ तत्तो
दुरतदोहग्गदुक्खदूमियमणो स नीहरिओ । अक्कोसिओ इमाहिं, रइमलहतो गिहे तत्थ ॥ १९ ॥ परिभमइ महीवीढे, भोयणत्र-
त्थाइएहिं परिहीणो । अचत दीणमणो, भिक्खानित्तीए जीवतो ॥ २० ॥ अइभिक्खसुक्खअद्दमोगरोगदोहग्गदारुणदुहत्तो । परि-
चिंतिउ पवत्तो, धीधी मह जीवियव्वस्स ॥ २१ ॥ ज सरिसे वि हु मणुयत्तणमि तुल्ले वि इंदियग्गामे । भिक्खाए जियामि
अह, एगे विलसति इह धन्ना ॥ २२ ॥ एगो वहति सोग, अज्ज न अम्हेहिं किंपि दिन्नंति । अज्जवि न किंचि लद्ध, अह तु
एव किलिस्सामि ॥ २३ ॥ छड्डिज्जइ धम्मकए, एगेहिं समुद्धुरा वि सिरी । बहुठाणजज्जर पि हु, न चएज्जाए खप्परपि मए
॥ २४ ॥ एगे रिवति चक्खु, सतीसु वि नेव पवरतरुणीसु । सकप्पोनणयासु वि, अह तु तोस परिवहामि ॥ २५ ॥ जक्खक-
णयच्छवि पि हु, एगे जवति असुइय देह । रोगसयविहुरिय, अप्पणो य तमह तु सलहेमि ॥ २६ ॥ जय जीव नंद एव,
एगे थुव्वति मागहजणेण । अक्कोसिज्जामि अह तु, निन्निमित्तंपि भिक्खगओ ॥ २७ ॥ फरुसपि पयपता, जाणिति एगे जणा-
णपरिओस । आसीसाओ दिन्तो वि, अह्वचइ लहामि अह ॥ २८ ॥ अइपउरपायनिहिणो, निहीणचिट्ठ(वित्त)स्स दुत्तरतत्तस्स ।
किं जीविएण मह नणु, मरण चिय दुक्खविसारो ॥ २९ ॥ इय चिंतिऊण सुचिरं, अमुणतो रम्मधम्ममग्गमयं । वेभारसेलसि-
हरं, आरुहई जाव मरणत्थ ॥ ३० ॥ ता अंतराणमग्गो, सग्गापवग्गेसु गमणनिस्सेणी । तेण कयकाउस्सग्गो, एगो दिट्ठो महा-
साहू ॥ ३१ ॥ तयतेयनिरतरतारख्वरेहाभिरामगुत्तीए । जो सहइ रयणनिम्मलथिरथोरयभोव्व ॥ ३२ ॥ नासायसनिवेसियथिरमं-

णाण्णरायरप्पयरो । मारपवरसमरनिम्मरनयणो मम चो सरइ ॥ ३३ ॥ जो अमरायरमाणगो पणयंगुणिमिणप्पयरविरि ।
संधिरगुणे एसमिद, मुणिवरस्स विय पयसेर ॥ ३४ ॥ तं सो पणमिय पुरओ उवविट्ठो पाससमुवासाए । अविसिसमं मुणि-
न पि पुणिमो अयम । तं विम्मिय ॥ ३५ ॥ तेणावि निउणुलंतो झीणो पंचयविसयसंगो । मणियं मुणिय सुंदर !, अणु-
एं अणु विमारई ॥ ३६ ॥ वाइय अहारसमेय, ववगय अप्पपाबयारमो । मुणिवेयविरझीयल्व अंगाम न होही एप ममो ॥३७॥

" एवं हि अणुरमयं सव्वो विवेयणगिरेण सव संवसनिहितीयम् । एयायं मुणि न बस्स स तस्सगोऽव्वसवस्सपमायेयसने
अणु संजमराया ॥ ३८ ॥ एसमणुसासिओ सो सहसा मुणिगुणेण परिबुद्धो । चिंतइ मे विसयविस परिया तीय वि तं
निवेसणसा संती परपीलयजणं विसयसुहं । अमरसमणेतर विय एवं पु सहासियं मे ॥ ४० ॥
विगिमसं न हु गिहवास । " अणुसमणुग्गमणा, सव्वे दोसा वि पुवि गुण्य ॥ ४१ ॥ एवं च कुणए सोहं, परमं
अम्मंपि सोहेइ । परिमय विहुणवि यय मिलियपुर्वं पसाहेइ ॥ ४२ ॥ एप विविमय यओ पणयारामो महामुणियो ।
पणामिओ निरुमं माम से मंतिसेणोत्ति ॥ ४३ ॥ समहिंगिय पणराम अंगो संगरिसवयणुत्तो । गीयत्थो पंचाणो विर
य समणगुणिगणो ॥ ४४ ॥ छट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मास अद्धमासखमणेहिं । अणसणवि-रयणावलि-एहिं परिसोसियसरीरो
॥४६॥ अममो निस्संगो, आसमपरीसहेहिं अगुणिओ । पावण अपडिबद्धो निस्संगो मंदिरगिरिव्व ॥४७॥ सिहो व्व अपवि
मुणे सोमीयो पुंजरो व्व परियणो । चंदो व्व सोममुहो दप्पणेव्व दिव्वमविव ॥४८॥ गयणं व निरवलेवो संजोवम विरवओ
विपरीहिं । परणी विय सव्वसहो महासमुद्दोव्व गंभीरो ॥ ४९ ॥ अममम्मि अणममि मुणे सुवण्णम्मि जीविए मरणे । माणे

१ अवग्रहम् । निपतती ॥ ।

समणाण। वेयावच्चे गेन्हइ, अभिग्गह दसविहे वि समणाण। वेयावच्चे गेन्हइ,
अवमाणे वि य, सो सव्वत्थ वि समाणमणो ॥ ५० ॥ कुणइ गुरूण सयासे, अभिग्गह दसविहे वि समणाण। वेयावच्चे गेन्हइ, गएहिं तो त महासत्त ॥५२॥
छट्ठपइन्न लहु तवे वि ॥५१॥ इय जाव नियपइन्न, परिवालइ सो अखडपरिणामो। वहुवाससहस्सेहिं, गएहिं तो त महासत्त ॥५२॥
सोहम्मसहामज्झे वरवेयावच्चनिच्चल चरित्त। सथुणइ अमरनाहो, अहो कयत्थो मुणी एसो ॥५३॥ वेयावच्चंमि थिरो, न सद्दहिय
सुरेहिं त दोहिं। काऊण साहुवेस, एगो बाहिं ठिओ ताण ॥ ५४ ॥ वसहीए गओ वीओ, गिम्हे खरतरणितावियो स मुणी।
छट्ठतवचरणपारणनिमित्तमुक्खिवइ जा पढम ॥ ५५ ॥ नवकोडिसुद्धकवल, तावाऽऽहरिय सुरेण जइ कोइ। अत्थि मुणी इह गच्छे,
गिलाणपडियरणकयनियमो ॥ ५६ ॥ पडिजागरओ गिलाण, विसमावत्थ इम निसामेउ। तो नदिसेणमाहू, समुट्ठिओ उज्झिउ कवल
॥ ५७ ॥ केणोसहेण सज्ज, कहिं कहिं अत्थि सोत्ति जपतो। सुरसाहुणा वि भणिय, पाउक्खालेण अभिभूओ ॥ ५८ ॥ सो
चिट्ठइ अडवीए, त पुण निल्लज्ज एत्थ निच्चिंतो। भोत्तु महुराहारे, सुयसि सुहेण अहोरत्त ॥ ५९ ॥ वेयावचकरोऽह ति नाम
मेत्तेण विहियसतोसो। ता भणइ नदिसेणो, न पमायाओ मए नाय ॥ ६० ॥ पणमिय पुणो पुणो वि य, खामिय तो अमरसाहूणा
एसो। तक्खेत्तकालदुल्लहलभ वहुओसहसमूह ॥ ६१ ॥ आणाविओ जल पिहु, उन्ह तो सुरवरेण पइगेह। पिहिया अणेसणा से,
तहवि अदीणो सुर छलिउ ॥ ६२ ॥ घेत्तूण तय सव्व, सपत्तो तस्स साहुणो पासे। तो त दट्ठु स मुणी, फिर कुद्धो जंपए
एव ॥ ६३ ॥ चिट्ठामि अहमरन्ने, रोगमहावेयणाए अक्कतो। त पुण पाविट्ठनिकिट्ठ-दुट्ठ ! चिट्ठसि सुह सुत्तो ॥ ६४ ॥ नित्थम-
च्छिओ वि एरिसवयणेहिं पुणो पुणो वि खामेइ। अमय पिव तव्वयण, मन्नइ स महामुणी सव्व ॥ ६५ ॥ कह निरुओ
कायव्वो, अयति जिज्झतएण असुहाओ। अणुजाणाविय असुईविलित्तमग नियकरेहिं ॥ ६६ ॥ पक्खालिउ कओ सो साहू
खधमि नदिसेणेण। खलियमि पए ताडइ, सिरसि त करपहारेहिं ॥ ६७ ॥ मुचइ दुग्गधमसुइ, उवरि सो नदिसेणतननिहिणो।
खारविसेसेण व जेण, झत्ति तच्छिज्जए अग ॥ ६८ ॥ ससरीरगस्स गुरुगिरिसिलाए लोहस्स वा कुणइ भार। जपइ किं कढिण-
करेहिं, धरसि पाविट्ठ मज्झ तणुं ॥ ६९ ॥ किं न वियाणसि पीड, परस्स नित्थमगसेहर ! अणज्ज। इय निट्ठुर भणतस्स, तस्स

सो नंदिसेणमुणी ॥ ७० ॥ भिक्खं पि समाणिं, करेमि सम्मं इमस्स मग्गामि । जं किर करेमि पीडं मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ७१ ॥ इय चिंतिऊण पयत्तो, मग्गं मा दुक्खइ नियमणे देवं । गंतूण निययवसहिं, करेमि नीरोगयं तुज्झ ॥ ७२ ॥ तत्तो सुरेहिं विमलेण ओहिणा जाणिओ जहा एसो । साहुजिणसुमग्गं न निच्छओ महासत्तो ॥ ७३ ॥ ता होंति [illegible]-[illegible] । नियरूवं काऊणं, [illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible] परिसिंचिऊण सव्वं । हरिसपरनिब्भरेण भणिओ मुणि सुरेण ॥ ७५ ॥ जय सुरराय[illegible] । [illegible] मुणिवर ! नमो ते ॥ ७६ ॥ तं मोत्तुं सो जाओ पावइ पवित्ति निययठाणं । मग्गे विम्हसमागे विम्हय इय तं मुणि मोत्तुं ॥७७॥ [illegible] निच्चकालं [illegible] तओ [illegible] । [illegible] संपत्ता तओ साहू वि [illegible] ॥ ७८ ॥ निम्ममचित्तो [illegible], गुरुस्स [illegible] । [illegible], [illegible] ॥ ७९ ॥ [illegible] परिहरिय, [illegible] साहुस्स [illegible] । [illegible], [illegible] ॥ ८० ॥ [illegible] वाससए [illegible] करिसु [illegible] । [illegible] परिय-[illegible] वा [illegible] ॥ ८१ ॥ [illegible] नंदिसेणसाहुस्स । [illegible] संभरियं, [illegible] ॥ ८२ ॥ [illegible] मा [illegible] । [illegible] ॥ ८३ ॥ [illegible] साहुस्स देव [illegible] । [illegible], [illegible] ॥ ८४ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ ८५ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ ८६ ॥ " [illegible] । [illegible] ॥८७॥ सो मरिउं [illegible] । तत्तो [illegible], [illegible] ॥ ८८ ॥ [illegible] सुरेण । [illegible] ॥८९॥ [illegible] हरिवंसे [illegible] । [illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[6]अचल [7]पूरण [8]धरण–नामा नवमो य [9]अभिचदो ॥ ९१ ॥ अह नदिसेणदेवो,
[2]अक्खोभो [3]थिमिय[4]सायरा [5]हिमव। तह [6]अचल [7]पूरण [8]धरण–नामा नवमो य ॥ ९२ ॥ कुती मद्दी य दुवे, भयणीओ ताण तत्थ
चविऊणेयाण सोयरो जाओ। [10]वसुदेवोत्ति दसारो, दसमो निस्सीमसोहग्गो ॥ ९२ ॥ जह जीवजस परिणावइसु फस करित्तु सवयस। रूसिऊण
वसुदेवो। अहिगयअविकलनिम्मलकलाकलावो सुहसहावो ॥ ९३ ॥ जह सयन्नाओ। परिणिंसु सेट्ठिसामतमतिनरख-
निग्गओ जह, एगागी सोरियपुराओ ॥ ९४ ॥ भमडतो महीमडलमणेगकन्नाओ जह सयन्नाओ। घेत्तूण विमाणेण, सपत्तो सोरियपुरंमि ॥ ९६ ॥ फंसेण
यरराईण ॥ ९५ ॥ वरिससय ते परिणीय, रोहिणिं जह असेसऊढाओ। घेत्तूण विमाणेण, सपत्तो सोरियपुरंमि ॥ ९६ ॥ जह रोहिणीए रामो,
जहा नीओ, तओ वि महुराए अप्पणो पासे। परिणाविओ सभइणिं च, देवइ देवयस्स सुय ॥ ९७ ॥ जह रोहिणीए रामो,
जाओ जह देवईए गोविंदो। जह रिट्ठनेमिसामी, सिवाए सिरिविजयजायाए ॥ ९८ ॥ विहिओ जह जम्ममहो, छप्पन्नदिसाकु-
मरिगाहिं गिहे। बत्तीसवासवेहिं व, तस्स नेऊण मेरुम्मि ॥ ९९ ॥ फसभण्ण जह जायमेत्तओ सउरिणा सय नेउ। एगागिणा
निसीहे, गोविंदो गोउले मुक्को ॥ १०० ॥ जह गोउलस्स मज्झे, नदजसोयाहिं पालिओ विह्नि। केसेसु कड्ढिऊण, फसो मचाउ
जह निहओ ॥ १ ॥ जह जीवजसावयणोवजायकोवो निवो जरासघो। पेम्मिसु जायवोवरि, कालमुय कालदूय च ॥ २ ॥ जह
जायवा जवेण, नट्ठा पत्ता सुरट्ठविसयमि। जलणे पवेसिओ देवयाए कालो जह छलेण ॥ ३ ॥ जह घारवई कचणरयणमई नि-
म्मिया कुबेरेण। सफाऽऽएसाओ रेवयतिए हरिकए गरुई ॥ ४ ॥ जह रायजरासधो, सपत्तो सव्वनलसमुदएण। हरिणा फओ
कयधो, लद्ध भरहद्धचक्कित्तं ॥ ५ ॥ भयव अरिट्ठनेमि, जह जाओ धम्मचक्कवट्टिपाए। जायवयग्ग निव्वुइपुरीए पाय पराणिसु ॥६॥
तह एमाइ असेसं, वित्थरओ रिट्ठनेमिचरियमि। भणिय चेव बुहेहिं, तत्तो चिय त (मु)सुणेयव्व ॥ ७ ॥ फिर ताय दस
दसारा, पच बलाई तहा महावीरा। पज्जुन्नप्पमुहाण, अध्धुट्ठकुमारकोडीओ ॥ ८ ॥ दुद्दतकुमाराण, सट्ठिसहस्सा य सयपमुहाण।
रुप्पिणिपमुहस्सतेउरस्स बत्तीसई सहसा ॥ ९ ॥ एगसिमाहिवच्च, सव्वेसिं केसवो सया कुणइ। इय हरिकुलयिउलत्त, तस्सासि
पियामहो सउरी ॥११०॥ यथा नन्दिषेणेन परुषभाषणेऽपि देवे क्षमा कृता यतिधर्ममूलत्वेन मोक्षाङ्गत्वात्तया साध्वन्तरेणापि कर्तव्याह—

सराकमराउम्मच्छण सीस एमीसिए निमए। गयगुरुमासेन ममा तहा दूमा मम गिरं पणो ॥ ५५ ॥

सपयाभेव —ववनिगवरभो मारवनिममाणि रायकुमभासिनेन च पयदकजम्मजनिमोसवरिंवभएगी गमगुरुमामेन थरिं मशीसिवएगि निमाक तवा ममा दूमा मभा 'गिन —मोभे माम एगि मभवर्व ॥ ॥ प्रमानम्मगामे म गुरुसेवा स्पतीति महुनका—

माणि वणी वारपइ पमिविम मामम्गरमभमिच्छिय। आ मोमकपरह पीइलनि, मवि कराविय मवविदुमणाणि ॥ १ ॥
वहिं पमरमवमोरिसभिज्ञवि, हमि मवाण्ड अवड न पुत्रमि। मरिगवमिरतिम्मोगिहि, पमवरि मभिवड न सोगिहिं ॥ २ ॥
कमइ सि(त)मुपक्तिसरणसारउ, मापणु कारिहिं विवारउ। कावनयवणइरि प पुषा पुनसुमगवविहिरिं मुक्क ॥ ३ ॥
अमु निव निमसइ मेमि मगाउ, मारमि इमु जम्म अवमारउ। रयणागुम्मनिम्मुमिमिमुग मेमिमिमिगरि जो रमइउ ॥ ४ ॥
सघासे मवड करिस्वी गणी सकमणार मणि पवाणि। विरमेय सिरिसमिविमसय वरि कमाइ पमउ पम्मणड ॥ ५ ॥
कुमसेवमिमनाद गिरि उज्जिनइ कम्मारमि ममोसरणु। तरावबि निवमिरिहि किउ मब्वहिरिहि ममववसमुर मापु ॥ ६ ॥
विव देव देवि देमम सुहम भरममरजमुरलपाडीग। रम्मि मुणिहि माप विरएव्वार, मगुमरहिं पाहुकम पाहुवार ॥ ७ ॥
मइ देवादेविहि मुमिमुग विमेन मवराभणापि पहुस। विरि पाइ अभिमरगोमि वरमु मरणमु विरमभो पोमममहु ॥ ८ ॥
जो माहुमीडं पिसरेवि पवि जिम अंमि माइ देवइ न देरि। गा वइ मिरमरगमाक ममकाहुम गहइ व जिव जिगाम ॥ ९ ॥
मिरएवि वाम देवर मइ पइहुमनि जम नामविं पविहु। मुनि मकिमममु गुणमममभणु अह मिरवसमु मगुममाणमु ॥ १० ॥
मिरणगर देवहवेवि वि मिमसंजविम मोममिहिं भवि। रसमेलि महमभो पम पणु संपवर मुमुणिहि मममणु ॥ ११ ॥
मणोमइ मुणिमइ देवमेणु मनुपइ पम्हइ पुमु मगुमणु। मिरगाविम पवि इ मोसमहि, मिपपामममिगि बहमेलोगिहि ॥ १२ ॥
वे मि इ निरगवि विम निम्मइ, विमिवइ विवि पमविमदे। किं मु मपारा मुमि संपारइ, पार मार परि परद ॥ १३ ॥

किं तुम्ह साहु दिसिमोहु एहु, ज धार वार मह घरि उवेहु ॥१४॥
पय पणमि वि पुच्छइ मुणिकुमार, ते देवइ तो घरभत्तिसार। अतरिगचित्ति अहवावि अम्हि, अवरे वि मुणामि ते चेव (अ)तुम्हि ॥१५॥
अह लहह न कत्थइ एत्थु थामि, धणधन्नसमिद्धइ भिक्ख सामि। भद्दिलपुरि अच्छइ नागसिट्ठि, तसु सुलसभज्ज पइपेम्मसिट्ठि ॥१६॥
अह पभणहिं साहु महाणुभावि।-परमत्थु कहहु (सु)मुणि एया भावि। सुय अम्हि ताह सुसरिसरूव, जण छावि पुन्नकारुन्नकूव ॥१७॥
जिणधम्मि रम्मि अणुरायरत्त, तो दोवि देवगुरुपायभत्त। ता जाणउ तिहिं संघडगहि, परिवाडि पत्ता ते तुज्झ गेहि ॥१८॥
पडिबुद्ध धम्मदेसण सुणेवि, महि विहरहु नेमिहिं दिक्ख लेवि। मुणि दोवि ति घवइ मुह अक्खिणरइ चिंतइ तक्खणि तोसगया ॥१९॥
इय सा निसुणती हरिसु वहती रोमचचियकायलय। मुणि दोवि ति घवइ मुहु अक्खिणरइ चिंतइ तक्खणि तोसगया ॥२०॥
हउ जाव नियउं ए साहुसीह, हरितुल्लरूव रजाइ निरीह। तान सइ हमइ विहसेइ चित्तु, न अमियनारि नयणिहि निहित्तु ॥२१॥
कय सत्तरूवु किर कन्नु एसु, सिरिनन्दसुलछियवच्छदेसु। हउ बालकालि अइमुत्तिवुत्त, जीयत जगुत्तम अट्ठपुत्त ॥२२॥
ता होहि महारा अगजाय, ते छावि साहु निरु कन्हभाय। ह्यनिहि निलासि केणावि पत्त, तहिं सुलसनागमदिरि सुगत्त ॥२३॥
पसरुट्ठिय जाइवि जिणसगासि, सो पुच्छिउमिच्छइ नाणरासि। नियपाणि परिट्ठियकंकणेण, किर काइं करेयउ दप्पणेण ॥२४॥
रवि उग्गमि देवए पत्त देवि, जिणनाह पासि रहि आरुहेवि। पणमित्तु पुरट्ठिय सा सुनाणु, मोक्खायइ अवसरि भुवणभाणु ॥२५॥
ससुरासुर परिसहि धम्मुपरिसहि तसु टगमग जोयतियहि। देवइ आमतिवि गुरु अणुगतितिनि सामि पयपइ दयउरहि ॥२६॥
पइ धम्मसीलि चिंतिउ जं चित्ति, त सच्चु चेव नहु कावि भंति। ते पुत्त तुज्झु हरिणेगमेसि, सचारिय अवसरि सुलस रेसि ॥२७॥
मयवच्छहि ताहि छ अंगजाय, तुह अप्पिय कसह मारणाय। नियतणय विओगनिपागमम्मु, तुह फलिउ एउ किउ सइ जु कम्मु ॥२८॥
पइ पुव्वभवतरि रयणरत्त, अवहरिय सवत्तिहिं आसि सत्त। तहि ठावि गुणायरकाचलसु, सुमरिसरूवकारि अरसु ॥२९॥
विलवतियाए तसु ताह मज्झि, पइ एक्कु तमप्पिउ सुगुणमज्झि। इय सत्तरयणचोरिक्कतणउ, पइ पत्तउ फलु मणदुक्खु घणउ ॥३०॥
ज रत्तिणि गुणऽप्पिउ रयणु एगु, तिणि हरि जणेइ तुह सुहु अणेगु। पुरा सुणिवि देवि देवइ निरुत्तु, महु माउरु नेमिजिणनाह वुत्तु

जिम जिम सिर हुआर सुयाकर, जिम जिम सुमुणि रामाएसु वयण। जिम जिम सिर घोर णासानस जिम जिम होइ कम्मुक्खयकर ॥६२॥
मणि सुणिवर वरमाणय भावइ, वणि दावि सुहझाणु संभावइ। पद्ध देइ ण अमयर अमयर, मइ जिर कम्म णमंसिवि सुयकर ॥६३॥
सव्विक्कमुणुप्परणीयम संगासीय साहायिसरेपम। परमप्पय देवि पियारिय, वणि सुसाणु सुमसमु मारिय ॥६४॥
मुत्तरिंदि पत्तअयवरिंदि, सिर किन्नु वरवारि पहारिंदि। तहवि अप्पमत्तनिससत्तहिं, मवि न मिच्छे पुण सत्तवहिं ॥६५॥
वामि हिमयवनिरेवम सुयर वहवि एउ मणि मज्जु सुहयम। वे मिर णु मर करमि वमणु, मयइ देम सुमरो सुणिम मणु ॥६६॥
एप मयपसुम्मर वसु सुलंवर सुणिवि हेरयायय सदु। पयसु संणायर मोक्खु कि भायर सुर मंवि निव्वाणसमु ॥६७॥
वर समाय पुम्मगिरिंदि माणु, गयसुणिंद्र व वेय विम्मनवणु। हरि हरिसर वियरेवि सुद्ध संपत्तिय माय वरयनिमिय ॥६८॥
केवरणहि पेसवार सुणिव, मायविणयरवरदयवरसहीय। सिरि करिवि य एय वयु, निप्पायमेर देवसु मयदु ॥६९॥
सयमेव देवि धावेगु वसु, निप्पाइय हरि वे सुरमणसु। मार पि नमेवि सिरिनेमिनाहु पुप्फइ करि मरंज नवर सामु ॥७०॥
पमणइ जिणिंदु गोमिर! देव परमप्पय पाविय परमगुणेय। वसमेवि देवि लिसि मरमसयु य सविसु मभिमप्पमोयसमु ॥७१॥
वद्द एप वरिसिवि वड़ परममणि धावित्तु मिण्ड हियय मिसमि। वद्द वासु सीसि वासमि वसणु मिलउ सुयम्मि वे सिद्धिवयणु ॥७२॥
पुष्किय परमेसरि भवसुह निम्मरि कि करि मई सो वाणियउ। मणइ कापणिसु पई सिक्खेरिसु वसु सीस सुइ सुमियउ ॥७३॥
दरमसव पणमेवि वपरउ सिरवणि पयइ वयमरणु। गणहुम्माणयमय गयजीविर, पेमवार सुगमिवि पविर पवीविर ॥७४॥
पागविसेसपरूप पयपाइ, वसु मयमेव ससोगु वरपवइ। भगणावसारिणि सयवए, वयणि सुणसोयर मिलायउ ॥७५॥
सोणपेणु माइ[1] मा किज्जउ, परपरमत्तु महत्तु सुणिज्जइ। मनु पुन्नु वणिमु सव सुणि भमरिंदि गम्भुडमाय महासुणि ॥७६॥
वसु निम्मिउ वसु किमु वणिज्जइ निरसु नीर निरमइ पिज्जइ। पुम्मसेरिसंभमि पाविज्जइ, वे सिवसुहु वे पसु महायर ॥७७॥

१ जिम जिम B जिम जिर C, D। २ माइड मोह मिराइ D।

इय सबोहि वि माइ चडावइ, रहवरि हरि नयरिहि जा आवइ। ताव तासु त पिक्खिवि विप्पहि, सिरु फुट्टउ सयखडु दुरप्पहि ॥७८॥
जायवचूडामणि जाणिउ सोमणिविप्प दट्ठु गयसाहुसिरु। तउ कालनलदिहि डिंडिमसद्दिहिं कड्ढाविओ नयरीहि निरु ॥७९॥
"उत्तम अनइ निसग्गि न ढुक्कहिं, मज्झिम अन्नि निवारिय थक्कहिं। अहमह अनउ निरुभइ राउलु, अन्नह होइ लोगु अइआउलु" ॥८०॥
गयसुकुमालमहामुणि मारणि, उत्तमगि चिय अग्गिहि जालणि। अच्छिसु कोइ नेव जायवजणि, जो न जाउ अइदुक्खिउ तक्खणि ॥८१॥
तिणि वेरग्गि लग्गि अइअग्गलि, विणु वसुदेवि एक्कि जस उज्जलि। नवदसारपव्वज्जपवज्जहिं, परिवारिय पाएण सभज्जहिं ॥८२॥
सामि माइ सिवदेवि मह्रासइ, सव्वविरइ सजमु उल्लासइ। सत्त पुत्त अवरिवि वसुदेवहिं, तहिं अवसरि वरसजमु सेवहि ॥८३॥
जउ कुमार दुव्वार विदिक्खिय, जिणसगासि जइ सिक्ख सुलक्खिय। कन्हि सकन्न सव्वि दिक्खाविय, नहु कयनियमि कावि परिणाविय ८४
इय गयसुकुमालिहि चरिउ अबालहि अइसाहसनिव्वाहवरु। जो पढइ भत्तिभरि गुणइ महूरसरि जाइ दूरितसुदुरियभरु ॥८५॥
॥ इति गजसुकुमालसन्धि ॥ किमित्येप मुनिरेव सोढवानित्याह—

रायकुलेसुऽवि जाया, भीया जरमरणगब्भवसहीणं। साहू सहति सव्वं, नीयाणऽवि पेसपेसाणं ॥ ५६ ॥
पणमंति य पुव्वयरं, कुलया न नमंति अकुलया पुरिसा। पणओ पुव्विं इह जइजणस्स जह चक्कवट्टिमुणी ॥ ५७ ॥
जह चक्कवट्टिसाहू, सामाइअसाहुणा निरुवयारं। भणिओ न चेव कुविओ, पणओ बहुअत्तणगुणेणं ॥ ५८ ॥
ते धन्ना ते साहू, तेसिं नमो जे अकज्जपडिविरया। धीरा वयमसिधारं, चरंति जह थूलभद्दमुणी ॥ ५९ ॥

'रायकुलेसु वि' गाहा ॥ स्पष्टा। नवरं "पेसपेसाणं" ति कर्मकरसत्ककर्मकराणामपि ॥ ५६ ॥ विनय प्रतीत्योपदेशान्तरमाह—'पणमंति य' गाहा ॥ किल स्तोकपर्यायो यतिर्महापर्याय यतिं प्रथम वन्दते, महापर्यायस्तमनुवन्दते इति स्थितिः। ततः

पुष उन्ति वचरी पर्वतिमिर्गेरमले महामोऽपि सन्तो गृहीतमना वै पुत्रका सुखे पूर्वं पतीर्न पूर्वेरमेव प्रथममन्युक-
गन्तु न मर्तम। च व्यवयोऽर्थी व्याख्यान नर। यत्र दृष्टान्तमाह— चमत्कार पुब्बिं ति। प्रमेव प्रवचने चक्रवर्त्यपि
दृष्टान्त पूर्वदर्शनत्रमत्र पूर्वं दक्षो न तु चक्रवर्तिमिमानाम् स्वप्नमात्रमात्र तस्विधान् ॥ ५७ ॥ एतमेव दृष्टान्तं समुपसं-
जह चत्तारि गाहा ॥ जिम बलिभरमणी प्रगजिग स धार्मीवार्यनत्र पुष्पीभर्वनिमित्तपिरोऽप्रमितमिमायेन पूर्वसापूज
पश्चात् मनार्थामिमार्थं प्राकाट्यन ओदनीभूतन मात्मामित्रतापुमाशयो निरुपचारं निरपेक्ष विसमलस्वेऽभिमपो—प्राणितस्वेध्वमि
भेद बन्धिनार्थि न केवल पुब्बिं तिन्नि ? यस्तेक्षुगुणत्व परिमाण्य प्रथम पुष्पादिपीडनामपि पूर्वस्वीनां पसो ज्ञातव्यस्मेवे
तत्र यथा— गृहीत पत्ता कालिमय सालिसो सालिसो पयमेव। विमल महापुरिसा, सति नहु कसइ मण्ण ॥ १ ॥
चउर बलिमत्त पुत्ता आरज्जुगुणस्स दोइ देवारा। जइ चावाम नरास वि पुब्बभवी य बद्धाय " ॥ २ ॥ प ॥ ५८ ॥ तीव
प्रपञ्चलोकेऽ दृष्टान्तेन वर्णयति— ते पत्ता गाहा। गाहा ॥ ५९ ॥ सुखमपुमिकवा पुबारिणम्—

पावकिंपुलपुरम्मि रवो मदरम विमुवनतस्य। मिवदळवनमगो, सपयमो जसि मलिमदो ॥ १ ॥ पुत्तो य सुकमारो,
पत्तमो न बीयमो वहा सिरिवा। कदाईया भूयमो मत्त वसस्य पमुवरवमो ॥ २ ॥ वसस्य य वस्पदिसा भूय वह भूय-
ति(त्थि)य कम। मम्म वेम्न रेवा वाणो रयमो अनुकममो ॥ ३ ॥ दृगुणविणाइ परिवाडिपवडं वाममावरइ कमसो। सकव
मिवोमदरा मयन्ह मेहरहामन्त ॥ ४ ॥ निमयपूवमाईमतमपविमायवनमुवमम्मे। सम्मं पुमतमावने देसि बोसिंति
दिव्वाइं ॥ ५ ॥ अह वयमो कम्म भूयं वरर वइं विमो। बपुमअक्तवं किमावं पुवर पवसिम्मं ॥ ६ ॥ तदनन्त-
न(प)रिन हुते, पथ पुरं मवीइर पर्व। वर्हं वयलसि सयमर्व्वीइ म देइपि ॥ ७ ॥ वो वररदम्म सयवामारिप पुमुम

१ अनन्तरोनोऽन्य B, सामनोनेऽन्यत्र C अनसोन वितत D।

दाणमाईहिं। उवचरिया तो तीए, भणिओ सो कहसु कव्वंति ॥ ८ ॥ वज्जरिय तेण तए, भणियव्वो तह कहपि मतिवरो। जह रायपुरो कव्व, पढतय म पससेइ ॥ ९ ॥ पडिसुयमिमीए वुत्तो, मती किं वररुइ न सलहेसि। तेण पयपियं कह, मिच्छा-दिट्ठिं पससामि ॥ १० ॥ अह पुणरुत्त तीए, भणिरीए पडिसुय अमच्चेण। रायपुरो पढमाणो, पससिओ सो सुपढियति ॥११॥ तो अट्ठसय रन्ना, दीणाराण दवाविय तस्स। जाया पइदिवसपि हु, एत्तियमेत्ता य से वित्ति ॥ १२ ॥ अत्यक्खय पलोइय, भणियममच्चेण देव! किमिमस्स। दिज्जइ वज्जरइ निवो, सलाहिओ ज तए एसो ॥ १३ ॥ भणियममच्चेण मए, अविणट्ठं भणइ लोयकव्वंति। सलहियमेयस्स तओ, रन्ना पुट्ठो कह एव ॥ १४ ॥ तेण भणिय मज्झ, धूयाओ वि हु पढति जे एव। उचियसमए य पत्तो, पढणत्थ वररुई प(त)त्तो ॥ १५ ॥ जवणियअंतरियाओ, धरियाओ मतिणा सधूयाओ। जक्खाए पढम वाराए, अहिगय से पढतस्स ॥ १६ ॥ तो तीए नरवइणो, पुरओ अविणट्ठसुमरतीए। वाराहिं दोहिं वीयाए, आगयतीए वुत्तमि ॥ १७ ॥ तइयाए वाराए, तइयाए अहिगय च वुत्त च। एवं वारावुड्ढीए, सेसिगाहिं पि उवलद्ध ॥ १८ ॥ तो कूविएणं रन्ना-दूवारमवि वारिय वररुइस्स। पच्छा सो गगाए, जतपओगेण दीणारे ॥ १९ ॥ ठविऊण रयणीए, पभायसमयमि सयत्र काउं। पाएण हणइ जत, तत्तो गिन्हेइ दीणारे ॥ २० ॥ भणइ य लोयाण पुरो, थुइतुट्ठा देइ मज्झ गगत्ति। कालतरेण रन्ना, सोउं सिट्ठ अमच्चस्स ॥ २१ ॥ तेण भणिय जइ मह, पुरो इमा देव! देवता देउ। तशामो य पभाए गगाए पडिस्सुय रन्ना ॥२२॥ अह मतिणा वियाले, पच्छइओ नियनरो समाइट्ठो। गंगाए पच्छन्नो, अच्छसु ज वररुई सलिले ॥ २३ ॥ किंपि हु ठवेइ त गिन्हिऊण त भद्द! उवणमेज्जासु। गतूण नरेण तओ, आणीय दम्मपोट्टलिया ॥ २४ ॥ गोसमि गओ नंदो, मंति य पलोइओ थुणतो सो। गगजले निव्वुडो, थुइअवसाणमि त जंत ॥ २५ ॥ करचरणेहिं सुचिरपि, घट्टए जाव वियरइ न किंपि। अथंत-विलक्खणत्तण-मणुपत्तो वररुई ताव ॥ २६ ॥ पायडिया सयडालेण, राइणो सा य दम्मपोट्टलिया। हसिओ य राइणा तो कु-विओ मंतिस्स उवरि तओ ॥ २७ ॥ चिन्तयति च—"पादाहत यदुत्थाय, मूर्ध्वानमधिरोहति। स्वस्थादेवापमानेऽपि, देहिनस्तद्वरं

रज्जं ॥ २८ ॥ तत्थ—अमच्चो सिरिओ, पओसइ समणए य सम्मत्ते । पीयई कालवसो सिरियस्स परिओवगाइ ॥ २९ ॥
सिरिआइ भाउआइं, पच्छन्न कारवेइ पत्थं च । जणवरियस्स कहियं, वररुइणो मंतिगुसीय ॥ ३० ॥ पावियकज्जेण तओ तेणं
डिंभाण मोयओ पाढं । संपहणा-सिव-नवर-ठाणेसु पाढियाणि इमं ॥ ३१ ॥ णु लोए न वियाणइ, ज सगडालो करेसइ । नंदं
रायं मारेत्तु, सिरिओ रज्जे ठवेसइ ॥ ३२ ॥ सुणिय य इमं राया चरेहिं पेसविय य मंतिगिहं । चरियाइं सट्ठु, पच्छन्नं
आयसाहं मंतुं ॥ ३३ ॥ सिट्ठं रन्नो तेहिं, कुविओ राया ठिओ परम्मुहओ । सेवागयस्स चलणेसु, निवडमाणस्स मंतिस्स ॥ ३४ ॥
" राज्ञो सम्भ्रमतोऽस्मीति, भेतव्यमस्माकम् । वहि अपटान्वपि...अपकारिणम् " ॥ ३५ ॥ कुवियं नंदं नाउं, सगडालो मंति
रंमि गंतूण । भणइ सिरियस्स पुत्त ! रायं मारेइ सव्वाइं ॥ ३६ ॥ जा न मरिस्सामि अहं, ता रन्नो पायनिवडियं वच्छ ।
मं मारिज्जसि तुमं ठाय सिरियस्स तो कज्जं ॥ ३७ ॥ सगडालेण भणियं, तालउडे भक्खियंमि मणि पुव्वं । निवपायपडण-
समये मारिज्जसु तं गयासंको ॥ ३८ ॥ सव्वविणासासंकिय मणेण पडिसुणिमिणंपि सिरियेण । तह चेव पायवडियस्स सीसमेयस्स
छिन्नंति ॥ ३९ ॥ भणियं च—विसन्नचित्ते ! राया किमसि किं मम कारिओ मिह तए । किं रे दिसस य पुट्ठो, मह पियरं
परमभत्तस्स ॥ ४० ॥ राया भणइ नयविउ, वसिओ पडिओ य मंतिसिओ । मणिओ सिरियेण सओ, देव कओ तालउडेणं ॥४१॥
मोत्तूण सव्वकज्जं, सामियकज्जं कुणंति वरभिच्चा । भणइ नरिंदेणहा आपभिओवि मम पहुणो ॥ ४२ ॥ तत्ता—जो तुम्ह पडि-
कूलो, तेण पिउणा वि नत्थि मे कज्जं । तो सो राया तुट्ठो पडिवज्जइ मंतिपयमेयं ॥ ४३ ॥ तेणं भणियं भाया थेरो मे थूल-
भद्दनामो त्ति । बारसमं से वरिसं वेसाए गिहे वसंतस्स ॥ ४४ ॥ सद्दाविओ स राया कुणो य भणइ मंतिपयवि(मि)त्ति ।
तेणं भणियं चिंतेमि एत्थ पेसिओ आहे ॥ ४५ ॥ सज्जिदियअसोगवणे तत्थ य सो चिंतिउं समाढत्तो । निवकज्जवावडाणं के
भोगा किंच सोक्खंति ॥ ४६ ॥ सोक्खे वि हु गंतव्वं नरए बढं अहं इमेहिं तओ । वेरग्गमग्गलग्गो, पुणो वि चिंतेउं
चिंतेइ ॥ ४७ ॥

" भ्रातश्चित्तसखे ! विवेक भगवन्नाचार रे रे गुणाः, कौलीनत्वमपि क्षमे भगवति व्रीडे सखि ! श्रूयताम् ।
विद्याभिः परमश्रमेण च मया नीताः परामुन्नतिं, तत्किं मामपहाय यौवनवने कुत्रापि यूयं गता ॥ ४८ ॥
हहो स्वान्तसखे ! कृताञ्जलिरहं स्वामिन् समादिश्यता, वल्गद्वायुविलोलतूलतरला धृत्तिं विमुञ्चाधुना ।
वैराग्यामृतसिन्धुसान्द्रलहरीलोलच्छटाच्छोटनै-र्जाताः साम्प्रतमन्य एव हि वयं तत्किं भवच्चापलैः ॥ ४९ ॥ "

ततश्च—काऊण पचमुट्ठियलोय सयमेव गहियमुणिवेसो । गतूण भणइ निवं, इम मए चिंतिय राय ! ॥ ५० ॥ उववूहिओ निवेण, नीहरिओ मदिराउ स महप्पा । गणियाए घरे जहत्ति, जोइओ राइओ जतो ॥ ५१ ॥ दट्ठूण मयकलेवरदुग्गधपहेण निवेण, नीहरिओ मदिराउ स महप्पा । गणियाए घरे जहत्ति, जोइओ राइओ जतो ॥ ५१ ॥

ठविओ पयमि सिरिओ, इयरो सभूयविजयपयमूले । पव्व-वज्जमाण त । रन्ना नाय निव्विन्नकामभोगो महाभागो ॥ ५२ ॥ ठविओ पयमि सिरिओ, इयरो सभूयविजयपयमूले । पव्व-इओ अइउग्ग, करेइ विविह तवचरण ॥ ५३ ॥ सिरिओ सया विचिंतइ, न कय वइरसोहण जेण । किं तेण माणुसायारधारिणा जवुगेण जए ॥ ५४ ॥ सिरिएणुवयरियाए, वेसाए कयाए पाइओ मइर । रायत्थाणुवविट्ठो, जा चिट्ठइ वररुई ताव ॥ ५५ ॥ सकेएण सिरियस्स, कोइ अप्पेइ पउममेगेग । रायसहाए ओसहवासियमेग च वररुइणो ॥ ५६ ॥ उव्वमिया सा सहसा, सिंचि-यमेत्तेण तेण तो तस्स । सजायपच्चएण, निवेण भणिओ तओ मती ॥ ५७ ॥ पायच्छित्त ज किंचि, एत्थ त कारवेसु पावमिणं । तो तेण तत्ततउय, पाइय सो मारिओ मरुगो ॥ ५८ ॥ अह विहरतो पत्तो, कयाइ पुण तत्थ थूलभद्दमुणी । सभूयविजयगुरुणा, सद्धिं सद्धम्मनिरयमणो ॥ ५९ ॥ पत्ते वासारत्ते, तिण्णि मुणी तिव्वभवभउव्विग्गा । गिन्हति कमेणेए, अभिग्गहे दुग्गहसरूवे ॥ ६० ॥ एगो सीहगुहाए, अन्नो दारुणविसाहिविसहीए । कूवफलयमि अन्नो, चाउम्मास ठिओऽणसणो ॥ ६१ ॥ भयवपि थूल-भद्दो, कोसागेहमि तवमकुव्वतो । ठामित्ति विन्नवतो, गुणव गुरुणा अणुन्नाओ ॥ ६२ ॥ सपत्तो घरदारे, तुट्ठाएऽब्भुट्ठिओ जहा भग्गो । एसो परीसहेहिं, भणाहि ज काहमेत्ताहे ॥ ६३ ॥ पुव्वो व भुत्तरइमदिरम्मि उज्जाणमज्झयारमि । देसु निवास दिन्नो,

मुणो सव्वोहिंवि रसेहिं ॥ ६४ ॥ मत्तिव विभेविम्मी सव्वालंकारभूसिय रूव । पत्ता पीवगडत्ता कनकसमप्पभमिच्छंती ॥६५॥
चाहुग्गइ वासहा, सा व रमिय न सव्विं बाल । तत्तो पसंसमोहा सुप्पम्मा सामिय आमा ॥ ६६ ॥ सव्वसिम्मोमविरोहेण
केह मुणिसो मह न रमियव्वो । इन सा कामयविरइ, पविसव्वइ वसियमविमाय ॥ ६७ ॥ सवसमिय सीहसप्पा कल्लासोवा-
सिया समासरिया । कप्पकुम्मकासो सहमो वि मुणी गुम्मगासे ॥ ६८ ॥ अप्पुरिया मणाम सुकरकरीव सागवं सुम्मं ।
कासासिया कम्मेण, गुम्मय न बूममरो वि ॥ ६९ ॥ गमियागिहंमि पवरावरंवि विविहप्पमपुम्ममाहारे । मुणयो रम्मापत्तू-समा
हियुवओ न सेवत्ते ॥७०॥ मायुम्बरुकम्मरकस्स कम्मुट्ठिम्म सप्पमयं । नमियं गुम्मा तव सामत्थंपि ते मच्छरं पत्ता ॥७१॥
सिम्मि वि मन्नंति काव्वइ पेच्छम्म सूरीहिं केरिसं मत्तिव । एस अमयस्स मुणो पसासिओ पवमवणोमि ॥ ७२ ॥ पसरियरो
सायेसेण पकपरम्मि सममारू दुइए । सीहगुहावासगेण, मत्तिमो सूरी अहं वामि ॥ ७३ ॥ समकेसाए गिहम्मि कोसावेसाए
अणुगमविमीए । तं सोहेमि विम्मूत्तो कोसि कह बूममराओ ॥ ७४ ॥ सव्वे वारीव—कइ दुक्करदुक्करकारयत्ति मत्तिमो कह
दुम्मो साहू । जो कीस अमरसंमूपविवरसीहेहिं न व समिओ ? ॥७५॥ कालेण गुरुणा वार्व पारं न पाविही एसो । पडिसिद्धो
व्ववि पत्तो, मत्तिकम्माए वसहिय ॥ ७६ ॥ कमतो वासारत्त कावं सा मत्तिय सुकर कम्मं । रयणकारिणी भूसिया विभूसाए
रविब वा ॥ ७७ ॥ सो मयणपेक्कमे विव कम्मसमीवे तुवं कसोवेतो । बाको सिढिलियसंजमपरिणामो कामकेलिकिलिओ ॥७८॥
पविक्कमओ कव्वोमसर परियरं तवं कमते । किव्वमसंभि तीए, मत्तिमो कि देवि ? मे मव्वसु ॥ ७९ ॥ सा मव्वइ सुंदरि ! मे
दुम्मरस साहूबो देह । कमकरवमं सव्वसहस-मोल्लमेवो पहिं वाव ॥ ८१ ॥ कवं तं तत्थ महा-पम्मासवस्स भूमिवे मव्वरे ।
त(ब)हवं विहुं वव सत्त कोइ किंचिवि विवव्वर ॥ ८२ ॥ मिमिवावाउ वा पढ, पवओ विसवमं अप्पुमामओ । सा कव्वंवि प
कसे वसओ वासर वाह कसवो ॥८३॥ वसो सरेह तुम्मं कोरवीं पममकविस्सम् । का वासद वा पाषद पवं विव हंसो कमवं

॥ ८४ ॥ अवहीरियसवणरुओ, जा चिट्ठइ ता पुणोवि वाहरइ । एसो तुम्हाणमहो, हत्यगओ अइगओ लक्खो ॥८५॥ संजाय-कोउगेण, भणिओ चोराहिवेण सो गतु । ज अत्थि एत्थ तत्त, भयरहिओ त कहेसु तुम ॥ ८६ ॥ कहिय कबलरयण, वसतो एत्थ अत्थि तो मुक्को । आगतु गणियाए, समप्पए जाव ता तीए ॥ ८७ ॥ गिहखालमि निहित्त, निरिक्खमाणस्स तक्खण तस्स । अहह कय किं एय, स सोइरो तीए सिक्खविओ ॥ ८८ ॥ भयव पवित्तदेहो, सीलालकारभूसिओ तपि । मह असुइत-णूसगेण, नूणमेयारिसो होसि ॥ ८९ ॥ ता त एयं सोयसि, न उणो गुणरयणठाणमप्पाणं । ता इय गए वि भयव, सभरसु पवित्तनियपयविं ॥ ९० ॥

किंच—"सीलु सुनिम्मलु दीहकालु तरुणत्तणि पालिउ, झाणज्झयणिहिं पावपंकु तवचरणहिं खालिउ ।
इय हालाहलविससरिच्छिविसयास निवारहि, उज्जलयन्तु सुयन्नु धविउ मा फुक्कइ हारहि ॥ ९१ ॥"

अब्भसिउ धीर पइ नाणवरु आवज्जिउ मुणिगुणगहणु । ता सपइ उवसमि धरहि मणु, अवेइ तुरियउ जर(जं)मरणु ॥ ९२ ॥ ता सुणसु भो महायस ! इदियवसगस्स मत्तचित्तस्स । सिरिथूलभद्दमुणिणो का तुह सह तेण समसीसी ॥ ९३ ॥

"अहो का काकानामहमहमिका हंसविहगैः, सहामर्ष सिंहैरिह हि कतमो [1]जम्बुकतुकाम् ।
[2]यतः स्पर्द्धा कीदृक् कथय कमलैः शैवलतते, सहासूया सद्भिः खलु खलजनस्यापि कतमा ॥९४॥"

पेच्छसु मह भइणीए, सोहग्गखणीए रइवियट्टाए । पयडियमयणवियाराए, पइदिण दढपइन्नो सो ॥ ९५ ॥ वाओलीए मदर-गिरिव्व निक्कंपझाणथिरचित्तो । तिलतुसमेत्तपि हु, नेव चालिओ अहह सुमहप्पा ॥ ९६ ॥ त पुण मग्गवि अदिट्ठ-गुणसरुवाए खोहिओ एवं । ता पुरिसाण पच्चक्खमतर दीसए गरुय ॥ ९७ ॥ तहाहि—"समरे मरति जलणे, विसति निवडंति गिरिसिर-

[1] जंबुके_भूखो D । १ मु O । तुर्फा=चालानां २ यत A ।

गमओ। जे जह कप्पाणि मिलंति तिहुयणे ते तहा विरएइ ॥ १८ ॥ अओ— जाव एसविसमसुण कसुरविसविसरि- मसरासमयीहिं। सीसवरम न मिलं, नमो नमो ताण पुरिसाण " ॥ १९ ॥ इय तीए सिक्खविओ महुयरओ विजयसपच्छो सो। होज्ज पुणो पुणो तं निम्गुणमणं जमयाणिय ॥ १ ॥

जिय—"पावो भममपि समासरयदलं सफलं रवे, मोक्ख मोक्खियमनिवमजलमां पत्तु वयं भाविता। पत्तसर्वेपसे सव्वी वसि छिप्पमलमे तिलिदिरसा सूम्मसूर्वमेअव हासमाणुम विवे देवेव' पुप्फाउग्गुमा ॥ १ ॥ भइस्से य—"जो कुमइ अप्पमाणं गुरुसमं म य जम्म जसस्सं। सो नमइ वह सोमइ, जणोसवरे जह दमसी " ॥ २ ॥ इय स मयगओ जिय कमो मयंमि पहदि संजिओ। निग्गुणमसे पओ विसविसमाले वयं जयइ ॥ ३ ॥ महय व नेररओ जिय पुरठेण निपा-दरि मल। कोसा सा पुण निरय पसंपय पूसमसुणि ॥ ४ ॥ जो जावे वह हत्थी-नवीसई मिच्छ निखमकप्पसरो। जो न पमाय विकुलविमलपेसंमि सुमेवह ॥ ५ ॥ जयमंति विसमवरमरगा मूरिओ पडे कोप। प व मूसमरसरिसो हुयो होही हस मेय ॥ ६ ॥ पसे वगुलमपरसहरिसमा जणपेह ठं र वहु। निक्खोसुगुण्यपसहेवे सा जमया पीया ॥ ७ ॥ सियविसमससव पसंसल व सियसिइ जडेमपमिवर। जारोमियवगुससो मेवागिधीय कंधणि ॥८॥ जगुपुंड जमेठो व पियई जाव मिमक- एमयसे। जागिणु वीय रिसा, मिमिय सा जमवीय ॥ ९ ॥ सा मयइ सिमिकावसरेव दुलहं मिपि नरिय पहय दसो। मई देसइ सरिसमपसिसियसुरंवमंमि ॥ १० ॥ पार सीसमुपाय स मयइ मो भमस मज्झरे गुणिसु। तं जिय मये सवेसी, पमोइ गुणसिरं सा वि ॥ ११ ॥ न दुलहं अंबरमहुंणि होरिया न दुलहं नरिय सिसिरमयर। तं दुलहं तं च मरणुमाणं जं जो गुणी पसवजंमि गुणो ॥ १२ ॥ जयसिमसम्पुणरप्पमसे मयजपयवायसस। सिजालं जिय हुयमो, पमो नमो पुण-

१ एत्थ अक्खि a. b।

भद्दस्स ॥ १३ ॥ जो सव्वरससमग्ग, मणुन्नभोज्ज सयावि भुजतो। महपासे वि न खुभिओ, नमो नमो थुलभद्दस्स ॥ १४ ॥
जो पडुकडक्खविक्खेवतिक्खसरधोरणीहिं विज्झतो। मह पासे वि न खुभिओ, नमो नमो थूलभद्दस्स ॥ १५ ॥ मज्झवि
ससग्गीए, अग्गीए जो तया सुवन्न व। उच्छलिय बहलतेओ, स थूलभद्दो मुणी जयउ(इ) ॥ १६ ॥ पुव्व सव्व सा तस्स,
तफहतो कहेइ हरिसेण। तचरियावज्जियमाणसो य सो सावगो जाओ ॥ १७ ॥ कइयाइ थूलभद्दो, पत्तो वदावणाय सयण-
गिहे। देसतरगयदुग्गयदियवइय भणइ करुणाए ॥ १८ ॥ एत्थ एरिस तत्थ, तारिस पेच्छ केरिस जाय। इय भणिउ तमि गए,
पत्तो पुच्छइ पिय विप्पो ॥ १९ ॥ किं किंपि भाउणा तेण, मज्झ दिन्न च जंपिय अहवा। भणिय तीए न दिन्न, पयपिय जं तु
त कहइ ॥ १२० ॥ चउरेण तेण ताओ, ठाणाओ निहाणमुक्खणेऊण। उवमुजिज्जइ सहरिसमणेण मुणिणो पमाउय ॥ २१ ॥
अह बारसवारिसिओ, जाओ कूरो कयाइ दुक्कालो। सव्वो साहुसमूहो, तओ गओ कत्थई कोइ ॥ २२ ॥ तदुवरमे सो पुण-
रवि, पाडलिपुत्ते समागओ विहिया। सघेणं सुयविसया चिंता कि कस्स अत्थित्ति ॥ २३ ॥ ज जस्स आसि पासे, उद्देसज्झ-
यणगाइ त सव्व। सघडिर एक्कारसगाइ तहेव ठवियाइ ॥ २४ ॥ परिकम्म सुत्ताइ, पुव्वगय चूलियाणुओगे य। दिट्ठिवाओ इय,
पचहा वि नो अत्थि तत्थ पुणो ॥ २५ ॥ तइया नेवालवसुधराए किल भद्दबाहवो गुरवो। विहरति दिट्ठिवाय, धरति इय चिंत-
यतेण ॥ २६ ॥ सघेण साहुजुयलं, पहिय तस्सतिए पवाएहि। दिट्ठिवाय ज संति, साहुणो अत्थिणो एत्थ ॥ २७ ॥ कहियमि
सघकज्जे, पडिभणिय तेण सपइ पयट्टो। साहेउ महपाण—ज्झाण पुव्विं च दुक्कालो ॥ २८ ॥ ज आसि पयट्टो तेण, नाहमेयमि
उवरए सते। दाहामि वायण ज न, जाइ एयमि सा दाउ ॥ २९ ॥ आगम्म तेण सघस्स, साहियं तो पुणो वि सघाडो।
तस्सतिए निसट्ठो, जो सघाण न मन्नेइ ॥ १३० ॥ को तस्स होइ दडो, एयमि भणाविए भणइ भयव। उग्घाडणंति तेणुत्तमत्थु,
त तुज्झमाह पहू ॥ ३१ ॥ मा उग्घाडह पेसेह साहुणो, जे जुया सुमेहाए। दिवसेण वायणाओ दाहिस्स सत्त जा झाण ॥ ३२ ॥
एगा भिक्खाओ समागए(या)ण दिवसद्धकालवेलाए। वीया तइया सन्ना वोसग्गे कालवेलाए ॥ ३३ ॥ दिवसतभाविणीए, चउ-

दिवसाऽवसाए कए निसि। तो पूसमित्तमुणी मेहमीव मणा एव ॥ ३४ ॥ पत्ता तस्स समीवम्मि वायणं किंचि सव्वसेसाए। एसि दोहि मिति च न लंतऽणपारिउ जाइ ॥ ३५ ॥ ताहे ते भणिया एवं मोत्तूण पूसमित्तमुणिं। वोयव्वसेसए सह ह्मणे सो पुच्छिओ गुरुणा ॥ ३६ ॥ न विसेसम्मि तं स भणइ न कोइ भयइ मम किं(समो)मेसोऽरिय। तो सम्मं किंचि कालं पि नत्ति तो वायणमाणिम्मि ॥ ३७ ॥ पुच्छइ सूरि भयवं[1] वेयसम्मेव मए इहावीयं। जइ सी तुम्हं, उवमा सरिसवमुरगिरीणि ॥ ३८ ॥ नवमासमओ छव-नाय पडेण परोहिमि गुरुणा। सम्मपि निद्दिवायं पढिया य कमेण दसपुव्वा ॥ ३९ ॥ वासुहिं दोहि उम्ह समूसयाउ गुरुपिइरमाण्य। एता पाडलिपुत्ते, ठिया य मे यावियज्जाले ॥ ४० ॥ अवस्ताईयवरसत्त मि भगिणीओ पूस-मइ्ग्माउस्स। गुरुओ मेहूल्लस्स य सम्मगाया वंदणनिमित्तं ॥ ४१ ॥ वंदिय गुरुं कहिं सो भेऊओ पुच्छिओ गुरू भणइ। वेव मिएण इमाए, गुणमायो चिहइ पढिने ॥ ४२ ॥ जक्खीओ रहस्स ताओ इहवीर वंदणनिमित्त। सीहगारो ताओ पेच्छिय मं ताओ महाओ ॥ ४३ ॥ गंतुं गुरुस्स पासे मणंति सीहेण सामि[1] सो रक्खो। भीया गुरुणा भणियाओ पूसमित्तो न सो सीहो ॥ ४४ ॥ परियागयाओ वंदिय ठिय तओ पुच्छिया कुसलवत्तं। कहियं जह पव्वइओ सिरिओ पच्छोपवासेण ॥ ४५ ॥ पणविस्समगरहि, सो मओ अमरावसमणुरत्तो। रिसिहत्था मीयाहिं, तवेण जह देवया दिट्ठा ॥ ४६ ॥ मीया महाविदेहे, तीए निवेसमाणसूरिंमि। सो भगवयाऽस्मीय य जमाए मायमविमुत्तो ॥ ४७ ॥ तं परियत्त ताओ गयाउ मीए दिएहमि संपत्तो। नवमुगुरुसमयं उवट्टिओ गो य पढिमइ ॥ ४८ ॥ जा सूरी समजोग्गो त्ति भणइ देवेरिसं तओ नामं। कस्सेह कमो पमाओ जो मा एवं विरंभइ ॥ ४९ ॥ न पुणो वायणमि मणंति सूरिओ जइवि तो तुमं कुणसि। जाये थावरिपि तओ किंपोय कहिंचि पविरलं ॥ ५० ॥ जयायरि उसिणाहं पुण्णाणि पढमिओ न तए जम्मे। पारिजमु तो भणावि, तमि तह सोम्मि वत्थूणि ॥ ५१ ॥ दसमम्म अंगिमाई, सेसं अणुवमियं मुवं सव्वं। आयअयदएमाओ महामुणी वइरसमाय एमी ॥ १५२ ॥

---

1 वंदिवंदिते B. वंदिंदिवे दुहेन D।

ननु तदानीं स्थूलभद्रसाधुः कस्मादकलङ्कितशीलस्थित इत्याह—

नसंति तवपंजरे साहू ॥ ६० ॥
विसयासिपंजरंमिव, लोए असिपंजरम्मि तिक्खम्मि। सिंहा व पंजरगया, वसंति तवपंजरे साहू ॥ ६० ॥
जो कुणइ अप्पमाणं, गुरुवयणं न य लएइ उवएसं। सो पच्छा तह सोअइ, उवकोसघरे जह तवस्सी ॥ ६१ ॥
जिट्ठव्वयपव्वयभरसमुव्वहणववसिअस्स अच्चंतं। जुवइजणसंवइयरे, जइत्तणं उभयओ भट्ठं ॥ ६२ ॥
जइ ठाणी जइ मोणी, जइ मुंडी वक्कली तवस्सी वा। पत्थंतो अ अबंभं, बंभावि न रोयए मज्झ ॥ ६३ ॥
तो पढिय तो गुणियं, तो मुणिय तो अ चेइओ अप्पा। आवडियपेल्लियामंतिओऽवि जइ न कुणइ अकज्जं ॥ ६४ ॥
पागडियसव्वसल्लो, गुरुपामूलम्मि लहइ साहुपयं। अविसुद्धस्स न वड्ढइ, गुणसेढी तत्तिया ठाइ ॥ ६५ ॥
जइ दुक्करदुक्करकारउत्ति भणिओ जहट्ठिओ साहू। तो कीस अज्जसंभूअविजयसीसेहिं नवि खमिअं? ॥ ६६ ॥
जइ ताव सव्वओ सुंदरुत्ति कम्माण उवसमेण जई। धम्मं वियाणमाणो, इयरो किं मच्छरं वहइ? ॥ ६७ ॥
अइसुट्ठिओत्ति गुणसमुइओत्ति जो न सहइ जइपसंसं। सो परिहाइ परभवे, जहा महापीढपीढरिसी ॥ ६८ ॥

"विसयासि" गाहा। विषयेष्वासते तच्छीलाश्च विषयासिनः प्रस्तुतानुगुण्यात् स्त्रीलोकास्तेषां पञ्जर-समूहस्तस्मिन् सामीप्या-
धारसप्तमीयं कूपे गर्गकुलमितिवत्। ततश्च वैषयिकसुखासक्तस्त्रीलोकसमूहस्य सामीप्येऽपि साधवोऽत्र लोके तप पञ्जरे वसन्ति, न
पुनस्तदौन्मुख्येन प्रवर्त्तन्ते, तप एवानशनादिद्वादशविध विषयासक्ता स्त्रीलोकान् प्रति प्रवृत्तिप्रतिरोधकत्वात्पञ्जर तप पञ्जर तस्मिन्। विष-
यासिपञ्जरस्योपमानम्। असिपञ्जर इव 'तीक्ष्ण' प्राक्तनस्येव शब्दस्येह सम्बन्धात्। तीक्ष्णासिपञ्जरसादृश्य च विषयासिपञ्जरस्य
दारुणविपाकतया विवेकिना त्रासजनकत्वात्। कथ तप पञ्जरगता साधवो वसन्तीत्यत्र दृष्टान्त। सिंहा इव पञ्जरगता। यथाहि
ते तपस्विन सर्वोत्कर्षशालिनश्च पञ्जरेण निरुद्धग्रहिन्र्यापारास्तत्रैवासते, तथा साधवोऽपि तपःपञ्जर इत्यर्थ ॥ ६० ॥ गुरूपदेशप-

एवमसूक्ष्मात् व्यतिरेकोपसंहरन्नाह— "जो दुगइ" गाथा। सूक्ष्मप्राणानके यथा महागमुक्त्वा व्यवच्छासार्थो वेयम् ॥११॥
मत्त सद्भावं दर्शयन्— मिटुम्मय गाथा। सेहमयानि-मृण्मयानि मधुमयपमस तम्मेव मुकेत्यात् परमेष्ठारस्य समुद्भव
मधुकामस्यत्योत्साद्य पीसितमर्थ नयन जन्ममसिवो भवत कर्मेष्वमिति एवमसमस्यमपर्य मुखविजनसम्पविकरे उपयोगामी
करे सति परिमुखामर्थ मस्तमवार्थमसराभ्यां सर्व-प्युत। तथाहि-न पतिरसो व्रामी परमपरिणामासतान् नापि गुरु
लो परिपभरेण भममसिद्धोपक्रमो ॥ १२ ॥ अभयस्यामत्व्यावंसमावेन पठितान् पेठ इत्याह— "जह ठाणी गाथा स्पष्टा।
मार्त्यानीरुमिरकपोस्सा। महाऽपि बोधमसिद्धम्या सुम्भारिपुरव परमेष्ठापि न रोचते भगवमवगवजिनवचनसारस्याम्
॥ १३ ॥ किंच— "जो पढिवं गाथा। तथा पठितामिसर्व सम्यगमिति शेषः। यथार्थं न करोतीति सम्बन्धः ॥ धनामिपा
तथा पदमस्य कर्मधारयः। बहुसमवपठिताऽमेरिताऽनामन्त्रित इत्यपि तथार्थः। यथावर्ति या तस्य मुक्ति कुर्वा सम्यगेकुयुक्ते
तथैव गुणेभिर्निर्विगुणसङ्कि। शेषमनुगतम सम्पूर्णमगुणितमोऽपि सामान्यम न धर्मि वाचि, कि तर्हि ? तावती तामस्य
मातम पावलवरामको सिवा तामती विशति। शेषानुपानविस्तरम् पुनरपमस्येत। ॥१४॥१५॥ साम्प्रतं सूक्ष्मप्रकानन्तस्य प्रापSS-
वर्त गुणेषु मत्सरितं भीतितिक्रियपोन्नाह— "जह दुक्ख गाथा। सूक्ष्मप्रकमोक्ष्यपेन प्रकटितार्थेन ॥ कार्यसम्भूतमिम्यस-
म्यस्मेव दोषान्तरमाह—" जह दाम " गाथा ॥ यदि गावतीसमवकर्मणमुपगमारिता मुनयस्मात्-सदाचारप्रतसाधुः सुप्तए
तोमयोऽपमिसुक्ते। तथा यमि मिनामविरुपवि सुगमम् ॥ गुणमत्सरस्य मित्वऽभावोक्त्वा दर्शयन्नाह—" यद्यपि सुगुणो " सि
गाथा ॥ यतीव मुखितो मूर्खेतराणुनेषितसका मुखित इति। गुणैर्न्यायात्मरक्षयतिमिः समुचित इति पतिसकरतो यो न समते स
इत्यादि सुगमम् ॥ ११ ॥ १७ ॥ १८ ॥ पीठमहापीठमना पुनरिदम्—

वच्छावईए विजये, पभकराए पुरीए वेज्जवरो। अभविंसु अभयघोसो-त्ति तस्स मित्ता य चत्तारि ॥ १ ॥ निव-मति-सेट्ठि-सत्थाह अगया सगया गुरुगुणेहिं। गोट्ठिनिविट्ठा चिट्ठति, अन्नया जाव वेज्जघरे ॥ २ ॥ भिक्खट्ठाए पविट्ठो, दिट्ठो कुट्ठी महामुणी ताव। तेहिं सहासप्पणयप्परेहिं भणिओ अभयघोसो ॥ ३ ॥ इहलोगमेत्तपडिबद्धबुद्धिणो वधुणो नमो तुज्झ। मुससि मिसेण जो विज्जयस्स नीसेसनयरिजण ॥ ४ ॥ किरिय करेसि तस्सेव, कस्सई देइ आउरो दव्व। जो कोइ जासि नासित्तु, तमि पचत्तमणुपत्ते ॥ ५ ॥ तथा चोच्यते—“आतुराद्वित्तहरणं, मृते च प्रपलायनम्। एतद्वैद्यस्य वैद्यत्व, न वैद्य प्रभुरायुषः ॥ ६ ॥” सिक्खिस्सामो अम्हे वि, विज्जय विज्ज सिक्खवेसु तुम। गुडखडमडलड्डुयभोज्जेहिं भुजिमो जेण ॥ ७ ॥ चिंतसु वयंस! पर-लोयसाहय साहुधम्मकम्ममि। मुणि-दीण-दुत्थियाण पि, वेज्जय कुणसु कइया वि ॥ ८ ॥ न करेमि किं? ति वुत्ते, भणंति पडिजागरेसु मुणिमेय। पडिजागरेमि अव्वो, किं पुण न महोसहा सति ॥ ९ ॥ ते वज्जरति देमो, मोल्ल कोडिंपि केण किर कज्ज। गोसीसचदणेणं, कबलरयणेण तेणुत्त ॥ १० ॥ सयसहस्सपागतेल्ल, तइज्जमुवजुज्जए महामोल्ल। तं मह चेव महोसहसा-लाए साहियमिहत्थि ॥ ११ ॥ तो दो लक्खे लेऊण, वाणियस्सावणमि ते पत्ता। मगति कबलं चदण च, लक्खेण -लक्खेण ॥ १२ ॥ तेणऽप्पिऊण दोन्निवि, पुच्छियमेएहिं किं तुम कायव्व। जहवत्ते वुत्तते, वुत्ते सो चितए एव ॥ १३ ॥ जइ बालाण वि एयाण, साहुपडिजग्गणेण इमा सद्धा। परिणयवओ वि ता किं, न धम्मभागी भविस्समह ॥ १४ ॥ भणउ जइ नाम किरिया, कायव्वा भे तवस्सिणोऽवस्स। ता पज्जत्त मोल्लेण, मज्झ धम्मेण मे कज्ज ॥ १५ ॥ सुविसुद्धधम्मसद्धो, कबलग चदणं च वाणियओ। दाउ अभिनिक्खतो, तेणेव भवेण अतगडो ॥ १६ ॥ ते विज्जाई पच वि घेत्तूण ओसहाणि उज्जाणे। गच्छति जत्थ पडिमापडिवन्नो झाइ स तवस्सी ॥ १७ ॥ पणमिय पाए परमायरेण सीसे निवेसियजलिणो। अणुजाणाविंति जहा, तुह सणुपीढ करिस्सामो ॥ १८ ॥ तो काऊण कडित्ते, निरवग्गह काउस्सगलग्ग(मि)पि। सव्वगं अब्भिगिंति, तेण तिल्लेण त निउण ॥ १९ ॥ त तस्स रोमकूवेहिं, सव्वओ सव्वमइगय ताहे। उन्हाभिहया खुभिया, तयागया निग्गया किमिया ॥ २० ॥ समयमि

तंमि बगे वा जाया जायना महामुणिणो। सहिया सा असमाले सभ्मे देवेगयानेण ॥२१॥ जह एयजम्मेदेण देव वणसी सपाडओ निमिडे। जड्सीपयम्मि ते तंमि देव सम्बेवि संकला ॥ २२ ॥ पुण्णामीय मणोलमेमरे तागो कमजरियो। ते सारिजन जयनाय, हवि संतमिव विमिया ॥ २३ ॥ गोसीसचंदणेण, देहिं सएणेहि ते कमू किच। तवो हवि च जाओ संजयसमरेयतो ॥ २४ ॥ एवं बीए जम्म य, वासरे निरुओ य एस मिही। नवरमहियामहिय देव वैयच्च सुगुणविगुणाई ॥ २५ ॥ जम्मंमि वासरे से तयजाय निजया तिम्मी जमिय। बीयम्मि मेसगाय मग्गिपा जइणयम्मि ॥ २६ ॥ संदेह बीए संपेविययमि सम्माणि सामि विमाणि। ता संजाओ य वई, संपन्नसुजमनवण् ॥ २७ ॥ तं पवन्नीयमाणे महामुणि ते सनोयवमिय। जविवजवण्णं सिव जायंति पयसमप्पाणं ॥ २८ ॥ " परोपकार मननमनीयमानवमनवमाणे मूर्या स्यात्। पुन्नस पुन्नोपरि तुलिमा, प साधु मानुसम्मिमन्ति ॥ २९ ॥ पुन पुन पयमिव यामिय, यत्वजत्व गया सगोरेसु। विरय हुओ मि महिमवंमि सिवं वनं पय ॥ ३० ॥ वेयज्जन्नं निवेल निक्खितेयमयजानसेन। जयवीय वरसोएसुर्द्धग- सिग निमायन्नं ॥ ३१ ॥ जय वीरं वेयज्जयिवसल जयपवियं मय सं। मिताल ते मि वो वल्न इन्वि मनी पयत्तिवि ॥ ३२ ॥ महल-निवेमल-एयवेसजमयइयमि पारिस मि वहि। मूल मूसगोसे, समयासेन गुणांवि ॥ ३३ ॥ सासमयाई समसमसमायरि सयावि सम्मे वि। वंदिवे य जमसजन्, गुणंवि मेरे वि मिवसंवा ॥ ३४ ॥ समय सामसमयमसयपुसामसमु समेयम। जम्मुमकने सम्बेवि हिसमामिव समय ॥ ३५ ॥ जह पुन्नममईए मिवय पुंडरिगिणीए नयरीए। सिरि वइरसे जराय, जासि पिया जारिसे तस्स ॥ ३६ ॥ पमियम विजयीसो जाओ तेसि सनुन्नयो पढमो। सिरिवइरनामसमो कमेण मेरे मि चत्तारि ॥ ३७ ॥ वाहु-सुवाहु-पीढो, सवोसि समीयओ महापीढे। जाया सम्मे मि कमेण, वायवाससपुन्नवण् ॥३८॥ तत्थ मि वइरसेणो पुत्ते सयमेव भयवर्गमगणा। सम्मेन देवसुपिणमेव जायस पव्वइओ ॥ ३९ ॥ सिरिवइरनामसमो, मिवेसिओ तेन मिसमए पुत्ते। मुंगर रक्के मिन एकविसयमेवारिजगसे ॥४०॥ वेयजन्ने जाए, तंमि जमे वइरसेनमिन्नइमो।

सिरिवइरनाभचक्किस्स, चक्करयणपि तमि खणे ॥ ४१ ॥ सिरिधम्मचक्कवट्टी, जाओ सो वइरसेणमुणिसीहो । इयरो वि पुक्खलावइ–समग्गविजयाहिवो चक्की ॥ ४२ ॥ चउरो वि महामंडल–सामी ते तेण भाउणो विहिया । भुंजंति महाभोगे, भोगे नियपुव्वपुन्नेहिं ॥ ४३ ॥ सिरिवइरनाभचक्की, कयाइ जिणवइरसेणपामूले । नियलहुसहोयरेहिं, चउहिं वि सह तेहिं पव्वइओ ॥ ४४ ॥ अह अहिगयसुत्तत्थो, जाओ अचिरेण चेव गीयत्थो । सिरिवइरनाहसाहू, साहियदुस्साहभावरिऊ ॥ ४५ ॥ सिरिवइरसेणजिणकुजरेण जाणित्तु वरगुजोग्गत्तं । पचसए परिवारे, सूरिपय पाविओ समए ॥ ४६ ॥ सारण–वारण–चोयण–पडिचोयण–झाण–नाणनीरभरे । गच्छसमुद्दे जो तम्मि, कन्नधारो व्व रेहेइ ॥ ४७ ॥ बाहू वेयावच्चमि, निच्चले सत्तसत्तमपवित्ती । गच्छस्स तस्स गिन्हइ, अभिग्गह गरुयवेरग्गो ॥ ४८ ॥ फासुयएसणीएहिं, पाणासणओसहाइवत्थूहिं । खूण खणंपि रक्खइ, अइसिक्खियचारुखसिक्खाए ॥ ४९ ॥ वेयावच्च निच्च, सच्च चिय सघवेइ अच्चत । “ सव्वं किर पडिवाई, वेयावच्च अपडिवाई ” ॥ ५० ॥ “ पडिभग्गस्स मयस्स व, नासइ चरण सुय अगुणणाए । नहु वेयावच्चकय, सुहोदय नासइ कम्म ” ॥ ५१ ॥ वेयावच्चे परिसठियस्स सद्धाए काउकामस्स । लाभो चेव तवस्सिस्स, होइ अदीणमणसस्स ॥ ५२ ॥ पइवासरपि विस्सामणाए सव्वाण ताण साहूण । नियम सुबाहुसाहू, विसाहए साहुसेफानिही ॥ ५३ ॥ जह जह सो विस्सामइ, साहू सव्वे वि सव्वजत्तेण । तह तह तणुयपि तणू, करेइ चिरपावपरिवाडिं ॥ ५४ ॥ सिरिवइरनाहसूरी, परिसाए पससए सया तेसिं । वेयावच्च विस्सामण च तमणन्नसामन्नं ॥ ५५ ॥ तो पीढमहापीढा, पढमाणा पवयणत्थमच्चत्थ । सोऊणमिण चिंतति, चित्ते नियकम्मदोसेण ॥ ५६ ॥ इह गुरुकुले वि दीसइ, जो राउलदेउलेसु ववहारो । नियकज्जे जो सज्जइ, स पससिज्जइ गुरूहिं पि ॥ ५७ ॥ सत्यपरमत्थवित्थरथिरचित्ता वट्टिमो वयपि सया । न उणऽम्हाण परिसाए, सूरिणो लिंति नामंपि ॥५८॥ सूरीहिं सम्ममाराहिएहिं ठाणेहिं वीसहिं पि बद्धं । तित्थयरनामगोयं, सिरोमणी सव्वपुन्नाणं ॥ ५९ ॥ सुकयं कयावयाणो, बाहू बंधिसु चक्कवट्टिफल । नियबाहूहिं सुबाहू, वीसामितो य बाहुबल ॥ ६० ॥ पीढमहापीढेहिं, इत्थीभावो पभाविओ तेहिं । जमपत्तिय गुरूसु, नालोइयमत्तसमए वि ॥६१॥

कम्पन्ति ते विमाणेसु ॥ ६२ ॥ तेलोक्कसागराओ, परमो पवमे परिणयमणोणाओ कोडीओ पविहिण पहाण । पंचुत्तरेसु पवति कम्पन्ति ते विमाणेसु ॥ ६२ ॥ तेलोक्कसागराओ, परमो पवमे सुरो नवोमय। मसेवी-अमियणओ सुमंगलसुपव वाओ ॥ ६३ ॥ पामेक्कसुसमसासी, पविमरावयमपबीहमि । कम्मममहु-इसम नेमम वसमचरिममो ॥ ६४ ॥ कवि बहुणवि वासान पुण्णकम्मेहिं वाहुपीवसुरा । परमेसरस्स पवमानवव होति संपया ॥ ६५ ॥ देवी सुमणामए, भरहो भेमी प मिहुणये । चविव सुणा-महापीवसुरवरा ते नि वसमस्स ॥ ६६ ॥ देवीव सुन्दरए, वहुमणी सुंदरिवि सुमपेम । वाव होंति वि सुपमई, थाई पवमई वाहम ॥ ६७ ॥ सिरिरिसहसामिणा दिक्खाविया वद पवविय किमे । पव्वाइ चत्तारि वि सिवावि तप बहा मवियं ॥ ६८ ॥ एवं च—वाहु-सुवाहुपसंसं बसहोवा होंति पीढमहापीढा । वंमीसुंदरिममेवमसिमिपमणुस्सा ॥ ६९ ॥ इति पीढमहापीढकहंमि ।

ससरिवार्य मिच्छ, बहुमपरिणामे सपा रमइ । कवय प परसिरीए, सकदामो दुक्खिओ निचे ॥ ६९ ॥

किम्मदविसायवहणो, कुलमकसीण वातिरयस्स । वसिव हिर देवलोए वि, देवसमिद्धा अवगासो ॥ ७० ॥

बह सा बनसहस्सासपबिपमयरकमापए नयो । बो तं सुणो विरमव, मास्स वसमेम सो दुहिमो ॥ ७१ ॥

सुसह वि पबमस(प)मासे, पेयेम करिति रिवय समयं । अप्पपुरं परनिंदा, किस्मोपस्सा कसाया य ॥ ७२ ॥

किंच—" परपरिवार्य " गाहा ॥ परेषाम् अवर्णवादं गृह्णाति । अल्पमाहत्म्यभाव्यकुमतवहुमानात्, अथवा परतो वा विवरणे रमते । सुमपामिवा चेव परिसुम्ममाणव कमिव इच्छाइभेदेन एवले च सुकयावो वीवा स सोव मिरवं दुक्खिओ भवति किं पुनः परत्र ॥ ६९ ॥ तथा—" किम्म " गाहा । सुविं अवमाविपुरुषाभ्यामविकमपुरुषम कवव एव गुण-गण-संविव अपहानाविणम किचम मबरोव पावोरवमोषे कम्म कर्मविपर्दमेोऽपि म देवसमासु परमोऽपिक, किवि-विमतिरेवापपमविवचषसात् कपरिच-दोषनाथो परमेरेऽपि सुमवासे कमव एसमो ॥ किरेभसमोबो । " एव सुके रिमेये, पामपरिमस्स संपदं वाओ । होव्व कुम्म-

णमिहो पुण, सावेक्खाण गणो होइ ॥ १ ॥ जइ-जइणी-सावय-सावियाण मेलावओ भवे सघो " ॥७०॥ इति कुलादिलक्षणम् ॥
तदियता मात्सर्येणाऽविद्यमानदोपग्राहिणो दोपो दर्शित. । सम्प्रति विद्यमानदोपग्राहिणोऽपि तमाह—" जइ ता " गाहा । यदि तावज्जनप्रसिद्ध्याऽत्यतिनादरत्वाद्वर्जित साधुमानिभिरकार्यं चोर्यपारदारिकत्वाद्यमाचरत्यन्य' कश्चित्तदाऽसौ स्वय कृतापराधत्वाद्वधनन्धादिभिर्दु खभाग्भवतु । य पुनस्तद्विकत्थते जनसमक्षमुत्कीर्त्तयति स परस्य व्यसनेन दु खितोऽपि निष्फलान्तस्तापभाग् भवति । उदर प्रभृज्य स शूलमुत्पादयतीत्यर्थः ॥ ७१ ॥ अधुनैव प्रकाराणामन्येपामपि दोपहेतुतामाह—" सुट्ठुवि " गाहा स्पष्टा । नवरमुपस्था-स्त्रीपुसव्यञ्जने ॥ ७२ ॥

" जइ गउरवत्थिणो ता, सगुणे सयमेव मा पयासेह । सगुणे पयासमाणी, लुया लहुयत्तमणुपत्ता ॥ १ ॥ "

योगाभ्यासविशेपवासितमतिमीमासकग्रामणी-रुस्तोऽप्येप कथचनाऽपि कुरुते, नात्मस्तुतो प्रस्तुतिम् ।

मन्वानो मतिमानमानमहिमामिथ्याभिमानात्मिका, स्वश्लाघामतिमात्रलाघवकरीं षष्ठ महापातकम् ॥ २ ॥ "

जो परदोसे भासइ, समुणिज्जइ मच्छरित्ति सव्वेहिं । तो तेणुत्ते सते वि, होइ दोसंमि सदेहो ॥ ३ ॥ लोउ परस्स दोसे, हत्थाहत्थि गुणे य गिन्हतो । अप्पाणमप्पणच्चिय, कुणइ सदोस च सगुण च ॥४॥ जीहे ! जाण पमाण, जिमियव्वे तह य जपियव्वे य । अइजिमिय-जपियाइ, पच्छावच्छे अपच्छाइ ॥ ५ ॥ जीहाए नमो जा लोलयाए सुषा महासुहाण निही । सह तीए पुण सा चेव, सविसखीरिव्व दुक्खखणी ॥ ६ ॥ परमेट्ठी दसकठो, पिणागपाणी सहस्सबाहू य । इह कह कह नवि गुत्ता, अइनडिया नियउवत्थाए ॥ ७ ॥ उयह उनत्थासामत्थमेत्य वित्थरियनयणसहस्सेण । अवजसपसत्थिथभो व्व, अप्पणा ज हरी जाओ ॥ ८ ॥ ज अज्जिय चरित्त, देसूणाए वि पुव्वकोडीए । तपि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेण ॥ ८ ॥ इह फिर कसायवासे, वासे आवासियाण जह होइ । अइरगो तह जीवे वि, जायए नवरि निरयगई ॥ १० ॥ परावर्णवादिन पुनर्दोपमाह—

सपरिवारपरिओ, दूसइ मज्झेहि वेरिं वेहिं परं। ते ते पाए दोसे, परपरिवाई इव अपिच्छो ॥ ७३ ॥
जहा चिरट्ठेही, अवन्नवाई सयंमई चवला। वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेअगा गुरुणो ॥ ७४ ॥
जस्स गुरुम्मि न भत्ती न य बहुमाणो न गउरवं न भयं। नवि लज्जा नवि नेहो, गुरुकुलवासेण किं तस्स ? ॥ ७५ ॥
रूसइ चोइज्जंतो, वहइ हियएण अणुसयं भणिओ। न य कम्हि करणिज्जे, गुरुस्स आलो न सो सीसो ॥ ७६ ॥
उव्विल्लणसूअणपरिभवेहिं अइभणियदुट्ठभणिएहिं। सत्ताहिया सुविहिया, न चेव भिंदंति मुहरागं ॥ ७७ ॥
स चण्डकौशिकः सत्पुत्रैः सह ... पर्यवसितः... परं पूयवति-वनमध्ये गुप्तया ... स तान् दोषे-
ष्वन प्रपतति-योजयति ... इति देवोऽपि ... मपि मासो ... ॥ ७३ ॥ ... सुविनीतदोषानाह— " जहा " गाहा। " जस्स "
गाहा। " रूसइ " गाहा। ... सयंमई चि-स्वमत्यैव कार्येषु प्रवर्तन्ते न गुरोर्मत्या। चपलमस्थिरम
सर्वत्र संयमे प्रवर्तिता। उद्वेगकारिणी-गुरोरुद्वेगकारिणः। भक्तिर्बाह्या पर्युपास्तिः बहुमान-आन्तरप्रीतिः। गौरव-पूज्योऽयं ममेत्यादर
बुद्धिः। भयं गुरोः सकाशात् समयेषु प्रवर्तमानस्य। अनुशया-कोपसम्बन्धः। ... । न स शिष्योऽशुभसत्त्वात्
॥ ७४-७५-७६ ॥ सामर्थ्ये महत्त्वमाह—" उव्विल्लण " गाहा। उव्विल्लणमपकर्षणेन। सूअणं-पैशुन्यकरणम्। परिभवो-न्यक्कारः।
अइभणियम्-अत्यर्थमुपालम्भितम्। दुट्ठभणियम्-दुष्टवचनम्। तैर्दुर्वचनाद्यैः सुविहिता मुनयो मुखरागं नैव भिन्दन्ति-न विच्छाय-
मुखा भवन्तीत्यर्थः ॥ ७७ ॥ यथा—
माणंसिणो वि अवमाणवंचणा ते परस्स न करेंति। सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू उयहिव्व गंभीरा ॥ ७८ ॥
मउआ निहुअसहावा, हासदवविवज्जिया विगहमुक्का। असमंजसमइबहुअं, न भणंति अपुच्छिया साहू ॥ ७९ ॥

महुर निउणं थोव, कज्जावडिअं अगव्वियमतुच्छं। पुव्विं मइसकलिय, भणंति जं धम्मसंजुत्तं ॥ ८० ॥
सट्ठिं वाससहस्सा, तिसत्तखुत्तोदयेण धोएण। अणुचिण्णं तामलिणा, अन्नाणतवुत्ति अप्पफलो ॥ ८१ ॥

" माणसिणोवि " गाहा। ते साधवः परस्य-शत्रोरप्यमानवञ्चना-पराभवविप्रतारणा न कुर्वन्ति। किंविशिष्टस्य शत्रोर्मानाशिनोऽपि-मानोद्धतोंऽश -स्कन्धोऽस्यास्तीति मानासी तस्य। अहङ्कारोद्धुरस्कन्धस्यापीत्यर्थ । सुखदु खोद्दिरौ-प्रियाप्रियालापौ ते एवानर्थं साधूनामौचित्यातिक्रमकारित्वात्त च न कुर्वन्ति। ये हि चटूनि वा कटूनि वा वचनान्यपि कमपि प्रति नोच्चारयन्ति ते कथ परस्यापमानवञ्चना कुर्वीरन्नित्यर्थ । किमित्येवमित्याह—" उयहिव्व गंभीरा " हेतुद्वारेण विशेषणमेतत्। यत उदधिगम्भीरा साधवस्तत कथमपमानवञ्चना सुखदु खोद्दीरनर्थं च कुर्युरित्यर्थः ॥ ७८ ॥ किंच—" मउया " गाहा। मृदवोऽस्तब्धा । निभृतस्वभावा हास सामान्येन द्रव' परोपहासस्ताभ्या विशेषेण वर्जिता । राजादिविकथात्यक्ताश्च यतयोऽसमञ्जसमप्यतिबहु-वारवारं न भणन्ति, अपृष्टाश्च वाचाटतया न भणन्ति ॥ ७९ ॥ पृष्टा अपि यादृग्वदन्ति तदाह—" महुर " गाहा। दत्तार्थैव ॥ ८० ॥ एव च ब्रुवाणा क्षिप्रमेव मुच्यन्ते ज्ञानित्वादज्ञानिना तु कष्टमफलमेवेत्याह—" सट्ठिं " गाहा। षष्टिवर्षसहस्राणि यावत् त्रिसप्तकृत्व एकविंशतिवारोदकेन-नीरेण धौतेन भैक्षेणेति गम्यते। अनुचीर्णमाचरित तप' सामर्थ्यलभ्य तामलिना पर तदज्ञानतपस्त्वादल्पफलमेव। तावता हि सम्यग्ज्ञानसध्रीचा तपसा पर'-सहस्रा अपि साधव' सिध्येयु ॥ ८१ ॥ तामलिकथा पुनरियम्—

नयरीए तामलित्तीए, तामली नाम आसी कोडुंबी। धण-कण-रयण-तणयाईएहिं अइवित्थर पत्तो ॥ १ ॥ सकुडुंबजागराए, जागरमाणो कयाइ चिंतेइ। इह मह जम्मे जाय, किंपि न खूण खलु खणपि ॥ २ ॥ बहुपुत्त-पुत्तिगा-नत्तुगाइ-वण-धन्न-कंचणाईहिं। करस घरस्स वि एव, वित्थारो अत्थि अन्नत्थ ॥ ३ ॥ जइ इह जम्मे रम्मे, सुकय सपइ न अज्जिणिस्सामि। नीसवलपहिगस्स व, ता होही का परत्थ गई ॥ ४ ॥ वासियभत्ते भुत्ते, अन्ने अन्नमि जह असिवमि। होइ किलेसोऽवरस, तह इह मह अकयसुकयस्स ॥ ५ ॥ किंच—

" भाजुर्वोजुमिमेसनूम्स्तरक मीनेभरी विमुता अकर्ने तस्मीवयमसुमग घृमबुपकृदयुग्म् ।
रोमपवेगमिरंगसंगमवी-भीरे त्नुमिन्नगा प्रेमाऽपि मनम्मयसि प्रियमने सौदामिनी समपत् ॥६॥ "

इय विरसे संसारे, सुमस पम्माअम्मो भउ। सूयपेमगपस्मे, परवासे वेरिसो पम्मो ॥ ७ ॥ तओ य—' संकनी वेरनी सुद्धी, वसुम्मा पमाअंनी । पाम्मसुता गुरुतस्स, तन सर्गे म गम्मति " ॥ ८ ॥ इय चिंतिऊण दुकरिऊण निवणासुमि पवणसऊण । सयाउ मोप्पम-मूसकंसूपाएण्याणेण ॥ ९ ॥ सुमुहरे सुमुपपमेमिवमम्मप्पमा सुउं । निवत्तणं निप्पचुमनामिमु पमेणो सर्व सुमइ ॥ १ ॥ भरतिन रामवं पडिमाई मिसप्पाइ नो सुपुं । पम्मामिपमिरुप्पम्, पम्पम्स अवसामंडवे ॥११॥ सव्वं पासइ सव्वं पयमममानपइ इमदा इमं । रवि-मस-संम-रम-हसाय-घेरिय-रायहंस ॥ १२ ॥ ता चीमममुमाव, जपाय पियमाओ पाए पडिओ । परमामयं मिस्या, पसप्पमिसुमेगासिसाहा ॥१३॥ दारमविरसाहमिस्साम्, ममाविमसप्पिऊण क्मसमर । पमसर-पाअसर-रापसाय सेसा वेस मुंमेर ॥ १४ ॥ सद्धिं मासससहस्सा एवं भमम विम्मवपमरम । परिपालिऊण पव(ण)ओ पावमिवरिसयमप्पाई ॥ १५ ॥ निवइ ममेपमोर्ग अवविमवसमसरोविय वार्य । पामऽम्मवि सपम् किंपि मम्मपम्मुणमं भवे ॥ १६ ॥ ता जविमिसिरं पाअवेसमे सहमि पपमेवं । इय ईसाय रिसाम्उमसमेव ठिओ समाहीए ॥ १७ ॥ एमावसरे वक्कि ईसयपमनी आहेसि निमाइ । पविमरिआरे वा किंपि अम्पमो पसाइ पईवि ॥ १८ ॥ मममसमविहिप्प मिट्ठो ठिओऽमुसाप्पस-दुमिहाए । वा वस्स पुपे पणामिय, परमो पेपप्पुरप्पमो ॥ १९ ॥ इसुमविक्केपसूयाईएहिं सवारिऊण विमपइ । पुप मंथे ! पविरासं, पर जता होसि अमराणं ॥ २ ॥ बक्किपयाए पहुणो वपुम्मासा परमुम्मे आयम । सामी होऊमस्साण वा तुमं मुंज सुरमोए ॥ २१ ॥ सुसिणिओ पो विहुए, न वयममोगीपरेइ वं हेदि । पुमरच परिसओ वि पू, तओ गम हे सद्धपसि ॥२२॥

निपवइ सीयंस अवसायिरि मओपवपुमे जमर्णसीमप्पा सुपिरमविमामीपि पमिसाः ।
पमेवमिन् पावमसिवयवसमममपके, इम भमपे मीसिमि परमपुम्पमीमसमो ॥ २३ ॥

इय भावणाए सलेहणाए, दोमासियाए सो मरिउ। ईसाणिंदो जाओ, थिरतरतडितेयरासि व्व ॥ ३४ ॥ बलपरिवारो परलो-
यपत्तय तामलिं मुणेऊण। सामरिसो आगतूण, तस्स देहं विडंबेइ ॥ २५ ॥ अइकुहियपकलित्त, करित्तु कंट्टेइ बंधिऊण पए।
थुक्कइ मुहंमि जा ताव, ओहिणा मुणइ स सुरिंदो ॥ २६ ॥ तत्थेव ठिओ जा ते, जोयइ अइकोवकूरदिट्ठीए। ता ताणमगमग,
अग्गी आलिंगिउ लग्गो ॥ २७ ॥ अइजलिरजलणजालाजालकरालिज्जमाणसव्वगो। एगो एगस्सोवरि, निवडइ निविडाए पीडाए
॥ २८ ॥ छम्मासवेयणिज्जाए, ताए जायाए वेयणाए तओ। विहुरतणू ते तत्तो, कत्तो एयति चिंतति ॥ २९ ॥ तामलितावसप-
वर, ईसाणिंदत्तणेणमुववन्न। जाणेऊण तक्खण पउजिएणोहिणा सम्मं ॥ ३० ॥ पभणति सावराहा, अम्हे अन्नाणओ खमह तुब्भे।
दिट्ठो कोहपभावो, मग्गेमो सपइ पसाय ॥ ३१ ॥ मन्नियनियानराहा, अगाहनाहावहाय ते मुणिय(उ)। तेण खणेणं मुक्का, जहा-
गय पडिगया सव्वे ॥ ३२ ॥ एत्योवणओ एव, तविओ तिव्वो तवो चिरमणेण। सिज्झति जेणऽणेगे, परमन्नाणित्ति अप्पफलो
॥ ३३ ॥ इति तामलितापसकथा ॥ कथमज्ञानतपसोऽल्पफलत्वमित्युच्यते—नग्नादौ भिक्षाप्रक्षालनादिना षड्विधजीवाऽपमर्दकत्वात्
श्रुतिस्मृत्यादिहिंसाशास्त्रोपदेशकत्वात्। यद्वा परशु-रामादिक्षुरिकाशस्त्रोपदेशात्, तथा चाह—

छज्जीवकायवहगा, हिंसगसत्थाइं उवइसंति पुणो। सुबहुंपि तवकिलेसो, बालतवस्सीण अप्पफलो ॥ ८२ ॥
परियच्छंति अ सव्वं, जहट्ठियं अवितहं असंदिद्धं। तो जिणवयणविहिन्नू, सहंति बहुयस्स बहुयाइं ॥ ८३ ॥
जो जस्स वट्टइ हियए, सो तं ठावइ सुंदरसहावं। वग्घी छावं जणणी भद्दं सोमं च मन्नेइ ॥ ८४ ॥

" छज्जीव " गाहा स्पष्टा ॥ ८२ ॥ सम्प्रति प्राकृतजनस्याक्रोशादिदुर्वचनेषु क्षमोपदेशमाह—" परियच्छति " गाहा। ततो जिन-
वचनविधिज्ञा बहोर्बहूनि दुर्वचनानि सहन्ते, यत किमित्याह—यत परिगच्छन्ति-अवबुध्यन्ते यथावस्थित सर्वं जीवादिवस्तु तत
इत्यमेतनेन योगः। यथावस्थितत्वमेव व्यक्तीकरोति—" अवितह असंदिद्ध " ति प्राक्तन चकारस्येह सम्बन्धादवितथमसन्दिग्धं

केवली। कथितं च तु मुक्तिमार्गो रत्नत्रियामयीपर्यन्तमन्तम्। असन्दिग्धं च न पुनः स्वाशुर्वा पुरुषो केवलिविज्ञानमिव सन्दोहसमित्यर्थः॥ यो हि—" सम्वे पुनरुक्तं, अम्मार्य पाषए अमीयामं। भयरमेसु गुणेसु च निमित्तमेव परो होइ " ॥ १ ॥ इत्यपि जिनवचनभावितमतिस्तस्य च मम स्वाध्यायमा ननु कथं च विशेषमाहो इत्यादिना धर्मोपदेशः मात्र गोम्य एव वहिः पुनरुक्तदोषमानेन? उच्यते—पौनरुक्त्येन दोषाय मुमुक्षुत्वपूजने मुद्रः कोपपुरुषान्तिविशेषमभ्यात् मन्यते च- कथितव्यार्थं मन्यते न पुनरुक्तदोषोऽस्ति। तदभावविपन्नं पुनरुक्तमनुसमर्थनम्। सध्यायध्यानतपोऽवसरेषु भावसुगुणपाकेषु। संवगुणविलयसु च, न इति पुनरुक्तदोषाओ॥ एतदेवमन्यापि पुनरुक्तदोषोऽपि बाध्यम्। जिनवचनविधिनाय धामयो न बाध- तपस्विन इव षड्जीवनिकायपम नामि हिंसाम्नोपत्तका सुरिपि देवं तपोमहात्म्यमेव मन्यतीति मन्युवेमाऽपि उपमन्यो दृश्य॥ ८३॥ मेघोपमपुरुषः पुनरस्मानेव धाम्यपरिकम समीचीनार् मन्यते तयोर् भरणाम्—" यो यस्य " गमरा स्पष्टा। इति वर्त्ति–विवे व्यायीत्यर्थः। स्वामी यथा लब्धिं लाभं–लाभं यत्–स्वयमसौ मन्यते वस्तुतो तपो भरणमात्। सोऽयं च कोपपुरुषमेव सम्यकेत्समित्यर्थः। अथ तस्मैमभार्थं सोऽमुपगीमिति॥ ८४॥—

तस्य संहरु वनाक्षररत्नमानि सिद्धिसिद्धोपिर् विहारणमस्वमीषु।
मम व्यनक्ति करणम्नयायमसी मुपदेशमालस्पृष्टीका वक्तिो॥ ग्रं ५४९॥

॥ इतिश्रीरत्नप्रभसूरिविरचितायामुपदेशमालाविशेषवृत्तौ द्वितीयो विभागः॥

## ॥ अथ तृतीयो विश्रामः ॥

मणिकणगरयणधणपूरियंमि भवणंमि सालिभद्दोऽवि। अन्नो किर मज्झ वि सामिओत्ति जाओ विगयकामो ॥ ८५ ॥

न केवलं यत्यवस्थाया, गृहस्थावस्थायामपि विवेकस्य महत्फलमिति दृष्टान्तेनाह—" मणिकणग " गाहा। कथाया कथितायां गाथार्थः कथित एव स्यादिति सैवोच्यते—॥ ८५ ॥

सालिगामुनामेण पसिद्धओ, आसि गामु धणधन्नसमिद्धओ। धन्ना नामि कावि निहवगण, तहिं कम्मयरी आसि अकिंचण ॥ १ ॥
तसु अहेसि सगमु इगु अगउ, लोयह वच्छरु य चारतउ। माइ कयाइ तेण रोएविणु, मग्गियखीरि करग्गि धरेविणु ॥ २ ॥
त पेक्खिवि सा रोयणलग्गी, पिय समरेविणु नीधणवग्गी। मिलिय सइज्झी पुच्छहिं कारणु, कहियइ तीए करिंति निवारणु ॥ ३ ॥
धहिणि! न जाणइ चेट्टउ काइं, मह फहिं तडुल-दुद्ध-घयाइ। अप्पिय ताहिं ताइ तो पायसु, रद्धउ सिद्धउ तीए महारसु ॥ ४ ॥
परिवेसि वि सा थालि विसालइ, पायसु पुत्तह पत्त परालइ। तसु घरनारि तवस्सि तिगुत्तउ, मासखमणपारणइ पहुत्तउ ॥ ५ ॥
तउ चिंतइ सगमु गुणगणसगमु फटरि पुन्नपरिवाडि महु। जउ साहु महातओ अवसरि आगउ विहरावउ वरखीरि सहु ॥ ६ ॥

एप एवामृताहार

उट्ठइ थालु विसालु सुलेविणु, मुणि पडिगाहइ गुण चिंतेविणु। खीरि देवि सो चिंतइ तित्तउ, त सव्वगु सुहारसि सित्तउ ॥ ७ ॥
फटरि फटरि अवसरु सजायउ, भरिउ थालु खीरिहि मुणि आयउ। वपुरि वपुरि मुणिसीहपसाऊ, मह न्तिह खडियउ न भाऊ ॥ ८ ॥
माइ पुणवि परिवीसइ पायसु, जिमइ जाव सो धाइ महायसु। रयणि अजिरमाणि जेमणि तिणि, वासियवमणि मरेइ तहिं दिणि ॥ ९ ॥
पत्तदाणि तिणि आउ नियद्धउ, नरभवि उब्भड भोगसमिद्धउ। कामधेणु कप्पद्दुम अगलु, जइइ सुपत्तदाणु जयमगलु ॥१०॥

जह यणमिमि भासि पसिद्धय, सत्थघणु गोमय समिद्धय। तम्मसीलसोहग्गसमग्गासु, मरा समणु तस्सु वस भज्जासु ॥११॥
इय सा गुणसारी सिव पियारी पुत्त सुमित्तय जणणय भणि। न होइ न जाय एमकुमि मंगय पुत्तिमावि पि देवगमि ॥१२॥
पा साविओव सुमित्तइ जणइ, पिक्खेमि सुस्सपरसारि साइ। सुमित्तसु समरणइ सत्थवासु, पइ देसइ पुणु पसमणसु ॥१३॥
दे दिवसमास वो भाव तासु, गय संगमु गाम्मि गुणोहणसु। सोहइ साविओवोगसोगि, सा मारइ भोगि भरोगसोगि ॥१४॥
जह जाइ वासु बएसमि कमि जह सरसकिरणु अवरमसमि। गोमरि मरणु पारणु मवमि, बम्भूसणु पुत्त पिवि पवमि ॥१५॥
गहिरवरभरय भासुर करिसि मह-मह-मह बप बप मर्यति। बहुवरवर मयंति पूर, दिसंति वी(ह)र बप्पूर पूर ॥१६॥
मप्पमवि पहुडि मयु महइ, सुमित्तमणुसारि पभु साविमहु। पसमसर मृइ पोएसुणसु, मिव नेरमभमवि कप्पमसु ॥१७॥
मवह थारमइ सारवराइ मपमसमरेइ मिमइ। सोहमामसमगासु सोहइ सो पत्त सुरपुमइ महिणव भमसु ॥१८॥
समविएसम्मसवीसकाम, परिचाविर इम्मि सुरसरल। साइ मुसुइ पसी सुमूरिसोग सुपमविम मेरि सममसोग ॥१९॥
भरवहिमि रम्मु मिणिसम्मु मसमवि भसंकिर मसमसु। गोमरु मिम्मविर दह वास, मिवनामि मिवड निकमगवाय ॥२० ॥
परिवंमम्ह भावेर गेहि मिस्सुव सम्मु पूप सिवेहि। सुपनिम्मिम्समसमसपमपेम भमिसोवम भप्पइ मसमसोम ॥२१॥
मरणमर कम्मइ नेयगइ, पडिपइ-दीरसइ-मसपइ। मणिक्कमसमपमिसमविसिम, मिसि ठाइ साविमइ दंसणीय ॥२२॥
सुरसोग सुसुमइ साइ मिवमि, सुरसोइ मेम सुग बप्पमपरि। मरम्मइ भारसम्मूरमसु, पमिक्कपविस्समवि भोगि सासु ॥२३॥
करया वि रपमरंपम सुगार तहि भवमिम पविमारधरि सार। पहुमसमोसमुमसम भविय, मिव सेविमिरी तह न कोमि विविय ॥२४॥
राज्जु मिस्सेविसु भमय देविसु हे मिसमय निमासमविय। मसामरि भाविय हे भवि भविय मविय मोहि सम्मइ विविय ॥२५॥
वेसम्मय मिवो तो इमं बीमिर, कि न पमोमि मे कंसमो जम्पिर। एगयोम पि मोसको न दे पुत्तम, कमसमो न जं देव कि विम्मस ॥२६॥
सेविस्सं पुत्तो समरं भाविम पइ मे देइ पमोत्ति हे भविम। मम्महि मिम। भणिय पमोमि सम्मे गच्छ सम्मसाइस्मि मरम्म संगमिक्खा ॥२७॥

तो नरिंदेण भद्दा वि सद्दाविया, आह नरनाह ! सव्वेवि खडिकया। सालिभद्दस्स तब्भारियाण तह, पायपुछणकए हुंति निच्चं जह ॥२८॥
सेणिओ त सुणेऊण सोहणजसो, चिंतए कयचमक्केण चित्तेण सो। केरिसो सालिभद्दो भवे सो वणी, कामदेवोवमो एरिसो जो धणी ॥२९॥
पेक्खियव्वो सुही सव्वहा सो मए, मद्दिगओ सुरकुमारो व्व जो सोहए। तो भणावेइ भद्द महीवासवो, सालिभद्दो इहोवेउ नयणूसवो ॥३०॥
ता भद्दा अक्खिउ अइसयसुक्खिउ सालिभद्दु आवेइ किंव। सामिउ परिभावउ मह घरि आवउ, जोहारइ निरुपाय जिंव ॥३१॥
पेसिए तीए पुरिसमि सम्माणिए, राइणा एय अट्ठमि अणुजाणिए। सत्थवाहीए सव्वत्थ वद्धात था, चीग चीरप्पवचेहिं चदोदया ॥३२॥
हारहीरकमाणिक्कचक्कक्किआ,[1] तेसिमतेसु लवूसगा सचिया। धवलिया भवणभित्ति सुचित्तंकिया, दिन्न सुपसत्थकच्छूरिया हत्थया ॥३३॥
चगनवरगरगावली सज्जिया, तदुवरिं रइयरयणावली सत्थिया। मल्लिया मालई मालउम्मालिया, रभखभावलिउब्भडउब्भिया ॥३४॥
पइदुवारपि निप्पट्टघ(प)ट्टंकिया, सार साहार कदलदलालीकया। राउलाउ निय जाव गेहतओ, रायमग्गो समगोत्ति चगो कओ ॥३५॥
नेत्तवट्टेहिं पट्टउ य पट्टटेहिं सो, छाइओ छडियघुसिणवुणा सव्वसो। तो महीनाहु सव्वेहि सह चल्लिओ, चेल्लणाईहिं हरिसेण सपेल्लिओ ॥३६॥
अह हत्थिहिं चडियउ जणसघडियउ सेणिउ अतेउरसचिवु। पेरणियनिरतरु पाउलपरिगरु सालिभद्दघरि पत्तु निवु ॥३७॥
सालिभद्दजणणीए जणुत्तमु, सेणियराउ ति विक्कमविक्कमु। सरसु सिणिद्धु सुसिट्ठु सलोणउ, भुजाविउ किउ किंपि न खूणउ ॥३८॥
तयणतरु तबोलु अखडिहिं, तीए दिन्नु नवनागरखडीहिं। मरगय-मोत्तिय-माणिक-हीरिहिं, ढोइउ ढोयणीउ वरचीरेहिं ॥३९॥
अह पभणेइ नरिंदु न दीसइ, सालिभद्दु सेसु महासइ !। अच्छउ अहव सोक्खिसइ उट्ठहु, कहि कहिं अच्छइ जाइवि भेट्टहु ॥४०॥
तो सा पासि पहुत्ती पुत्तहि, चडिय गिह्वोवरि भूमिहि सत्तहिं। भणइ गिहागउ सेणिउ अच्छइ, एहि वच्छ ! तलभूमिहिं निच्छइ ॥४१॥
भणइ सालि सेणिउ ज कियाणउ, माइ ! मोल्लु तसु किंपि न जाणउ। तुहु जि लेसु सुमहग्घु महग्घउ करउ किमाविउ हेट्ठइ सिग्घउ ॥४२॥
भणइ भद्द ! सेणिउ न कियाणउ, किंतु तुज्झ पहु मगहाराणउ। ता उत्तरिवि वच्छ ! जोहारहि, टलइ न सज्जणु जण ववहारहि ॥४३॥

[1] चर्फेदिया B चर्फचिया D।

सो एउ निसामिउ जम्हवि सामिउ जवइ कोइ हय पुम्मवर। नरवइ जवेविणु वर पेम्पवितु पेम्पणीउ पाहवि पणउ ॥४४॥
रयणामरण भूरि मिवरेविणु, सेण्णिउ मिवउवमिण कोविणु। मउरणगरि मणि घोक्कवर, पुणु वत्तुणमइ वामु पुम्मवर ॥४५॥
मणिमण्डलमाला दि मिलावइ, जिम ठिय वत्तु वत्तु अम्हवि गाम्व। णम्मकेंण पो पिंनिउवि जवहि, मवइ स पुणु! वाउ मिच्छावरि ॥४६॥
वर वायगिरिमनिरि पसवि, मउमनेमिमिदिवमणु वातवरि। सुपरमणु बज्जारि पडिपड, वोमंसयहि न वत्तु करि पडिकव ॥४७॥
मरा मणिवसवि सभाउ, वाणिनीउ उमंतरि वमउ। णुरप्णमरणेवारि एं ठिय, वंगारु प मरवारि वोमविलउ ॥४८॥
रमणु पवामरप्पइ पुम्मउ, नरवइ वाइ भइ जाइमगइ। मिणु पणु मयमनभूरुमवीगिरिहि, पडिरिय पुन इय पाविदि कुहि ॥४९॥
तो चिति पमविउ मिणु पुण्णविउ मिवइ मरमुप वयर। मरा भरपुम्मउ मंगिरि गण्मउ पाकइ एमु पविपवर ॥५० ॥
वाइ सामिमदु चिरोइ वत्तु, ठावा रयमु हरं भइममणु। निरवमपमसिरममेवत्तुम्णु, निप्पसीपिउ निप्पमु नेमि मुवणु ॥५१॥
जिउ मुणिउ किंपि मई पुण्णजम्मि तिणि सिवसमोग[illegible]पम्मि। पुणु मणु एउ पवित्र मुणामि जं मइवि कमु संपन्नु सामि ॥५२॥
इय पुण्णपवित्रपुण्णसार पविपंमहि प्रमिपमूरिमाल। पा बम्मु करेवउ मई समग्गु, जपमाणि सगाहि सपवमणु ॥५३॥
वाइ बम्मघोस गुरु विरएमाणु, वहिं पणु 'भसिपनिवारसमाणु। सेविउ वसेससेबसपणु, वाइमि पमोउ तो मुणिवइणु ॥५४॥
वाइ सामिमइउ संपणु वत्तु, मुणिमाइवणु मिसुणइ मउणु। सवन्नवमोंकसीगवेगु, पमप्पवउ मायससमदु वपेणु ॥५५॥
गुरु मवर सामि पुण्णउ 'सम्मउ, मिमसंजमि होइ न पेसमाउ ॥[illegible]॥
पेरमणिरमणु पमापमंगलु, मायममविय पुरमउ, पम्मसमपविय पमणिप्पउ मणि
मई मार! मिसमिउ समपमणु, सिरिमुरिपासि वत्तवेतएण्णु। तो मेघुरमोपमिरपविणु मई मेवि वरवं निप्पडु वरिणु ॥५६॥
वाइ मपर माउ 'मुणउ भेदि, इय मपमिणुसणु मा भणेहि। मयनपम्मीमिउजीविवसमाण, मइ एउ विणु मपि पमाइ पाम ॥५७॥ ॥५८॥

१ मुणि। १ वर्णमिरमो C भणिि(मि)त B, वर्णपिउ भव D। ३ मपम C, D। ४ हम्मसरी B।

परपेम्मपरावसपेक्खिवहुय, टल्वलिवि मरेसहिं सव्वि वहु य। तुह सरसकमलकोमलसरीरु, तउ करिवि न सक्कसि नणु अधीरु ||५९||
वयनिच्छउ पिच्छिवि तासु माइ, अइनीससे वि एरिसु भणाइ। [1]कमकमिण मेछि तूलीउ ताव, खरफरुसतणूलय होइ जाव ||६०||
नियनिय वि माइ मोहंधयार, झरहर झरतवहुवाहधार। पडिवज्जइ जं जणणीए वुत्तु, सो साव सलक्खणु एक्कु पुत्तु ||६१||
तहिं समइ सामि पुन्नेहिं तासु, सिरिवीरु पत्तु केवलि विलासु ||छ||
अह सालिसहोयरि अइतुच्छोयरि सत्यवाहधन्नयघरणि। अब्भगु करती अरु रोयती आपुच्छिय तिणि तह जि खणि ||६२||
केण अवमाणिया रुयसि पाणप्पिए, नावमाणं कुणइ कोवि मे तइ पिए। सालिभद्दो उ दिक्खाकए सज्जए, जेणमेगेग तूलिं दिणे वज्जए ||६३||
ताव धन्नेण धन्नेण सा वुच्चए, हेलि! काउरिसो कायरो सो जए। एक्कहेलाए नेह न जो कट्टए, तस्स को नाम नामपि उग्घट्टए ||६४||
भारिया भासए जइ सि सूरो खरो, ता न किं होसि अज्जेव त जइवरो। भणइ सो एत्तिय चिय पडिक्खतओ, पिक्खियऽव्वोऽहुणा वयमह लिंतओ
आह सा दसगुण पुणवि रोयतिया, नाइ वज्जाहया विरहसतत्तिया। एरिसो सामि हासो मए हा कओ, छलु तए लेवि सो चेव सवीकओ
अहह मा नाह! खलु खिवसु खार खए, दूसहो दोहि विरहो अहो मह जए। एस पाणेस तुह नाम जइ निच्छउ, पव्वइस्स तओऽहं पि किं पच्छउ
जम्मअसाहिं नेईहरे अचए, कुणइ सार च साहारणे सव्वए। नरसहसवाहिसीयाए आरोहए, दिंतु दीणाइ दाणाणि सो सोहए ||६८||
समवसरणमि वीरस्स पत्तो तओ, दिक्खिओ देवदेवेण सकलत्तओ ||छ||
इय सामिहिं दिक्खिओ तियसह सक्खिओ सालिभद्दि सो जाणियउ। तो अइचिंताविउ भणइ हियाविउ हउ तिणि अग्गल होडियउ ||६९||
सालिभद्दो वि सवाहमव्वाहय, कुणइ जिणबिंबसघाइपूयाइय। नवनहुहिहणण्हाणाइणा सोमिओ, सुरहिहरिचंदणद्दवसमालंभिओ ||७०||
कडयकुंडलकिरिडाइ सिंगारिउ, सेयनिप्पट्टपट्टसुयावारिउ। रयणकलहोयसीयासमासीणउ, असमसिवसोक्खलक्खमि सलीणउ ||७१||
तारतूरारवाडंबरेणं तओ, सामिणो समवसरणमि सपत्तओ। तेण नियपउमहत्थेण जा दिक्खिओ अमयसित्तो व्व ता जाओ सो सुसिक्खिओ

---

[1] कमकमित्तण B कमकमि मेल्हि C. D।

सामिमरो य वाओ य दोवि दु मुणी परिपक्कवासगय असगा मुणी। भुवणसीरेय देवेय मज्झि मण पुरवि विहरी मह पर मरुवे एव
रसपरिचाय-मासोववासे ठिय रतिपवउसवमासारयासलिया। समममासपसमासमसमउसिदी कहुयुरुणभिहुरनिहुणिणी ॥७४॥
सुसियरसहिरयवमंससमआमया जाय ति मुयमिरमसिरा चम्मय ॥छ॥
जइ वीरजिणेसरि सहु परमेसरि विहरमाण आगमणि। पत्त परिवारहि सम्मइ पर्वीहि गहि त्ति गयणिहरमणि ॥७५॥
मासउववासपारणइ पहुत्ता जाव गाहि विहरम्म तिगुत्त। ताव मणि वंदेउ परमेसरि मायहरि गुरु सिरीहि मुरहि ॥७६॥
गोचरिय चरियरि विहरंता दोवि भवसंगवि चत्त। ता पुन मुणिमन उट्ठिय, पहुपरियरिय सत्त चक्किमर ॥७७॥
तुरिय तुरिय ते सवि पहुत्तहि, म ति जगावि तम्म ओसहरहि। वक्खिय गाव पहुणमि ति जायहि धरि मद्दिणहि हियु वायहि ॥७८॥
पसरिय पीइएय रोमंचिय पुणु पुणु वंदिय पाय पवंचिय। भरिपरणणयणी उसारह सिरिपाएत्थह छवि सिहणह ॥७९॥
जइवर सम्मुहिय परिमणहि, फिर गुणसहिउ रहित पडिगाहहि। जाह सालि तो पुणह भामिणे, हाम भागु मारहि विहपहिव ॥८०॥
पहु पमणेइ धीप रहि रिमइ, नवमवमाह पुन्न सय निप्पज्ज ॥छ॥
तो पहु ईसर बिंदु पणमेवि, जाइ आईसरम्मण। जइ सम पम्माहि सिय महंसमी सज्जायउ सव्वे मुणह ॥८१॥
सालिभद्दि जय सरयचि पणिवर, सियमहु पुणु सिक्खहुवयेसिय। अवरिपरोप्परमसज्ज सहु जाणिय मिरारीह सहसिमह ॥८२॥
ता दहि पारिवि मय तु रिमइ, ववसहु स कुमर भव मुणि पमा। वीरजिणिंदि देवि अणुमत्रिय नमगावि गिरिगवि सहगुणमिण ॥८३॥
पच्चोवगमसमाहि पिपवहि, परपरमति सिलु मणु ठवहि। पच्चंकरि पहुमणि पहुचो, सत्थपाही वहुणहि मामिणो ॥८४॥
देवेस वेवेसिणु पुन्नस सालिभदु सुचिय। कहि वरतह। मणु वाह गहि गउ ईसर, पुन्न वलि पत्ती तहु मेनउ ॥८५॥
सहु गोरंगणि वरकु मिरुम्मर पुणु परियणीय पर्व मगु मिमण। पुन्नवगमजमी विरहरित, यहि महियमी रहि पायहिव ॥८६॥
गउ मणाणि प्यामणि मुणीसरि, गुरुगिरिविकरवहि जिय वेसहि ॥छ॥

अणसणु आराहइ परमवु साहइ पाओवगमसमाहि ठिउ । ता सोगि सुसल्लिय सा तहिं चल्लिय नियइ जेव तरुवरु पडिउ ॥८७॥
तहिं ठावि सालि सुविसालभाउ, भद्दाए दिट्ठु तदवत्थ काउ । तो नमिवि रुयइ सहु वहुयसत्थि, महु सम न अन्न अकयत्य अत्थि ॥८८॥
भवणगणि पत्तुवि तुहु न नाउ, विहराविउ नमिवि न अवलकाउ । महियारी स तुहु कयत्थमाय, विहराविउ पहि दहि जीए जाय ॥८९॥
कहिं हसतूलि पल्लकिसयणु, कहिं कक्करकटयटकिपडणु । कहिं कुसुमकमलकप्पूरगध, कहिं कुहियनिविडमडयप्पगध ॥९०॥
कहि तरुणितरगिउ गीयसद्दु, कहिं सिवसमूहफेक्कारसद्दु । सुहपालियलालियअगी तेव, इय दुक्खु सहसि तुह वच्छ[1] केव ॥९१॥
तुहु धन्नु धन्नु धन्नय य पुन्नु, मरणतिवि मुक्कु न सालि [2]सुन्नु । इय माइ करिवि करुणप्पलाव, घरि गय पओसि गुरुदुक्खदाव ॥९२॥
पुणु मुणिति दोवि सुरसेलसिंगु, जिव सुथिरधरहिं सियझाणरगु । उवसग्ग[3]वग्गससग्गम[4]ग्गि, न हु [5]लद्दयल्हसहिं लेसुवि निसग्गि ॥९३॥
इय ते खीणाउय जाया अब्भुयदोवि देव सव्वट्ठिवर । अह तम्मि विमुक्कइ नरभवि दुक्कइ सिज्झिस्सहिं निरु [6]एत्थु धर ॥९४॥

॥इति शालिभद्रमहर्षिसन्धि ॥ सूत्रगाथाया मणय-श्चन्द्रकान्ताद्या , कनक-स्वर्णम् , रत्नानि-रत्नकम्बलादीनि, धन-चतुष्पदद्रव्यादि॥८५॥

किं विचिन्त्य शालिभद्रो गृहे विगतामिलापोऽभूदित्याह—

न करंति जे तवसजम च ते तुल्लपाणिपायाण । पुरिसा समपुरिसाणं, अवस्स पेसत्तणमुर्विति ॥ ८६ ॥
सुंदरसुकुमालसुहोइएण विविहेहिं तवविसेसेहिं । तइ मोसविओ अप्पा, जइ नवि नाओ सभवणेऽवि ॥ ८७ ॥
दुक्करमुद्धोसकरं, अवंतिसुकुमालमहरिसीचरियं । अप्पावि नाम तह तज्जइत्ति अच्छेरयं एअं ॥ ८८ ॥

" न करति." गाहा । व्यक्तार्था । तस्यैव चरणाचरणमधिकृत्याह—" सुदर " गाहा । उत्तानार्थैव । नवर सुन्दर -सुरूपः,

---

१ इपुत्तु D । २ सत्तु D । ३ मग्गससग्गवग्गि D । ५ लयहल्ह० D ६ एत्थि O ।

सुकुमारो—मार्दवोपेतः सुगोपितो—सम्यिग्भिरक्षितं कर्मण्यरूपे प्रदीपः तेन प्रतिमेव ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ न केवलमर्थ पाठे देहमेव विशेषित्वात्। अस्माकमपि सुकररूपमनिष्टसमपुरुषो भावका भूपस्ते इत्याह— 'सुकर' गमः। अथामास्थाय गाथा व्याख्यायस्ते—

स्त्र चरित्र नवरि नामिन भवति वरि दुरालोएव साहवि। तह ताम पुरउ सुपमहु महु नयर-नगर-भयहु-हु ॥ १ ॥
कनककिरणमणिकिंकिणिसमपहि, भमभमरिमणिरपसमोहि। या एसइ सम्मिपुरपायवोहि, तह उजार सबिल भवनोहि ॥ २ ॥
वरम्मसमसविपुंसमार, पसरंतनेवरिम्मंवतार। मनुरतविय या हारसमय सुभव मन मिसिनी नहुपमय ॥ ३ ॥
करि यारि हमु वरि सेव सवि सुरिहिं पहावि परमह न मति। गयनियरि निवमिवसमिवतम पसरियपहावरंसमसममा ॥ ४ ॥
जहिं सिप्पमहानय मणुसिसु पयइ तुंगयरपायरतवि। सिसुपनिवसमई सवियपराई कीरमविसु पसयपु कवि ॥ ५ ॥
सिरि मयमुरुसिव सुअमि सिसु, पयर पमिसु संपसु सु सिसु। कमिपकिमयपदासमुणमयारि, सिररेसु मविसिमसुरमितारि ॥ ६ ॥
पीमंतसामिपडिमाए मयरंमयसमसेवा सुराण। संपाडइ पेसिम पुरिहिं सामि(मि) वरवसहिं जाहिं कोवहिं सुठावि(मि) ॥ ७ ॥
समंतमंविसुरमाहगारि, सो मगाह सुरिहिं वसहि देहि। सम्माहिं वरिय मसमिराम, गिय समिव दीप महमपयम ॥ ८ ॥
मं मयमुरुसिव हि मयरेउ, ते केमु तुमिह एव नमरेउ। मणरिमासवरपेमसाम, मरसुममिहि तहि महविसाल ॥ ९ ॥
महमपसरिपमसुपेमसाम, परिपय सुर तु मा कहिय वाह ॥

तओ तेण सुसारिम सर्व परिवारिम नयमुरुसिव मुहरिमय। मराविरि जाविरि मसुआम्मवरिं वसरिं सुसंसुरसुखमह ॥१०॥
समयारि मराहि वणुम्मसु, तीसु वासि सम्मासि मम्पेमसु। समयरमवि मणमेसु नगिरि, सार वार वारुमवरीगिहि ॥११॥
मममयमपमसुरामेसह पसु सोहगा महाउरिसेवरु। केमसीमसरमीरमहिसुरर, सोहमि मं ममवमि मिरिवर ॥१२॥
सुरसमयमंविमियसमर, सवहिं [1]माह वमिर समयमल। सुरगिरिसिमविसाल पयमयाह, परमसारिवहु मं[2] मिम्मसु ॥१३॥

1 मम्म O. D। 2 मह-म हार्मे।

लकिल्लइ उरकडिहिँ विसालउ, जिव दभोलिदड्ड सोवालउ। पाणिपायपायडपावहिँ तसु, नववियसतसोणपंकयकसु ॥१४॥
वत्तीसइ भज्जहिँ रइसुहसज्जहि सो कीलइ जिव देउ दिवि। सत्तमभूमितलि हिमगिरिनिम्मलि सवि इंदियमोक्कल करिवि ॥१५॥
सिरि सुहत्थिमुणिनाहु कयाइ वि, जामिणिजामि पढमि परिभाविवि। नलिणीगुम्मविमाणह करउ, आगमु गुणइ गुणग्गल धीरउ ॥१६॥
सो महुमहुरवाणि निसुणतउ, किन्नरु किंकरत्तु* तसु पत्तउ। तुंवुरु सो वि सकठहि रुद्धउ, कुरु न [१]स झुणि निसुणतउ तुट्ठउ ॥१७॥
त अवतिसुकुमालु सुणेविणु, सत्तमभूमिमागु मिल्लेविणु। आउ छट्ठभूमिहिँ आणदिउ, जाउ सुणतउ सवणेगिंदिउ ॥१८॥
जिव जिव झुणि सवणेहिँ पईस्सइ, तिव तिव तसु हियडउ तणु वियसइ। [३]जिव जिव आगमत्थु परिभावइ,तिव तिव उत्तरित्तु तलि आवइ
जायउ जाईसरु सुमरइ सुदरु नलिणीगुम्मविमाणसुहु। नरभोगविरत्तउ जाउ निरत्तउ, त जाणइ सउ गुत्तिदुहु ॥२०॥
स लहु पहुपायपासमि पत्तो तउ, पणमिउ पजली पुच्छए अग्गउ। पयडमेव सरूव परूनतया नलिणिगुम्माउ तुब्भेवि किं पत्तया ॥२१॥
[४]भणइ सूरी विमाणुत्तमाउ तओ, मणुयजम्ममि नेममि अहमागओ। तहवि जाईसरो सरसि त जारिस, मुणुउ अहयपि सुत्ताउ तारिस
तहिमह गतुमक्खतमुक्कठिउ, पहु। पहेण किणा जामि जपसु इउ। गम्मए तमि थामंमि सम्म महासत्त। सिक्खाए दिक्खाए नहु अन्नहा
देह दिक्ख च सिक्ख च सपइ मह, सामि। जह जामि काऊण त अवितह। सत्यवाहीएऽणुन्ना मणुन्ना मह, नत्थि तो वच्छ। दिच्छामि
त तुह कह ॥२४॥ कालखेवक्खमो नाह। नाह तउ, पव्वइस्सामि सयमेव इय निच्छउ॥
इय निच्छउ जाणिवि गुणु परियाणिवि होउ सय मा गहियवउ। तो दिक्खा दिन्नी तेण पवन्नी जइ जायउ साहसनिलउ ॥२५॥
वच्छ। पत्त पवित्त चरित्त तए, पालियव्व चिरकालमेय जए। सग्गअपवग्गससग्गससाहण, होइ किज्जतमेव इम सोहण ॥२६॥
नमिय नवसाहुणा वुत्तमुत्ताणय, सामि। साहेमि अज्जेव अप्पाणय। नलिणिगुम्मे विमाणमि भोगूसुगो, सपय पट्ठिओ मुक्कमणुयाउगो ॥२७॥
अह रिसि गुरुसगासाओ सो निग्गओ, वोरि-कथारि-कटी-कुडंग गओ। छिन्नसाहि व्व साहीण साहसरसो निवडिओ तत्थ

* त्तु D। १ झुजणि B गुझुणि D। ३ जिमजिम B D। ४ भणइ सूरिवि नाणुत्तमाओ तओ मणुयजम्मम्मि नेममि तह आगओ।

किमरिय मुत्तिमयसा ॥ २८ ॥ मंदिरगमेण पायाल पत्ता रिमा पित्तागिहि अम्मोहि सरिस रिसा । रयाइ पाययाहि रा पसाओ ते
रिरि अममा परममाई पुत्ती ण मिलि ॥ २९ ॥ पवमज्झममि जा जम्मु सो पमयो दुइयजाममि जा कुसुगामगमाओ । तइय-
जामे वि जा णाहि ता भणियमा पमु देवसमन्तरे णिरहिओ ॥ ३० ॥ मायणमाणियमो पीइरायंतओ गुणइ पम्हु वि णे
ज्जरि । मय पुत्तिदिदुपर यवि उपमइ मणिनीगुम्मि विमालयरि ॥ ३१ ॥ विहिमोगमोगु जा तिमइ भवणि ता निमरतीह
वेरराइ मराणि । विसि वउरम्मइ पुरा तियांधि धम्मारिउम्मगादि भेवरावि ॥ ३२ ॥ पम्हूरीरुम्मगुसुमममयंदविम्मवारि
मिमविसरिसगुम्मारयस्य । विरयोरमममणमियागरि, तहिं पमइ तहिं सह अम्मयरि ॥ ३३ ॥ जा वरम्मुणिरसहजरयमय
हरिगेमगुहिमणिमेवमगरि । पंचमयरअमोगमोम समुगइ भूरि भरोगसोम ॥३४॥ सम सम्मु गुणिवहि मिरयमयलहि पमणिमिगु-
मिमविमाणि तहिं । मंतीमरि धवरि महिमपवतहिं वरिस अमंतर मग्गमहि ॥ ३५ ॥ एवमा—वायमयमि वाइ नवमणिरायमहि,
पोमहि मम्मु पम्म गुरुमम्महि । जामिणि जसमिणि जाम न आमइ, जाम नारीगमु पोयम भामइ ॥ ३६ ॥ मरमम्मिमरि याहु
जामहि सिरु न दिमइ पयविम तामहि । मरहि सवि ममुणहि पमंसी य, म मिमगु माणु माइ । जोमसि म ॥ ३७ ॥ मरम
गाहि सयमेव सिरिविरल, परि माहिरि भायमि य पेमसइ । मिमिम धुमरिम्मसमु म पोमम, परिममु समनु गुणनु पउ सोमइ
॥ ३८ ॥ सुविरामवि तम हमरिम समवावि रोमेव मियारिम । रमिमिगु उमंठु धुउतउ समवाहि तो वंपिर गुणव ॥३९॥
गयमेव मिरमउ विगु विमेवउ मरीवि मोउ गयमेव सिरि । जा गुम्मिहि तिमगउ भिमगुणम किउ मव गहि किमार मयं
सिरि ॥ ४० ॥ गुरु मम्मु धमिर । सो मम वहिम वंधमि वीम जिम मगाहम्मि । गुण मिम्मु रिमपुम्मोममोगु, परिमहा दिवि
मिवमगोगु ॥ ४१ ॥ तो सरवाहि गडुसमसहिम ममगाहुमाणूमर वहिम । मोमइ जामहि मगागोरि गुम्मोगरेगमहिम
गिहिम ॥ ४२ ॥ ता रायुममगुम सो मवसागु, धमारिगुमममिम मम्मु । मार ममइ वारपोमवमरइ, पविमारमुममगुगमरवार

॥ ४४ ॥ हा वच्छ ! वच्छ ! वच्छल ! छइल्ल, पइ कियउ किमेरिसु गुणिपहिल्लु । हउ जेव पत्तिय गरिसि अणत्थि, ससारि नारि तिव अन्न नत्थि ॥ ४५ ॥ हा हियय सच्छ सुचरित्तसूर, मह पाडियऽघट्टकयतकूर । मइ सव्वकाणि बहुयाहि अहय । किउ अविणउ तुज्झु न कोइ कइय ॥ ४६ ॥ इय गुण सुमरेविणु चिरु रोएविणु पुज्जइ पुन्नियपुन्नु पुणु । कालागुरुचंदणि तित्थु जि सा वणि सपारावइ साहु तणु ॥ ४७ ॥ सत्थवाहि बहुयाहि समन्निय, सिप्पमहानइतीरु पवन्निय । नयणनीरु नीरघु निरग्गलु, गुरुअवन्दसद्दसम्सद्दिण-जिव तिव तासु देइ अजलिजलु ॥ ४८ ॥ सुयविओगमोगग्गिपलित्तिय, सघरि रालत्त पवती पत्तिग । गुरुअक्कन्दसद्दसम्मद्दिण-भवणु भरति व भणिय सुहत्थिण ॥ ४९ ॥ धम्मसीलि ! सीलेसि किमग्गलु, सोगवेगसन्निग असग्गलु । सुयउ कोइ किं जीवइ-सोगिण, अरु तणुपीड पवज्जइ रोगिण ॥ ५० ॥ धम्मु रम्मु भयवाहिमहोसहु, तह सुगतु सोगादकुरोसहु । विपाहरदिस्स-सोगिण, अरु तणुपीड पवज्जइ रोगिण ॥ ५१ ॥ इय गउ मुणती भवहि विरत्ती मलयवाहि सुपसन्नमइ । बहुयाहि धम्मि तुह जायउ, नलिणि विगाणि देउ सो जायउ ॥ ५२ ॥ बहुयाहि पगगुरुभार आरि, न स दिक्खिय शयिय गेहवासि । समन्निय घरि निव्विन्निय दिक्ख लेइ अचिरेण सइ ॥ ५३ ॥ पइवासरु पवड्ढइ सो सुनालु, जिव पणनिगुंजि सहया-नियअवसरि जायउ ता सुतणउ, जिन हीरउ रोहणगाणि तणउ ॥ ५४ ॥ तहिं पणपणसि नियतायमुत्ति सुकरावइ रससालु । निसुणि वि कयाइ नियतायचरिउ, अइनिच्चि धम्मकिउ हरिसभरिउ ॥ ५५ ॥ तसु उप्परि देउलु घगगिरु, म-ठावइ सुहसुपुत्ति । जिणवेसिण पाओगगमि ठाइ, सहु चेल्लुगेहिं सिव नेव रगइ ॥ ५६ ॥ कालगगि जायउ सो विक्खायउ, तित्थु जणेरनेहि कारइ सुवुगु । नेवज्जपुज्जपेच्छणछणाइ, तहिं सव्वु करावइ निच्चु जाइ ॥ ५६ ॥ कालगगि जायउ सो विक्खायउ, तित्थु तित्थु लोयह तणउ । 'महाकालु' कहिज्जइ अज्जवि, विज्जइ मुणि सियालि रूयग जुयउ ॥ ५७ ॥ इत्यवन्तिसुकुमालसन्धिः ॥

अधुना गाथार्थस्तात्र पूर्वार्द्धं स्पष्टम् । नवरमुक्कोस शब्दो देश्य-परेषा दु खोत्कर्षादिदर्शनात्उत्पन्नस्य तदनुकम्पादिलिङ्गस्य दु ख-विशेषस्य वाचक । उत्तरार्द्धे त्वात्मशब्दो बहिरात्मनः शरीरस्य वाचकोऽन्तर्गतमनस्त्वस्तुमशक्यत्वात् । तत आत्माऽपि शरीरमपि

तथा स्वमोक्षमवरोप स्वस्य स्वभर्मेषत् महर्षिव यास्य मोक्षमविकल्पम् मविपन्नममस्तत्वैयपरिधि । स्वमपोरुआत्मयी-मविवसुमोक्षमविमहर्षिभिः सारस्यत ॥ ८८ ॥ यथा महावर्मेषुर्ध तत्र यथा—

चन्दुयसरीरपरा, भमो मीयो सरीरमपंचि । भम्मस्स भारखे सुविहिपासरीरंपि छड्डुवि ॥ ८९ ॥
एकदिवसं पि जीवो, स्वयमपुलागओ अनन्नमणो । जइवि न पावइ मुक्खं, अवस्स वेमाणिओ होइ ॥ ९० ॥
सीसावेदेण सिरम्मि वेदिए निग्गयाणि अच्छीणि । मेयजस्स भगवओ, न य सो मणसा वि परिकुविओ ॥ ९१ ॥

" चन्दुय गाथा । स्पष्टा । भवरं'मुवनुयसरीरपरा'-स्वर्गोद्धेशा ॥८९॥ ननु भवमममर्वमिनुरुमास्वयावस्य कमेन सविमा समासाधिमसमनिस्स्व यथा— एगदिवसंपि " गाथा स्पष्टा । तपिसमप्पमुद्धपरिस्मपि । ममनममतस्य पात्र मम्मर्दमान पर्म मनुष्यकस्य मोक्षके तत्रैव मुमोमावेनाथ मयागरेकुरुयत् ॥ ९ ॥

यथा— यं पूर्वकोटिपरिवेषपि मानुषम्ति मुक्ति यद्विमुक्तस्य भवकमयोपि ।
मनोमध्यमनसो ममपरिकमपुमस्त्वं परिसमवपूतोऽपि भवन्ति भव्या ॥ "

तथा—" जयविय जयविय जोगे जोगविय पुष्पकोडि पि ।
यं सार्धयति शिवस्थ, समेव एगेण सा किवी ॥

अपन्ति मुक्तासमनयाणाम् अनन्सरस्यापि पुण्यपेमोसमपरिचरितमाह—" सीसा वेढेण " गाथा । धीरस्योस्माइस्य का सम्य समोकमम्यविषमीविना परिविषेण अनन्तेन, शेषं सुगमम् ॥ ९१ ॥ अथार्थो क्षमानममसेवयपनोपम्—

साकेयपुरे चंदावडिंसओ नाम आसि नरनाहो । जिणधम्मे तल्लिच्छो, तल्लेसो तम्मणो चेव ॥ १ ॥ कित्ति-धरित्तिओ विव,
पियाउ दो तस्स चगअगीओ । पढमा सुदसणा ताणमासि पियदसणा अन्ना ॥ २ ॥ तणओ सागरचंदो, पढमाए सागरो व्व
गमीरो । मुणिचदो त्ति परो पुण, परकम्मे कल्लमल्लो जो ॥ ३ ॥ गुणचद-वालचंदा, अवराए अगया दुवे जाया । तेसिं सागरचदो,
जुवराओ राइणा विहिओ ॥ ४ ॥ मुणिचंदस्स उ दिन्ना, उज्जेणिपुरी कुमारभुत्तीए । तत्थ गओ सो पालइ, सया पयाओ पया-
उव्व ॥ ५ ॥ कइयाइ महाराओ राओ अतेउरमि चिंतेइ । जावज्जवि न पहुप्पइ, दीवो ता ठामि उस्सग्ग ॥ ६ ॥ जावेसा दीवसिहा
दिप्पइ तावेस होउ उवसग्गो । इय उद्धट्ठाणठिओ मणिपुत्तलउ व्व सो सहइ ॥ ७ ॥ जामिणिजामे जाए, जाओ जा झिज्जमाणओ
दीवो । ता चिंतइ चेडी, कहमिह्यतमसे पहू ठाही ॥ ८ ॥ इय कुणइ पुण पईव, पडहच्छ सा सिणेहपूरेण । केउगहो विव
दिप्पेइ, सो पुणो निच्चलग्गसिहो ॥ ९ ॥ निवई वि काउसग्ग, न पारएऽभिग्गहग्गहिओ । धम्मज्झाणपईव, जालइ समसीस्सियाए
व्व ॥ १० ॥ इय वीय-तीय-पहराणं, तेविहु तीए पूरिओ दीवो । रयणंकुरुव्व जाओ, चउसु वि जामेसु अविरामो ॥ ११ ॥
अइसुकुमारसरीरो, नरेसरो रुहिरभरियसव्वगो । सजायजायणो भावणाहिं भावेइ अप्पाण ॥ १२ ॥ जइ जीव ! जायणाए, गाढ
अंगाइ सगहिज्जति । तुह का तहावि हाणी, तणू जमन्ना कयग्घा य ॥ १३ ॥ जा नाम जीव ! जीवाण जायणा होइ अप्पइ-
ट्ठाणे । तदणतभागमेत्ता अणतगुणनिज्जरा एसा ॥ १४ ॥ जइजंति जतु एए वहिरगा अगभगओ पाणा । कुसल चिय स पइन्ना
निव्वाहमयाण ताण जओ ॥ १५ ॥ दियहनिसाघडिमाल आउयसलिलं जणस्स घेत्तूण । चदाइच्चवइल्ला कालऽरहट्ट भमाडिंति ॥१६॥
जह जह अइनिविडाए, पाणा पीडाए पाउणिज्जति । पज्जलइ झाणजलणो, तह तह से दुरियदाहसहो ॥ १७ ॥ धी तेउ ते दिप्प-
तएवि, तइ ज दसा निवस्सेसा । इय दिवयस्स कुविउव्व, तस्स अरुणो गओ उदय ॥ १८ ॥ परिनिव्वाणे दीवे, निवोवि नि-
व्वाणमक्कमेउ च । पारइ काउस्सग्ग, किं पुण न चलंति अगाइ ॥ १९ ॥ चक्खणियमेत्तपाउ पडिओ पुहईए अडवडेऊण ।
पचपरमेट्ठिनिम्म(पच)ल निच्चलचित्तो दिव पत्तो ॥ २० ॥ तिदिवे सो सजाओ, सागरचदो वि दारुणदुहत्तो । मयकायव्वे काऊण,

मच्च निव्वसंसा सहुर ॥ २१ ॥ सिस(च)रज्जपुरे जारिसु णारिया जिय जणुम्मता पुम्स । पुण्णपुणाम माए, पम्मजमई परज्जमि ॥ २२ ॥ मरणमसमसंसारसायरे सारसरणमिम्मेय । एक्कमक्कमपरिसिओ सुहरसाओ मुही हासि ॥ २३ ॥ महो संसारमा स्स विसयिता किवारम्मा मयरे वज्जमनूरे पीवरत्थवि मम्मवम् ॥ २४ ॥

" नम्यविर्प क्वमरेरसूणो समार्थ परिमम् मवेस्यवि कर्म्मविपाक एक (च) ।
व्यासूलविसावरसे मवनावकेऽस्मिन्, विप्पम्पको मवति पाम न कोऽपि मृत्योः ॥ २५ ॥ "

मिव्वसम्म पर्यसा, परिव पीरो वमेव रज्जपुरं । क्सा(म)रणम मरण्णवम्मि सावसं निम्माहेर मर्द ॥ २६ ॥ तो गुणसागर क्यो सागरमंतो निवेसिओ रज्जे । सामेव-मंति-मइकिमसेद्विसत्थाहपमुहेहिं ॥ २७ ॥ मिवरज्जमि पयत्त वज्झइ सयेच सत्तगमन सुई । सम्मं सम्मं वायर, अवराम्म दुक्खसमे च ॥ २८ ॥ अरिकंपरापिसको, पराक्कमसाहसंमि सरीरे य । वीरदए रायरायीए, सम्मसेम्मसमूहेण ॥ २९ ॥ इय भसरिससोहाए, सा पाविम्मपि व पसमंती । मण्णपज्जरपुरिम, सिवइ विमसा एवं ॥३० ॥ इय कम्मविवज्जो महारिहिपियीए रायमाईए । बसस्स केसिसो दो वि पचिम्मे पुसय ममम ॥ ३१ ॥ आइए इयम्मि इपासा, तं राम विवमावमवि तहय । म मुवम मम अंगीकरिंसु निसुम्मई कविय ॥ ३२ ॥ जह पुन पविसमनी, सा मयस वि अंगाजमया पर्व । रामसिरीए स्वस्स, सम्मु सोहस्स हुया ॥ ३३ ॥ इय पम्मामो संपइ इयम. सवीकओ मए मेव । " पो केइ न विसओ न जइ पो मयमाणो वि ॥ ३४ ॥ " अजवि न किंचि अद्व, परेण मारेमि सागरमहिरे । तंकमह अकमेवं, जेजेसा मह सुए सम्मी ॥ ३५ ॥ इय विहिविनिष्पमा सा अमाई मणोह मारम्भिमिमसे । आइए समाणं होइ, परिसो नेय वाचारे ॥ ३६ ॥ कायाए रायाईवासमरयाहमोपम्मिमिमिस । अहसुपरिहिविहिमिसरम्मोगमाहाय तासिवय ॥ ३७ ॥ विमंसम्मए विहु, संती इयारिसम मणिय य । पम्मेसु हेहि ! मोक्समेवं सोमम्मि भेम्मई ॥ ३८ ॥ विसपुम्मभाविमाहिं, पाम्मीहिं मपासुसिन पुमरस्य ।

इ जे अइसयसुरहित्ति, अप्पिओ तीए तह चेव ॥ ३९ ॥ घेत्तूण गया सा भूमिनाहहत्थमि अप्पाए एय । करकलियमोयगो सो,
तो चिंतइ गुणनिही एव ॥ ४० ॥ लहुयधवेसु पासे, छुहिएसु कहऽप्पणा पभुजामि । दो खडिऊण दिन्नो, तो ताणमिमो नरिं-
देण ॥ ४१ ॥ जह जह ते त खायति, खामकुक्खीसु तिक्खभुक्खाए । विसलहरीओ देहे, तहा तहा ताणमिंति लहुं ॥ ४२ ॥
आसु चमक्कियचित्तो, चिगिच्छगे आणवेइ तो राया । विसनासगोसहेहिं, खणेण पउणीकया तेहिं ॥ ४३ ॥ नरवइणा तो दासी,
पुट्ठा पाविट्ठ ! चिट्ठिए कहसु । को एस वइयरो कस्स, नाम दुव्विलसिय एय ॥४४॥ साऽऽह न जाणामि अह, केणवि नऽन्नेण
एस दिट्ठो वि । पियदसणदेवीए, केवलमहमेज्जमाणीह ॥ ४५ ॥ सद्दाविऊण मोयगमायरओ मग्गिया निएमित्ति । जणणित्ति मए
तीए, विमग्गिओ अप्पिओ एसो ॥ ४६ ॥ निय पाणिपल्लवेहि, परामुसित्ता पुणो पुणो सुइर । अइसुदरोत्ति रजियहिययाए अ-
प्पिओ पुणवि ॥ ४७ ॥ रन्ना नाय पावाए, तीएऽवस्स दुरीहिय एय । म मारिऊणमिच्छइ, रज्जसिरीसकम ससुए ॥ ४८ ॥
नारीण कुलीणाणवि, धिद्धी बुद्धी अनधुरा धणिय । जणणी वि जुत्तभत्ते वि पुत्ताए मइ जमेवमिमा ॥ ४९ ॥ नियजणणीओ
सविसेसगउरव आयरामि एईए । एसा उण वेरिस्स व, एवमायरइ मज्झ इहा ॥ ५० ॥ " जं आमीए आसीविसाण जं कंटए
अलीण च । त महिलाण निच्च, दुच्चरिए नूण निवसेइ " ॥ ५१ ॥ हक्कारावियं पियदसणाए सम्मुहमिम तओ भणइ । सागर-
चदनरिंदो, हाहा दुच्चरियमेय ते ॥ ५२ ॥ पयउपमाए माए, तइय चिय तुज्झ रज्जमप्पितो । अहय पेल्लियपाएहिं, तमहुणा एव-
मायरसि ॥ ५३ ॥ कयकिच्चो हं हुतो, तइयचिय जइवरो जइ हवतो । सपइ का मज्झ गई हवेज्ज इय बालमरणेण ॥ ५४ ॥
दुव्ववसाओ एसो, सुएसु ते चेव चडि निवडतो । जइ नाह विससहारकारिकिरिय करानितो ॥ ५५ ॥ भावि अवायाऽवेक्खा,
सिक्खा नो सिक्खिया खलु खलाहिं । महिलाहिं वदिचोर व्व, साहस किंपि कुव्वति ॥ ५६ ॥ जइवि पिसुणचिंतियाइ, सि-
ज्झति जिएज्ज ता न कोइ जए । पाएण जेण ताणेव, ताइ निवडति तेण सुए ॥ ५७ ॥ तो दाऊण गुणचदभाउणो तक्खणेण त
रज्ज । सागरचदो जाओ, जई जए जायजसपसरो ॥ ५८ ॥ सविग्गो गीयत्थो, एगल्लविहारपडिमपडिवन्नो । महिमडलमि जंगम-

जमकमपारो व्व मिरेइ ॥ ५९ ॥ कोसीयो पत्ता कमाइ वसुमुनसिय महामुनिया । कम-मेरुय-संपत्तं कम्मागमाऽऽगाहर्व पुत्ता
॥ ६ ॥ मणियं मुणीहिं मेहिरेसु जगार हुवि मवार । कुकम्मसंपो संगो जए महल्लो य मल्लो य ॥ ६१ ॥ मुणिवरो मि
मरिहे मिसिसाणसमागयं कुमर । किं पुण कुमरो वा सीयिमस्स पुरेम परिकूलो ॥ ६२ ॥ मेमंगमाऽऽगमयं, सामुयं संब
मेर कमाईयं । वाउ पाउ पाउ, पत्तो किं किं न सो कुमर ॥ ६३ ॥ इय सोऊण स मुणी मिवइ मामयमि किं पमत्तो
मे । कसमंकयपमारं, स कुमारं ये कलेसेड ॥ ६४ ॥ कलेमीय तो कमरिसेण पत्तो महातवस्सी सो । चिरियं मुणीहिं सा-
हुस्स तस्स पाहुभयं तत्व ॥ ६५ ॥ गोमरचरियायेसम, कागयार मवदि तं मुणिमो । आगेमो समुकम, तुम्हाण कए मवइ तो
सो ॥ ६६ ॥ कारमकमणीओ ता पावेइ कुमयि कम्मविरयम्मि । सूरीहिं तस्स मिमो तो भीओ सुहगो पगो ॥ ६७ ॥ तप्पासे
पुण्फिम पवयीयमसुहामि मामि मि कुमयि । वाहिय सामुमि तं मिसीवे तमि सो पत्तो ॥ ६८ ॥ होऊण हारेसे वारेण
सरेण पम्मागमेइ । सहसा पत्ता पमन्द, समयं मज्जा गुरुम्मस्स ॥ ६९ ॥ मेराजय ! जमपयाहिं, पवि मा पोमरेहि मिहरेमि ।
कुसमकिमकुमारा कमाहार पत्तो मु(सु)मिसंवि ॥ ७० ॥ मयर मुणी समिसेसं रयहरमसेण जमम्मोई । कमयइ किं कुमारेमि
पम्मागमेमि गंतूम ॥ ७१ ॥ कलंतरे कुमारा पत्त तं रोमि सिवि पत्ते । करविमजय ! कामेसि मविरं मय तत्व कई ॥ ७२ ॥
मेम पसाय हैमो तुम मियरे बीरि संकमेताई । महासियमयणे पम्मद, तुम्मेज्जसं पसाहसं ॥ ७३ ॥ सम्मं मज्जेमि कई,
सम्मं पालेयं वा कमेमि । मेहुयं पासमो, पमोमुसमयिमपारेहिं ॥ ७४ ॥ ममिओ समारयंतेण सुंदरो कोमि परिक्खो पासो ।
गमारहेम ममिरं, दे तं कम्मा न पावेंति ॥ ७५ ॥ मयहरोर ! पममसु, पासमो पयमिमो न किं निवसि । ममिय मुणिय्य तो ते
महामुसमया जाते तुम्मे ॥ ७६ ॥ कोमहरिमो कमसि मेम पावेम दूरपमयं । इय कुकमपमो रे, मयासिस्साइ ममे तुम्मे
॥ ७ ॥ तो ते कोमपिरला, हलेहिं कम्मयं वर्ण करे । कुसु मुसकुमेस, हत्ति कुमाय कुरुमाय ॥ ७८ ॥ तो तेम तमो-
मिहिय मुम कंपमि यामिमरसमि । मिहुवि पकमेपत्ता मयापुरिस व्व विमिहा ॥ ७९ ॥ स पुम मुणी कमयम, पमसेवमन

खिप्पमुववास । सणिय निग्गतूण, पत्तो पुरबाहिरुज्जाणे ॥ ८० ॥ इरिय पडिक्कमित्ता, आसीणो आयरेइ सज्झाय । कयपचिंदिय-
पीडा, पच्छायाव परिवहतो ॥ ८१ ॥ कुमरा खणमेत्तेण, दिट्ठा दासीहिं कट्ठनिच्चिट्ठा । तो धाहावतीओ, पत्ताओ रायपासमि ॥८२॥
जइ वत्ते वुत्तते, वुत्ते ताहिं स साहुवसहीसु । त जोयावइ सव्वासु, चेव जा कत्थइ न दिट्ठो ॥ ८३ ॥ ता सूरीहिं पसाहिय-
मेय जइ आसि आगओ एगो। इह पाहुणगो सो विहरणाय पत्तो नहु नियत्तो ॥ ८४ ॥ जइ नाम सो हवेज्जा, तो सव्वत्थ वि
गवेसगा पुरिसा । पेसविया अह दिट्ठो, स निविट्ठो बाहिरुज्जाणे ॥ ८५ ॥ कहिए राया सयमेव, आगओ साहुणो समीवमि ।
पच्चभिजाणिय नियमायर च विम्हियमणो जाओ ॥ ८६ ॥ चिरदरिसणहरिसोदचमाणरोमचकचुइज्जतो । पणमतो पायभोरुहाणि एव
उवालद्धो ॥ ८७ ॥ चंदावयसकुलसभवस्स मह बधुणो तहा तुज्झ । किं जुत्तं ज जिणसासणमि भत्तिंपि पम्हुससि ॥ ८८ ॥ अह-
वऽच्छउ दूरेण, अन्न नियय सुयं पि दुल्ललियं । मुणिजणविडवणापच्चलेक्कचित्त न सिक्खवसि ॥ ८९ ॥ तो पुणरुत्त पयपकयाइ,
केसचलेहिं लूहतो । सुयदुव्विणय खामइ, निय पमाय च निंदइ ॥ ९० ॥ कोहडिफलाणके, हवति अव्वो कहेसु सप्पुरिसा ।
दसिज्जतो जे अगुलीहिं उज्झन्ति झिज्झति ॥ ९१ ॥ पउणीकरणे पुत्ताण, दीणवयणेहिं विन्नवेइ मुहु । भणइ मुणी जइ ते, पव्व
यति पउणेमि ते नूण ॥ ९२ ॥ जा ते गतु पुच्छइ, ताव न सक्कति उत्तर दाउ । नवर निच्चलमगा, टगमग जोयंति तदभिमुह
॥ ९३ ॥ तत्थ मुणी आणीओ, पउणीकाऊणमाणण भणइ । जइ जिणदिक्ख सिक्खह, सपइ ता अत्थि भे मुक्खो ॥ ९४ ॥
ता इच्छियपव्वज्जा, सज्जा ते साहुणा कया दोवि। पव्वाविया य पव्वयगुरुभारारोवणेण च ॥ ९५ ॥ अह मुणिचदनरिंदं, सवि-
सेस उवइसेइ किं तपि । सम्म धम्म न कुणसि, नरजम्मे किमिह सुहमत्थि ॥ ९६ ॥
" गर्भादारभ्य यत्प्रोक्त, सुधीभि श्रृणु तत्सुखम् । गर्भे वासस्तावदादौ, नरके वाससन्निभ· ॥ ९७ ॥ यत·—सूचीभिरग्निवर्णा-
भिर्भिन्नस्य प्रतिरोम यत् । दु ख नरस्याष्टगुण, तद्भवे गर्भवासिन· ॥ ९८ ॥ योनियन्त्राद्विनि क्रामन्, यद्दुखं लभते भवी । गर्भ-
वासभवाद्दु खाच्चदनन्तगुण खलु ॥ ९९ ॥ बाल्ये मूत्रपुरीषाभ्या, यौवने रतचेष्टितै· । वार्द्धके श्वासकासाद्यैर्जनो जातु न लज्जते

॥ १ ॥ कुलीनमूर्खः पूर्वं ततो मदनमर्दनः । अपाकरणगता पश्चात् कदापि न पुमान् पुमान् ॥ १ ॥ [illegible]
ममिदं अम्बन् । मानुषत्वमपि प्राप्य प्रायः पापानि कुर्वते ॥ २ ॥ [illegible] । मनुजत्वे पापकर्म स्वर्ग
तत्र सुधोरमम ॥ ३ ॥ संसारमसारत्वे [illegible] । [illegible], रत्नमिव रक्षति ॥ ४ ॥ लब्धे मानुष्यके
[illegible] । [illegible] धर्ममूलितया जनः ॥ ५ ॥ [illegible] । पुनःसम्प्राप्य मनुष्यत्वं
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] सहोदरमुनीरितम् । [illegible] संयमाभिमनोरथाः ॥ ७ ॥ " [illegible]
[illegible] । निरुपमरो [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] परिपालिय होंति [illegible] ।
[illegible] ॥ १० ॥ जो जाइ माणुसेसु, [illegible] सो सुरेसेइ । [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] सामिस्स ॥ १३ ॥ किं पुण [illegible],
[illegible] । [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] पि सा [illegible] ।
[illegible] ॥ १५ ॥ " [illegible] । [illegible],
[illegible] " ॥ १६ ॥ [illegible] पि होंति समसमयं । [illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] । [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] गिरिनि[illegible]
[illegible] ॥ २० ॥ [illegible] । [illegible] ।
[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] । [illegible] सो, [illegible]

सद्धम्ममम्मि ॥ २२ ॥ तुह पुव्वभववयसो, तियसोह तइ विइन्नसगारो । वयपडिवत्तिनिमित्त, तुहागओ गिन्ह पव्वज्ज ॥ २३ ॥
विसयासत्तो सतो, सनोसपरम्मुहो पमत्तो य । नरयाऽगडमि निवडसि, न कुणसि जइ मज्झ उवएसं ॥ २४ ॥

यतः—" विपयविपम प्राणी, चिन्ता चिताज्वलनेंधन, विपयविपम' प्राणी प्रौढापकीर्त्ति सुराघट ।
विपयविपम प्राणी तत्तन्महाव्यसनास्पद, विपयविपम' प्राणी पान्थः कुयोनिपुर प्रति ॥ २५ ॥ "

किंच—" वरि पविसिज्जइ जलहिलोलकल्लोलगणि, जालाजालकरालकेलि अहवा जलणि ।
वरि समरगणि अगु अगु छिज्जउ कहवि, विसयपिवास ह्यास नेय किज्जइ तहवि ॥२६॥"

तो मेयज्जो वज्जरइ, अवसरो को वयस्स मह अज्ज । अगिमगासग्गसणे, स एस नणु मच्छियापाओ ॥ २७ ॥ त केरिसो वयसो, सुरो व असुरो व सव्वहा होसि । जो तारे तारुन्ने पत्ते विसए विमोएसि ॥ २८ ॥ मह कहसु कोइ रज्जाउ, जाउ टालेइ कपि पत्ताओ । किं होइ तस्स सो मित्तमहव अव्वो अमित्तति ॥ २९ ॥ देवे गयमि इन्भेण, तेण वरियाओ अट्ठकन्नाओ । मेयज्जकए अइरूवलडहलायन्नपुन्नाओ ॥ १३० ॥ अह महरिद्दिरिद्धीए, पारद्धो पाणिपीडणपवधो । सह नववहूहिं चडिओ, मेयज्जो नरविमाणंमि ॥ ३१ ॥ परिचलइ धवलमगल-मुहलमहेलासहस्ससजुत्तो । रायगिहे रायप्पह-चउमुह-चचर-चउक्केसु ॥३२॥ अह मायंगस्सगे, सकमिऊण सुरो स रोइइ । पुट्ठो पियाए पभणेइ, कारण रोइयव्वस्स ॥ ३३ ॥ मेयज्जस्सऽज्ज मए, वीवाहमहूसवो पिए दिट्ठो । एवमहपि कुणतो, जइ तुह जीवतिया धूया ॥ ३४ ॥ पियदुक्खदुक्खिया सा, तस्स रहस्स कहेइ मा रुयसु । मयधूया सा तीए, पुत्तो पुण तुज्झ मेयज्जो ॥ ३५ ॥ सा निंदू मज्झ सही, तीए पुव्वपि पत्थियम्हि [1]मुय । रणउप्पन्नो दिन्नो, स जहा जाणेइ न हु कोइ ॥ ३६ ॥ तो आह एस हाहा, असमजसमेरिस कयं पावे । इय जपतो पत्तो, स आसु मेयज्ज-

[1] मुई O D ।

पासमि ॥ ३७ ॥ तं नर ज सम्पत्तो, पवर पुरवरे समाइ रे मज्झ । पुत्तो सयमवाई, [1]सिहमसि मम । पत्तासो ॥ ३८ ॥
मह पुत्ते तं मह सम अभिओ पारिवाय पावाय । ता कि कमामि एव, इरु पाय पविस प्पडाय ॥ ३९ ॥ समक्खसूपिक-
राय, समुद्दविक्कमसुनिमयमयम्य । कि सामन्तविमूसण करिहरउ तेण सो भीओ ॥ ४० ॥ नेउं मसिओ मयणे ताइ पव्वस्से
सयज्झमे सग्गो । ता सण्णाइनरवइमहासो पयाओ कहेमि ॥४१ ॥ तेपुत्र होम मई, एवं विमोविपस्स मह कुमर । रेणुपुर्ण
सम्पत्ति न किंपि गर्म पवमवस्से ॥ ४२ ॥ स भवइ तान मे सुक्खेसु वारससमामयुबरि पुर्न । तं मसि तं करिस्सं
॥ ४४ ॥ मार्गमस्स वि मज्झे, सविस्सइ सेविओ पुत्त पूय । मह हैसि रज्जवाई, सामि ! पुर्न दस्स निस्सीमं ॥ ४५ ॥ "सिप्पा
पुरइसाइ सिमसिपीओ वस्सय चोए । बहुमोहमगहगहिय भिमज्झ तं न कुमवो " ॥ ४६ ॥ सम कय बवओ एसो स
मोमि मासिओ होइ । वाई तस्स परे कंपीकम्म पमो गओ सिरसो ॥ ४७ ॥ पहासम्पि बोसिरए, एस रज्जामि सेगस्माणि ।
मन मरीरम्म वाद, पुत्तेन समप्पिवं सिरमो ॥ ४८ ॥ भणियं पुमोवं, रसो कमं विमम्म ममसम्म । तइ सिरिहए कि ममासि
पुतु सरवि सिप्पहे ॥ ४९ ॥ एव दिवे दिवे सो, सिंतो एकमाय समस्सेगम । पुरो समपाए कुमो एवमि ए बाह समसमो
॥ ५० ॥ मरगय-मोत्तिय-माणिक-मेसम सुराणि बोसिरेइ सव । क्कगोविय मयमचं सो मदो सिससमीवंमि ॥ ५१ ॥ मही
माइ-मंगि-सामंय-पंसाय-पगुरूसमवंमि । मम कय रज्जाई बोसिरेइ पक्षोदि बोसवे ॥ ५२ ॥ मुंबह बमाई सामसप्पाकुम्पु
पाई सो सत्व । मह मासाओ पासेहि, सिरिसमोओ ममो हूं ॥ ५३ ॥ सिविरेम विरमे मजओ अमसम पाम परमत्तो । मूल
न रिमायमर्व, मुणुमारो विवमेइ ॥ ५४ ॥ मणिमयमए पसेसु हेमसगिरिम्मि पपमपमर्थ । तं नरमाहो सामि मुरेहरेम
मङ्गुल बीइ ॥ ५५ ॥ सम्पसम्पसमरमेव तेण सिवसेव सो तहा सिसिरओ । ममामि पहव पीसइ, परसम्पियसिसेणाई ॥ ५६ ॥

१ सिमाकंमि ८. मावजी ॥ ।

जे सहइ तस्स गिरिणो सीसे, सीमतओ व्व निस्सीमो। भणिओ पुणोवि कञ्चणपायार कुणइ रायगिहे ॥ ५७ ॥ पुण भणिओ रयणायरमाणेसु इहेव जेण तत्थ धुव। कयण्हाणसुद्धिणो तुह सुयस्स नियकन्नय देमो ॥ ५८ ॥ रयणमेत्तेण तेण, घार्हिं रयणायरो समाणीओ। मज्जाविय मेयज्ज, रन्ना दिन्ना सकन्ना से ॥५९॥ तीए सह सिवियाए, आरूढो जाव जाइ पुरमज्झे। पत्ताओ पत्तीओ ता, ताओ वि अट्ठ तत्थेव ॥ १६० ॥ नरवइसमप्पिए परमचगसिंगेसु तुगपासाए। नवनयविलासपेमल–नवनववहुयार्हिं सह ललइ ॥ ६१ ॥ भुजइ बारसवरिसाइ, तार्हिं सद्धि अभगुरे भोगे। पुन्नपडिवन्नमागम्म, त सुरो सभरावेइ ॥ ६२ ॥ पाय पडियाओ ताओ, कताओ समाओ बारस पुणोवि। तियसस्स तस्स पासे, मग्गति मुदीणनयणेर्हिं ॥ ६३ ॥ ससारुद्धारमई–बहु वहु उवरोहसीलया दोवि। कट्ठोयट्टि हियए, कुणति तियसस्स तस्स तया ॥ ६४ ॥ पुण बारसवरिसेसु, दिन्नेसु सुरेण भोगम इएसु। तेसु वि अइच्छिएसु, मेयज्जो जइवरो जाओ ॥ ६५ ॥ नवनयपुव्वमहत्थो, गीयत्थो तिव्वतवथिरो जाओ। स कयाबि विहरमाणो, एगल्लविहारपडिमाए ॥ ६६ ॥ रायगिहे सपत्तो, गोयरचरियाए हिंडमाणो य। भवणंगणमि पत्तो, एगस्स सुवन्नगाररस ॥ ६७ ॥ घडिउ स तमि समए, कणयमयाण जवाणमट्ठसय। तत्थेव ठाविऊण, नियभवणऽब्भतरे पत्तो ॥ ६८ ॥ केलिसकुतण्ण, चुणतएण कुचेण तत्थ ते गिलिया। उद्धट्ठिएण दिट्ठो, मेयज्जेण गिलिज्जता ॥ ६९ ॥ रयणमेत्तेण पत्तो, सुवन्नगारो न जाव ते नियइ। ता भयभीओ पुच्छइ, पासठियं त महासाहु ॥ १७० ॥ कहसु पसाय काऊण, केण हरिया इमे सुवन्नजवा। अ तुब्भे जाणिस्सह, इह चेव चिराउ चिट्ठता ॥ ७१ ॥ नरनाहो जिणपडिमापूय काऊण पइदिण पुरओ। जयकणगमयजवाण, सत्थिय वित्थरेइ वदेइ देवदेवतो। देवच्चणियावेला, अहुणाऽइक्कमइ ता कहह ॥ ७३ ॥ मारा अट्ठुत्तरेणेव ॥ ७२ ॥ सुपसत्थ सत्थिय वित्थरेइ वदेइ देवदेवतो। देवच्चणियावेला, अहुणाऽइक्कमइ ता कहह ॥ ७३ ॥ मारा घिस्सइ सकुडबमेय म अन्नहा महाराओ। ता कारुन्न काऊण, कहसु अप्पाणमन्न वा ॥ ७४ ॥ अहय तुब्भ व अन्नस्स षावि कस्सयिइ न किंपि काहामि। एत्तियमेत्त सुवन्न, अन्न तुह सामि दाहामि ॥७५॥ किंपि न जपए मेअज्जमुणिवरो पाणिरक्खणट्ठाए। जा ता भणियमणेण, इय मिच्छा होइ चोरस्स ॥ ७६ ॥ कह णु कहिस्सइ एसो, तेणो मुनवरमी वेसमल्लीणो।

पम्मपहम्मीई, धम्मम्मि पविओ वेव ॥ ७७ ॥ सीसावेढेण वेढिअम सीसंमि पम्मम्मेण । बाहुणा पम्मपओ बह मिग-
पच्छि मयच्छ ॥७८॥ बम का महरुम, का भजीविम अर्ध कपिस्समड्ढ । भरं धारिव पुत्त वा मारिस्सइ एयसोयं ॥७९॥
य होइ मयच मरणं, मइ जीवड पीविविम पीवेमे । का पम्ममसेवणा भमास नासीम पम्मभवि ॥ १८ ॥ के के बम्मा
भरिमम्मपार्ण नो मम्मवि मुनवीम । परिमसमए जी निम्मोइ सो होइ भवसिभो ॥ ८१ ॥ रे जीव ! किं न पम्मयमम
वै विमसमेहिं वहहिं । पमिमम पमेहिं, जीवं एमस्स हंमस्स ॥ ८२ ॥ विराम सराम हे वेम, मुपुरिसा सति मवि पी-
वंति । पमसमम्मो पणमे साहसि पम्मसम्म मे ॥ ८३ ॥

यमा च—[1] निस्पेयोधिमिवमस सुससवरा पर्व सुमरोपर्ण मामामोवमहनं ममविजपसस्नीमप्रारमण्मा ।
मामनोविवसमप्पमारिविमिपवमं न मूर्वोदवि, मर्वोसेन परार्वसाममवपा त्रि किंच नवीनम्मम् ॥ ८४ ॥"

मरण रे जीव ! हम, सवियमो वेमपमो समेव । बह मिपवीवमनमसमभो सहसि ण बवसि ॥ ८५ ॥ हम मामम्मम
सवो पंजावो हरस वेमसमोमो । भाविमवेमपमो व-मम्मुमो वैसमर्थ च ॥ ८६ ॥ बह बस्तमोमसामसमम भाओ व
भयासमाजी । वेमममरमवससावमममनिमूलमर्थ च ॥ ८७ ॥ पमामसारे वेम्मवि ममुममम पोमिमिवमो । ममुमिमममुमर्थ-
रेम पविसो पोहम पुत्तो ॥ ८८ ॥ मीसम मिमिमेसम हे बमा बस्स विनिम्मरिय । भामसेमो समेमो सुमरे विमापत्र पर्न
॥ ८९ ॥ रे पाव ! पमन पाम, हम पाडे देसि वं महामुमिमे । वं पुम मारेसि हमं, पावोवरि चूमिमा पमा ॥ ९ ॥ ममम-
गर्व हे पहुं, मुममपमो महामुमि विमम । भमसंमुमो मिमम, मम मह ममुम गई होही ॥ ११ ॥ बह मम महापमो नमी
मह समहं हमससस । मम भमी मुम्मरेम मापमे वेमुमविमम्मस ॥ १२ ॥ वा पामभमसमो पम्ममम पंमर्व महोमामो । हम

[1] विराम सरम इंमस्स हे वेर मुपुरिस० ॥।